सरल अनुवाद-शिक्षा

(कालिज के छात्रों के लिये)

पाणिनीय सूत्रों की सोदाहरण सरल व्याख्या,
धातुरूपावली तथा हिन्दी-संस्कृत कोश सहित

संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण

मूल लेखक
इन्द्रनाथ आनन्द
एम. ए. (संस्कृत), बी. ए. (फ्रैंच तथा जर्मन)
भूतपूर्व संस्कृत-अध्यापक, जमींदार कालिज, गुजरात (पंजाब)

१९५५
मलहोत्रा ब्रदर्स
प्रकाशक
६०, दरियागंज, देहली

प्रकाशक
लाला रूपलाल मलहौत्रा
६०, दरियागंज दिल्ली

मूल्य ३)

रमेश प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा
राकेश प्रैस
बहादुरगढ़ रोड, दिल्ली
में मुद्रित

प्राक्कथन

प्राचीनरीत्या रचिता विदग्धैरिहानुवादाः फलिना भवन्तु ।
नवा प्रणालीं परिगृह्य बद्धो धियं न कस्यैष विभासयिष्यति ॥

इस ग्रन्थ में अनुवाद-शिक्षा को नवीन और यथासंभव सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है। अनुवाद में निपुणता का आधार व्याकरण-ज्ञान है। इसलिये यहां व्याकरण के नियमों की व्याख्या सरल शब्दों में अनेक उदाहरण देकर की गई है। साथ ही कण्ठस्थ करने योग्य व्याकरण-अंश परिशिष्ट में संकलित कर दिया गया है।

प्रारम्भिक पाठ नये सीखने वालों के लिये विशेषत. उपयोगी है। इसमे लिङ्ग का परिचय कराने के लिये कोई दो सौ वाक्य दिये गये हैं।

पहले अध्याय मे लकारों के अर्थ का विवेचन नवीन ढंग से किया गया है। ऐसा करने मे हिन्दी मे क्रिया के भिन्न-भिन्न कालों (वर्तमान, अपूर्ण वर्तमान, भूत, भविष्यत् आदि) को आधार मान कर यह बताया गया है कि इनका अनुवाद संस्कृत के कौन-कौन से लकारों द्वारा किया जा सकता है। सशोधित संस्करण की एक विशेपता यह भी है कि इसमे लकारार्थ-सबधी अध्याय मे सस्कृत के मुख्य-मुख्य धातु गिना दिये गये है और उनके रूप परिशिष्ट (३) में दे दिये गये हैं।

कारक-प्रकरण (तीसरा अध्याय) की विशेषता यह है कि इसमें कारक-विभक्ति और उपपद-विभक्ति का अलग-अलग विवेचन किया गया है और पाणिनीय नियमों को नवीन और सुगम क्रम से निबद्ध किया गया है। इस अध्याय मे उदाहरणों का प्राचुर्य्य है।

संस्कृत मे सधि अनिवार्य है। फिर भी इस बात को ध्यान में रखते हुए कि इस विषय मे नये प्रवेश करने वाले छात्र संहित पदों को समझने मे कठिनाई का अनुभव करेंगे, कहीं-कहीं (विशेपत प्रारंभिक पाठ में) सधि नहीं की गई।

विषय-सूची

॥ ओ३म् ॥

सरल अनुवाद-शिक्षा

प्रारम्भिक पाठ

लिङ्ग-परिचय

इस पुस्तक में हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने की विधि बताई गई है। अनुवाद करने के लिए जो छोटा से छोटा वाक्य दिया जा सकता है उसमे (१) कर्ता और (२) क्रिया का होना आवश्यक है। इस प्रारम्भिक पाठ मे हम केवल कर्ता के सम्बन्ध मे कहेंगे।

लिङ्ग—कर्ता पद या तो संज्ञा (Noun) होता है या सर्वनाम (Pronoun)। संज्ञा का शुद्ध प्रयोग करने के लिए उसके लिङ्ग का जानना आवश्यक है। किसी संज्ञा विशेष के स्थान मे यदि कोई सर्वनाम प्रयुक्त किया जाय तो उसका वही लिङ्ग होना चाहिये जो कि उस संज्ञा का है। इसी प्रकार संज्ञा के सम्बन्ध मे यदि कोई विशेषण प्रयुक्त किया जाय तो उसका भी वही लिङ्ग होना चाहिये जो कि उस संज्ञा का है। इस से यह स्पष्ट होता है कि संज्ञा के लिङ्ग का जानना बहुत आवश्यक है क्योंकि यदि संज्ञा के लिंग का पता न हो तो उसके सम्बन्ध में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम और विशेषण उचित लिंग में प्रयुक्त न हो सकेंगे और अनुवाद करते समय संस्कृत का जो वाक्य बनेगा वह सर्वथा अशुद्ध और असंस्कृत होगा।

संस्कृत में संज्ञा का लिंग किसी पदार्थ के स्त्री या पुरुष, अथवा सजीव या निर्जीव होने से ही सदा निश्चित नहीं किया जा सकता संस्कृत में लिंग प्राय शब्द की रचना से सम्बन्ध रखता है, न कि शब्द द्वारा सूचित किये गये पदार्थ के पुंस्त्व या स्त्रीत्व आदि से। इसलिए लिंग की पहचान के लिए कोश की सहायता और बार-बार के प्रयोग के अभ्यास की आवश्यकता है। तथापि कुछ ऐसे नियम निर्धारित किये जा सकते है जिनको ध्यान मे रखने से कई एक शब्दों के लिंग की पहचान सुगम हो जाती है। ये नियम संकेत रूप मे नीचे दिये जाते है।

नोट——संज्ञाओं का लिंग बताने के साथ-साथ इस बात का भी संकेत कर दिया गया है कि उनका उच्चारण किस प्रकार होगा। कुछ नामों के उच्चारण परिशिष्ट मे दिये गये है। विद्यार्थी को चाहिए कि इन रूपों को अभी से कण्ठस्थ कर ले।

पुलिङ्ग

(क) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची (synonyms) प्राय· पुलिंग होते हैं—देव , सुर , विबुध , अमर , दैत्य , असुर , राक्षस., मनुष्य , मानव , नर , पुरुष , पर्वत , अचल., समुद्र . अर्णव , स्वर्ग., मेघ , पयोधर , किरण , खड्ग , बाण , शर , केश इत्यादि। (ये प्रथमा एकवचन के रूप है। शेष रूपों के लिए देखिये परिशिष्ट १—क)

(ख) कृत् प्रत्यय 'अ' से बने शब्द प्राय पुलिंग होते हैं—भवः (birth) अनुभव , परिभव·, भाव , स्वभाव , अनुग्रह , अभ्यासः, आदेश , आरम्भ , उद्धार , उपकार , हार , आहार , विहार , व्यवहार , उपहार , दर्प , दीप , यम , नियम , जय , विजय , पराजय , स्वन , नाद , निनाद , उन्माद , प्रमाद , प्रचार , विचार , प्रवाद , योध , लेख , लोभ., लाभ , विनाश , विनोद., विरामः, विवाहः, वध., विवेक , विशेष., विश्राम., श्वास., विश्वास., विस्मयः, व्ययः, सन्देश , सशय., सन्देह., ससर्ग , सम्पर्कः, समागम., स्नेह.,

स्पर्शः, निग्रहः, विग्रहः, आदरः, मानः, सम्मानः, अभिमानः इत्यादि। (प्रथमा, एकवचन) शेष रूप 'देव' की तरह।

(ग) कृत् प्रत्यय 'न' से बने शब्द—प्रश्नः, स्वप्नः, यज्ञः, यत्नः, (प्रथमा, एकवचन)

(घ) निम्नलिखित शब्द पुलिंग हैं :—ऋषिः, मुनिः, कविः, रविः, ग्रन्थिः, बलिः, कपिः, राशिः इत्यादि। (प्रथमा, एकवचन, शेष रूप परिशिष्ट १—क में देखिये।)

(ङ) दाराः (wife), गृहाः (house) पुंलिग हैं और सर्वदा बहुवचन मे प्रयुक्त होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

(क) आकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिग होते है—(प्रथमा, एकवचन के रूप नीचे दिये गये हैं—शेष रूप परिशिष्ट १—ख मे देखिये)

याचना, अभ्यर्थना, प्रार्थना, अवस्था, दशा, अवमानना (insult), आज्ञा, आशा, इच्छा, उपेक्षा (indifference), कथा, कन्या, बाला, कल्पना, क्रीडा (खेल), क्षपा, निशा, क्षमा, क्षुधा (भूख), गगा, चर्चा, चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, चिन्ता, छाया, जनता, जरा, तृषा (प्यास), तृष्णा त्वरा (haste), दया, कृपा, दरिद्रता, धरा, निद्रा, निन्दा, परीक्षा, पीडा, पूजा, प्रजा, प्रतिज्ञा, प्रभा, बाधा, बुभुक्षा (भूख), भार्या, भाषा, मात्रा (measure), माला, मर्यादा, मूर्च्छा, यात्रा, रक्षा, रेखा, लज्जा, लता, वर्षा, वार्ता (news), विद्या, वेला (समय, सीमा), वञ्चना (धोखा), शय्या, शाला (house, hall), शङ्का, शिखा, शोभा, शुश्रूषा, सेवा, श्रद्धा, संख्या सञ्ज्ञा (name, consciousness), सन्ध्या, स्पृहा इत्यादि।

(ख) ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं—

नगरी, कुमारी, नदी, श्री, लक्ष्मी, कौमुदी, शुनी विदुषी, तरुणी इत्यादि। (इनके रूप परिशिष्ट १—ख में देखिये)

(ग) कृत प्रत्यय 'ति' से बने शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं—गति, गीति (song), भक्ति, मुक्ति, शक्ति, तृप्ति, धृति, वृत्ति, इष्टि (sacrifice) दृष्टि, वृष्टि, सृष्टि, पुष्टि, तुष्टि, कृति, क्रान्ति, शान्ति, भ्रान्ति, कान्ति, जाति, भीति, इत्यादि। (इनके रूप परिशिष्ट १—ख में देखिये।)

(घ) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं—भूमि, नदी, लता, स्त्री, रजनी इत्यादि।

(ङ) निम्नलिखित शब्द स्त्रीलिंग हैं—छवि, कुटि (कुटिया) त्रुटि, कृषि=कृषी, ओषधि=ओषधी, कटि=कटी अंगुलि=अंगुली, विपद्, आपद्, संपद्, शरत्, परिषद् (assembly), उपनिषद्, क्षुध् (भूख), तृष् (प्यास), आशिष् (आशीर्वाद), गिर् (वाणी), उषस् (dawn) इत्यादि।

(च) अप् (water), सुमनस् (flower), अप्सरस् (nymph) स्त्रीलिंग हैं और सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

नपुंसक लिंग

(क) कृत् प्रत्यय 'अन्' से बने शब्द नपुंसकलिंग होते हैं—स्थानम्, गमनम्, गानम्, जीवनम्, हसनम्, दर्शनम्, ध्यानम्, बन्धनम्, कम्पनम्, नर्तनम्, भवनम्, भोजनम्, पानम्, भूषणम्, भ्रमणम्, मरणम्, मनोरञ्जनम्, वचनम्, आवरणं, वातावरणम्, (atmosphere), शरणम् (refuge), स्नानम्, यानम्, शयनम् इत्यादि। (शेष रूप परिशिष्ट १—ग में देखिये।)

(ख) कृत प्रत्यय 'त' से बने शब्द नपुंसक लिंग होते हैं—गतम् (gait), गीतम्, नृत्तम्, हसितम्, उक्तम्, श्रुतम्, भूतम् (a being), अन्नम्, दुग्धम्, युद्धम् इत्यादि।

(ग) तद्धित प्रत्यय 'त्व' और 'य' लगाकर जो भाववाचक सञ्ज्ञाएँ बनती हैं वे नपुंसकलिंग हैं—मनुष्यत्वम्, पटुत्वम्, वृद्धत्वम्, राज्यम्

तात्पर्यम, बाल्यम् (बचपन), सख्यम् (friendship), सौन्दर्यम, वीर्यम्, स्वास्थ्यम् इत्यादि ।

(घ) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची प्रायः नपुंसकलिंग होते हैं—मुख, नयन, धन, मांस, रुधिर (blood), जल, बल, कुसुम ।

(ङ) निम्नलिखित शब्द नपुंसकलिग हैं—अनृत, अमृत, निमित्त, वित्त, चित्त, व्रत (vow), वृत्त (event, news) श्राद्ध, दधि, अक्षि, आस्पद, सत्य, अपत्य, मूल्य, दुःख, सुख, पाप, पुण्य, उत्तर (reply), उद्यान, अगद, कल्याण, कारण, हृदय, पात्र, फल, भाग्य, मन्दिर, वस्त्र, विष, शस्त्र, हिम (snow), स्वर्ण (gold), जगत, वियत् (sky) इत्यादि । (इनके रूप परिशिष्ट १—ग में देखिये)

—:o:—

विशेषण

प्रत्येक विशेषण को (चाहे वह गुणवाचक हो या कृदन्त रूप हो) विशेष्य संज्ञा (the noun qualified) के अनुसार तीनों लिंगों मे प्रयुक्त किया जा सकता है ।

उदाहरण—नूतन. सखा (पुंलिग),नूतना सखी (स्त्रीलिंग), नूतनं मित्रम् (नपुसक लिग)। अब नीचे कुछ उपयोगी विशेषण दिये जाते हैं—

अगाध (गहरा), अद्भुत (विचित्र), अल्प (थोड़ा), असीम, आवश्यक, उचित, उच्छ्रित (ऊँचा), उज्ज्वल (bright), उत्तम, उद्धत (haughty), उन्नत (ऊँचा), उन्मत्त (पागल), उष्ण (गरम), कठिन, कष्ट (दु.खदायक), कातर (कायर) कुलीन (अच्छे कुल का), कुशल (चतुर), कृत्स्न (सारा), कृपण (कजूस), कृश (दुवला), कोमल, क्रूर (निर्दय), क्षुद्र (नीच), गभीर=गम्भीर=गहन (गहरा), घोर (भयंकर), चतुर, चपल (चंचल), तीक्ष्ण, तुंग (ऊँचा), तुच्छ

(मामूली), तुल्य (बराबर), दक्ष (चतुर), दारुण (भयङ्कर), दीन, दुर्बल, दुर्लभ, धन्य, धीर (धैर्य वाला), नम्र (humble), नव (नया), नश्वर (नाश होने वाला), निखिल (सारा), निज (अपना), नित्य (सदा रहने वाला), निपुण, नित्य (निश्चित), निष्फल, पुराण=पुरातन (पुराना), पर्याप्त (काफी), पवित्र, पुण्य, पुष्कल=प्रचुर (काफी, बहुत) प्रसन्न, प्रिय, भयानक, भयङ्कर, भासुर=भास्वर (चमकीला), मुग्ध (भोला). मधुर, मनोहर, मूर्ख, योग्य, रमणीय=रम्य (सुन्दर), वक्र (टेढ़ा), विफल, विमल (साफ), विशाल (खुला, चौड़ा), विह्वल (घबराया हुआ), व्यर्थ (useless), व्याकुल, शीतल, शुभ्र (चमकीला), शून्य, सङ्कट (तग narrow), सकल (सारा), सत्य (सच्चा), सफल, सम (बराबर), समर्थ (capable), सुन्दर, सुलभ, सूक्ष्म (बारीक), सौम्य (pleasant), स्थिर, स्थूल, (मोटा), स्पष्ट, स्वच्छ, स्वस्थ।

—:o:—

वाचिक अभ्यास १

अनुवाद करो :—

विशाल उद्यान, अगाध समुद्र, वीर योधा, प्रबल इच्छा, सुन्दर स्थान, नई कहानी, कड़वी दवाई, बडा अनुग्रह, गहरी चिन्ता, चंचल मन, पहला अपराध, शीतल छाया, सच्ची प्रतिज्ञा, झूठा बहाना, ऊँचा पर्वत, घोर अन्याय, लम्बा रास्ता, शुभ अवसर, असीम उत्साह, मैला (आविल) पानी, निर्मल आकाश, घना अंधेरा, टेढ़ी लकडी, स्पष्ट सकेत, गहरी नींद, नई जवानी, मधुर वचन, अद्भुत सौन्दर्य, तीव्र प्रकाश, भयंकर स्वप्न, मधुर स्वर, व्यर्थ झगडा, पुराना परिचय, प्रचुर धन, प्यारा मित्र, नये कपड़े, बड़ा उत्सव, कठिन प्रश्न, सरल उत्तर, हरा रग, झूठी खबर, चॉदनी (चन्द्रोज्ज्वल) रात, तीक्ष्ण बाण, पवित्र स्मृति (पावनी f), दृढ़ विश्वास, निष्फल प्रयत्न, अपना अनुभव।

सर्वनाम

लिंग, वचन और विभक्ति के विचार से सर्वनाम (Pronoun) का प्रयोग बिल्कुल संज्ञा (Noun) की भांति होता है।

प्रत्येक सर्वनाम के तीनों लिंगों में भिन्न-भिन्न रूप होते हैं, केवल पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun) अस्मद् (I Person उत्तम पुरुष) और युष्मद् (II Person, मध्यम पुरुष) का उच्चारण तीनों लिंगों मे समान होता है। (इनके रूप परिशिष्ट २ मे देखिये) 'अस्मद्' और 'युष्मद' को द्वितीया चतुर्थी और षष्ठी मे—मा†, मे, नौ, नः और त्वा, ते वाम्, वः जो आदेश होते हैं, वे वाक्य के और पाद के आदि मे प्रयुक्त नहीं होते। च, वा, एव और ह—इन अव्ययों के अनन्तर तथा विशेषण रहित सम्बोधन के अनन्तर भी ये नहीं आ सकते।

उदाहरण—तुम मे और मुझ मे इतना ही अन्तर है=तव च मम च इयान् एव विशेषः (न कि 'ते च मे च ··')। यह तुम्हारी ही पुस्तक है=तव एव इदं पुस्तकम् (न कि 'ते एव ··')।

निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)

निश्चयवाचक सर्वनामों (इदम्, एतत्, तद् और अदस) का प्रयोग निम्नलिखित कारिका मे बताया गया है।

इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्।
अदस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात्॥

समीप के पदार्थ की ओर संकेत करने के लिए 'इदम,' बहुत समीप के पदार्थ के लिए 'एतद्', दूर के पदार्थ के लिए 'अदस्' और जो पदार्थ आँखों से ओझल हो उसके लिए 'तद्' का प्रयोग होता है।

---

† मा=माम्, मे=मह्यम्, मम, नौ=आवाम्, आवाभ्यम्, आवयोः, नः=अस्मान्, असमभ्यम्, अस्माकम, त्वा=त्वाम, ते=तुभ्यम्, तव, वाम्=युवाम् युवाभ्याम्, युवयो· वः=युष्मान् युष्मभ्यम्, युष्माकम्।

परस्पर सम्बन्ध सूचित करने के लिए यद् (=जो) और प्रश्न करने के लिए किम् (=कौन) का प्रयोग होता है। किम् के साथ 'चित्', या 'चन' या 'अपि' जोड़ने से अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई=some, any) बनता है।

ऊपर लिखे सर्वनाम तीनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं। नीचे उनके रूप तीनों लिंगों मे केवल प्रथमा विभक्ति में दिये गये हैं। इदम, तद् के रूप परिशिष्ट २ में देखिये)

इदम् (यह)	पुंलिंग—अयम्	इमौ	इमे
इदम् (यह)	स्त्रीलिंग—इयम्	इमे	इमा
इदम् (यह)	नपुंसक लिंग—इदम्	इमे	इमानि
एतद् (यह)	पुंलिंग—एष·	एतौ	एते
एतद् (यह)	स्त्रीलिंग—एषा	एते	एता·
एतद् (यह)	नपुंसक लिंग—एतद्	एते	एतानि
अदस् (वह)	पुंलिंग—असौ	अमू	अमी
अदस् (वह)	स्त्रीलिंग—असौ	अमू	अमू
अदस् (वह)	नपुंसक लिग—अद	अमू	अमूनि
तद् (वह)	पुंलिंग—स	तौ	ते
तद् (वह)	स्त्रीलिंग—सा	ते	ता·
तद् (वह)	नपुंसक लिंग—तद्	ते	तानि
यत् (जो)	पुलिंग—य	यौ	ये
यत् (जो)	स्त्रीलिंग—या	ये	या·
यत् (जो)	नपुंसक लिग—यत्	ये	यानि
किम् (कौन)	पुंलिंग—कः	कौ	के
किम् (कौन)	स्त्रीलिंग—का	के	का
किम् (क्या)	नपुंसकलिंग—किम्	के	कानि

अनिश्चयवाचक सर्वनाम——(कोई Some, Any)

पुंलिंग—	कश्चित्	कौचित्	केचित्
स्त्रीलिंग—	काचित्	केचित्	काश्चित्
नपुंसकलिंग—	किंचित्	केचित्	कानिचित्

इसी प्रकार कोऽपि, कावपि (=कौ+अपि), केऽपि, कश्चन, कौचन, केचन आदि भी समझ ले।

जहाँ हिन्दी में निज-वाचक सर्वनाम 'अपने आप' का प्रयोग होता है उसका अनुवाद संस्कृत में 'आत्मन्' शब्द द्वारा किया जाता है। ध्यान रहे कि चाहे कर्ता किसी भी वचन अथवा लिंग में हो, 'आत्मन्' का प्रयोग सदा पुंलिंग, एक वचन मे होगा।

उदाहरण——महात्मा जी के दर्शनों से हम अपने आप को धन्य मानते हैं=महात्मनो दर्शनेन वयम् आत्मानं धन्यं मन्यामहे।

बच्चा अपने आप को दर्पण मे देखकर हैरान होता है=शिशुरात्मानं दर्पणे वीक्ष्य विस्मयते।

हम ने बड़ी कठिनता से अपने आप को बचाया=अस्माभिर् यथाकथंचिद् आत्मा रक्षित =वयं यथाकथंचिद् आत्मानम् अरक्षाम।

—o.—

विशेषण और विशेष्य की लिंग, वचन और विभक्ति में समानता

(Concord of Substantive and Adjective)

नियम १ विशेष्य संज्ञा (the noun qualified) का जो लिंग, वचन और विभक्ति हो वही लिंग, वचन और विभक्ति उसके विशेषण का होता है।

गुणवाचक विशेषणों (Qualitative adjective) के अतिरिक्त कृदन्त रूप (Participial adjective), तथा सर्वनाम जो

विशेषणों की भाति प्रयुक्त होते हैं उनके सम्बन्ध मे भी यही नियम है।

नीचे सकेत मात्र के लिए केवल प्रथमा विभक्ति मे विशेषण और विशेष्य का लिंग और वचन मे साम्य दिखाया गया है —

एक वचन—

अयं बाल (यह लड़का), इयं कन्या (यह लड़की), एष पुरुषः (यह पुरुष), एषा नारी (यह स्त्री), अय वृक्ष (यह पेड़), इयं लता (यह बेल), इदम् पुष्पम् (यह फूल), इदम् फलम् (यह फल), तद् आकाशम् (वह आकाश), इय पृथ्वी (यह पृथ्वी), एष प्रश्न (यह प्रश्न है) एतद् उत्तरम् (यह उत्तर है), स वीर (वह बहादुर), सा कथा (वह कहानी), तद् व्याख्यानम् (वह व्याख्यान), इदं गगाजलम (यह गगाजल), एषा माता (यह माता), एष पिता (यह पिता)।

विशेषण सहित—

अय चतुर बाल. (यह चतुर लड़का), इयं चतुरा कन्या (यह चतुर कन्या), एष योग्य· पुरुष (यह योग्य पुरुष), एषा योग्या नारी (यह योग्य स्त्री), अय हरित वृक्ष (यह हरा पेड़), इयं हरिता लता (यह हरी लता), इद सुन्दरम् पुष्पम् (यह सुन्दर फूल), इदं मधुरं फलम् (यह मीठा फल), तद् नीलम् आकाशम् (वह नीला आकाश), इयं विस्तीर्णा पृथ्वी (यह विशाल पृथ्वी), एष सरल प्रश्न (यह सरल प्रश्न है), एतम् विचित्रम् उत्तरम् (यह विचित्र उत्तर है), स विलक्षण. वीर (वह विलक्षण बहादुर है), सा मनोहरा कथा (वह मनोहर कहानी), तद् मनोहरं व्याख्यानम् (वह मनोहर व्याख्यान), इदं पवित्रं गगाजलम् (यह पवित्र गगाजल), एषा पूज्या माता (यह पूज्य माता), एष पूज्य पिता (यह पूज्य पिता)।

द्विवचन—

इमे नेत्रे (ये दो आँखे), तौ बालौ (वे दो लड़के), ते कन्ये (वे दो लड़कियाँ), एतौ पितरौ (ये माता-पिता)।

विशेषण सहित—

इमे सुन्दरे नेत्रे (ये दो सुन्दर आँखे), तौ चतुरौ बालौ (वे दो चतुर लड़के), ते चतुरे कन्ये (वे दो चतुर लड़कियाँ), एतौ पूज्यौ पितरौ (ये पूज्य माता पिता), युवानौ दपती (युवा पति-पत्नी), वृद्धौ श्वशुरौ (बूढ़े सास-ससुर), अनन्तौ द्यावापृथिव्यौ (अनन्त आकाश और पृथ्वी), सदृशौ पितापुत्रौ (एक जैसे बाप-बेटा)।

बहुवचन—

इमे बाला (ये लड़के), इमा कन्या (ये लड़कियाँ), एते पुरुषाः (ये पुरुष), एता नार्य (ये स्त्रियाँ), इमे वृक्षा (ये पेड़), इमा लता. (ये बेलें), इमानि पुष्पाणि (ये फूल), इमानि फलानि (ये फल), एते प्रश्ना (ये प्रश्न), एतानि उत्तराणि (ये जवाब), ता कथा (वे कहानियाँ), तानि व्याख्यानानि (वे व्याख्यान)।

विशेषण सहित—

इमे चतुरा बाला (ये चतुर लड़के), इमा चतुरा कन्या (ये चतुर लड़कियाँ), एते योग्या पुरुषा (ये योग्य पुरुष), एता योग्याः नार्य (ये योग्य स्त्रियाँ), इमे हरिता वृक्षा (ये हरे पेड़), इमा. हरिता लता (ये हरी बेलें), इमानि सुन्दराणि पुष्पाणि (ये सुन्दर फूल), इमानि मधुराणि फलानि (ये मीठे फल), एते सरलाः प्रश्ना (ये सरल प्रश्न), एतानि विचित्राणि उत्तराणि (ये विचित्र उत्तर), ता. मनोहरा. कथा (वे मनोहर कहानियाँ), तानि मनोहराणि व्याख्यानानि (वे मनोहर व्याख्यान)।

— ० —

लिंग-परिचायक वाक्य-संग्रह

अब कुछ ऐसे वाक्य दिये जाते हैं जिनको बार बार पढ़ने से छात्रों को बहुत सी संज्ञाओं का लिंग अपने आप स्मरण रहेगा। सुविधा के लिए हिन्दी अनुवाद नीचे दिया गया है।

ससार और जीवन

(क) (१) विचित्र अयं संसार=विचित्रम् इदं जगत्=विचित्रा इयं सृष्टि (२) दुर्लभं मानुषं जन्म=दुर्लभा मानुषी तनू। (३) सुलभा तिर्यग्योनिः (४) नित्य ईश्वर (५) नित्य जीव (६) नश्वरं देहम्=नश्वर देह=भंगुरम् शरीरम् (७) नियत विनाश (८) निश्चित मरणम् (९) मुग्धं शैशवम्=मुग्ध बालभाव (१०) उन्मत्तं यौवनम् (११) कष्टा जरा=कष्टं वार्द्धकम्।

(ख) (१२) कीदृश अय लोक (१३) क्वचित् पुण्यं क्वचित् पापम् (१४) क्वचिद् धर्म क्वचिद् अधर्म (१५) क्वचिद् दुःख क्वचित् सुखम्

वाचिक अभ्यास २

नोट—इन वाक्यों का अनुवाद ऊपर दिया हुआ है। परन्तु छात्र चाहें तो अन्य प्रकार से भिन्न शब्दों का प्रयोग करके भी अनुवाद कर सकते हैं।

(क) १. यह संसार विचित्र है। २. मनुष्य का जन्म दुर्लभ है। ३. पशुयोनि सुलभ है। ४ ईश्वर नित्य है। ५. जीव नित्य है। ६. शरीर नश्वर है। ७. ८ मरना निश्चित है। ९ बचपन भोला है। १०. जवानी दीवानी होती है। ११. बुढ़ापा दु खदायक है।

(ख) १२. यह संसार कैसा है? १३. कहीं पुण्य है कहीं पाप है। १४. कहीं धर्म है कहीं अधर्म है। १५. कहीं दु.ख है कहीं सुख है=कभी

(१६) क्वचित् कलह क्वचित् युद्धम् (१७) क्वचित् शोक क्वचिद् उत्सव. (१८) क्वचिद् हास क्वचिद् विलाप (१९) क अत्र विस्मय =किम् अत्र आश्चर्यम् (२०) नियता एषा स्थिति ।

(ग) (२१) अधीत वेद. (२२) अधिगतानि शास्त्राणि (२३) परिशीलिता सर्वा उपनिषद (२४) श्रुत सकल रामायणम् (२५) कृत महान् उद्योग (२६) प्राप्ता विद्या, प्राप्त ज्ञानम्, लब्ध विवेक (२७) उन्मीलितं प्रज्ञाचक्षु (२८) अवगतं तत्त्वम् (२९) दृष्टं परं ज्योति (३०) छिन्ना. सर्वे सशया (३१) नष्ट मोह (३२) नष्टं तम (३३) विगलित अहंकार (३४) त्यक्त अभिमान (३५) प्रसन्नम् अन्त-करणम् (३६) आस्वादितम् अमृतम् (३७) परिहृतं विषम् (३८) अपगत भयम् (३९) छिन्न बन्धनम् (४०) लब्धं निर्वाणम्=लब्ध· मोक्ष =लब्धा मुक्ति (४१) प्राप्त परम पदम् ।

दु ख है कभी सुख है । १६ कहीं झगडा है कहीं लड़ाई है । १७. कहीं शोक है कहीं उत्सव है । १८ कहीं हसना है कहीं रोना है । १९. इसमें आश्चर्य क्या है ? २० यह नियत स्थिति है ।

(ग) २१. वेद पढ़ा । २२. शास्त्र पढ़े । २३. सब उपनिषदों का स्वाध्याय किया । २४. सारी रामायण पढ़ी । २५. बड़ा परिश्रम किया । २६ विद्या प्राप्त की, ज्ञान प्राप्त किया । विवेक प्राप्त किया । २७. बुद्धि का नेत्र खुला । २८. तत्त्व समझ लिया । २९. परम ज्योति के दर्शन पाये । ३० सब संशय कट गये । ३१. मोह दूर हुआ । ३२. अन्धकार गया । ३३. अहंकार गया । ३४. अभिमान छोड़ दिया । ३५. अन्त करण प्रसन्न (अथवा निर्मल) हुआ । ३६. अमृत चख लिया । ३७ विष से बच गये । ३८. भय दूर हुआ । ३९. बंधन कट गया । ४०. निर्वाण मिल गया । ४१. अत्युत्तम पदवी प्राप्त कर ली ।

आकाश

(१) असीमम् आकाशम्=असीम आकाश (२) अनभ्रम् अन्तरिक्षम् (३) विमलं गगनम् (४) कि निशा इयम् उत दिनम् इदम्=किं क्षपा एषा उत दिवस एषः (५) समागता सन्ध्या (६) अदृश्य सूर्य (७) दृश्य चन्द्रः (८) शुभ्र शीतलः च शशाङ्क (९) शुभ्रा शीतला च चन्द्रिका (१०) कीदृशा इमे किरणा —मृणालतन्तव इव। (११) असंख्या तारा =असंख्यानि तारकाणि। (१२) व्युष्टा निशा= विगता विभावरी (१३) तिरोहिता सर्वा तारा (१४) निष्प्रभ निशा-पति (१५) उदयोन्मुख दिवाकर । (१६) निर्गत प्रकाशः। (१७) रक्ता प्राची दिक् (१८) धूसरा प्रतीची दिशा। (१९) अद्य क वासर = अद्य किं दिनम् (२०) आगत ग्रीष्म (२१) प्रचण्ड सूर्यातप (२२) स्विन्न शरीरम् (२३) शीतला छाया। परिणत दिवसः=पर्यवसितम् दिनम् (२४) शीतल अय पवन (२५) कृष्णाः इमे मेघाः (२६) नेत्रप्रति-

---

वाचिक अभ्यास ३

१. आकाश असीम है। २ आकाश मेघरहित है। ३ आकाश निर्मल है। ४. क्या अब रात है या दिन? ५ सन्ध्या हो गई। ६. सूर्य अदृश्य हो गया। ७. चन्द्रमा दीखता है। ८. चन्द्रमा सफेद और ठण्डा है। ९. चाँदनी सफेद और ठण्डी है। १० ये किरणे कैसी हैं—जैसे कि मृणाल के तन्तु। ११. तारे असख्य हैं। १२. रात बीत गई। १३ सब तारे छिप गये। १४ चन्द्रमा प्रभाहीन है। १५ सूर्य उदय होने को है। १६ उजाला हो गया। १७. पूर्व दिशा लाल है। १८ पश्चिम दिशा मलिन है। १९ आज क्या दिन है? २० गर्मी आ गई। २१. धूप तेज हे। २२ शरीर पसीना-पसीना हो गया है। २३. छाया ठण्डी है। दिन ढल गया। दिन समाप्त हुआ। २४. यह पवन शीतल है। २५. ये मेघ काले हैं । २६ बिजली आँखों को

घातिनी विद्युत् (२७) भयानकं घनगर्जितम् (२८) समारब्धा वृष्टि (२९) पतन्ति स्थूला जलबिन्दव (३०) पतति शुभ्र हिमम् (३१) पंकिल एष मार्ग ।

पृथ्वी

(१) विशाला इयं पृथ्वी (२) उन्नतावनता एषा भू (३) चित्रा इयं धरा (४) क्वचित् पर्वत क्वचित् सागर (५) क्वचिद् प्रसन्नसलिला नदी क्वचिद् कलुषतोय तड़ाग. (६) क्वचिद् शुष्कः मरु क्वचिद् विपुलसस्या उर्वरा (७) क्वचिद् वनं क्वचिद् उद्यानम् (८) क्वचिद् ग्राम क्वचिद् नगरम् (९) एष पर्वत· (१०) महान् अस्य आरोहः विस्तार च (११) तुंगाः अस्य शिखरा =तुंगानि अस्य शिखराणि (१२) शिलीभूतं अदः हिमम् (१३) एष निर्झर (१४) आरोग्यकरम् इदं जलम्। (१५) इद निविडं वनम् (१६) गहना

चकाचौंध करने वाली है। २७ बादल की गर्ज भयानक है। २८. वर्षा आरम्भ हो गई। २९ पानी की बड़ी बून्दे पड रही है। ३०. सफेद बर्फ गिर रही हैं । ३१. यह मार्ग कीचड़ से भर गया है।

वाचिक अभ्यास ४

१. यह पृथ्वी विशाल है। २ यह जगह ऊँची-नीची है। ३. यह पृथ्वी रंग-बिरंगी है। ४. कहीं पहाड़ है कहीं समुद्र है। ५ कहीं निर्मल जल वाली नदी है कहीं मैले पानी वाला तालाब है। ६. कहीं वन है कहीं उद्यान है। ८. कहीं गॉव है कहीं नगर है।-९. यह पहाड़ है। १०. इसकी ऊँचाई और फैलाव बहुत है। ११. इसकी चोटियाँ ऊँची हैं। १२. वह बर्फ पत्थर सी हो गई है। १३. यह झरना है। १४. यह पानी स्वास्थ्यदायक है। १५ यह घना जंगल है। १६. यह

शाला (४) एष विद्यालयः (५) इदम् आतुरालयम् (६) अदः मन्दिरम् (७) इद मुद्रणालयम् (८) तद् धनागारम् (९) एषा कारा=एतत् कारागारम् (१०) आयतः अय राजमार्ग (११) संकटा सा रथ्या (१२) जनसंकुला एषा पण्यवीथिका (१३) विविधा पदाथा =विविधानि द्रव्याणि (१४) महद् मूल्यम्=महान् अर्घ· (१५) महार्हाणि द्रव्याणि =महार्घा पदार्था । (१६) एतानि विशालानि भवनानि (१७) तानि भग्नानि गृहाणि (१८) रम्य· अयं प्रासाद (१९) इदं न गृहम् (२०) इमे न गृहा (२१) एष द्वार. (२२) एतद् द्वारम् (२३) अनावृतं कपाटम् (२४) इदं शयनागारम् (२५) अयं निर्मल दर्पण. (२६) ता चित्राः तिरस्करिण्य (२७) अयं पर्यङ्क· (२८) इदं कौशेयम् आस्तरणम् (२९) इदम् उपधानम् (३०) इदं सवेगं भ्रमद् विद्युद्व्यजनम् (३१) भास्वराणि रत्नानि (३२) शोभनानि चित्राणि (३३) महार्घाणि स्वर्णपात्राणि (३४) धन्य गृहपति (३५) सौम्य अस्य आकार (३६) उदारम् अस्य हृदयम् (३७) प्रशस्य· तस्य आचार.=प्रशस्यम् तस्य आचरणम्

स्कूल है। ५. यह अस्पताल है। ६. वह मन्दिर है। ७. वह छापाखाना है। ८. वह बैंक है। ९. यह जेल है। १०. यह सड़क चौड़ी है। ११. वह गली तंग है। १२. इस बाजार में लोगों की भीड़ है। १३. भाँति-भाँति की वस्तुएँ हैं। १४. बड़ी कीमत है। १५ बहुत मंहगी चीजे हैं। १६. ये विशाल भवन हैं। १७. वे टूटे-फूटे घर हैं। १८ यह महल सुन्दर है। १९, २०. यह हमारा घर है। २१, २२. यह दरवाजा है। २३. किवाड़ खुला है। २४. यह सोने का कमरा है। २५. यह साफ शीशा है। २६. वे रंग-विरंगे पर्दे हैं। २७. यह पलंग है। २८. यह रेशमी बिछौना है। २९ यह तकिया है। ३०. इधर तेजी से घूमता हुआ बिजली का पंखा है। ३१. चमकते हुए रत्न। ३२. सुन्दर तस्वीरें। ३३. कीमती सोने के वर्तन। ३४. घर का स्वामी धन्य है। ३५. उसकी आकृति प्यारी है। ३६. इसका हृदय उदार है। ३७ उसका आचार

(३८) धन्याऽस्य भार्या (३९) सा तु शोभा गृहस्य—द्वितीयं हृदयम् इव भर्तुः (४०) एषा कन्या पित्रोः जीवितम् इव (४१) अल्पा अस्याः अवस्था=अल्पम् अस्याः वय (४२) तन्वी तस्याः तनूः=तनु तस्या वपु =सुकुमारं तस्या. शरीरम् (४३) सुकुमाराणि अंगानि (४४) इमे त्रयाः पुत्रा (४५) एक विद्याप्रिय', अपर. क्रीड़ाप्रिय., तृतीय देवानां प्रिय. ।

ग्राम

(१) परिसर. अयं ग्रामस्य (२) एप ग्राम (३) इमानि मृण्मयानि (=मृन्मयानि) जीर्णानि गृहाणि (४) अत्र द्वाराणि तु सन्ति न पुनः कपाटानि (५) प्राङ्गणे एका भग्नप्राया खट्वा तु वर्तते न पुनर् आस्तरणम् उपधानं वा (६) क्वचिद् क्वचिद् मृत्तिकादीपा ज्वलन्ति (७) क्षीणः तेषा प्रकाश' (८) तमिस्रा इयं रजनी (९) सर्वत्र अन्धं तमः वर्तते=सर्वत्र निविड अन्धकार वर्तते (१०) प्रातस्तरा बुध्यन्ते ग्रामीणा (११) आयुष्यः प्रातस्तन. विहार =आयुष्यं प्रातस्तनं विहरणम् (१२) आरोग्यकरम् इदं वातावरणम् (१३) इद रम्यं क्षेत्रम् (१४) पक्वं सर्वं शस्यम् ।

प्रशंसनीय है। ३८. उसकी पत्नी धन्य है। ३९. वह तो घर की शोभा है—मानों पति का दूसरा हृदय है। ४०. यह लड़की मानों माता-पिता की जान है। ४१. उसकी उम्र छोटी है। ४२. उसका शरीर नाजुक है। ४३. अंग कोमल हैं। ४४. ये तीन लड़के हैं। ४५. एक को पढ़ाई अच्छी लगती है, दूसरे को खेलना भाता है, तीसरा मूर्ख है।

वाचिक अभ्यास ७

१ यह गाँव के समीप की भूमि है। २. यह गाँव है। ३. ये मिट्टी के पुराने घर हैं। ४. यहाँ दरवाजे तो हैं पर किवाड नहीं। ५. आंगन में एक टूटी-फूटी खाट तो है पर बिछौना या तकिया नहीं है। ६. कहीं-कहीं मिट्टी के दीये जल रहे हैं। ७ उनका प्रकाश मद्धम है। ८. यह रात अंधेरी है। ९. सर्वत्र गहरा अंधेरा है। १०. गाँव के लोग सुबह सवेरे जागते हैं। ११. प्रात:काल की सैर आयु बढ़ाने वाली होती है। १२ यह वातावरण स्वास्थ्यदायक है। १३. यह सुन्दर खेत है। १४. सारी फसल पकी हुई है।

पहला अध्याय
लकारों के अर्थ का विवेचन
पहला पाठ
वर्तमान काल (Present Tense)
(१) कर्ता और क्रिया का सम्बन्ध

संस्कृत में तीन वाच्य हैं—(१) कर्तृवाच्य (Active Voice), (२) कर्मवाच्य (Passive Voice) और (३) भाववाच्य (Impersonal Voice)।

सकर्मक धातु (Transitive roots) कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में प्रयुक्त होते हैं और अकर्मक धातु (Intransitive roots) कर्तृ-वाच्य और भाववाच्य में। *

कर्तृवाच्य मे कर्ता प्रथमा विभक्ति में रहता है और उसके पुरुष (Person) और वचन (Number) के अनुसार ही क्रिया का पुरुष और वचन होता है।

प्रत्येक धातु के प्रत्येक लकार में तीन पुरुष होते हैं—प्रथम पुरुष (III Person), मध्यम पुरुष (II Person), और उत्तम पुरुष (I Person)।

प्रत्येक पुरुष के तीन वचन होते हैं—एक वचन (Singular Number), द्विवचन (Dual), बहुवचन (Plural)।

नियम—कर्ता जिस पुरुष और वचन में होता है, उसके साथ उसी पुरुष और वचन की क्रिया लगाई जाती है।

---

* ल: कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः (३. ४. ६९) लकाराः सकर्मकेभ्यः कर्मणि कर्तरि च स्युरकर्मकेभ्यो भावे कर्तरि च।

उदाहरण—ईश्वर सर्वभूतानां हृदये वसति। अत्र बहवः ब्राह्मणाः वसन्ति। भक्त. हरिं स्मरति। अपि [त्व] स्मरसि निजां प्रतिज्ञाम्? आम्, स्मरामि (अहम्)। युवां क्व गच्छथ.? आवां गृहं गच्छावः। हरिश्चन्द्र सत्यं वदति।

नोट—संस्कृत में क्रिया से (विशेषत उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष की क्रिया से) कर्ता का स्वय ही बोध हो जाता है। 'स्मरामि' के साथ 'अहम्' न भी लगाया जाय, तो भी अर्थ स्पष्ट ही होता है। शिष्ट भाषा मे ऐसे वाक्यों में कर्ता पद का प्रयोग प्राय नहीं किया जाता। परन्तु यदि कर्ता पद पर जोर देना हो, तो उसका प्रयोग आवश्यक होता है, जैसे—त्वं न स्मरसि अहं तु स्मरामि।

धातु-परिचय

लकारों के अर्थ का सम्पूर्ण विवेचन करने से पहले विद्यार्थियो को मुख्य-मुख्य धातुओं से परिचित कराना आवश्यक है।

सस्कृत मे धातुओं को दस गणो मे बॉटा गया है जिनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) भ्वादि (२) अदादि (३) जुहोत्यादि (४) दिवादि (५) स्वादि (६) तुदादि (७) रुधादि (८) तनादि (९) क्र्यादि और (१०) चुरादि।

हम पहले १, ४ ६ और १० गण के धातु गिनायेगे और बाद में शेष गणों के।

(१) भ्वादि गण के धातु

परस्मैपदी—भू (होना), वस् (रहना), ज्वल् (जलना), दह् (जलाना), खाद् (खाना), पा (पिव्—पीना), जीव् (जीना), स्था (तिष्ठ—बैठना, ठहरना), गम् (गच्छ्—जाना), चर् (चलना), चल् (चलना), व्रज् (जाना), अट (घूमना), भ्रम् (घूमना), धाव् (दौड़ना), पत् (गिरना)।

वद् (बोलना), भण् (कहना), जल्प् (बोलना), शंस् (कहना सूचित करना), गै (गाना), कूज् (कूजन करना—पक्षियों का), क्रन्द् (चिल्लाना), घ्रा (जिघ्र=सूंघना), चुम्ब् (चूमना), दृश् (पश्य्=देखना) पठ् (पढ़ना), ध्यै (ध्यान करना), स्मृ (स्मरण करना), शुच् (शोक करना), अर्च् (पूजा करना), निन्द् (निन्दा करना), जि (जीतना), रक्ष् (रक्षा करना)।

खन् (खोदना), रुह् (उगना, चढ़ना), वप् (बोना), फल् (फलवान् होना, फलना), फुल्ल् (फूलना, पुष्पित होना), नम् (झुकना, प्रणाम करना), दा (यच्छ्—देना), वह (उठाकर ले जाना), नी (ले जाना), तृ (तैरना, पार करना), तप् (तपना), त्यज् (छोड़ना), दंश् (डसना, काटना)।

आत्मनेपदी—वृत् (होना), रभ् (आरम्भ करना), लभ् (पाना, प्राप्त करना), यत् (यत्न करना), भाष् (बोलना), ईक्ष् (देखना), शिक्ष् (सीखना), रुच् (रुचना, पसन्द आना), मुद् (प्रसन्न होना), कम्प् (काँपना), वेप् (काँपना), वृध् (बढ़ना), त्रै (रक्षा करना), सेव (सेवा करना, औषधि का सेवन करना), सह् (सहना)।

नोट—ऊपर लिखे तथा आगे बताये जाने वाले धातुओं के भिन्न-भिन्न लकारों मे जो रूप बनते हैं, उनका दिग्दर्शन परिशिष्ट ३ मे कराया गया है।

अभ्यास १

(भ्वादि गण के धातुओं का लट् मे प्रयोग)

परस्मैपदी—(१) हम नगर मे रहते हैं। (२) देवता स्वर्ग में रहते है। (३) वह पानी पीता है। (४) हम अन्न खाते हैं। (५) आग जलती है। (६) चिन्ता हृदय को जलाती है। (७) वह भात पकाता है। (८) कृष्ण वन में घूसता है। वहाँ मृग दौडते हैं। (९) वृक्षों से फल गिरते है। (१०) तुम क्या कहते हो ? (११) मैं सदा सच बोलता हूँ।

(१२) तू व्यर्थ ही बहुत बातें करता है (जल्प्) । (१३) श्यामा बहुत मधुर गाती है । (१४) वृक्षों पर पक्षी कूजते हैं । (१५) बच्चा डर के मारे चिल्लाता है । (१६) माता शिशु को चूमती है । (१७) हम (दोनों) फूलों को सूँघते हैं । (१८) तुम (दोनों) रामायण पढ़ते हो । (१९) सीता राम को याद करती है । (२०) भक्त ईश्वर का ध्यान करता है । (२१) राधा हरि की पूजा करती है (अर्च्) । (२२) महादेव भक्तों की रक्षा करता है (रक्ष्) । (२३) हम गुरु को प्रणाम करते हैं । (२४) दुष्ट लोग साधुओं की भी निन्दा करते हैं ।

(२५) किसान भूमि खोदता है । (२६) वह खेत में बीज बोता है । (२७) समय पर वृक्ष फूलता और फलता है । (२८) फूली हुई लताएँ वसन्त का आगमन सूचित करती हैं (···वसन्तावतारं शंसन्ति) । (२९) युधिष्ठिर निर्धनों को धन देता है । (३०) लक्ष्मण सीता को वन में ले जाता है । (३१) वे दोनों नाव में भागीरथी को पार करते हैं । (३२) ग्रीष्म में सूर्य बहुत तपता है । (३३) सांप रोहिताश्व को डसता है ।

अभ्यास २

(भ्वादि गण के आत्मनेपदी धातु)

(१) वह कार्य आरम्भ करता है । (२) हम दोनों व्याकरण सीखते हैं । (३) अच्छे छात्र पारितोषिक पाने का यत्न करते हैं । (४) मनुष्य जैसा बीज बोता है वैसा फल पाता है (वप—उभयपदी है)※ । (५) राम सदा सत्य बोलता है । (६) गाय साप को देखकर काँपती है । (७) बच्चा लड्डू पाकर प्रसन्न होता है (मुद्) । (८) भगवान् भक्त की रक्षा करता है (त्रै) । (९) ग्रीष्म मे सूर्य का ताप दिन-प्रतिदिन बढ़ता है । (१०) बुढ़ापे मे तृष्णा बढ़ती है । (११) वह ज्यों-ज्यो विषयों का सेवन करता है त्यों-त्यों उसकी कामना बढ़ती है । (१२) सन्तोष से मनुष्य परम सुख प्राप्त करता है (लभ्) ।

※ यादृशं वपते बीजं तादृशं लभते फलम् ।

(४) दिवादि गण के धातु

परस्मैपदी—दिव् (खेलना चमकना), नृत् (नाचना), श्लिप् (आलिंगन करना), मुह् (मूर्च्छित होना, गलती करना, भ्रम मे पड़ना), कुप् (कुपित होना), क्रुध् (क्रुद्ध होना), द्रुह् (द्रोह करना), शुप् (सूखना), तृष् (प्यासा होना), क्षुध् (भूखा होना), तृप् (तृप्त होना), तुप् (प्रसन्न होना, संतुष्ट होना), व्यध् (बींधना), सिध् (सिद्ध होना), हृप् (प्रसन्न होना), त्रस् (डरना), शुध् (शुद्ध होना), त्रुट (टूटना), नश् (नष्ट होना)।

आत्मनेपदी—वृत् (होना)।

अभ्यास ३

(दिवादि गण के धातुओं का लट् में प्रयोग)

(१) आकाश मे तारे चमकते हैं। (२) मोर नाचता है। (३) माता बच्चे को आलिंगन करती है। (४) दशरथ और कौशल्या राम को न देख कर मूर्च्छित होते हैं। (५) कभी-कभी पडित लोग भी भ्रम मे पड़ जाते हैं। (६) मेरी अक्ल चकरा रही है। ❀ (७) गुरु मूर्ख शिष्य पर कुपित होता है। (८) मेरा गला सूख रहा है। (९) मुझे प्यास लग रही है (तृष्यामि)। (१०) तुझे भूख लग रही है (क्षुदयसि)। (११) सब प्राणी अन्न से तृप्त होते है। (१२) व्याध बाण से मृग को बींधता है। (१३) उसकी कामना सिद्ध होती है। (१४) चन्द्र को देख कर चकोर प्रसन्न होता है। (१५) सांप को देखकर गाय डरती है। (१६) जल से शरीर के अग शुद्ध होते है। (१७) सत्य से मन शुद्ध होता है। (१८) बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है। (१९) मोतियों का हार टूटता है। (२०) दु ख में बुद्धि नष्ट हो जाती है। (२१) तेरी वाणी मेरे हृदय को वाण की तरह वींधती है।† (२२) उसके पास वहुत धन है (वृत)।

❀ मुहयति मे मति.। † वाणी ते वाण इव विध्यति मे हृदयम्।

(६) तुदादि गण के धातु

तुद् (दु ख देना, तंग करना), विश् (प्रवेश करना), इष् (इच्छ-चाहना, इच्छा करना), मुच् (छोड़ना), प्रच्छ् (पूछना), लिख् (लिखना), सिच् (सींचना), सृज् (उत्पन्न करना, बनाना), स्पृश् (छूना), क्षिप् (फेंकना), मृ (आत्मनेपदी—मरना)।

अभ्यास ४

(१) राक्षस विश्वामित्र को दु ख देते हैं। (२) राम और लक्ष्मण वन में प्रवेश करते हैं। (३) तू क्या चाहता है? हम ऋषियों के दर्शन चाहते हैं। (४) रावण सीता को क्यों नहीं छोड़ता? (५) हम पूछते हैं कि इस घर मे कौन रहता है? (६) कमला सुन्दर अक्षर लिखती है। (७) शकुन्तला वृक्षों को सींचती है। (८) ईश्वर चराचर जगत् को बनाता है (सृज)। (९) अपराधी कानों को हाथ लगाता है (स्पृश)। (१०) युद्ध में असंख्य वीर मरते हैं। (११) सेवक स्वामी का अनुग्रह चाहता है।

अभ्यास ५

(१) हम धन नहीं चाहते, मान चाहते है। (२) पापी लोग घोर नरक में प्रवेश करते हैं। (३) कृष्ण आँसुओं से मित्र के चरणों को भिगो देता है (सिच्)। (४) राम राज्य छोड़ता है और दशरथ प्राण त्यागता है। (५) कौशल्या आसू बहाती है। (अश्रूणि मुच्)। (६) सुमित्रा अन्न-जल को छूती तक नहीं। (७) मै तो कम्बल को छोड़ना चाहता हूँ पर कम्बल मुझे नहीं छोड़ता। (८) कुलीन स्त्रियां कभी लज्जा को नहीं छोड़तीं। (९) व्याध मृग पर बाण छोड़ता है (क्षिप्)।

—.०·—

(१०) चुरादि गण के धातु

(ये प्राय. उभयपदी होते हैं।)

चुर् (चुराना), तड् (पीटना, मारना), दण्ड् (दंड देना, जुर्माना

करना), कथ् (कहना), भक्ष (खाना), चिन्त् (चिन्तन करना, सोचना), पूज् (पूजा करना), गण् (गिनना), रच् (बनाना, रचना करना), धृ (धारण करना), स्पृह् (इच्छा करना, चाहना), अर्ज् (कमाना, प्राप्त करना), छद् (ढकना)।

—:०—

अभ्यास ६

(१) बालक कृष्ण मक्खन चुराता है। (२) माता उसे पीटती है। (३) न्यायाधीश चोर को सौ रुपये जुर्माना करता है। (४) आप क्या कहते हैं? (५) हम वही कहते हैं जो सारी दुनिया कहती है। (६) सीता राम का चिन्तन करती है। (७) मुझे सदा माँ का ध्यान आता है। (८) तू क्या सोचता है? (९) सब लोग विद्वानों की पूजा करते हैं। (१०) कृपण धन को गिनता है। (११) मनस्वी जन सुख-दुःख की परवाह नहीं करते (गण्)। (१२) ब्रह्मा सृष्टि की रचना करता है। (१३) विष्णु जगत् को धारण करता है। (१४) हम सुखों की कामना करते हैं (सुखेभ्य स्पृह्)। (१५) सच्चा पुरुष अपने दोषों को नहीं छिपाता। (१६) परिश्रमी जन बहुत धन कमाता है।

—०:—

२, ३, ४, ५, ६, ७, ६ गण

अब क्रमश दिवादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि और क्र्यादि गण के धातुओं का विवेचन किया जाता है।

इन गणों के अन्तर्गत धातुओं के जो रूप बनते हैं वे पहले बताये गये चार गणों के धातुओं के रूपों की अपेक्षा कुछ क्लिष्ट है। तथापि इनमे कुछ ऐसे धातु हैं जिनका जानना नितान्त आवश्यक है। ऐसे धातुओं को तारक (*) चिह्न से अंकित किया गया है। इन धातुओं मे से कुछ के रूप परिशिष्ट ३ मे दिये गये हैं।

—.०.—

(२) अदादि गण

परस्मैपदी—अद् (खाना), अस्* (होना), या (जाना), स्ना (स्नान करना), वा (बहना, वायु का चलना), स्वप्* (सोना), श्वस (साँस लेना), रुद्* (रोना), जागृ* (जागना), इ (जाना), विद् (जानना), हन्* (मारना), शास् (शिक्षा देना, शासन करना), दुह् (दोहना)।

आत्मनेपदी—आस* (बैठना), शी* (सोना), आशास् (आशा करना, आशीर्वाद देना), अधी (अधि+इ) अध्ययन करना।

उभयपदी—ब्रू * (कहना, बोलना), स्तु। (स्तुति करना)।

—:o—

अभ्यास ७

(१) मैं मांस नहीं खाता। (२) सिंह मृग को मारता है और उसका मांस खाता है। (३) बगला मछलियों को खाता है। (४) तू मेरा प्रिय मित्र है। (५) गंगा के किनारे हरिद्वार नामक रम्य तीर्थ है। (६) वहाँ अनेक देवताओं के प्राचीन मन्दिर हैं। (७) जो हरिद्वार जाते हैं वे गंगा के पावन जल मे स्नान करते हैं। (८) वसन्त मे सुगंधित पवन बहता है। (९) बच्चा माँ की गोद मे सुख से सोता है। (१०) उसके माता-पिता जागते है। (११) लोग दिन मे जागते हैं पर पहरेदार उस समय सोता है। (१२) जानकी लक्ष्मण के साथ वन मे जाती है। (१३) तू मुझे नहीं जानता। (१४) मै अपने पहले जन्मों को भी जानता हूँ। (१५) ऋषि लोग सृष्टि के रहस्य को जानते है। (१६) जो आत्मा को अमर जानता है वह किसी को नहीं मारता। (१७) गुरु शिष्यों को शिक्षा देता है। (१८) अशोक सकल भारतवर्ष पर शासन करता है। (१९) कृष्ण गाय को दोहता है। (२०) यहाँ कौन बैठता है (आस)। (२१) दमयन्ती पृथ्वीतल पर सो जाती है। (२२) यति लोग

पलंग पर नहीं सोते। (२३) मैं आशा करता हूं (आशास) आप सकुशल हैं। (२४) मैं प्रतिदिन गीता का अध्ययन करता हूँ। (२५) जो वेद पढ़ता है वह तत्त्व को जानता हे। (२६) मैं झूठ नहीं बोलता। (२७) युधिष्ठिर सदा सत्य बोलता है। (२८) सब लोग युधिष्ठिर की स्तुति करते हैं। (२९) मै विष्णु की स्तुति करता हूँ।

(३) जुहोत्यादि गण के धातु

(निम्नलिखित धातु उभयपदी हैं।)

हु (आहुति देना, होम करना), दा❀ (देना), भी (डरना), हा (त्यागना), भृ (पालन करना)।

अभ्यास ८

(१) वह स्वतन्त्रता-संग्राम में प्राणों की आहुति देता है। (२) योगी लोग संयम रूपी अग्नि मे इन्द्रियों का होम करते हैं। (३) दशरथ कैकेयी को दो वर देता है। (४) यज्ञ के बाद राजा लोग ब्राह्मणों को दक्षिणा देते है। (५) बालक माता के अंचल को नहीं छोड़ता। (६) जो लोग कामनाओं को छोड़ देते हैं उनकी बुद्धि स्थिर हो जाती है। (७) वीर योधा मृत्यु से नहीं डरते। (८) राम लोकनिंदा से डरता है। (९) अच्छे नृपति प्रजा का सन्तान की भाँति पालन करते है। (१०) विष्णु सकल संसार का पालन करता है।

(५) स्वादि गण के धातु

सु (रस निकालना), शक❀ (समर्थ होना), आप❀ (प्राप्त करना), साध् (सिद्ध करना), श्रु❀ (सुनना), चि (संचय करना)।

अभ्यास ९

(१) योग चक्षु के बिना तू मेरे इस रूप को नहीं देख सकता। (२) ज्ञान के बिना कोई मुक्ति नहीं पाता। (३) मेरे भक्त फिर जन्म नहीं पाते। (४) जो दूसरे के कार्य सिद्ध करता है वह साधु है। (५) जो साधुओं की निन्दा सुनता है और चुप रहता है वह भी पाप का भागी

बनता है। (६) मूर्ख धन का संचय करता है (संचि) न कि पुण्यों का। (७) माली नाना वर्ण के फूल तोड़ता है (अव√चि)। (८) क्या तू मेरी बात सुनता है? (९) मैं आपका एक-एक वचन ध्यान से सुनता हूँ। (१०) हम रेडियो* से दूर देशों के समाचार सुनते हैं।

— ० —

(७) रुधादि गण के धातु

(निम्नलिखित धातु उभयपदी हैं।)

रुध् (रोकना, विरोध करना), छिद्* (काटना), भिद्* (तोड़ना) भुज* (परस्मैपदी—राज्य का भोग करना, आत्मनेपदी—खाना, भोग लगाना, भोगना), युज् (जोड़ना)।

अभ्यास १०

(१) मेघ सूर्य का मार्ग रोक लेते हैं। (२) अकेला भीम नगर के मार्ग को रोकता है। (३) मैं आपकी बात का विरोध करता हूँ (वि√रुध)। (४) चूहा दाँतों से जाल को काटता है। (५) किरात लोग बाणों से शत्रुओं के सिर काटते हैं। (६) मैं तर्क से तुम्हारे संशयों को काटता हूँ। (७) भीम गदा से दुःशासन की जंघा तोड़ता है। (८) अशोक विशाल और समृद्ध राज्य का भोग करता है। (९) बूढ़ा आदमी सैंकड़ों दुःख भोगता है। (१०) मैं भात खाता हूँ। (११) लोहार गर्म लोहे के दो टुकड़ों को जोड़ता है। (१२) प्रियंवदा मधुर शब्दों का प्रयोग करती है (प्र√युज—आत्मनेपदी)। (१३) वह मुझसे बार-बार पूछता है (अनु√युज—आत्मनेपदी)।

---

* रेडियो यन्त्रेण। इस अर्थ में 'आकाशवाणी' का प्रयोग सर्वथा अनुचित होगा।

(८) तनादि गण के धातु

(निम्नलिखित धातु उभयपदी है।)

तन् (विस्तार करना, फैलाना), कृ॰ (करना)

अभ्यास ११

(१) इस नगर में सूर्य इतना ही प्रकाश फैलाता है जिससे बस कमल खिल जाते हैं। (२) सत्काव्य कवि के यश को सब दिशाओं में फैला देता है। (३) तू दुष्कर कार्य करता है। (४) हम विदेशियों की नकल नहीं करते (अनु√कृ with षष्ठी)। (५) जो दूसरों का उपकार करता है वह वास्तव में अपना ही उपकार करता है (उप √ कृ with षष्ठी)। (६) जो व्यक्ति निष्काम भाव से कर्तव्य कर्म करता है उसके लिए कर्म-बन्धन नहीं होता।

(९) क्रयादि गण के धातु

(निम्नलिखित धातु उभयपदी हैं।)

क्री (खरीदना), ज्ञा॰ (जानना), ग्रह्॰ (ग्रहण करना, पकड़ना, लेना)।

अभ्यास

(१) वह बहुत धन से वस्त्र और आभूषण खरीदता है। (२) व्यापारी लोग सस्ते दामों से पदार्थ खरीदते हैं और महंगे दामों पर बेच देते हैं (वि√ क्री—आत्मनेपदी)। (३) इस नगर में मुझे कोई भी नहीं जानता। (४) जो जानते हैं वे कहते नहीं हैं और जो नहीं जानते हैं वे बहुत बातें बनाते हैं। मैं तुम्हारे हृदय की बात नहीं जानता। (६) दुःशासन द्रौपदी को बालों से पकड़ता है। (७) जो इस (कन्या) को ग्रहण करता है वह मुझ पर अनुग्रह करता है। (८) साधु लोग दुष्टों पर भी अनुग्रह करते हैं।

विविध गण के धातु

अभ्यास १२*

(१) इस विद्यालय में बहुत से छात्र हैं। कोई लिखता है, कोई पढ़ता है। कोई ऊँचा बोलता है, कोई हँसता है, कोई रोता है। कोई आता है, कोई जाता है, कोई दौड़ता है, कोई गिरता है। (२) इस मेले में असंख्य कन्याएँ और स्त्रियाँ हैं। कोई पकाती है, कोई खाती है, कोई पीती है। (३) नटी नाट्य आरम्भ करती है। कोई नाचती है, कोई गाती है। कोई भूमि पर गिर पड़ती है, कोई मूर्च्छित हो जाती है। (४) ग्रीष्म में सूर्य बहुत तपता है। कीचड़ शीघ्र सूखता है। (५) मेरी हड्डियाँ टूटती हैं। (६) भोगों से मनुष्य तृप्त नहीं होता। (७) कोई ग्रहण करता है, कोई त्याग करता है। (८) अग्नि काष्ठ को जलाती है। चिन्ता देह को जलाती है। (९) जो दीपक पतंगे को जलाता है वह स्वयं भी जलता है। (१०) लता उगती है। फूल खिलते हैं। (११) शाम को कमल बन्द हो जाते हैं (स√कुच, नि√मील)। (१२) मेरा हृदय काँपता है। चिन्ता बढ़ती है। मुझे शांति नहीं मिलती। आप प्रसन्न होते हैं (मुद्)। (१३) कोई संतान की चिन्ता करता है, कोई ईश्वर का ध्यान करता है। (१४) कोई शिव की पूजा करता है, कोई हरि का भजन करता है (भज)। (१५) भगवान् भक्त की रक्षा करता है (त्रै)। (१६) पवन चलता है। पत्ते गिरते हैं। वह फूल तोड़ता है। मैं वृक्षों को कुल्हाड़े (परशु) से काटता हूं। शस्त्र जीव को नहीं काटते। (१७) लोग आपकी प्रशंसा करते हैं और मेरी निन्दा करते हैं। (१८) वह मेरे कान मे कुछ कहता है। मैं सुनता हूँ पर तू नहीं सुनता। (१९) मुझे

---

* यह अभ्यास एक प्रकार से विद्यार्थी की परीक्षा है। एक साधारण विद्यार्थी जिसे गणों का परिचय और लट् मे धातुओं के रूपों का ज्ञान हो गया है, वह बोलकर इस अभ्यास को पाँच मिनट मे समाप्त कर सकता है।

कोई नहीं देखता। (२०) मैं जागता हूँ। तू सोता है। (२१) हम जानते हैं। तू गुरुओं की सेवा करता है (सेव्)। मै कुछ नहीं करता। (२२) वह दिन में सोता है और रात को जागता है। (२३) आत्मा न जन्मता है न मरता है। योगी जब शरीर छोड़ता है, स्वर्ग मे जाता है। जिसे कर्म नहीं बाँधते वह निर्वाण प्राप्त करता है। (२५) जो मुझे देखता है वह नष्ट नहीं होता।

—:०—

अभ्यास १३ (लट् का प्रयोग)

१. तू क्या कहता है? मैं इस पुरुष को पहले ही जानता हूँ। २. वह क्या पूछता है? तुम लोग कहाँ से आ रहे हो? ३. वह मुझ पर अकारण ही क्रोध करता है। ४ हम आपसे कुछ भी नहीं मांगते (याच् 1A) ५. इस लोक में किसको सदा सुख मिलता है। ६. दुष्ट लोग सज्जनों को तंग करते हैं (तुद् 6U)। वह हम दोनों से स्नेह करता है (स्निह् 4P with सप्तमी)। ७. शिष्य गुरु को प्रणाम करते हैं। गुरु शिष्यों को उपदेश करता है (उपदिश् 6P, अनुशास् 2P)। ८. वृक्ष स्वयं ही फलों को नहीं खाते। नदियाँ स्वयं ही पानी को नहीं पीतीं। ६. मैं अपना काम स्वयं ही करता हूँ। १०. वह फूलों को सूँघता है। ११. ऐसे विचार मुझे छू तक नहीं पाते (स्पृश)। उसे अहंकार छू तक नहीं गया। १२ अच्छा शिष्य गुरु की आज्ञा का उल्लंघन (उल्लघ् 1A, 10U, अतिक्रम् 1U, 4P) नहीं करता। १३. भगवान् भक्तों को दर्शन देते हैं।

अभ्यास १४

१. पुजारी मन्दिर में प्रवेश करता है। २. यह फूल मेरी आंखो को विशेपतया आकर्पित करता है ("सविशेषम वध्नाति मे चक्षुसी)

३. कौन सुख नहीं चाहता ? ४ गुण सबको आकर्षित कर लेते हैं। ५. वह कार्य आरम्भ करता है। ६. यति लोग तृष्णा को छोड़ देते हैं। ७. वह गाय की खोज करता है। ८. मोहन मुझ पर विश्वास करता है। ९. शिष्य गुरु की सेवा करता है। १०. वह गाना सीखता है। ११ वह सच्ची बात को छिपाता है। १२. वह फूलों को मसलता है (मृद्-9 P)। १३. मैं कपड़े पहनता हूँ (परि-धा, 3 U)। १४. तू कपड़े बदलता है (विपरि-धा)। १५. किसान सस्य को काटता है (लू 9 U)।

—:o:—

अपूर्ण क्रियाएं और पूरक

(Incomplete Verbs and the Complement)

नियम ३—होना (√भू, √वृत, √अस्), जानना, समझना (√ज्ञा, √तर्क, सं √भू णिजन्त, √गण्, आ √कल, अव√गम, √मन्), कहना, call name (अभि√धा, आ√चक्ष), चुनना (√वृ), बनना (√जन् और √कृ-कर्मवाच्य में, √भू), प्रतीत होना (seem, appear) प्रति√भा, √दृश्-कर्मवाच्य, √लक्ष-कर्मवाच्य) आदि अपूर्ण क्रियाएँ हैं। ऐसी क्रियाओं के साथ केवल कर्ता या कर्ता के अतिरिक्त केवल कर्म का प्रयोग करने पर वाक्य का भाव अपूर्ण रह जाता है। इसलिए भू, जन् आदि अकर्मक धातुओं के कर्ता के साथ, और √ ज्ञा, √तर्क् आदि सकर्मक धातुओं के कर्म के साथ पूरक लगाना पडता है।

उदाहरण

अयं संसारः <u>असारः</u> अस्ति (यह संसार असार है)। रुष्टे प्रिये अयं संसारः <u>असार</u> प्रतिभाति जायते भवति वा (प्रिय के रूठ जाने

पर यह संसार असार लगता है–बन जाता है)। अहम् इमम संसारम् असारम् जानामि अवगच्छामि आकलयामि वा (मै इस संसार को असार समझता हूँ)।

पूरक शब्द या तो विशेषण होता है, या कोई संज्ञा (Noun)।

नियम ४—पूरक यदि विशेषण हो तो उसका लिंग और वचन उस कर्ता अथवा कर्म के अनुसार होते हैं जिसके सम्बन्ध मे पूरक का प्रयोग हुआ हो।

उदाहरण—अयं संसारः विचित्रः अस्ति=इदं तृगज' विचित्रम् अस्ति=इयं सृष्टिः विचित्रा अस्ति।

—:o:—

अभ्यास १५

१. मेरा हृदय व्याकुल है। २ क्या तुम उसे मूर्ख समझते हो? ३. यह मेरी बात को झूठ समझता है। ४ रानी आज घबराई हुई दिखाई देती है। ५ क्रोध से राजा की आँखे लाल हो गई। ६ सब द्वार खुले हुए है। ७. वह धन को तिनके के समान समझता है।

नियम ५ (क)—पूरक यदि संज्ञा (Noun) हो तो उसका लिंग सदा अपना ही रहता है, और पूरक संज्ञा का यदि कोई विशेषण हो तो उस विशेषण का लिंग और वचन विशेष्य के अनुसार होता है।

नियम ५ (ख)—(१) क्रिया का पुरुष और वचन सदा कर्ता के अनुसार होता है न कि पूरक संज्ञा के अनुसार।

(२) क्रिया के स्थान मे यदि कृदन्त रूप प्रयुक्त किया जाय, तो उसका लिंग मुख्य कर्ता के अनुसार होगा न कि पूरक संज्ञा के अनुसार।

उदाहरण

विद्या बड़ा भूषण है।	विद्या परं भूषणम् (अस्ति)।
विद्या और सदाचार बडे भूषण हैं।	विद्या च शीलं च परे हि भूषणे (स्त.)
राम रघुकुल का उज्ज्वल भूषण है।	रामः रघुकुलस्य उज्ज्वल. अवतंस अस्ति
उपवास ही अजीर्ण का अच्छा इलाज है।	अनशनं हि शोभना प्रतिक्रिया अजीर्णस्य।
मालविका धारिणी के पास उपहार के रूप में भेजी गई।	मालविका धारिण्यै उपायनं प्रेपिता।
निर्दय आपने हमें इसका मूल्य ठहराया है।	कल्पिता मूल्यम् एतेपां क्रूरेण भवता वयम्।
सीता स्त्री-समाज का अमूल्य भूषण है।	सीता स्त्रीसमाजस्य अनर्घं भूषणम् (अस्ति)।

—:o:—

अभ्यास १६

१. दूसरों की निन्दा करना (परनिन्दनं) दुर्जनों का स्वभाव है। २. पिशुनता बडा पाप है। ३. * दान, भोग और नाश—ये तीन ही धन की हालतें होती हैं। ४ विद्वानों का तिरस्कार और मूर्खों का सम्मान मुझे तीक्ष्ण बाण की भाँति (चुभते) हैं। ५. आततायियों का वध पाप नहीं है। ६. बुढ़ापा इन्द्रियों का शत्रु है। ७. ये दोनों लड़के अपने पिता का प्रतिबिम्ब ही हैं। ८ इस पुस्तक का मूल्य पाँच रुपये हैं। ९. ललिता सकल स्त्रीसमाज का शृंगार और माता-पिता का जीवन है। १०. वह अपने कुल का अवतंस और विद्वत्समाज का मण्डन है। ११. चरित्रहीन स्त्री कुल का कलंक होती है। १२. देश-सेवा ही मेरा एक अपराध है। १३ रस ही काव्य की आत्मा है।

---

* दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य (भर्तृ)।

१४. दूसरों की सेवा करना ही निर्धनों का भाग्य है। १५. दुःख ही अज्ञान का परिणाम है। १६. सेवा कुत्ते की वृत्ति कही गई है। १७. नागरिकों की सतत जागरूकता राष्ट्र की स्वतन्त्रता का मूल्य है।

— ० —

नपुसकलिग एकवचन मे प्रयुक्त होने वाले शब्द

नियम ६—पात्र, भाजन, स्थान, आस्पद, निकेतन, निधान, धामन्, अगार (Meaning—house, abode, object, etc., used figuratively), पद, मूल, कारण, प्रमाण आदि नपुंसकलिंग के शब्द जब पूरक हों तो वे केवल एकवचन मे प्रयुक्त होते हैं चाहे कर्ता किसी भी लिंग या वचन में हो। क्रिया सदा कर्ता के अनुसार होगी न कि पूरक के अनुसार।

उदाहरण

तुम दोनों मेरे विश्वासपात्र हो=युवां मम विश्वासपात्रं स्थः (न कि 'अस्ति')। निर्धन लोग अपनों के भी तिरस्कार का आस्पद होते हैं=निर्धना आत्मयीनामपि तिरस्कारास्पदं भवन्ति। मैं ही तुम्हारी उन्नति का कारण बन गई हूँ=अहम् एव तव उन्नतेः कारणं जाता अस्मि।

—:०:—

अभ्यास १७

१. निर्धनता सब आपत्तियों का घर (आस्पदम्) है। २. संपत्तिय दुःखों का कारण (पदम्) है। ३. अविवेक विपत्तियों का बड़ा कारण (परं पदं) है। ४ पतिव्रता स्त्रियाँ ही धार्मिक क्रियाओं का मूल कारण हैं। ५ परस्पर द्वेष हमारी अवनति का प्रधान कारण है। ६. उद्धत शिष्य गुरु के कोप का भाजन बनता है। ७. सन्तान माता-पिता के प्रेम का साधारण केन्द्र होती है। ८. इस विषय मे आप लोग ही

प्रमाण हैं। ९. यदि चन्द्रमा विश्वसनीय (प्रमाणम्) नहीं तो विजया कह दे। १०. सज्जन की संगति पतितों की उन्नति का कारण होती है। ११. हे राजन्! हम नगरवासी कब आपकी कृपा के पात्र बनेंगे?

—.०:—

कर्ता और क्रिया का संबध—(२)

'च' (Subjects joined by 'And')

नियम ७—(क) जब दो या अधिक कर्ता 'और' से जोड़े जायँ, तो 'च' प्रत्येक कर्ता के साथ लगता है या केवल अन्तिम के साथ। ('च' वाक्य के आरम्भ मे कदापि नहीं आता)। इस प्रकार 'च' से जुड़ने पर कर्ता के सामूहिक वचन के अनुसार क्रिया का वचन होता है।

(ख) यदि कर्ता में उत्तम, मध्यम और प्रथम पुरुष—तीनों ही हों तो क्रिया उत्तम पुरुष मे होगी, यदि केवल मध्यम और प्रथम पुरुष हों तो क्रिया मध्यम पुरुष में होगी।

उदाहरण

सूर्य और चन्द्र आकाश के नेत्र हैं।	सूर्यश्च चन्द्रश्च आकाशस्य नेत्रे स्तः
तू, मैं और राम वहाँ जायँगे।	त्वं च अहं रामश्च तत्र गमिष्यामः
तू और मैं वहाँ जायँगे।	त्वं च अहं च तत्र गमिष्यावः।
राम और मैं वहाँ जायँगे।	रामश्च अहं च तत्र गमिष्यावः।
राम और तू वहाँ जाओगे।	त्वं च रामश्च तत्र गमिष्यथः।
मै और वे लड़के वहाँ जायँगे।	ते बालाश्च अहं च तत्र गमिष्यामः
वह लड़का और हम वहाँ जायँगे।	स बालश्च वयं च तत्र गमिष्यामः।
तुम (सब) और मै वहाँ जायँगे।	यूयं च अहं च तत्र गमिष्यामः।
तू और हम वहाँ जायँगे।	त्वं च वयं च तत्र गमिष्यामः।
तू और वे लड़के वहाँ जाओगे।	त्वं च ते बालाश्च तत्र गमिष्यथ।
वह लड़का और तुम (दो) वहाँ जाओगे।	युवां च स बालश्च तत्र गमिष्यथ।

'वा' (Subjects joined by 'Or')

नियम ८—जब दो या अधिक कर्ता 'वा' द्वारा जोड़े जायँ तो क्रिया का पुरुष और वचन निकटतम कर्ता के अनुसार होता है, चाहे भिन्न-भिन्न कर्ता भिन्न-भिन्न पुरुषों और भिन्न-भिन्न वचनों मे हों। 'वा' प्रत्येक कर्ता के साथ लगता है, या केवल अन्तिम के साथ परन्तु वाक्य के आरम्भ मे कभी नहीं आता।

उदाहरण

समान पुरुष (प्रथम पुरुष) और एकवचन के कर्ता

पिता या भाई मुझे बुला रहा है।	पिता व भ्राता वा माम् आकारयति
सीता रमा या उमा गा रही है।	सीता रमा उमा वा गायति।

समान पुरुष (प्रथम पुरुष) और भिन्न-भिन्न वचनो के कर्ता

राजा या मन्त्री लोग इस रहस्य को जानते हैं।	राजा वा मन्त्रिण वा इदं रहस्यं जानन्ति।
मन्त्री लोग या राजा इस रहस्य को जानता है।	मन्त्रिणः वा राजा वा इदं रहस्य जानति।

भिन्न-भिन्न पुरुषो और भिन्न-भिन्न वचनो के कर्ता

तू या हम (सब) वहाँ जायँगे।	त्वं वा वयं वा तत्र गमिष्यामः।
हम (सब) या तू वहाँ जायगा।	वय वा त्वं वा तत्र गमिष्यसि।
तुम (सब) या राम वहाँ जायगा।	यूयं वा रामः वा तत्र गमिष्यति।
राम या तुम (दो) वहाँ जाओगे।	राम वा युवां वा तत्र गमिष्यथः।

—:o—

अपूर्ण वर्तमान काल

(Present Continuous Tense)

यदि क्रिया का व्यापार अब से कुछ समय पूर्व आरम्भ होकर अब तक चल रहा हो, तो हिन्दी मे इस काल को अपूर्ण वर्तमान

कहते हैं। जैसे कि—'वह घर जा रहा है', 'राम प्रात काल से पढ़ रहा है'। परन्तु संस्कृत मे सामान्य वर्तमान (Present Indefinite) और अपूर्ण वर्तमान (Present Continuous) मे कोई भेद नही माना गया। अपूर्ण वर्तमान भी वर्तमान काल ही है (प्रारब्धोऽपरिसमाप्तश्च कालो वर्तमान॰ कालः) और इसके लिए लट् का प्रयोग किया जाता है। पतंजलि ने स्पष्ट कहा है—प्रवृत्तस्याविरामे शासितव्या भवन्ती। 'भवन्ती' लट् का ही दूसरा नाम है।

उदाहरण—वह घर जा रहा है—स गृह गच्छति। राम प्रात॰काल से पढ़ रहा है=आ कल्याद् अधीते रामः।

यदि वर्तमान, भूत या भविष्यत् किसी भी काल मे क्रिया के अनवच्छिन्न सातत्य (uninterrupted continuity) के भाव पर विशेपतया जोर देना हो तो 'आस्' और 'स्था' धातुओं के साथ शत्रन्त और शानच् (Present Participle) का प्रयोग किया जाता है। (देखिये शत्रन्त का प्रयोग—दूसरा अध्याय)।

नियम ६—शत्रन्त और शानच् के साथ अस् और भू धातु का प्रयोग सस्कृत प्रणाली के अनुकूल नहीं है।

उदाहरण—इसलिए 'स गृहं गच्छन् अस्ति', 'आ कल्याद् अधीयानोऽस्ति रामः' आदि नहीं लिखना चाहिए।

—:o:—

अभ्यास १८ (लट् का प्रयोग)

१. सूर्य अस्त हो रहा है। २ सड़कों पर दीपक जल रहे हैं। ३. कोई आदमी मुझे बुला रहा है। ४. नौकर द्वार खटखटा (आ√हन्) रहा है। ४. महाराज इधर ही आ रहे हैं। ५. बच्चा माँ की गोद मे सो रहा है। ६. परीक्षा निकट आ रही है (प्रति-आ-सद् 1 or 6 P) ७. समय निकला जा रहा है (अति√इ)। ८ गर्मी का प्रभाव घट रहा है (ह्रस 1 P)। ६. बुढापे मे भी उसकी तृष्णा बढ़ रही है (जृम्भ 1 A)।

१०. उसका यश सर्वत्र फैल रहा है (प्रथ् 1 A)। ११. मैं सोमवार से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। १२ कल रात से वर्षा हो रही है। १३. वह जन्म से ही दु:ख भोग रहा है।

क्रिया का पौन:पुन्य तथा भृशार्थ❀

यदि वर्तमान, भूत, भविष्यत्—किसी भी काल में क्रिया का बार बार होना (पौन:पुन्य) या आधिक्य से होना (भृशार्थ) पाया जाय, तो धातु के लोट, मध्यम पुरुष, एकवचन के रूप[1] को दो बार लिखकर, तदनन्तर कर्ता के साथ उसी धातु[2] का (अन्य धातु का नहीं) अभीष्ट लकार में कर्ता के अनुकूल पुरुष और वचन का रूप प्रयुक्त होता है।

उदाहरण

१. कर्मफल में आसक्ति रखने वाला बार-बार जन्म लेता है पर मुक्त नहीं होता।	१. जायस्व जायस्व इत्येव जायते कर्मफलासंगी न तु निर्वाणं लभते (प्रथम पुरुष, एक वचन लट)।
२. हम (दो) ने बार-बार यत्न किया पर सफलता न मिली।	२ यतस्व यतस्व इत्येवावाम् अयतावहि न पुन: सिद्धिम् आप्नुव (उत्तम पुरुष, द्विवचन, लङ्)।
३. तुम (सब) यहाँ बार-बार आओगे पर मुझे कभी नहीं पाओगे।	३. आयाहि आयाहि इत्येव यूयम् इह आयास्यथ न जातु मां वेदिष्यथ (मध्यम पुरुष, बहुवचन, लृट्)।

यदि कर्ता मध्यम पुरुष बहुवचन में हो, तो वाक्य के आदि मे लोट् एकवचन के स्थान में विकल्प से लोट् बहुवचन का भी प्रयोग हो सकता है।

❀ पहली आवृत्ति मे इस पाठ को छोड दिया जा सकता है।

१. लोट् में 'हि' और 'स्व' आदेश होते हैं।

२. क्रियासमभिहारे लोट् ३. ४. २. (पौन: पुन्यं भृशार्थो वा क्रियासमभिहार:—काशिका) यथाविध्यनुप्रयोग: पूर्वस्मिन् ३. ४ ४।

३. तुम यहाँ बार-बार आओगे पर मुझे नहीं पाओगे।	३. आयात आयात इत्येव यूयम् इह आयास्यथ न जातु मां वेदिष्यथ।

एक ही कर्ता की अनेक क्रियाओं का समुच्चय

(क) जब किसी भी काल में एक ही कर्ता की अनेक क्रियाओं को समुच्चित किया जाय तो (पूर्व की भाँति) लोट् का प्रयोग विकल्प* से होता है। कर्ता के साथ उसी धातु का प्रयोग होता है जो कि लोट में प्रयुक्त हुआ हो।

(ख) यदि लोट् में आये धातु भिन्न-भिन्न हों तो कर्ता के साथ ऐसे धातु का प्रयोग होता है जो कि पहले आये सभी धातुओं का सामान्य अर्थ सूचित करे।

उदाहरण

(क) (एक धातु का प्रयोग—अनेक क्रियाओं का समुच्चय)

(१) वह कभी दुःख का विचार करता है कभी सुख का विचार करता है, कभी हानि का विचार करता है, कभी लाभ का विचार करता है।	(१) दुःखं चिंतस्व सुखं चिन्तस्व हानिं चिंतस्व लाभं चिंतस्व इत्येव अयं चिन्तयति। (पक्षे) दुःखं चिन्तयति सुखं चिंतयति हानिं चिंतयति लाभं चिंतयति इत्येव अयं चिन्तयति।

(क) समुच्चयेऽन्यतरस्याम् ३. ४. २ (अनेकक्रियाध्याहार. समुच्चय.—काशिका) विकल्प का आशय यह है कि लोट् का प्रयोग न करके, प्रत्येक धातु को अभीष्ट लकार में भी रखा जा सकता है। उदाहरण—छन्दोऽधीष्व व्याकरणमधीष्व निरुक्तमधीष्व इत्ययमधीते। अथवा छन्दोऽधीते व्याकरणमधीते निरुक्तमधीते इत्येवायमधीते—काशिका।

(ख) समुच्चये सामान्यवचनस्य ३. ४. ५.

(२) हम कभी धान्य खरीदते है, कभी घी खरीदते हैं और कभी कपड़ा खरीदते है ?

(२) धान्य क्रीणीष्व घृतं क्रीणीष्व वस्त्रं क्रीणीष्व इत्येव वय क्रीणीमहे।
(पक्षे) धान्यं क्रीणीमहे घृतं क्रीणीमहे वस्त्रं क्रीणीमहे इत्येव वय क्रीणीमहे।

(३) लोग कभी सन्तान की कामना करते हैं, कभी सुख की कामना करते हैं और कभी यश की कामना करते हैं।

(३) धनं कामयस्व अपत्य कामयस्व सुख कामयस्व यश. कामयस्व इत्येव लोकाः कामयन्ते।
(पक्षे) धनं कामयन्ते अपत्यं कामयन्ते सुखं कामयन्ते यशः कामयन्ते इत्येव लोकाः कामयन्ते।

भिन्न-भिन्न धातुओ का प्रयोग—अनेक क्रियाओ सा समुच्चय

(१) ये बालक कभी कूद, कभी नाच कभी गा, और कभी हँसकर आनन्द मना रहे हैं।

(१) कूर्दस्व नृत्यस्व गायस्व हसस्व इत्येव इमे बटवः रमन्ते।
(पक्षे) कूर्दन्ते नृत्यन्ते गायन्ति हसन्ति इत्येव इमे बटव रमन्ते।

(२) प्रिय के विरह में वह बेचारी दु खी हो रही है—कभी उत्कठित होती है, कभी व्याकुल होती है, कभी रोती है, कभी चिल्लाती है और कभी मूर्च्छित हो जाती है।

(२) उत्कण्ठस्व ताम्यस्व विलपस्व क्रोशस्व मूर्च्छस्व इत्येव सा वराकी प्रियविरहे सीदति।
(पक्षे) उत्कण्ठते ताम्यति विलपति क्रोशति मूर्च्छति इत्येव सा वराकी प्रिय-विरहे सीदति।

(३) कभी अन्दर आ, कभी बाहर जा, कभी इधर बैठ, कभी उधर बैठ, कभी यह ले और कभी वह दे—इसी तरह नौकर सारा दिन स्वामी की सेवा करता रहता है।

(३) अन्तरायाहि बहिर्याहि इतो निषीदस्व ततो निषीदस्व इद गृहाण तद् देहीत्येव भृत्यः सर्वं दिन प्रभुम् उपचरति।
(पक्षे) अन्तरायाति बहिर्याति इतो निषीदति ततो निषीदति इदं गृह्णाति तद्ददाति इत्येव भृत्य. सर्वं दिनं प्रभुम् उपचरति।

दूसरा पाठ

भूत काल (Past Tense)

भूत काल (Past Tense) का अर्थ संस्कृत में कई प्रकार से व्यक्त किया जाता है। लङ् (Past Imperfect), लिट् (Past Perfect) और लुङ् (Aorist) के अतिरिक्त भूत के अर्थ में (१) लट् के साथ 'स्म' शब्द उपपद में रखा जाता है,* (२) 'स्म' का प्रयोग न करके केवल 'पुरा' शब्द के साथ लट् आदि का प्रयोग किया जाता है*। इन लकारों के अतिरिक्त क्तान्त (Past Passive Participle) और क्तवत्वन्त (Past Active Participle) भी भूत का अर्थ देते हैं। यहाँ हम केवल लकारों को लेते हैं।

प्राचीन काल में जब संस्कृत शिष्ट वर्ग की बोलचाल की भाषा थी तब लङ्, लिट् और लुङ् का प्रयोग अनद्यतन (आज से पहले की घटना), परोक्ष (ऐतिहासिक या ऐसी घटना जो वक्ता ने स्वयं न देखी हो), अनद्यतन (आसन्न भूत में या आज ही हुई घटना) आदि भूत-

---

* लट् स्मे, ३. २. ११८, अपरोक्षे च—३. २. ११९।

* पुरि लुङ् चास्मे ३ २. १२२।

'पुरा' शब्द प्रयुक्त हो तो अनद्यतन भूत के लिये (१) लट, (२) लङ, (३) लिट् और (४) लुङ् का प्रयोग होता है। ध्यान रहे कि पिछले तीन लकारो में 'पुरा' के साथ 'स्म' का प्रयोग नहीं हो सकता, परन्तु लट् में 'पुरा' और 'स्म' का एकत्र प्रयोग हो सकता है। उदाहरण—

पहले यहाँ छात्र रहा करते थे=पुरा इह छात्रा. वसन्ति (वसन्ति स्म), अवसन, ऊषु अवात्सु वा।

पहले भारतवर्ष में बड़े-बड़े यज्ञ हुआ करते थे—पुरा भारतवर्षे सुदीर्घाणि सत्राणि प्रवर्तन्ते (प्रवर्तन्ते स्म), प्रावर्तन्त, प्रवनृतिरे, प्रावर्तिषत वा।

काल की विविध अवधियों को स्पष्टतया व्यक्त करने के लिये किया जाता था। पर बाद में जब संस्कृत बोलने के स्थान में केवल लिखने-पढ़ने की भाषा रह गई तो इन तीनों लकारों के यथार्थ प्रयोग का नियम शिथिल हो गया और साधारणतया भूतकाल के अर्थों मे तीनों लकार प्रयुक्त होने लगे।

नीचे हम पाणिनि के अनुसार लकारों का यथार्थ प्रयोग दिखायेंगे।

भूतकालिक लकारों का विवेचन

नियम १०—लङ् का प्रयोग तब हो सकता है यदि क्रिया आज से पहले हुई हो, चाहे वक्ता ने उसे देखा हो या न। यदि वक्ता ने उसे स्वयं नहीं देखा, तो अन्य लोगों ने उसे अवश्य देखा हो और वह ऐसी हो जिसका देखना अथवा जानना वक्ता के लिये सर्वथा संभव था।[1]

नियम ११—लिट् का प्रयोग तभी होता है यदि क्रिया अनद्यतन और परोक्ष हो। इसलिये ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख करने में प्रायः यही लकार प्रयुक्त होता है और केवल प्रथम पुरुष (Third person) के योग मे।[2]

परन्तु यदि वक्ता उन्माद, निद्रा आदि की अवस्था में कोई क्रिया करे, तो वह क्रिया भी परोक्ष मानी जाती है और उसके लिये लिट् लकार का उत्तम पुरुष मे भी प्रयोग हो सकता है।[3]

यदि वक्ता अपना किसी क्रिया का अपह्नव (Denial) करना चाहे, अर्थात् किसी कार्य-विशेष के सम्बन्ध मे वह यों कहे कि मैंने क्रिया ही नहीं, तो भी उत्तम पुरुष के योग मे लिट् का प्रयोग होता है।[4]

---

१. अनद्यतने लङ् (३. २. १११) परोक्षे च लोकविज्ञाते प्रयोक्तुर्दर्शनविषये लङ् वक्तव्यः (वार्तिक)।

२. परोक्षे लिट् (३. २. ११५)।

३. उत्तमपुरुषे चित्तविक्षेपादिना पारोक्ष्यम् (सिद्धान्तकौमुदी)।

४. अत्यन्तापह्नवे च लिट् वक्तव्यः (वार्तिक)।

लट्+स्म—स्म के उपपद होने पर लट् का प्रयोग अनद्यतन परोक्ष भूत तथा अनद्यतन अपरोक्ष भूत के अर्थों में होता है।[1]

ऊपर किये गये विवेचन से यह सिद्ध होता है कि—

(क) अनद्यतन परोक्ष भूत (ऐतिहासिक घटनाओं) के लिये तथा अनद्यतन परोक्ष भूत (अनैतिहासिक घटनाओं) के लिये (१) लङ् (२) लिट और (३) लट्+स्म का प्रयोग हो सकता है।

(ख) अनद्यतन अपरोक्ष भूत के लिये लङ् और लट्+स्म का प्रयोग होता है।

ध्यान रहे कि अनुवाद के लिये दिये गये वाक्यों में जहाँ एक से अधिक लकार सूचित किये गये हैं, वहाँ छात्रगण अपनी इच्छा से अथवा अध्यापक के संकेत के अनुसार किसी एक लकार का प्रयोग कर सकते हैं। यह बात भविष्यत् आदि के लिये भी समझ लेनी चाहिये।

अनद्यतन परोक्ष भूत (१)

(प्राचीन ऐतिहासिक घटनाएँ)

(लङ्, लट्+स्म, और लिट्)

नियम १२—प्राचीन ऐतिहासिक तथा पौराणिक घटनाओं के उल्लेख के लिये संस्कृत में बहुधा लिट् का प्रयोग होता है (परन्तु यदि छात्रगण लिट् के स्थान में लङ्, अथवा लट+स्म का प्रयोग करें तो अशुद्ध न होगा।)

उदाहरण—युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया=(लिट) युधिष्ठिर. अश्वमेधेन इयाज (ईजे वा)। (लङ) युधिष्ठिरः अश्वमेधेन अयजन (अयजत वा)। (लट) युधिष्ठिरः अश्वमेधेन यजति स्म (यजते स्म वा)।

—·○—

1. लट् स्मे (३. २. ११८), अपरोक्षे च (३. २. ११६)।

अभ्यास १६

ऐतिहासिक एव पौराणिक घटनाएँ

(लङ्, लट्+स्म, अथवा लिट्)

(क) अर्जुन ने अपने सामने पूज्य गुरुओं और प्रिय बाधवों को देखा। उसका दिल व्याकुल हो उठा। उसके हाथ और पॉव कॉपे। उसने मन मे सोचा। वह चिन्ता में डूब गया। वह कुछ भी बोल न सका। वह कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा। उसने श्रीकृष्ण से एक प्रश्न किया। श्रीकृष्ण ने उसके प्रश्न को ध्यान से सुना। अर्जुन राज्य नहीं चाहता था। गुरुओं का वध करना उसे पसन्द न था। बाल्यकाल मे पाण्डव कौरवों के साथ खेले थे। द्रोणाचार्य ने राजकुमारों को युद्धविद्या सिखाई। दुर्योधन पाण्डवों से द्रोह करता था। भगवान् ने शोक मे डूबे हुए अर्जुन को उपदेश किया। भगवान् ने अर्जुन को शोक से उबारा। अर्जुन को शान्ति मिली। कुरुक्षेत्र में कौरवों और पांडवों के बीच घोर युद्ध हुआ।

(ख) कौशल्या ने राम को जन्म दिया (सू 2A, जन् C)। राजा दशरथ ने अपनी लड़की शान्ता राजा लोमपाद को दे दी। लोमपाद ने शान्ता को अपनी संतान की भॉति पाला (पुष् १, 9 P)। विभाण्डक के पुत्र ऋष्यशृंग ने शान्ता से विवाह किया। दशरथ ने राम को राज्य से निर्वासित कर दिया। दशरथ ने प्राण त्याग दिये। राम, लक्ष्मण और सीता तेरह वर्ष जन-स्थान मैं रहे। रावण सीता को चुरा ले गया (हृ, 1 P)। सीता के अपहरण किये जाने पर राम ने बहुत विलाप किया। लङ्का के युद्ध मे अनेक राक्षस मारे गये। लक्ष्मण मूर्च्छित हो गया और भूमि पर गिर पडा। राम ने विभीषण को लंका का राज्य दे दिया। लक्ष्मण और सीता के साथ राम पुष्पक विमान मे बैठकर अयोध्या को लौट आये।

(ग) १. यूनान देश के सम्राट् अलक्षेन्द्र ने तक्षशिला के राजा पुरु को पराजित किया। २. अजातशत्रु ने राज्य के लोभ से अपने वृद्ध पिता बिम्बिसार का वध किया। ३. प्रसेनजित ने अपने बहनोई की हत्या का बदला लेने के लिये अजातशत्रु पर चढ़ाई की (अभि√या 2 P)। ४. कुछ समय तक युद्ध करके प्रसेनजित् ने अजातशत्रु से सन्धि कर ली (सम्√धा 3 U)।

—०—

अनद्यतन परोक्ष भूत (२)

(अनैतिहासिक घटनाएँ)

(लङ्, लट+स्म, और लिट्)

नियम १३—भूतकाल के लिये लङ् और लट+स्म का प्रयोग सिद्ध ही है। पर ध्यान रहे कि लिट् का प्रयोग उत्तम पुरुष में तभी होगा यदि वक्ता अपनी क्रिया का अपह्नव करना चाहे, या उन्माद की अवस्था मे की गई क्रिया का उल्लेख करे।

अपह्नव—क्या तुमने श्रीनगर में प्रदर्शनी को देखा था? नहीं, मैं श्रीनगर नहीं गया।

श्रीनगरे प्रदर्शनीम् अद्राक्षी. (अपश्यः) किम्। नाहं श्रीनगरं जगाम।

(परन्तु यदि 'जगाम' के स्थान मे 'अगच्छम' अथवा गच्छामि स्म कह दे, तो कोई दोष नहीं)।

मै सोया हुआ बड़बड़ाता रहा=सुप्तोऽहं प्रललाप। (अथवा—प्रालपम, प्रलपामि स्म)।

शराब के नशे मे हमने पूज्य अभ्यागतों को गालियाँ दीं=मद्योन्मत्ता वय पूज्यान् अभ्यागतान् अपोदिम (अप+ऊदिम) अथवा—अपावदाम, अपवदाम स्म)।

कहते हैं कि उन्माद की अवस्था में मैंने उसके सामने बहुत कुछ बका—बहु जगद पुरस्तात् तस्य मत्ता किलाहम्।

—:o:—

अभ्यास २०

अनैतिहासिक घटनाए

(लङ, लट्+स्म अथवा लिट्)

१. फिर वसन्त के आने पर कामदेव ने युवकों के हृदय बींध दिये। २. सूर्य अस्त हो गया और कमल बन्द हो गये (सं√कुच, नि√मील)। ३. चाँद को ग्रहण लग गया (उप√रंज् 4 U) और सर्वत्र अन्धकार फैल गया (प्र√वृत्)। ४. उस समय वायु बड़े वेग से बह रहा था (√वह, √वा)। ५. प्रबल झंझावात ने अनेक ऊचे वृक्षों को जड़ से उखाड़ दिया (उद्—√मूल् 10 U)। ६ बादल गरजा, बिजली चमकी (द्युत् 4 A, दीप् 4 A) और मूसलाधार वर्षा होने लगी। ७. फिर वर्षा ऋतु में वह तालाब पानी से भर गया (पूर् 4 A)। ८. दीर्घ ज्वर से उसका शरीर दुबला-पतला हो गया (कृश् 4 P)। ९. उसने सप्ताह भर औषध का सेवन किया और उसका ज्वर जाता रहा। १०. पुत्र को फिर स्वस्थ देख कर माता की चिन्ता दूर हो गई (शम् or उपशम् 4 P)। ११. उसने अनेक व्रत-उपवास किये और अन्त में उसकी कामना पूरी हुई। (सं√पद् 4A, सिध् 4P)। १२. बुढ़िया का इकलौता बेटा नाराज होकर विदेश चला गया (प्र√स्था) और फिर न लौटा। १३. तपस्वियों के वल्कल वृक्ष-शाखाओं पर लटक रहे थे (√लम्ब् 1 A)। १४. चोर सेंध लगाकर घर के अन्दर घुस गये। १५. मालिक जाग उठा और चोर भाग गये (पलाय् 1 A)। १६. मां की आवाज सुनते ही बच्चे ने नेत्र खोले (उन्मील् C, उन्मिष् C)। १७. उसने आम को चखा (आ√स्वाद् 10 U) और खट्टा देख कर

फेंक दिया। १८ धोबी ने कपड़े धोये और भूमि पर बिछा दिये (प्र√सृ C)। १६. ऋणी होकर उसने अपना मकान और स्त्री के आभूषण बेच डाले।

—.०.—

अभ्यास २१

(लङ्, लट्+स्म अथवा लिट)

१. यात्रा से श्रान्त पथिक ने अपना घोड़ा वृक्ष से बाँध दिया (बन्ध् 9 P) और वृक्ष के नीचे बैठ गया। थोड़ी देर बाद वह वहीं सो गया। २. दूर से ही दस्युदल को आता देख कर भयभीत अबला ने गृहद्वार बन्द कर दिया (अपि√धा 3 U)। ३ स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने नाटक, काव्य और कथाओं की रचना करके बंगला साहित्य की श्री-वृद्धि की। ४. कवीन्द्र रवीन्द्र का यश सकल भूमण्डल पर फैल गया। ५ श्री जयशङ्कर प्रसाद ने भारत के प्राचीन गौरव की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया। ६. प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में ग्राम्य जीवन का विशद वर्णन किया तथा समाज मे प्रचलित कुप्रथाओं की तीव्र आलोचना की। ७. प्रसिद्ध भारतीय विज्ञानवेत्ता श्री जगदीश चन्द्र वसु ने प्रयोगों द्वारा सिद्ध कर दिखाया कि वृक्ष भी अन्य प्राणियों की भाँति साँस लेते है। ८. कल्हण नामक काश्मीरी विद्वान् ने राजतरङ्गिणी को रचा और उसमे काश्मीर के इतिहास का वर्णन किया। ६ सबसे पहल गेलीलियो ने दूरदर्शक यन्त्र का आविष्कार किया। १०. राजा लक्ष्मणसिंह ने कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तल नामक नाटक का हिन्दी भाषा मे अनुवाद किया। ११. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी गद्य की भाषा को परिष्कृत किया और अपनी रचनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य के सभी अंगों को अलकृत किया।

अपह्नव

१२. क्या तुमने मेरा घोड़ा चुराया है? नहीं, मैंने तो तुम्हारा घोड़ा

देखा ही नहीं। १३. सखि, क्या तुम्हें उस दिन ललिता का गाना पसन्द आया ? नहीं, मैंने तो उसका गाना सुना ही नहीं। १४. राजन्, क्या तुम्हारी अनुज्ञा से विद्रोही को मुक्त किया गया है ? नहीं, मैंने उसे मुक्त करने के लिये किसी को संकेत तक नहीं किया। १५. श्याम, क्या तुम सैर से लौट आये हो ? नहीं, मै तो कहीं बाहर नहीं गया। १६. लोग कहते हैं कि मैंने मदिरा से उन्मत्त होकर सारा रहस्य प्रकट कर दिया (रहस्यं√भिद्), परन्तु मुझे तो कुछ स्मरण नही।

— o —

अनद्यतन अपरोक्ष भूत

नियम १४——अनद्यतन अपरोक्ष भूत के लिये लङ् और लट्+स्म का प्रयोग होता है, अपरोक्ष होने के कारण यहा पर लिट् का प्रयोग कदाचित् नहीं हो सकता।

—:o:—

अभ्यास २२

(लङ् अथवा लट्+स्म)

१. उस दिन गुरुजी ने कहा था कि अजीर्ण मे घी विष होता है।२. उसने मुझसे मेरा नाम पूछा। ३ मैंने उसे कुछ उत्तर न दिया। ४. तूने अपने छोटे भाई को क्यों मारा ? ५. नगर के गली बाजारों मे दीपक जल रहे थे। ६. आकाश मे पूर्ण चन्द्र उदय हुआ और भँवरे कुमुदों से निकल आये। ७ मैंने उसकी आवाज सुनी पर अन्धकार के कारण उसे देख न पाया। ८. असावधानता के कारण दूध का पात्र मेरे हाथ से छूट गया (भ्रश् 4P)। ९. मैं अपनी पुस्तक को उठाने के लिए झुका और मोहन ने मुझे पीछे से धक्का दे दिया (प्रणुद् 6 U)। १०. मैंने पसीने की बूँदों को पोंछा। (मार्ज् 10 U)। ११. तुम्हें

उस हालत में देख कर मेरा दिल बहुत दुःखी हुआ (√दू 4 A)। १२. रात्रि के प्रगाढ़ अन्धकार में न जाने मेरा साथी कहाँ लुप्त हो गया (वि√ली, 4 A, √लुप् 4 P)। १३. मैंने उसे बहुत ढूँढा (अन्विष् 4 P, गवेष् 10 P) पर वह कहीं न मिला (=पर उसे कहीं न पाया –√लभ्, विन्द्)। १४ तब मैंने यही निश्चय किया कि मुझे रात भर उसी गाँव में ठहरना चाहिये। १५ द्वारपाल ने मुझे भीतर आने की अनुज्ञा दे दी (अनु√ज्ञा, अनु√मन् 4A)। १६ मैंने उसे युद्धके दिनों में विदेश जाने से रोका (वृ—नि√वृC)। १७ उद्यानपाल ने कुछ पके हुए फल तोड़े (लू 9 U) और मुझे दिये (उप√हृ 1 P)। १८. हमने शत्रु के दुर्ग को घेर लिया (उप√रुध् 7 A)। १९. सिपाहियों ने यथाशक्ति दुर्ग की रक्षा की (गुप् 1 P गोपायति etc)। २०. राजा ने डर कर हमारी शरण ली (आ√श्रि 1 U आश्रयति-आश्रयते स्म)।

— ० —

अनद्यतन अपरोक्ष भूत*

(लृट् का विशेष प्रयोग)

कृष्ण, क्या तुम्हें स्मरण है हम श्रीनगर में रहे थे, इस वाक्य के अनुवाद में—

(१) 'यद्' शब्द प्रयुक्त हो तो क्रिया लट् में होती है। यथा—स्मरसि (अभिजानासि बुध्यसे चेतयसे वा) कृष्ण यद् वयं श्रीनगरेऽ-वत्स्याम [1]।

* पहली आवृत्ति में यह पाठ छोड़ा जा सकता है।

१ न यदि (३. २. ११३) भावार्थ—यद्-शब्द सहित स्मरणार्थक धातु के उपपद होने पर, अनद्यतन भूत के अर्थ में लङ् का ही प्रयोग होता है।

(२) 'यद्' शब्द प्रयुक्त न हो तो क्रिया अवश्य लृट् में होती है। यथा—स्मरसि कृष्ण (वय) श्रीनगरे वत्स्याम[१]।

परन्तु यदि वास का स्मरण करा के ही वाक्य को समाप्त न कर दिया जाय, प्रत्युत् वास से सम्बन्ध रखने वाली कोई अन्य घटना भी लक्षित की जाय, तो लङ् और लृट् दोनों लकार आ सकते हैं, चाहे 'यद्' शब्द प्रयुक्त हुआ हो या न हुआ हो[२]।

उदाहरण—कृष्ण, क्या तुम्हें स्मरण है हम श्रीनगर में रहे थे और वहाँ प्रदर्शनी को देखा था[३]—

यद् शब्द सहित	स्मरसि कृष्ण यद् वयश्रीनगरेऽवसाम(यत्)[४]तत्रप्रदर्शनीमपश्याम स्मरसि कृष्ण यद्वयश्रीनगरे वत्स्याम (यत्)[४]तत्रप्रदर्शनींद्रक्ष्यामः
यद् शब्द वर्जित	स्मरसि कृष्ण वय श्रीनगरेऽवसाम तत्र प्रदर्शनीम् अपश्याम। स्मरसि कृष्ण वय श्रीनगरे वत्स्याम. तत्र प्रदर्शनी द्रक्ष्याम.।

—:o.—

अभ्यास २३

(भूत के अर्थ में लृट् का प्रयोग)

१. मोहन, क्या तुम्हें स्मरण है हमारे पड़ोस में एक बुढ़िया रहती थी? २. मित्र, क्या तुम्हें स्मरण है छात्रावास मे हम इकट्ठे

---

१. अभिज्ञावचने (३ २ ११२) भावार्थ—यद्-शब्द वर्जित स्मृत्यर्थक धातु के उपपद होने पर अनद्यतन भूत के अर्थ मे लृ होता है, लङ् नहीं होता।

२ विभाषा साकाङ्क्षे (३ २. ११४) अभिज्ञावचन उपपदे यच्छब्दसहिते केवले च विभाषा लृट् प्रत्ययो भवति साकाङ्क्षश्चेत्प्रयोक्ता।

३. यहाँ पर केवल श्रीनगर के वास का ही स्मरण नहीं कराया गया प्रत्युत् वास से सबद्ध 'प्रदर्शनी-दर्शन' का भी उल्लेख किया गया है।

४. यत् शब्द का दुवारा चाहे प्रयोग करे चाहे न करे।

रहा करते थे ? ३. सखि, तुम्हें याद है हम दोनों एक वार हरिद्वार गई थीं ? ४. वन्धुओं, तुम्हें याद है रावी के किनारे हमने पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने की प्रतिज्ञा की थी ? ५. भाई, क्या तुम्हें याद है गतवर्ष यहाँ प्रवल भूकम्प हुआ था और कई पुराने मकान गिर गए थे ? ६. सुरेन्द्र, क्या तुम्हें याद है पं० जवाहरलाल जी हमारे नगर में पधारे थे और असंख्य नर-नारियों ने उनका स्वागत किया था ? ७. वन्धुओ, क्या आपको याद है कि मीनाक्षि मन्दिर में सबसे पहले गाँधीजी ने हरिजनों के साथ देव-पूजा की थी ? ८. सम्राट्, क्या तुम्हें याद है कि एक वार तुम शत्रुओं से घिर गये थे और मैंने निज प्राणों को संकट में डालकर तुम्हारे प्राण बचाये थे ?

—:o—

(१) आसन्न या अद्यतन भूत (२) भूत में क्रिया-सातत्य

(लुङ् का प्रयोग)

नियम १५—(क) आसन्नभूत और अद्यतन भूत के अर्थ में लुङ् का प्रयोग अन्य लकारों की अपेक्षा अधिक प्रशस्त है, यथा—

आज प्रातः बहुत वर्षा हुई=अद्य प्रातः महती वृष्टिः अभूत्।

तोता पिंजरे से निकल गया है=शुकः पञ्जरात् निरगात्।

(ख) भूतकाल में क्रिया के सातत्य (Continuousness of action) के अर्थ में लुङ् विहित है।* यथा—

सेनापति मरते दम तक लडता रहा=आ मृत्योः अयुद्ध सेनापतिः।

वह आयुपर्यन्त वेदों का स्वाध्याय करता रहा=यावज्जीवम् असौ वेदान् अध्यैष्ट (अध्यगीष्ट वा)।

* नानद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः (३. ३. १३५) अर्थात्—क्रिया का सातत्य वर्तमान होने पर अनद्यतन भूत के अर्थ में लङ् के स्थान में लुङ् विहित है।

(ग) तुल्य जातीय अन्य दिवस तिथि आदि से अनव्यवहित काल में जो क्रिया हो उसके लिये भी लुङ् विहित है। †

उदाहरण—यह पूर्णिमा जो अभी गई है उसमें मैंने उपवास किया था=या इयं पूर्णिमा अतिक्रान्ता तस्याम् अहम् उपावात्सम्।

—.०—

अभ्यास २४

(लुङ् का प्रयोग)

आसन्नभूत

१ सूर्य अस्त हो गया है और चाँद-सितारे निकल आये हैं (आविर्√भू)। २. मेरी पुस्तक खो गई है (अप√हृ—कर्मवाच्य)। ३. मैंने तो खोया हुआ धन पा लिया है। ४. नदी का बाँध टूट गया है और पानी चारों तरफ फैल गया है। ५. युद्ध समाप्त हो गया है (वि√रम् 1A) पर अभी शान्ति स्थापित नहीं हुई। ६ जज ने वादी और प्रतिवादी के कथन को सुन लिया है। अब वह निर्णय देगा। ७. हमने लोभ त्याग दिया है और शान्ति प्राप्त कर ली है (√विद् 6U)। ८ अभी-अभी (अचिरपूर्व) आप लोगों ने एक बड़े विद्वान् के दर्शन किये है और उसका विद्वत्तापूर्ण भाषण सुना है। ९. सत्यनिष्ठा, आत्मविश्वास और स्वार्थत्याग मे गाँधीजी अन्य सब नेताओं से बढ़ गये हैं (अति√शी 2A, अति√क्रम् 1U, 4P)। १०. मेरा मित्र तीन-चार दिन यहाँ रहकर आज अपने गाँव को लौट गया है। ११. बेटा, तुमने खेल-कूद मे सारा दिन बिता दिया है और पढ़ा कुछ नहीं। १२. मूर्खो, तुमने खाने-पीने और मनोविनोद में यौवन बिता दिया है और जीवन के रहस्य को समझने मे मन नहीं लगाया (मतिं √कृ with loc)। १३ बिजली की चमक से नेत्र चुंधिया गये हैं (प्रतिहन् 2P, कर्मवाच्य) अब मै कुछ नहीं देख सकता।

---

†भूतकाल में क्रियाकाल के सामीप्य (कालाना सामीप्य=तुल्यजातीयेन अव्यवधानम्—काशिका) गम्य होने पर भी लङ् के स्थान लुङ् का विधान है।

अभ्यास २५

(लुङ का प्रयोग)

क्रिया का सातत्य

१. वह महात्मा जन्म भर पतितों का उद्धार करता रहा (उद् √धृ 1 U)। २. सुक्रात आयुपर्यन्त सत्य की खोज मे लगा रहा (आत्मानं व्या√पृ C with सप्तमी)। ३ कसाई जन्म भर पशुओं का वध करता रहा। ४. राम जीवन भर प्रजा का रंजन करता रहा। ५. पिता आयुपर्यन्त पुत्रों की मूर्खता पर शोक करता रहा। (अनु√शुच् 1 P, with द्वितीया)। ६ प्रताप जीवन भर मुगलो से टक्कर लेता रहा (स्पर्ध् 1 A with तृतीया)। ७. जब तक मै गॉव मे रहा ग्रामीणों को पढ़ाता रहा।

(तुल्यजातीय तिथि से अव्यवधान)

८ गत पूर्णिमा को हम यमुना पर नौका-विहार के लिए गये और बहुत आनन्द प्राप्त किया। ६. यह जो अभी पारितोषिक-वितरण उत्सव गया है उससे मुझे दो पारितोषिक मिले। १०. पिछले रविवार मैंने मोहन को भोजन का न्योता दिया था।

—·○—

तीसरा पाठ

भविष्यत् काल (Future Tense)

नियम १६—लृट्[1] के द्वारा भविष्यत काल की सभी क्रियाएँ अभिहित की जा सकती हैं, चाहे वे अद्यतन हों अनद्यतन हों, या व्यामिश्र, या जिनका अद्यतन अथवा अनद्यतन होना स्पष्ट न हो और जिनसे साधारणतया भविष्य का भाव प्रकट होता हो।

१. लृट् शेषे च—३. ३. १३.।

लुट्[1] के द्वारा केवल निश्चित अनद्यतन क्रियाएँ ही अभिहित की जाती हैं, अद्यतन नहीं और यदि अनद्यतन क्रिया में सातत्य[2] (Future Continuous Tense) का भाव गम्य हो, तो फिर लुट् का प्रयोग न होकर केवल लृट् का प्रयोग होता है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि—

नियम १७—(क) यदि क्रिया (१) अद्यतन हो या (२) व्यामिश्र (३) या उससे सातत्य का भाव गम्य हो तो केवल लृट् विहित है।

(ख) यदि क्रिया अनद्यतन हो, या साधारणतया भविष्य का भाव प्रकट करे, तो लृट् और लुट् दोनों विहित हैं।

उदाहरण—(क) केवल लृट् (१) अद्यतन—आज शकुन्तला पति के घर जायगी=अद्य शकुन्तला पतिगृहं यास्यति (न तु याता)। (२) व्यामिश्र—आज या कल शकुन्तला पति के घर जायगी=अद्य श्वो वा शकुन्तला पतिगृहं यास्यति (न तु याता)। (३) सातत्य—वह आयुपर्यन्त पढ़ाता रहेगा=यावज्जीवम् अध्यापयिष्यति (न तु अध्यापयिता)।

(ख) लृट् तथा लुट्, अनद्यतन एवं साधारण भविष्यत्—

शकुन्तला कल पति के घर जायगी=शकुन्तला श्वः पतिगृहं यास्यति (याता वा)। पाँच-छ दिनों में हम ही वहाँ जायँगे=पञ्चषैः अहोभि वयम् एव तत्र गमिष्यामः (गन्तास्म वा)। तू युद्ध में शत्रुओं को हरा देगा=विजेतासि (विजेष्यसि वा) रणे सपत्नान्।

—•—

अभ्यास २६

अद्यतन भविष्यत्, व्यामिश्र भविष्यत, और क्रिया-सातत्य

(केवल लृट् का प्रयोग)

१ आज पिताजी अवश्य आ जायँगे। २. आज मैं इसी गाँव में ठहरूँगा। ३. आज हम नदी पर जायँगे और वहाँ स्नान करेंगे ४. आज

१. अनद्यतन लुट—३. ३. १५।

२. नानद्यतनवत्क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः—३. ३. १३५।

सायंकाल मै तुम्हें तुम्हारे घर मिलूँगा। ५. मेरे पेट में दर्द हो रहा है, इसलिये मै आज भोजन नहीं करूँगा (भुज् 7 U)। ६. मांस खाने वाले राक्षस आज तृप्त हो जायँगे (तृप् 4 P)। ७ आज हम गुरुजी से एक विचित्र प्रश्न पूछेंगे। ८ आकाश मेघाच्छन्न है, आज वर्षा अवश्य होगी। ९. आज इस नगर मे दीपक नहीं जलेंगे। १०. आज तुम्हें किसी होटल में भी भोजन नहीं मिलेगा। ११ आज शाम के आठ बजे एक सार्वजनिक सभा होगी जिसमे अनेक देशों के प्रतिनिधि भाषण देंगे। १२. आज या कल तुम्हारा ज्वर उतर जायगा। १३. किसान खेती को आज या कल काट लेगा। १४. आज या कल तुम्हें एक शुभ समाचार मिलेगा। १५ आज या कल सब बन्दी मुक्त कर दिये जायँगे। १६. शीघ्र ही तुम्हे अपने परिश्रम का फल मिलेगा (अनु√भू)। १७. जल्दी ही सर्वत्र अन्धकार फैल जायगा और हम कुछ देख न सकेंगे। १८ अन्न के बिना आज हम कैसे जीयेंगे। १९ यह कार्य दुष्कर है तथापि मै प्रयत्न करूँगा। २० सूर्य अस्त होने से पहले हम गॉव मे पहुँच जायँगे। २१ यह अग्नि सारे वन को जला देगी (दह् 1P लृट्-धक्ष्यति)। २२. यह ऑधी बादलों को उड़ा ले जायगी (अप √वह् 1P लृट-अपवक्ष्यति)।

— ० —

अभ्यास २७

क्रिया का सातत्य (लृट् का प्रयोग)

१ वह जीवनपर्यन्त भिखारियों को अन्न देता रहेगा। २. भावी सन्तानें सदा उसके गुण गाया करेंगी। ३ वह आजन्म ब्रह्मचर्य का पालन करेगा (आ√चर् 1 P)। ४ तुम लोग आयुपर्यन्त नारकीय यातनाएँ भोगोगे (अनु√भू)। ५. ये वीर जब तक जीयेंगे सम्मान सहित जीयेंगे। ६. स्वामिन्, अगले जन्मों मे भी मैं आपका अनुसरण करूँगी। ७ भाइयो, कृत्रिम घी तो आजकल आप खाते ही हैं, भविष्य में इसी प्रकार आप कृत्रिम दूध भी पिया करेंगे। ८ सूर्य-चन्द्र सदा उदय

और अस्त होते रहेंगे। दुनिया के उत्सव भी इसी तरह होते रहेंगे (प्र√वृत् 1A) किन्तु हम न होंगे। ९. जब तक भूतल पर पर्वत और नदियाँ रहेंगी तब तक रामायण की कथा का संसार मे प्रचार बना रहेगा। १०. केवल पोशाक के बारे मे ही नहीं, प्रत्युत् विवाह आदि के विषय में भी सदा नये-नये प्रकार प्रचलित होते रहेंगे। ११. निकट भविष्य में हम लोग व्योम-यानों मे बैठ कर यात्रा किया करेंगे। व्योमयानों में सोने के पृथक् कमरे होंगे और यात्रियो को सर्व प्रकार से सुख मिला करेगा।

अभ्यास २८

अनद्यतन भविष्यत् और सामान्य भविष्यत्

(लृट् अथवा लुट् का प्रयोग)

१ मेरा प्रयोग निश्चय ही सफल होगा (सिध् 4P–सेत्स्यति √फल 1A)। २. आपकी यह कामना पूरी होगी (संपद् 4 A,सिध)। ३. कल राजकुमार को युवराज-पद पर अभिषिक्त किया जायगा। ४. पापी लोग स्वय ही नष्ट हो जायँगे और धर्मात्मा लोग फूले-फलेंगे। (ऋध् 4P)। ५. संन्यासी के वेष मे महाराजा को कोई नहीं पहचानेगा। ६. तुम्हें बैल की सवारी करते देखकर लोग हँसेगे। ७. हम अपने बगीचे मे एक कुआँ खुदवाएँगे। ८. वह आपकी बात नहीं मानेगा। ९. वीर योद्धा मरकर स्वर्ग मे जायँगे। १० यह भार कौन उठा ले जायगा? ११ निःशस्त्र नगरवासी शस्त्रधारी सैनिकों के साथ कैसे युद्ध करेंगे? १२ हे मन, तू अपना हाल किससे कहेगा और कौन शीतल वचनों से तुम्हारी पीड़ा को शान्त करेगा? १३ मेरी अनुपस्थिति मे तुम्हारा कौन खयाल रखेगा (चित् 10 U) ? १४. आप जैसे मित्र मुझे अन्यत्र भी मिल जायँगे। १५ मैं अन्तर्धान हो जाऊँगा और आप लोग हैरान होंगे (वि √स्मि 1 A)। १६ इतना धन पाकर वह दृप्त हो जायगा। (दृप् 4 P)। १७ जब युद्ध समाप्त हो जायगा मै विदेश जाऊँगा १८. जब वह सिहासन पर बैठेगा, तू उसका मन्त्री बनेगा। १९. जब धान्य पक जायगा तो हम उसे काट लेंगे।

अभ्यास २९

(लृट् अथवा लुट् का प्रयोग)

१ जब फिर वसन्त आयेगा, तब फिर फूल खिलेंगे, भंवरे गुंजार करेंगे और कोयल कू-कू करेगी। २. बेटा, जब तुम परीक्षा पास कर लोगे तब मैं तुम्हें अपने साथ वाणिज्य के कार्य में लगा दूँगा (नि √युज् 7U)। ३. जब वह उस अँगूठी को देखेगा तो उसे शकुन्तला का स्मरण हो आयेगा। ४. जब सभापति के निर्वाचन का प्रश्न उपस्थित होगा तब दोनों दल परस्पर झगड़ पड़ेंगे (वि√वद्)। ५. अन्य सब सभासद् तुम्हारे प्रस्ताव का स्वागत करेंगे (अभि√नद् 1 P) केवल मैं ही उसका विरोध करूँगा। ६. जब भारतवर्ष और आर्थिक उन्नति कर लेगा तब ही यहाँ के श्रमजीवियो को दिन मे दो बार पेट भर खाना मिलेगा। ७. तुम्हारे कुल मे एक पुत्ररत्न उत्पन्न होगा जो कि तुम्हारे कुल का उद्धार करेगा और तुम्हारे इस कलंक को दूर करेगा। ८. महाराज, आप कब तक राज्य करेंगे ? अन्त मे आप वन को जाओगे ही। ९. ब्रह्मा ने जगत् को बनाया, विष्णु इसका पालन करता है। अन्त मे महादेव इसका संहार करेगा। १०. पिताजी तुम्हें अकेले वन में जाने की अनुज्ञा नहीं देंगे (अनु√ज्ञा 9U)। ११. यह समाचार पाकर पुरवासी शोकसागर मे डूब जायेंगे (नि√मस्ज् 6 P.)। १२. पुत्र का शोक पिता के धैर्य को नष्ट कर देगा। १३. शस्त्रों के बिना हम अपने देश की रक्षा करने के योग्य नहीं होंगे (प्र√भू, क्लृप् 1A with चतुर्थी)। १४. वह तुम्हारी सब युक्तियों को काट देगा (परा√स् 4 P-णिजन्त, निर्√अस् णिजन्त, प्रत्या√ख्या 2P)। १५. लोग तुम्हारा यह अपराध कदापि क्षमा नहीं करेंगे। १६. मैं उसकी मिन्नत समाजत करूँगा (अनु√नी 1P) और वह मुझसे प्रसन्न हो जायगा (प्र√सद् 1 P with सप्तमी)।

—:०:—

चौथा पाठ

प्रवर्तनात्मक वाक्य

(लोट् और विधिलिङ् का प्रयोग)

(Imperative and Potential moods)

नियम १८—(क) जब किसी व्यक्ति (अर्थात् मध्यम पुरुष और प्रथम पुरुष II and III Person) को कुछ करने की आज्ञा (Order) दी जाय या प्रार्थना की जाय तो लोट् और विधिलिङ् दोनों विहित हैं❀। पर लोट् प्राय अधिकतर प्रयुक्त होता है। (ख) यदि प्रार्थना में नम्रता का भाव विशेषतः प्रकट करना हो तो लोट् कर्मवाच्य में प्रयुक्त किया जाता है। (ग) प्रार्थना के लिए लोट् के अतिरिक्त लृट् का भी प्रयोग होता है। (घ) उत्तम पुरुष के साथ लोट् और लिङ् का प्रयोग तब किया जाता है जब किसी से नम्रतापूर्वक कुछ पूछना हो, या अपने साथियों को किसी कार्य मे प्रवृत्त होने का आमन्त्रण देना हो।

उदाहरण—(क्रमश)

(क) तू मेरी बात सुन=(त्व) मद्वचनं शृणु (शृणुया. वा)।

वह मेरी बात सुने=स मद्वचन शृणोतु (शृणुयात् वा)।

(ख) मेरी बात सुनिये=श्रूयता मद्वचनम्।

(ग) मित्र, तनिक मेरी बात सुनना=सखे, क्षणं मद्वचन श्रोष्यसि।

(घ) मै तुम्हारे लिये और क्या करूँ=किमन्यत् करवाणि ते=किमन्यत् कुर्याम् ते।

भाई, क्या हम विज्ञान सीखे या शिल्प ?=किंनु खलु भो विज्ञान शिक्षामहै (शिक्षेमहि वा) उत शिल्पम्।

❀ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् (३ ३ १६१)। (प्रवर्तनाया लिङ् इत्येव सुवचम—सिद्धान्त कौमुदी।) लोट् च (३. ३. १६२)

अभ्यास ३०

(आज्ञा-प्रार्थना आदि)

मध्यम पुरुष (Second Person)

१. बेटा, जागो और बिस्तर छोड़ो। २ भाई, दीपक बुझा दे (निर्√वा C) और सो जा। ३ लोगो, तुम यहाँ से दूर हट जाओ (अप√सृ)। ४. भाई गिनो बाकी कितने दिन रहते हैं। ५. जा और पता कर कि द्वार पर कौन है। ६ सब किवाड़ खोल दे और कमरे मे झाड़ू लगा (मृज् मार्ज् 10U)। पहले थोड़ा पानी डाल ले (निषिच)। ७ छोकरे, तू इस वृक्ष पर चढ़ जा (आ√रुह) और इसकी शाखाओं को हिला (धू)। ८ इस प्याले (चषक) से थोड़ा और शर्बत डाल दे (निषिच् 6P) और उस घड़े को खाली कर दे (रिच् 7U)। ठहरो, यह पकड़ो और वह मुझे दो। ९. इस पागल कुत्ते को तुरन्त मार दो। १०. सखि, कपड़े बदल ले (वि परि√धा 3U) और मेरे साथ सैर को चल। ११. इस धोती की लम्बाई माप (√मा 2P, 3A) और मुझे बता। १२. बहन, इस बच्चे को पकड़ (√धा 3U) जब तक कि मैं इसके लिए दूध ले आऊँ। १३ नौकर को बुलाओ और उससे कुछ फल मँगाओ। १४. श्याम, तू मेरा यह संदेश पिताजी को पहुँचा दे (हृ 1 P with षष्ठी)। १५. भाई, अब यह काम बन्द कर और अतिथियों का स्वागत कर (संभू C)। १६. मेरी बात मानो और इस हठ को छोड़ो। १७. मुझे अब जाने की आज्ञा दो। १८ तनिक यह पत्र पढ़कर सुनाओ (वच् C)। १९. प्रिय की खबर सुनाकर मुझे शोक से उबारो (उद्√धृ 1U)। २० गवाले, इस गाय का दूध निकाल और हमे पिला। २१. मेरे घोड़े, छलांग लगा और नाले को पार कर दे (लघ् 10U)। २२. पथिक, यह मेरी चद्दर पृथ्वी पर बिछा ले (अनु C. आस्तृ 5U) और उस पर लेट जा (नि√विश् 6A with सप्तमी

अधि√शी 2A with द्वितीया)। २३ हे दमयन्ती, तू हम पाँचों में से किसी एक को पति चुन ले (वृ 5 & 10 U)।

प्रथम पुरुष (Third Person)

२४. लोग अपने-अपने घरों को लौट जायं। सब कोई अपने-अपने काम मे लगे (अभि√युज् 7 A)। २५ सत्पुरुप तप से ब्रह्म को जानने की इच्छा करे (√ज्ञा सन्नन्त)। २६ प्रजा ईश्वर का धन्यवाद करे कि महाराज के प्राण बच गये हैं। २७. वर्षा समय पर हुआ करे और यहाँ सदा सुभिक्ष हो। २८. समाज मे उचित सम्मान को पाने के लिए स्त्रियाँ अवश्य आन्दोलन करें पर वे हर बात में पुरुषों के साथ व्यर्थ स्पर्धा न करें (स्पर्ध् 1 A with तृतीया)। २९ लोग पाप और पुण्य में, हित और अहित में विवेक करें (विच् 3P, परिच्छिद् 7 P)।

—०—

अभ्यास ३१

नम्रतासूचक वाक्य

(कर्मवाच्य अथवा भाववाच्य मे लोट् का प्रयोग)

१ आइये, इस कुर्सी (आसन) पर बैठिये। २ कुछ समय प्रतीक्षा कीजिये। पिता जी घर पर नहीं हैं। ३ सामाजिक उपस्थित हैं। अब गाना आरम्भ कीजिये (प्र√स्तु 2U, आरभ् 1 A)। ४ पहले आप प्रतिज्ञा कीजिये कि आप रहस्य प्रकट नहीं करेंगे। ५ आप मेरी भी एक शर्त (अभिसधि M) सुनिये। ६ धर्म की सब बात सुनिये और सुनकर ही निश्चय कीजिये (अव √धृ 10 U)। ७. ब्राह्मणों की प्रार्थना स्वीकार की जाय। ८. यज्ञ की सामग्री एकत्र की जाय (सम् √भृ 3 U)। ९. यहाँ पर एक सुन्दर यज्ञमण्डप बनवाया जाय (निर् √मा 2 P)। १०. इस अन्धविश्वास को दूर कीजिये (उन्मूल् 10 P)। ११ अच्छी तरह आँखें खोलकर सृष्टि के सौन्दर्य को देखिये (निर √

वण् 10 U)। १२. कृपया, मुझे यह बात समझाइये (ख्या √ख्या 2P) कि योगी को परमात्मा के दर्शन कैसे होते हैं। १३. सेनापति को आज्ञा दीजिये कि विद्रोही को जीवित पकड़ लिया जाय। १४. गुरुजी, श्रद्धा से भेंट किये गये मेरे इस तुच्छ उपहार को स्वीकार कीजिये। १५. सड़कों पर सुगन्धित जल का छिड़काव किया जाय (सिच् 6 U) और सारा नगर तिरंगे झंडों से अलकृत किया जाय।

—.०—

अभ्यास ३२

(प्रार्थनासूचक वाक्यों में लृट् का प्रयोग)

१. हे मित्र, तनिक इधर हमारे घर नजर डालिये। २ यदि अन्य कार्य में विघ्न न हो*तो आप भी हमारे थियेटर को चलियेगा। ३. यहाँ तो समयाभाव से मैं तुम्हारी बात सुन ही नहीं सकता। तुम सायकाल ठीक पाँच बजे मुझे होटल मे मिलना और वहीं मेरे साथ चाय भी पीना। ४. ललिता, कल हमारे यहाँ भोजन करना और कृष्णा को भी साथ ही लेती आना। ५. मेरे विदेश जाने पर आप इस बच्चे का ख्याल रखियेगा। ६ मित्र, क्षण भर ठहरो (वि √लंघ् 1 A लोट्), फिर जैसे इच्छा हो करना।

—०.—

अभ्यास ३३

उत्तमपुरुष में प्रश्नसूचक वाक्य

(लोट् अथवा विधिलिङ्)

१. पिताजी, क्या मैं चित्रकला सीखूँ या संगीत ? २ क्या हम (दो) ऊँचे स्वर से गाये या नीचे स्वर से ? ३. माली, क्या मैं इन लटकते हुए गुच्छे को तोड़ लूँ ? ४. महाराज, क्या हम अधिकारियों द्वारा किये गये इस अपमान को चुपचाप सह लें ? ५ हम अपने

*कार्यान्तरान्तरायमन्तरेण ..।

हितैषी नेताओं से क्यो न मिले (स √गम 1 A, सं √सृज् 6P) और उनसे इस विषय मे मत्रणा करे ? (स √मत्र् 10 A √)। ६. आओ, हम इकट्ठे हो जायें (सं √गम् 1A√) और परस्पर झगड़ा न करें (वि √वद् 1 A)।

—०—

निषेधात्मक वाक्य

जब किसी व्यक्ति को किसी कार्य से रोका जाय तो निषेधवाचक 'मा' अथवा 'मा स्म' का प्रयोग किया जाता है।

नियम १६—(क) 'मा' के उपपद होने पर लोट् और (अट् आगम रहित) लुङ्[1] का प्रयोग होता है। (ख) 'मा स्म' उपपद होने पर लुङ् और लङ्[2] (दोनों ही अट् आगम रहित) का प्रयोग होता है।

उदाहरण—(क्रमश) शत्रु को विपत्ति में पड़ा देखकर प्रसन्न मत हो।

(क) व्यसनगतं शत्रुं प्रेक्ष्य मा मोदस्व (मोदिष्ठाः वा[3])।

(ख) व्यसनगतं शत्रुं प्रेक्ष्य मास्म मोदिष्ठा (मोदथा वा)।

—०—

अभ्यास ३४

१ पूज्यों को तू-तू न कर।[4] २ बड़ों का उपहास मत कर। ३. बीते का शोक न कर। ४ दूसरो की निन्दा मत कर। ५. प्रतिज्ञा को झूठा मत कर।[5] ६. बुरे रास्ते पर पग मत रख (पद √ऋC)। ७ लोग एक दूसरे से द्वेष न करें (द्विष् 2U)। ८ फिर ऐसी बात न हो। ६.

---

१. माङि लुङ् ३. ३. १७५

२. स्मोत्तरे लङ् च ३. ३ १७६

३. इसका अनुवाद 'अलम' उपपद रखकर क्त्वान्त द्वारा भी किया जा सकता है, यथा—व्यसनगत शत्रुरित्यल मुदित्वा (मोदित्वा वा)।

४. पूज्यान् मा त्वकुरु। ५ 'समयं माऽनृत कार्षीः।' –(इति रामायणे)।

बस बस, डींग मत मार (विकत्थ् 1A)। १०. नौकरों को बार-बार मत झिड़क (भर्त्स् 10 A तर्ज् 1 P, 10 A)। ११. जिस-जिसको देखे उस-उसके आगे दीन वचन मत बोल। १२. हे मेरी वाणी, अनादर के कारण तू शोक मत कर[1]। १३. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू मत बन (आत्मानं √श्लाघ् 1 A)। १४. मुँह ढाँपे बिना[2] उबकाई मत लो (जृम्भ् 1 A)। १५. अपने कर्तव्य में अधिकारीगण प्रमाद न करें। १६. हे प्यारे हलाहल, यह समझकर कि क्रूरों में मैं ही बड़ा हूँ, तू गर्व मत कर।[3]

—·०—

क्रिया का औचित्य

विधिलिङ् का मुख्य प्रयोग

नियम २०—जब किसी क्रिया के औचित्य का भाव प्रकट करना हो, अर्थात् अमुक क्रिया होनी चाहिए अथवा नहीं, तो विधिलिङ् का प्रयोग होता है। आचार-व्यवहार आदि के बारे में शिक्षा-उपदेश देने में विधिलिङ् का ही प्रयोग होता है,* लोट् का नहीं, और ऐसे वाक्यों में कर्ता प्रायः लुप्त रहता है।

उदाहरण १. क्षत्रिय को युद्ध से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए=क्षत्रियः संग्रामान्न निवर्तेत।

२. बिना विचारे कार्य नहीं करना चाहिए=सहसा विदधीत न क्रियाम्=नाविमृश्य कुर्यात्।

—:०:—

१. मद्वाणि मा कुरु विषादमनादरेण (इति भामिनीविलासे)।

२. असंवृत-मुखः।

३. अहमेव पतिः सुदारुणानामिति हालाहल तात! मा स्म दृप्यः।

* विधिलिङ् के अतिरिक्त विधि कृदन्त का भी प्रयोग होता है। देखिए कृदन्त प्रकरण, तीसरा अध्याय।

अभ्यास ३५
(विधिलिङ् का प्रयोग)

१. सूने घर में अकेला नहीं सोना चाहिये। २. दान देकर चर्चा नहीं करनी चाहिये (परि√कृत् 10U[1]) ३. डाकुओं के दमन करने में पुलिस को पूरा प्रयत्न करना चाहिये। ४. सरकार द्वारा नियत मूल्य से अधिक लेने वालों को अधिकारी लोग दण्ड दें। ५. रुपये-पैसे के रखने वा खर्च करने में पत्नी को लगाना चाहिये। ६. शरीर को कष्ट न देकर धन का संग्रह करना चाहिये।[2]

—:o:—

पांचवां पाठ

(१) आशीर्वचन (२) हेतुहेतुमद्भाव और (३) क्रियातिपत्ति

आशीर्वचन

नियम २१—(क) जब किसी व्यक्ति (अर्थात् मध्यम पुरुष और प्रथम पुरुष) को आशीर्वाद या शाप देना हो तो लोट् और आशीर्लिङ्‌❀ का प्रयोग किया जाता है।

(ख) जब वक्ता अपने कल्याण आदि की अभिलाषा प्रकट करे, तो उत्तम पुरुष के साथ आशीर्लिङ् का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण (क्रमश)

(क) तुम्हें अभीष्ट की प्राप्ति हो=अभीष्टम् आप्नुहि (आप्याः वा)।

(२) प्रजा तुममें सदा अनुरक्त रहे=सततं त्वयि अनुरज्यन्तु (अनुरज्यासुः वा) प्रजाः।

---

१. न दत्वा परिकीर्तयेत् २. अक्लेशेन शरीरस्य कुर्वीत धनसञ्चयम्।

❀ आशिषि लिङ्लोटौ ३. ३. १७३।

(ख) मुझे सत्य का बोध हो=सत्य बोधिषीय।

—:०:—

अभ्यास ३६

१. तू बहुत देर जिये (√जीव् 1 P) और सुख पाये (अनु√भू)। २. देवता हमारा कल्याण करे (वि√धा 3U)। ३. हम सन्मार्ग से भ्रष्ट न हों (√भ्रंश् 1A)। ४ बछड़ा अपनी माता ढूँढ ले (विद् 6U)। ५. भारतवर्ष शीघ्र ही उन्नति के शिखर पर आरूढ़ हो (आरुह् 1P)। ६. संसार के सभी प्राणी दुःखों से मुक्त हों और सुख से रहें।

—:०:—

हेतुहेतुमद्भाव और क्रियातिपत्ति

हेतुहेतुमद्भाव

अब हम ऐसे वाक्य लेते हैं जिनमें आये हुए दो वाक्य-खंडों (Clauses) में दो ऐसे कथन हों कि पूर्व कथन के चरितार्थ होने पर ही दूसरा कथन चरितार्थ हो। अर्थात् पूर्व कथन में कोई हेतु, निर्दिष्ट हो और दूसरे में उसका फल। दो वाक्य-खंडों के ऐसे परस्पर सम्बन्ध को हेतुहेतुमद्भाव कहते हैं।

नियम २९—हेतुहेतुमद्भाव वाले वाक्यों का अनुवाद करने में दोनों वाक्य-खंडों में लिङ् अथवा दोनों में लृट् का प्रयोग होता है।[1]

उदाहरण—यदि तू कृष्ण को नमस्कार करे तो सुख पाये—(१) (लिङ्) कृष्णं नमेश्चेत् सुखं यायाः—(२) (लृट्) कृष्णं नंस्यसि चेत् सुखं यास्यसि।

क्रियातिपत्ति

नियम ३०—हेतुहेतुमद्भाव वाले ऐसे वाक्य जिनमें यह निश्चित

१. हेतुहेतुमतोर्लिङ् ३. ३. १५६

हो कि पूर्व क्रिया यदि भूतकालिक है तो वह हुई ही नहीं, और यदि भविष्यत्कालिक है तो उसके होने की कोई सम्भावना नहीं, तो दोनों वाक्य-खण्डों में लृङ् का प्रयोग होता है।❀

उदाहरण—१. भूतकालिक क्रिया—यदि वृष्टि हुई होती तो सुभिक्ष होता=यदि वृष्टिरभविष्यत् तर्हि सुभिक्षमभविष्यत्।

२. भविष्यत्कालिक क्रिया—यदि सभी प्राणी स्वार्थ को त्याग दे तो संसार के सभी काम रुक जायें=सर्वे प्राणिनः स्वार्थं चेद् अत्यक्ष्यन् सर्व एव लौकिका व्यापाराः व्यरंस्यन्।

अभ्यास ३७ (क)

साधारण हेतुहेतुमद्भाव

(लिङ् अथवा लृट् का प्रयोग)

१. यदि मैं कर्म न करूँ तो ये लोक नष्ट हो जायं (उत्सद् 1P)[1] २. यदि तू एक मेरी शरण ले तो मैं तुझे सब पापों से छुटकारा दिला दूं। ३ यदि फिर महायुद्ध हो तो सारी मनुष्य जाति ही नष्ट हो जाय। ४. यदि आपको सप्ताह भर भूखा रहना पड़े तो आप दरिद्र प्रजा के कष्ट को समझ पावें। ५. यदि यह अफवाह महाराज तक पहुँच जाय तो बुरा हो।[2] ६. यदि मैं नीति का एक अक्षर भी पढ़ लूँ तो गायत्री को भी भूल जाऊँ।

—०—

❀ लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ ३. ३. १३९। भूते च ३. ३. १४०। भावार्थ—जहाँ हेतुहेतुमद्भाव होने पर भूत और भविष्यत् के अर्थों में साधारणतया लिङ् विहित है, वहाँ क्रिया की अतिपत्ति (Non-performance) होने पर लृङ् का विधान है।

१. भगवद्गीता ३, २४। २. यदि पुनरियं किंवदन्ती महाराज प्रति स्यन्देत तत कष्ट स्यात्।

अभ्यास ३७ (ख)
क्रियातिपत्ति
(लृङ् का प्रयोग)

१. यदि सड़क पर प्रकाश होता तो हम गढ़े में न गिरते। २. यदि तू मेरे मन की अवस्था समझ पाता तो मेरा कभी उपहास न करता। ३ यदि मैं एक मिनट पहले आता तो गाड़ी पर सवार हो जाता। ४. यदि पिताजी आज जीवित होते तो उन्हें कितना सुख मिलता। ५. यदि तुम जीवन और मृत्यु के रहस्य को समझ पाओ (जो कि असंभव है) तो महान संकट के उपस्थित होने पर भी सत्य मार्ग से कदापि विचलित न होओ। ६. यदि मेरे पास पर्याप्त धन होता तो मैं विदेश की सैर करता। ७. यदि आरम्भ में ही शत्रु का दमन न किया जाता तो आज वह अदम्य हो जाता। ८. यदि वैद्य समय पर न पहुँचता तो बीमार मर जाता। ९. यदि पास ही तालाब न होता तो सारा गाँव जल जाता।

—:०:—

दूसरा अध्याय

कृदन्त प्रकरण

(Verbal derivatives)

अब (१) वर्तमान कृदन्त [शतृ और शानच्], (२) भूत कृदन्त [(क) क्त, (ख) क्तवत्तु और (ग) वस, तथा आन], (३) विधि कृदन्त [तव्य,—अनीय,—य], (४) भविष्यत् कृदन्त [स्यत्, स्यमान], और (५) भूतकालिक अव्यय कृदन्त [(क) क्त्वा और णमुल्] के प्रयोग बताये जाते हैं।

ध्यान रहे कि 'क्त्वा' और 'णमुल्' के अतिरिक्त ऊपर बताये गये शेष सभी कृदन्त विशेषण की भाँति विशेष्य के समान लिंग, वचन और विभक्ति में प्रयुक्त होते हैं। विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने के अतिरिक्त वे वर्तमान, भूत और भविष्यत् काल की क्रियाओं के अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। क्तान्त संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त होता है।

—०—

पहला पाठ

(१) वर्तमान कृदन्त–शतृ और शानच्

(Present Participles)

नियम २४—शतृ और शानच् का प्रयोग तब किया जाता है जब यह भाव प्रकट करना हो कि कर्ता एक साथ (Simultaneously) दो क्रियाएँ करता है। ध्यान रहे कि यदि क्रियाएँ एक के बाद दूसरी, या भिन्न-भिन्न काल मे हों, तो शतृ और शानच् का प्रयोग नहीं हो सकता।

उदाहरण—वह स्नान करते हुए गायत्री का जाप करता है।	स्नानमुपस्पृशन् सावित्रीं जपति।
परतन्त्र मनुष्य सास लेता हुआ भी जीवित नहीं होता।	श्वसन्नपि न जीवति परायत्तः।

नियम २५—क्रिया का लक्षण अर्थात् कार्य करने का प्रकार (Manner of action) और क्रिया का हेतु अर्थात् जिस कारण से अथवा जिस उद्देश्य से कार्य किया जाय (Cause or object of action) उसे सूचित करने के लिए भी वर्तमान कृदन्त का प्रयोग होता है।*

उदाहरण—(लक्षण) प्रियंवदा सदा मुस्कराती हुई बातें करती है।	सदैव स्मयमाना ऽऽभाषते प्रियंवदा।
बादल गरजता हुआ बरस रहा है।	गर्जन् वर्षति देवः।
भक्त पुरुष ईश्वर का स्मरण करते हुए प्राण छोड़ता है।	ईश्वरं स्मरन् प्रैति (प्राणान् मुञ्चति) भक्तः।
(हेतु) विद्वानों के सम्पर्क में आने से मूर्ख भी बुद्धिमान बन जाता है।	विदग्धैः संसृज्यमानो मूर्खोऽपि प्राज्ञतामेति।
आय से अधिक खर्च करने के कारण हर कोई ऋणी हो जाता है।	आयादधिकं व्ययन् सर्वोऽपि ऋणी भवति।
सदा दूसरों की नकल करने वाली जातियाँ आत्मसम्मान खो बैठती हैं।	सततं परेषामनुकुर्वाणा जातय आत्मसम्मानं जहति।
(फल) भीख माँगता हुआ घर-घर फिरता है।	भिक्षां याचमानो गृहाद् गृहमटति।
पाठ करते हुए मैं सारी रात	पाठमधीयानोऽहं सर्वां निशाम्

* लक्षणहेत्वोः क्रियायाः (३. २. १२६)

जागता रहा।	अजागरम्।
(विशेषण) क्या भीख मांगने वाले लोग भी कहीं आदर पाते हैं।	किं भिक्षामटन्तो जना अपि क्वचित् सम्मानं लभन्ते।
प्रतिदिन पाठ पढ़ने वाला छात्र आसानी से परीक्षा पास कर लेता है।	प्रत्यहं पाठमधीयान छात्रः सुखेन परीक्षामुत्तरति।
राजाज्ञा को भंग करने वाले लोगों को क्षमा नहीं किया जाता।	राजशासनमुल्लंघयन् लोको न मृष्यते।

—:o—

अपूर्ण वर्तमान काल के अर्थो मे वर्तमान कृदन्त का प्रयोग

नियम २६—वर्तमान कृदन्त के साथ आस् और स्था धातु का प्रयोग क्रिया की अनवरति (Continuity of action) का भाव प्रकट करने के लिए—अर्थात् यह बताने के लिए कि क्रिया कुछ समय पहले आरम्भ हुई थी पर अभी समाप्त नहीं हुई—किया जाता है।❀

उदाहरण

देवदत्त प्रात काल से पढ़ रहा है।	आ कल्यादधीयानस्तिष्ठति देवदत्त.।
सेनापति मरते दम तक लड़ता रहा।	आ मृत्योर्युध्यमानस्तस्थौ सेनापति।
परीक्षा पास करके भी असंख्य बेकार ग्रेजुएट नौकरी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।	परीक्षामुत्तीर्यापि निर्व्यापारा असंख्या स्नातका. नियुक्तिं प्रतीक्षमाणा तिष्ठन्ति।

❀ इस सम्बन्ध मे अस और भू धातु का प्रयोग बहुत कम देखा गया है। छात्रों को इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। 'वह जा रहा है' का अनुवाद 'स गच्छति' होना चाहिए न कि 'स गच्छन्नस्ति'।

(२) भूतकालिक कृदन्त

(क) क्तान्त (Past Passive Participle)

नियम २७—भूत काल का भाव प्रकट करने के लिए तृतीया विभक्ति के साथ क्तान्त का प्रयोग ऐसे ही किया जाता है जैसे कि कर्मवाच्य में भूतकालिक क्रिया का होता है।

उदाहरण

(१) मैंने बुरा काम किया=अकार्यमहमकरवम्=अकार्यं मयाऽकारि=अकार्यं मयाऽक्रियत=<u>अकार्यं मया कृतम्</u>।

(२) मैंने एक पुरुष को देखा=अहं पुरुषमपश्यम्=अहं पुरुषमदर्शम् अद्राक्षम् वा=मया पुरुषो अदर्शि=मया पुरुषोऽदृश्यत=<u>मया पुरुषो दृष्ट</u>।

ध्यान रहे कि क्तान्त के लिंग, वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होते हैं और कर्ता सदा तृतीया में होता है। यथा, मैंने वेद पढ़ा=मया वेदोऽधीत·। (२) मैंने शास्त्र पढ़े=मया शास्त्राण्यधीतानि।

जेल से भागते हुए कैदियों को क्या किसी ने देखा वा पकड़ा नहीं ?	कारागृहादपक्रामन्तो बन्दिन कि न केनापि दृष्टा गृहीता वा।
मैंने आज तक तुम्हारे जैसा बातूनी नहीं देखा।	न मयाऽद्यावधि त्वादृगन्यो जल्पकःदृष्ट।
(विशेषण) एक बार हारे हुए शत्रु का फिर अपमान करना उचित नहीं।	सकृत्पराजित शत्रुर्न पुनरवमानयितव्य।
कटा हुआ पेड़ तो नहीं बढ़ता।	न हि छिन्नतरु रोहति।

—:o:—

विशेष धातुओं के क्तान्त रूप का कर्तृवाच्य में प्रयोग

नियम २८—गत्यर्थक धातु, अकर्मक धातु तथा श्लिष, शी, स्था, आस, वस, जन्, रुह और जॄ के क्तान्त रूप कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होते हैं और तब स्वभावत कर्ता भी प्रथमा में रखा जाता है।

उदाहरण

(गत्यर्थक धातु) सूर्य बहुत चढ़ गया है।	दूरमाक्रान्तो दिनमणिः।
सूर्य डूब गया। सन्ध्या हो गई।	अस्तमित. सूर्य। समागता सन्ध्या।
गाय को ढूँढते-ढूँढते मैं बहुत दूर चला आया हूँ।	गामन्विष्यन्नहमतिदूरं परिभ्रान्तोऽस्मि।
वह मुझे आता देखकर उठकर चलता बना।	स मामायान्तं वीक्ष्योत्थाय चलित।
(अकर्मक धातु) उसकी कामनाएँ पूर्ण हुईं।	सिद्धा तस्य मनोरथा।
वह थोड़ी देर सोया था कि बच्चों का शोर सुनकर फिर जाग पड़ा।	अचिरं प्रसुप्तोऽसौ शिशूनां कोलाहलमाकर्ण्य पुन. प्रबुद्ध।
पिंजरे से छूटा हुआ घरेलू कबूतर चील के मुँह में पड़ गया।	बन्धनभ्रष्टो 'गृहकपोत.' चिल्लाया मुखे पतितः।
पिता के स्वर्ग सिधार जाने का समाचार पाकर राजकुमार बहुत रोया।	उपरतस्तात इत्युपलभ्य भृशं प्ररुदित राजकुमार।
(विशेष धातु—क्रमशः) किसी कामी पुरुष ने पत्नी के भ्रम से दासी को आलिंगन कर लिया।	कामातुर· कश्चित् कान्ताभ्रान्त्या दासीमाश्लिष्ट.।

कल रात भर जागते रहने से तंग आकर मैं आज दिनभर सोया।	गतरात्रौ प्रजागरखिन्नोऽहमद्य सर्वं दिनं शयित.।
लो मैं ठहर गया।	एष स्थितोऽहम्।
यह कौन सौभाग्यवती तुम्हारे सिर पर बैठी हुई है ?	धन्या केय स्थिता ते शिरसि।
बीमार एक मिनट उठकर फिर दुर्बलता के कारण बैठ गया।	आतुर क्षणमुत्थाय दौर्बल्यात् पुनरासीन·।
पाण्डव विराट नगर मे साल भर अज्ञातवास मे रहे।	पाण्डवा विराटनगरे वर्षमज्ञातवासमुषिताः।
तब कुछ समय के बाद मेरा भी उनके साथ परिचय हो गया।	ततः कालेन ममापि ते. परिचयो जातः।
सूर्य बहुत चढ़ गया है।	दूरमारूढो दिनमणि।
तृष्णा मन्द नहीं हुई, हम ही बूढ़े हो गये हैं।	तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा·।

(ख) क्तवतु (Past Active Participle)

नियम २८—भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए क्तवतु का ऐसे ही प्रयोग किया जाता है जैसा कि कर्तृवाच्य मे भूतकालिक क्रिया का होता है। यथा—सोऽगच्छत्=स गतवान (वह चला गया)।

यह अविनाशी योग मैंने विवस्वान् (=सूर्य) को सिखाया।	इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।

क्तान्त और क्तवतु का विशेष प्रयोग

नियम २९—क्तान्त और क्तवतु के साथ भू और अस् धातुओं का भिन्न-भिन्न लकारों मे प्रयोग करके तदनुसार भिन्न-भिन्न कालों (Tenses) का अर्थ प्रकट किया जा सकता है।

(वर्तमान काल) बेटा, शोर न करो। तुम्हारा पिता सोया हुआ है। — शब्दं मा कार्षीः शिशो! पिता ते सुप्तोऽस्ति।

(भूतकाल) जब मैं कमरे में प्रविष्ट हुआ वह सोया हुआ था। — यदाऽहमगारं प्राविशं तदा स सुप्त आसीत्।

(भविष्यत् काल) जब तुम थियेटर से लौटोगे तब हम सो गये होंगे। — यदा त्वं प्रेक्षागृहान्निवर्तिष्यसे तदा वयं सुप्ता भविष्यामः।

—०—

(ग) वस्-अन्त और आन-अन्त
(Perfect Participle)

नियम ३०—जब यह भाव प्रकट करना हो कि 'कर्ता कोई कार्य समाप्त कर चुका है' या 'कर चुका था' तो वस्-अन्त का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—जज ने भी उस युवक की जिसने कि अपना अपराध स्वीकार कर लिया था प्रशंसा की। — निजमपराधं स्वीचकृवांसं युवानमाधिकरणिकोऽपि शशंस।

सीता ने राम को जिसने कि धनुष को भंग कर दिया था अपना पति चुना। — धनुर्बिभिद्वांसं रामं वरयामास जानकी।

दर्शकों ने नटी की जोकि अभिनय कर चुकी थी खूब प्रशसा की। — अभिनिनुषीं (अभिनिन्यानां वा) नर्तकीं सामाजिका मुक्तकण्ठं तुष्टुवुः।

लोगों ने राष्ट्रपति पर जोकि भाषण समाप्त कर चुके थे फूलों की वर्षा की। — भाषणान्तमुपेयुषि राष्ट्रपतौ लोकाः पुष्पाणि ववृषुः।

—:०:—

विधिकृदन्त

(Potential Passive Participle)

नियम ३१—विधिकृदन्त का प्रयोग—औचित्य, आवश्यकता, सामर्थ्य, योग्यता आदि का भाव प्रकट करने के लिए किया जाता है —अर्थात् जब यह कहना हो कि 'कर्ता को अमुक कार्य करना चाहिये' अथवा 'कर्ता अमुक कार्य करने की योग्यता वा सामर्थ्य रखता है' इत्यादि।

नियम ३२—विधिकृदन्त का कर्ता तृतीया* में रखा जाता है और कर्म प्रथमा में। विधिकृदन्त का लिंग और वचन कर्म के अनुसार होता है।

(औचित्य) मुझे अब क्या करना चाहिए?	संप्रति किमनुष्ठेयं मया।
तुम्हें चाहिये कि इस बालक को जोकि रास्ता भूल गया है घर पहुँचा दो।	त्वया मार्गभ्रष्टोऽयं शिशुर्गृहं प्रापयितव्यः।
वीतराग लोगों को यश की कामना नहीं करनी चाहिए।	न विरक्तैर्यशः काम्यम्।
तुम्हारा प्रयत्न प्रशंसा के योग्य है	प्रशंस्यस्तव प्रयासः।
लड़कियों में ऐसी जिद वांछनीय नहीं है।	न कन्यास्वीदृशी स्वैरिता काम्या।
(आवश्यकता) आप जल्दी क्यों कर रहे हैं? दिन निकलने से पहले मुझे उस महात्मा से मिलना है।	किमर्थं त्वरते भवान्? प्राक् प्रभातात् स महात्मा मया द्रष्टव्यः।

* कभी-कभी कर्ता षष्ठी में भी रखा जाता है। देखो 'कारक प्रकरण' में षष्ठी, नियम (१) (ग)।

एक मिनट ठहरिये। मुझे कपड़े बदलने हैं।	क्षणं विलम्ब्यताम्। मया वस्त्राणि विपरिधेयानि।
(योग्यता, सामर्थ्य आदि)* यह बोझ बहुत भारी है। बच्चा इसे उठा नहीं सकता।	गुरुतर एष भारो न शिशुना वहनीय (वोढव्यः वाह्यः वा)।
यह बात प्रकट हो चुकी है। अब किसी तरह भी छिपाई नहीं जा सकती।	प्रकाशतां गतोऽयमर्थो नेदानीं कथमपि गूहनीय।
शुद्ध आचार वाले अधिकारी को घूस का लोभ कदापि नहीं दिया जा सकता।	शुद्धशीलोऽधिकारी न जातूत्कोचेन प्रलोभनीयो भवति।

नियम ३३—भाववाच्य में विधि कृदन्त का प्रयोग सदा नपुंसक लिंग, एक वचन में होता है।

रात को देर तक जागना नहीं चाहिये।	न रात्रौ चिरं जागरितव्यम्।
पैदल चलने वाले इस रास्ते जायं।	पदातिभिरनेन मार्गेण गन्तव्यम्।

'भवितव्यम्' और 'भाव्यम्' का विशेष प्रयोग

नियम ३४—भाववाच्य में 'भवितव्यं' और 'भाव्यं' का प्रयोग किंचित अनिश्चय-मिश्रित सम्भावना का भाव प्रकट करने के लिए किया जाता है, अर्थात् जब यह कहना हो कि 'संभवत' ऐसी बात है, ऐसी बात अवश्य होगी, इत्यादि।

---

* शकि लिङ् च (३. ३ १७२) (सामर्थ्य के अर्थ में विधिलिङ् का भी प्रयोग होता है)।

पहरेदार अब सो गये होंगे क्योंकि उनके पांव की आहट सुनाई नहीं देती।
सुप्तैरिदानीं रक्षिभिर्भाव्यम्। न हि तेषां पदस्वनः श्रूयते।

यह स्त्री जिसने विवाह का कङ्कण धारण किया हुआ है जरूर बहू होगी।
कलितकौतुकयाऽनया वध्वा भाव्यम्।

—०:—

भविष्यत् कृदन्त

(Future Participle)

नियम ३५—जब यह भाव प्रकट करना हो कि कोई क्रिया निकट भविष्य में होने वाली है तो भविष्यत् कृदन्त—स्यत् (कर्तृवाच्य में) और स्यमान (कर्मवाच्य में) प्रयुक्त होता है।

उदाहरण—मैं सैर को जाने वाला था कि पिता ने मुझे बुला भेजा।
चङ्क्रमाय प्रयास्यन्नहं पित्राऽऽहूतः

वह छुरी भोंकने वाला ही था कि किसी ने पीछे से आकर उसका हाथ पकड़ लिया।
छुरिकया प्रहरिष्यन्नेवासौ केनचित् पृष्ठत आगत्य हस्ते गृहीतः।

जब पिता मरने लगा तो उसने पुत्रों को बुला कर कहा कि एकता से कल्याण और फूट से सत्यानाश होता है।
मरिष्यन् पिता पुत्रानाहूय प्रोवाच संहतिः श्रेयसे भिदा विनाशकारिणीति।

इङ्गलैण्ड जाने से पहले मित्र और सम्बन्धी उसे मिलाने के लिए एकत्र हुए।
आङ्ग्लभुवं प्रस्थास्यमानं तं सुहृदो मित्राणि बान्धवाश्च [illegible]

नोट—निकट भविष्य का अर्थ प्रकट करने के अतिरिक्त भविष्यत् कृदन्त इच्छाद्योतक भी है।

अछूतों का उद्धार करना चाहते हुए महात्मा गांधी ने उनका नया नाम हरिजन रखा।	अस्पृश्यानुद्धरिष्यन् महात्मा गांधी तेषा हरिजना इति नवामभिधा विदधे।
मिलने वालों से दिल का दुःख छिपाना चाहता हुआ वह आँसू पोंछकर कुछ-कुछ मुस्कराता रहा।	दिदृक्षुभ्यो मनस्तापं गूहिष्यन् (गोपयिष्यन् वा) सोऽश्रूणि प्रमृज्य ईषत्स्मयमानः तस्थौ।

—:o:—

भूतकालिक अव्यय कृदन्त

(क) क्त्वान्त और ल्यबन्त (Indeclinable Past Participle)

धातु के साथ 'त्वा' लगाने से क्त्वान्त रूप बनता है, जैसे—गम् +त्वा=गत्वा (जाकर), स्मृ+त्वा=स्मृत्वा (स्मरण करके), श्रु+त्वा श्रुत्वा (सुनकर), त्यज्+त्वा=त्यक्त्वा (छोड़कर) इत्यादि।

जब धातु से पहले कोई उपसर्ग लगा हो, तो 'त्वा' के स्थान में 'य' (ल्यप्) लगता है। जैसे—सम्√स्मृ+य=संस्मृत्य (स्मरण करके), उप√गम्+य=उपगम्य (पास जाकर), परि √त्यज+य= परित्यज्य (छोड़कर) इत्यादि।

नियम ३६—जब कर्ता एक कार्य समाप्त करके दूसरा कार्य करता है तो पहले किये गये कार्य के लिए 'क्त्वान्त' (अथवा ल्यबन्त) का प्रयोग होता है। परन्तु यदि दो कार्य भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा किये जायँ तो नहीं।

उदाहरण—यह बटु प्रात. ही स्नान करके संध्या-उपासना करता है। तब कुछ खाकर विद्यालय जाता है। वहाँ गुरु के पास पहुँच कर हाथ जोड़कर प्रणाम करता है।

वटुरयं प्रातर् एव स्नात्वा संध्याम् उपास्ते। तत. किंचिद् भुक्त्वा विद्यालय याति। तत्र गुरो समीपं गत्वा (or गुरुम् उपगम्य) अजलिं वद्धवा प्रणमति।

हरि के अद्भुत रूप का स्मरण करके मुझे बहुत विस्मय होता है।

हरेर् अद्भुतं रूप स्मृत्वा (or संस्मृत्य) महान् मे विस्मयो भवति।

(तू) सब धर्मों को छोड़कर एक मेरी शरण ले।

सर्वधर्मान् परित्यज्य (or त्यक्त्वा) माम् एकं शरणं व्रज।

जीवन से तंग आकर जो आत्महत्या कर बैठते हैं, उन्हें मरकर भी शांति नहीं मिलती।

जीविताद् उद्विज्य य आत्मघातम् आचरन्ति न हि ते मृत्वाऽपि निर्वृतिं लभन्ते।

(ख) णमुल्

जब दो कार्यों मे से पहले कार्य के बार-बार होने का भाव व्यक्त करना हो तो णमुल् का दो वार प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—कश्मीर देश की शोभा देख-देखकर मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ।

काश्मीराणा शोभां दर्शं दर्शं मनो मे नितरां मुमुदे।

प्रतिदिन युद्ध की खबरें सुन-सुनकर लोग बहुत घबराये।

प्रत्यहं युद्धस्य वार्ता श्रावं-श्रावं लोका भृशमुदविजन्त।

—:o:—

दूसरा पाठ

तुमुन्नन्त (Infinitive of Purpose) का प्रयोग

नियम ३७—जब यह भाव व्यक्त करना हो कि कर्ता कोई कार्य करना चाहता है, तो इष, कम्, ईह, वश् आदि इच्छा-द्योतक धातुओं और उनसे बने नामों (Verbal nouns) के साथ अभीष्ट क्रिया सूचक धातु के तुमुन्नन्त रूप का प्रयोग किया जाता है, यदि मुख्य क्रिया और तुमुन्नन्त का कर्ता एक ही हो।*

उदाहरण—(१) 'वह जाना चाहता है'=स गन्तुमिच्छति, (२) 'मैं देखना चाहता हूँ'=अहं द्रष्टुमिच्छामि।

ध्यान रहे कि यदि तुमुन्नन्त और मुख्य क्रिया का कर्ता भिन्न-भिन्न हो तो तुमुन्नन्त का कदापि प्रयोग नहीं हो सकता।

उदाहरण—'मैं चाहता हूँ कि आप भोजन करें' का अनुवाद होगा—इच्छामि भवान् भुंजीत् भुंक्ताम् वा, अथवा—कामो मे भवान् भुंजीत; अथवा—भवन्तं भुंजानमिच्छामि, न कि 'भवन्तं भोक्तुमिच्छामि'। अन्तिम वाक्य न केवल विवक्षित अर्थ को ही प्रकट नहीं करता वल्कि अर्थ का अनर्थ कर देता है।

---

* समानकर्तृकेषु तुमुन् (३. ४. ६५)

उदाहरण—आप अब क्या चाहते हैं ? — भवानधुना किं कर्तुमिच्छति।

ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं जो बुरा करने वाले का भी भला करना चाहते हैं। — विरलास्ते येऽपकारिणामप्युपकर्तुमीहन्ते (कामयन्ते वा)।

नियम ३८—(क) * इच्छाद्योतक धातुओं और उनसे बने नामों के अतिरिक्त निम्नलिखित के योग में भी तुमुन्नन्त का प्रयोग होता है—समर्थ होना (√शक्, धृष्—√पारय्, प्र√भू, ईश्), जानना (√ज्ञा, विद् 2P), प्रयत्न करना (√यत्, प्र√यत्, व्यव√सो), आरम्भ करना (√रभ्, आ√रभ्, प्र√क्रम्), प्राप्त करना (√लभ्), सहना (√सह्, वि√सह्), होना (√अस्, √भू, √विद् 4A)।

(ख) भवत् (आप) तथा युष्मद् (तुम) के साथ √अर्ह् का प्रयोग प्रार्थना का भाव प्रकट करने के लिए किया जाता है, यथा—आपको ऐसा करना चाहिए, कृपया ऐसा कीजिये। प्रथम पुरुष (3rd person) के साथ √अर्ह् का प्रयोग सामर्थ्य प्रकट करने के लिए भी किया जाता है।

उदाहरण—(क) क्रमशः

मैं एक पग भी नहीं चल सकता — पदमेकमपि गन्तुं न शक्नोमि।

कोई भी हमें हरा नहीं सकता। — न कोऽप्यस्मान् पराजेतुं प्रभवति (पारयति, ईष्टे वा)।

जिसे सभा में बोलना तक नहीं आता वह हमारा प्रतिनिधि न बने — नासौ नः प्रतिनिधिर्भवतु यः सभायां वक्तुमपि न जानाति।

नीच आदमी दूसरे का काम बिगाड़ना ही जानता है न कि बनाना। — [illegible] परकार्यं [illegible] न सम्पादयितुम्।

---

* शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन् (३. ४. ६५)।

मैं इस कठिन कार्य को करने का यत्न करूँगा।	अहमिदं दुष्करं कार्यं संपादयितुं प्रयतिष्ये।
ओहो ! हम महापाप करने लगे हैं।	अहो बत ! महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्।
अचानक बादल बरसने लगा।	अकस्माद् देवो वर्षितुमारभत।
खाना खाते ही जो पढ़ने लग जाता है उसे प्रायः अजीर्ण हो जाता है।	भुक्त्वैव योऽध्येतुमारभते प्रायेणासावजीर्णेन बाध्यते।
मैं जो पहले कहने लगा था उसे छोड़ कर दूर चला गया हूँ।	प्रथमं यत्कथयितुं प्रवृत्तो ऽहं तत्परित्यज्य दूरमतिक्रान्तोऽस्मि।
हवाई जहाज़ों की घूं घूं के कारण रात को सोना तक नहीं मिलता।	व्योमयानानां घर्घररवेण रात्रौ स्वप्तुमपि न लभ्यते।
आज कल खाद्य सामग्री के महंगा होने के कारण साधारण लोगों को पेट भर खाना भी नहीं मिलता।	अद्यत्वे खाद्यानां महार्घत्वात् साधारणो जनः कुक्षिपूरं भोक्तुमपि न लभते।
क्या सच तुम्हारे घर में खाने को अन्न भी नहीं है ?	किन्तु तव गृहे भोक्तुमन्नमपि नास्ति।
इस उत्तर से हमारा संतोष हो गया है। अब आगे कुछ पूछना नहीं है।	सन्तुष्टा वयमेतेनोत्तरेण। अतः परं नास्ति किमपि प्रष्टुम्।

उदाहरण—(ख) क्रमशः

(प्रार्थना) यदि छिपाने की बात न हो, तो कृपया उत्तर दीजिए।	न चेद्रहस्यं प्रतिवक्तुमर्हसि।

आपको चाहिए कि ऐसे पूज्य अतिथि की अगवानी करें। — तादृशं पूज्यमतिथिं प्रत्युद्गन्तुमर्हति भवान्।

(सामर्थ्य) विशेष बुद्धि से भाग्य को कौन पलट सकता है। — दैवं प्रज्ञाविशेषेण को निवर्तितुमर्हति।

नियम ३९—(क) √शक्[1] आदि धातुओं की भाँति सामर्थ्य-सूचक अलम्, समर्थ, पर्याप्त, शक्त, शक्ति, विभव, सामर्थ्य आदि शब्दों के साथ तथा प्रवीण, पटु आदि शब्दों के साथ भी तुमुन्नन्त का प्रयोग होता है। (ख) 'युक्त', 'उचित' आदि औचित्यसूचक शब्दों के योग में भी तुमुन्नन्त का प्रयोग होता है।

उदाहरण (क) मुझमें एक पग चलने की भी शक्ति नहीं। — नास्ति मे शक्तिः पदात्पदमपि गन्तुम्।

कोई भी हमें हराने की शक्ति नहीं रखता। — नास्ति कस्यापि शक्तिर् (विभवः, सामर्थ्यम् वा) अस्मान् पराजेतुम्। (अथवा) न कोऽप्यस्मान् पराजेतुं समर्थः (शक्तोऽलम् वा)।

संसार में प्रायः धनी लोगों में भोजन करने की शक्ति भी नहीं होती। — प्रायेण श्रीमतां लोके भोक्तुं शक्तिर्न विद्यते।

भाग्य को कौन बदल सकता है। — कः समर्थो दैवमन्यथाकर्तुम्।

कामदेव तो तपस्वियों के मन में भी विकार उत्पन्न कर सकता है। — कामस्तु तपस्विनामपि चेतांसि विकर्तुमलम्।

उदाहरण—(ख) सबके सामने ऐसा बोलना ठीक नहीं। — उचितं न ते समक्षमेवं गदितुम्।

भला करने वालों का बुरा करना ठीक नहीं। — नोपकारिणामपकर्तुं युक्तम्।

१. पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु (३।४।६६)।

नियम ४०—समयसूचक शब्दों के साथ भी तुमुन्नन्त का प्रयोग होता है जब कि यह भाव प्रकट करना हो कि 'अब अमुक कार्य करने का उचित समय है।*

उदाहरण—(क) अरे भारत-वासियो! यह समय जागने का और देश-सेवा में लगने का है।	ननु भरतभूमिजा! कालोऽयं जागर्तुं देशसेवायां चात्मानं व्यापारयितुम्। †
यह समय आपस में झगड़ने का नहीं।	नायं समय परस्परं विवदितुम्।
पढ़ना बन्द कर दो क्योंकि अब सैर करने का समय है।	विरमाध्ययनात्। इयं हि विहर्तुं वेला।

नोट—कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में तुमुन्नन्त का एक ही रूप होता है। यथा—

आप अब क्या करना चाहते हैं।	भवताऽधुना किं कर्तुमिष्यते।
मुझसे एक पग भी नहीं चला जाता।	न मया पदात्पदमपि गन्तुं शक्यते शक्यम् वा।
अन्धा कुछ भी देख नहीं सकता।	नान्धेन किमपि द्रष्टुं शक्यम्।
धिक्कार है ऐसी परतन्त्रता को कि अपनी इच्छा से रो भी नहीं सकते।	धिगिद पारतन्त्र्यं यत् स्वच्छन्द-माक्रन्दितुमपि न शक्यते।

—:o:—

* कालसमयवेलासु तुमुन् (३।३।१६७)।

†(cf—लिङ् यदि ३ ३. १६८—'यद्' का प्रयोग करने पर लिङ् का विधान और तुमुन् का निषेध हो जाता है। यथा—(१) कालोऽय जागर्तुं···,अथवा, (२) कालो यद् यूय जागृयात···।

अभ्यास ३०

(कृदन्तों के प्रयोग)

(१) क्या चाहते हुए लोग पाप करते हैं ? (२) स्वभाव से नियत कर्म को करने वाले को पाप नहीं लगता।[1] (३) न बहुत भोजन करने वाले को और बिल्कुल भोजन न करने वाले को योग की प्राप्ति नहीं होती।[2] (४) पढ़-लिख कर भी घर में बेकार बैठे हुए क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती ? (५) पुत्र को आग में गिरता देखकर पतिव्रता ने पति को न जगाया।[3] (६) उत्सव के समाप्त होने पर बच्चे हँसते कूदते और परस्पर बातें करते हुए उसी मार्ग से गये। (७) लड़की काँपती हुई भीतर आई और रोती हुई बोली। (८) मैंने उसे आश्वासन देते हुए कहा कि तू मुझ जागते हुए को सोया हुआ मत समझ। (९) उस नीरस उपन्यास को पढ़ते-पढ़ते मुझे सिरदर्द होने लगा है। (१०) आप सब कुछ जानते हुए भी अनजान क्यों बन रहे हैं ? (११) पुत्रों को परस्पर झगड़ते देख कर पिता ने उन्हें समझाने के लिये अपने पास बुलाया। (१२) परित्राण के निमित्त कर्ता कहीं छिपा हुआ होगा।[4] (१३) बीता यौवन फिर नहीं लौटता। (१४) गुरुओं की आज्ञा पर ननु नच नहीं करना चाहिए। (१५) मुझे जो करना था कर दिया। अब मैं कुछ कहना या सुनना नहीं चाहता।

—:०:—

अभ्यास ३१

(कृदन्तों के प्रयोग)

(१) [illegible] (२) [illegible]

१. [illegible] २. [illegible] ३. [illegible] ४. [illegible]

लोगों को तो सदा धोखा दे सकते हैं, और सभी लोगों को भी थोड़ी देर के लिए धोखा दे सकते हैं, पर सभी लोगों को सदा के लिए कोई धोखा नहीं दे सकता। (३) इतने वेतन से मेरा निर्वाह नहीं हो सकता।[6] (४) भिन्न-भिन्न विशेषताओं के कारण वहाँ के महल तुम्हारी तुलना कर सकते हैं।[7] (५) ऐसी स्थिति में चुप रहना ठीक नहीं।[8] (६) देखते, सुनते, स्पर्श करते, गन्ध लेते, खाते, चलते, सोते और सांस लेते हुए भी तत्व-वेत्ता योगी यही समझे कि मैं कुछ भी नहीं करता।[9] (७) प्रिय जन कुछ भी न करता हुआ सुखों के द्वारा दु:खों को दूर करता है।[10]

—:o:—

छेत्तु मृर्षिन्व्यवस्यति। ६. वेतनेनानेन जीवितुमसमर्थोऽहम् ७. त्वा तुलयितुमलम्। ८ ···न युक्त नैभृत्यमवलम्बितुम्। ९. भगवद्गीता ५, ८। १०. उत्तररामचरित, २, १६।

तीसरा अध्याय

कारक प्रकरण

अनुवाद के लिए विभक्तियों का ठीक-ठीक प्रयोग समझना बहुत आवश्यक है। विभक्ति तीन प्रकार की होती है—कारक विभक्ति, उपपद विभक्ति और शैषिकी विभक्ति। कारक विभक्ति वह है जो क्रिया की निष्पत्ति का हेतु हो, अर्थात् क्रिया के सम्बन्ध से जो विभक्ति प्रयुक्त हो वह कारक विभक्ति कहलाती है। विशेष अव्यय शब्दों (अन्तरा, प्रति, निकषा आदि) के उपपद होने पर जो विभक्ति प्रयुक्त हो वह उपपद विभक्ति कहलाती है। जो न कारक-विभक्ति और न ही उपपद-विभक्ति हो वह शैषिकी विभक्ति कहलाती है। षष्ठी मुख्यतया शैषिकी विभक्ति है। अन्य विभक्तियाँ भी शैषिकी के रूप में प्रयुक्त होती हैं। परन्तु उनका पृथक् निरूपण न करके हम विभक्तियों का (१) कारक, और (२) उपपद (जिसमें शैषिकी भी समाविष्ट है)—इन दो शीर्षकों के नीचे ही सोदाहरण विस्तृत प्रतिपादन करेंगे।

—:o:—

द्वितीया विभक्ति

नियम—(१) कर्मकारक निम्नलिखित के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है—

(क) सकर्मक धातुओं का कर्म, (ख) द्विकर्मक[1] धातुओं का मुख्य

१. द्विकर्मक धातु ये हैं— दुह् 2U, याच् 1A (अर्थ्, मार्ग्, भिक्ष् आदि भी), पच् 1U, दण्ड् 10U, रुध् 7U, प्रच्छ् 6P, चि 5U, ब्रू 2U (शास्, वच् आदि भी), शास् 2P, जि 1P, मन्थ् 9P, मुष् 9P, नी 1U, हृ 1U, कृष् 1P, वह् 1U (ह्, वह् आदि भी)।

लोगों को तो सदा धोखा दे सकते हैं, और सभी लोगों को भी थोड़ी देर के लिए धोखा दे सकते हैं, पर सभी लोगों को सदा के लिए कोई धोखा नहीं दे सकता। (३) इतने वेतन से मेरा निर्वाह नहीं हो सकता।[6] (४) भिन्न-भिन्न विशेषताओं के कारण वहाँ के महल तुम्हारी तुलना कर सकते हैं।[7] (५) ऐसी स्थिति में चुप रहना ठीक नहीं।[8] (६) देखते, सुनते, स्पर्श करते, गन्ध लेते, खाते, चलते, सोते और सांस लेते हुए भी तत्व-वेत्ता योगी यही समझे कि मैं कुछ भी नहीं करता।[9] (७) प्रिय जन कुछ भी न करता हुआ सुखों के द्वारा दुःखों को दूर करता है।[10]

—:o:—

छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति। ६ वेतनेनानेन जीवितुमसमर्थोऽहम् ७. त्वा तुलयितुमलम्। ८. ·· न युक्त नैभृत्यमवलम्बितुम्। ९. भगवद्गीता ५, ८। १०. उत्तररामचरित, २, १९।

तीसरा अध्याय

कारक प्रकरण

अनुवाद के लिए विभक्तियों का ठीक-ठीक प्रयोग समझना बहुत आवश्यक है। विभक्ति तीन प्रकार की होती है—कारक विभक्ति, उपपद विभक्ति और शैषिकी विभक्ति। कारक विभक्ति वह है जो क्रिया की निष्पत्ति का हेतु हो, अर्थात् क्रिया के सम्बन्ध से जो विभक्ति प्रयुक्त हो वह कारक विभक्ति कहलाती है। विशेष अव्यय शब्दों (अन्तरा, प्रति, निकषा आदि) के उपपद होने पर जो विभक्ति प्रयुक्त हो वह उपपद विभक्ति कहलाती है। जो न कारक-विभक्ति और न ही उपपद-विभक्ति हो, वह शैषिकी विभक्ति कहलाती है। षष्ठी मुख्यतया शैषिकी विभक्ति है। अन्य विभक्तियाँ भी शैषिकी के रूप में प्रयुक्त होती हैं। परन्तु उनका पृथक् निरूपण न करके हम विभक्तियों का (१) कारक, और (२) उपपद (जिसमें शैषिकी भी समाविष्ट है)—इन दो शीर्षकों के नीचे ही सोदाहरण विस्तृत प्रतिपादन करेंगे।

—:o:—

द्वितीया विभक्ति

नियम—(१) कर्मकारक निम्नलिखित के सम्बन्ध मे प्रयुक्त होता है—

(क) सकर्मक धातुओं का कर्म, (ख) द्विकर्मक[1] धातुओं का मुख्य

---

१. द्विकर्मक धातु ये हैं—दुह् 2U, याच् 1A (अर्थ्, नाथ्, भिक्ष् आदि भी), पच् 1U, दण्ड् 10U, रुध् 7U, प्रच्छ् 6P. चि 5U, ब्रू 2U (भाष, वच् आदि भी), शास् 2P, जि 1P, मन्थ् 9P, मुष 9P, नी 1U, हृ 1U, कृष् 1P, वह 1U (प्राप् C आदि भी)।

तथा गौण कर्म, (ग) गत्यर्थक धातुओं के योग में—जिस स्थान की ओर वास्तविक अथवा काल्पनिक गति हो, (घ) अधि√शी, अधि√स्था, अधि√आस, उप-, अनु-, अधि-, आ-,√वस- के योग में—जिस स्थान पर बैठना या रहना हो, (ङ) उपसर्ग पूर्वक√क्रुध् और√द्रुह् के योग में जिस व्यक्ति पर क्रोध किया जाय, (च) √मन् 4A के योग में—अनादर प्रकट करते हुए जिस पदार्थ के साथ किसी की तुलना की जाय, (छ) काल (Time) अथवा देश (Space) मे क्रिया की व्याप्ति का भाव गम्य होने पर, कालवाचक तथा देशवाचक शब्द द्वितीया में रखे जाते है।

(२) द्वितीया उपपद इन शब्दों के योग में आती है —

उभयत·, सर्वत , अभित , परितः, समया, निकषा, प्रति, धिक्, अन्तरा, अन्तरेण (=१. सम्बन्ध मे, बारे में, २ बिना) अधिकृत्य, उद्दिश्य इत्यादि।

उदाहरण (कर्मकारक—क्रमश)

(कर्तुरीप्सिततमम् कर्म (१. ४. ४६) अनभिहिते, कर्मणि द्वितीया (२. ३. १, २) अकथितञ्च १. ४. ५१)

(क) (१) मैं राम नामक छात्र को ढूँढ रहा हूँ।	(१) अहं राम नाम छात्रम् अन्विष्यामि=अहं रामनामानं छात्रम अन्विष्यामि।
(२) भाई, मुझे क्यों दोष देते हो ?	(२) भ्रात , किमर्थं माम् उपालभसे
(३) मैं तुम्हारी बात मानूँगा	(३) करिष्यामि तव वचनम्।
(ख)* (१) वह गाय का दूध दोहता है।	(१) गा दोग्धि पय. (=गो. दोग्धि पय.)।
(२) वह मार्ग भूले हुए बालक को घर पहुँचाता है।	(२) स पथभ्रष्टं बाल गृहं प्रापयति।

* अन्य द्विकर्मक धातुओ के उदाहरण—वह बलि से पृथ्वी माँगता है=बलिं (द्वितीया, or बलेः पंचमी) याचते वसुधाम्। वह गर्गो

(ग) (१) मैं घर जा रहा हूँ।	(१) गृहं गच्छामि=गृहं प्रस्थितोऽहम्।
(२) उसने सारी दुनिया की सैर की।	(२) स सकलां भुवं बभ्राम*।
(३) रात बीत गई, सूर्य उदय हो रहा है।	(३) रजनी विरामं गता। सूर्यः उदयं याति।
(४) थके हुए यात्री को तुरन्त नींद आ गई।	(४) श्रान्तः पथिकः झटिति निद्रामगच्छत्।†
(५) यह तालाब सूख गया है।	(५) शोषम् उपगतः अयं तडागः।

(घ) (अधिशीङ्स्थासां कर्म १ ४ ४६)

(१) चिंता में डूबा हुआ मनुष्य मानों काँटों की सेज पर सोता है।	(१) कण्टकशय्यामिवाधिशेते चिन्ताग्रस्तो जनः।

को १००) जुर्माना करता है=गर्गान् द्वितीया or गर्गेभ्य (पंचमी) शतं दण्डयति। वह लडके से रास्ता पूछता है=माणवकं (or माणवकात्) पन्थानं पृच्छति। वह ब्रह्मचारी को धर्म बतलाता है=माणवकं (द्वितीया or माणवकाय चतुर्थी) धर्मं ब्रूते शास्ति वा। वह गाय को गाँव में ले जाता है=ग्रामं (द्वितीया or ग्रामे सप्तमी) अजां नयति। इत्यादि।

*जिस स्थान पर चलना-फिरना हो उसके लिए कर्मकारक आता है। अन्य उदाहरण—महीम् आटम; विचचार दावम; इष्टान् देशान् विचर जलद।

† भाववाचक संज्ञाओं के साथ गत्यर्थक धातुओं का बहुत सुन्दर प्रयोग होता है। यथा—क्षयं, मृत्युं, सुखं दुःखं शोकं, मोहं, विपादं, कोपं, आनृण्यं···√गम, उप√इ, प्र√पद्, आप, प्रति√पद्, भुज् इत्यादि।

उदाहरण—बाल्यात्परं नाऽथ वयः प्रपेदे। ईदृशीमवस्थां प्रतिपन्नोऽस्मि। प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता, न हि कल्याणकृत् कश्चिद् दुर्गतिं तात ! गच्छति (भगवद्गीता)। अतितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते। मुखं मलिनतां भजति स्म। इसी प्रकार मौनं भज्, धृतिं भज्, भीतिं भज इत्यादि। जनापवादस्य शरव्यतां गतः।

(२) मैं घोड़े पर चढ़कर गाँव जाऊँगा। | (२) अश्वमधिष्ठाय ग्रामं गमिष्यमि।

(उपान्वध्याङ् वसः १. ४४. ८)

(३) साथ-साथ जुड़े हुए मकानों से खचाखच भरे हुए नगर में रहता हुआ मनुष्य प्राय. बीमार पड़ जाता है। | (३) संश्लिष्टसद्मसंकुल नगरमधिवसन्नर. प्रायः रुग्णो भवति (=रुजति)।

(४) स्वास्थ्य चाहने वाला मनुष्य किसी वन मे या पहाड़ पर जाकर रहे। | (४) स्वास्थ्यमिच्छन्नरः किंचिद् वनं कंचिद् गिरिं वाऽनुवसेत् (उपवसेत्, आवसेत् वा)

(ङ) (क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयो' कर्म १. ४. ३८)

(१) तू व्यर्थ ही मुझ से नाराज होता है। | (१) वृथैव मां संक्रुध्यसि।

(२) मन्त्री लोग क्रूर राजा से द्रोह करते हैं। | (२) क्रूरं नृपमभिद्रुह्यन्ति प्रकृतय *।

(च) (मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु २. ४. ३८)

(१) मैं तुझे तिनके के बराबर भी नहीं समझता। | (१) न त्वां तृणं मन्ये†।

(छ) (कालाध्वनोरत्यन्तसंयोग २. ३. ५.)

(१) योरुप का युद्ध छः साल तक होता रहा। | (१) षड् वर्षाणि प्रावर्तत योरुप-युद्धम्।

(२) बारह वर्ष तक वर्षा न हुई। | (२) न ववर्ष द्वादश वर्षाणि वासव.।

(३) कितनी देर तू यहाँ ठहरेगा। | (३) कियन्तं कालं त्वम् अत्र स्थास्यसि।

---

* बहुवचन मे प्रकृति (=प्रकृतयः) का अर्थ है—(१) मन्त्रिमण्डल, (२) प्रजा। देखिये—सम्प्रदान कारक, नियम (१) (अ)।

(४) हिमालय हजार कोस तक फैला हुआ है। — (४) क्रोशसहस्रं विस्तृतः हिमालयः।

उदाहरण (द्वितीया उपपद—क्रमश.)

(उभसर्वतसो कार्य्या धिगुपर्य्यादिषु त्रिषु। द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते (वार्त्तिक)।

अभितः–परित –समया–निकषा–हा–प्रति–योगेऽपि (वार्त्तिक)

(१) सड़क के दोनों ओर डंडा-पुलिस खड़ी है। — (१) उभयतः मार्गं तिष्ठन्ति दण्डधारिणः रक्षापुरुषाः।

(२) महल के चारों ओर लोगों की भीड़ दिखाई देती है। — (२) सर्वतः (अभित., परित वा) प्रासादं जनसमुदाय. दृश्यते।

(३) रावी लाहौर के पास बहती है। — (३) निकषा (समया वा) लवपुरम् इरावती वहति।

(४) यह मुसाफिर लाहौर की ओर जा रहा है। — (४) पथिकोऽयं लवपुरं प्रति गच्छति।

(५) मेरे बारे में तुम्हारी ऐसी लापरवाही क्योंकर है? — (५) कुतस् तव ईदृशी उदासीनता मां प्रति।

(६) तेरी योग्यता के बारे में सन्देह नहीं है। — (६) तव योग्यतां प्रति संशयो नास्ति।

(७) स्वास्थ्य के बारे मे सावधान रह। — (७) स्वास्थ्यं प्रति सावधानो भव।

(८) मेरे सामने तो वह कोई बहादुर नहीं। — (८) मां प्रति तु नाऽसौ वीर।*

(९) धिक्कार है उन्हें जो बड़ों का उपहास करते हैं। — (९) धिक् तान् ये गुरून् उपहसन्ति।

---

*अन्य उदाहरण—त्वयैकमीशं प्रति साधु भाषितम् (इति कुमारसंभवे), मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनं प्रति (इति [illegible]

(अन्तरान्तरेण युक्ते २. ३. ४)

(१०) अमृतसर लाहौर और जालंधर के बीच आता है।

(१०) अमृतसरो लवपुरं जालंधरं च अन्तरा वर्तते।

(११) मैं प्रातःकाल और दोपहर के खाने के बीच केवल पानी पीता हूँ।

(११) प्रातराशं मध्याह्नभोज्यं च अन्तरा जलमात्रं पिबामि।

(१२) मेरे बारे में तूने गुरु जी के आगे क्या कहा?

(१२) माम् अधिकृत्य त्वया गुरो पुरतः किम् अभिहितम्।

(१३) तुम्हारी गुस्ताखी के बारे मे गुरुजी को कह दिया गया है।

(१३) तव अविनयम् अन्तरेण सूचिता गुरुचरणाः।

(१४) पढ़ने में यह लड़का कैसा है?

(१४) अध्ययनमन्तरेण कीदृशोऽयं बटुः।

(१५) तेरे बिना मैं एक मिनट भी नहीं रह सकता।

(१५) त्वामन्तरेण क्षणमप्यवस्थातुं नोत्सहे।

(१६) राजा के अपराध के बिना प्रजा की अकाल मृत्यु नहीं होती।

(१६) न राजापचारमन्तरेण प्रजास्वकालमृत्युः सचरति।

(१७) परीक्षा के विचार से जो पढ़ा जाता है वह शिक्षा नहीं कहलाती।

(१७) परीक्षामुद्दिश्य यदधीयते न सा शिक्षेत्यभिधीयते।

(१८) और किस उद्देश्य से आजकल का छात्र स्कूल जाता है?

(१८) किमन्यदुद्दिश्य अधुनातन छात्र विद्यालयं गच्छति।

—०—

अभ्यास ३२

(द्वितीया विभक्ति—कर्म कारक)

१. कुम्हार प्रतिदिन दस घड़े बनाता है। २. वह कच्चे फलों को

ताड़ता है। ३. दुष्ट सज्जनों को तंग करते हैं। ४. वह मुझसे पुस्तक माँगता है। ५. भगवान भक्तों के दु:खों को दूर करते हैं। ६. वह शत्रुओं को पराजित करता है। ७. वह मुझे अपने घर ले गया। ८. मै दो कोस चल कर किसी वृक्ष की छाया मे विश्राम करने के लिए एक शिला पर बैठ गया (अधि√आस्)। ९. वह राजर्षि इस तपोवन में रहता है (उप√वस्)। १० उसने मुझसे उद्यान का मार्ग पूछा। ११. डाकुओं ने यात्रियों का सारा धन लूट लिया (√मुष् 9P with द्वितीया)। १२. मित्र, मेरी प्रतीक्षा करो। मै भी तुम्हारे पीछे आया (use लट्)। १३. सरोवर का निर्मल शीतल जल पीकर पथिक को बहुत तृप्ति हुई। १४. सीता राम को उस अवस्था मे देख कर विषाद को प्राप्त हुई। १५ धीरे-धीरे उस अतिव्ययी का प्रभूत धन क्षय को प्राप्त हुआ। १६. प्रभो! मेरा जन्म सफल हो (=सफलता को प्राप्त हो, सफलता√व्रज)।

—:o:—

अभ्यास ३३

(द्वितीया—उपपद)

१. सडक के दोनों ओर ऊँचे तथा घनी छाया वाले (=प्रच्छाय Adj) वृक्ष खडे हैं। २ वेदी के चारों ओर फूल बिखरे पड़े हैं। ३. उसके और मेरे घर के बीच एक चौडी सडक है। ४. आपने किस उद्देश्य से मेरे पास ये फल और मिठाई भेजी। मै किसी प्रकार की रिश्वत नहीं लेता। ५, वह शकुन्तला के बारे मे कह रहा है न कि तुम्हारे बारे मे (Use अधिकृत्य)। ६. पिताजी, मेरे विदेश जाने के बारे में आपने क्या निर्णय किया है (Use प्रति)। ७. सौन्दर्य के आकर्षक होने के बारे मे भला किसे सन्देह होगा। ८. अपराध किये बिना किसी को दण्ड न मिलना चाहिए। ९. मन्दिर के समीप ही एक सुन्दर कमल-सरोवर है। १०. ऐसे क्रूर और अन्यायी राजा को धिक्कार है।

तृतीया विभक्ति

नियम—(१) करणकारक निम्नलिखित के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है—

(क) कार्य करने का साधन (शरीर का अवयव अथवा अन्य वस्तु), (ख) यान (Conveyance) रथ आदि जिस पर बैठकर कहीं जाना हो, (ग) मार्ग वा दिशा जिसमें जाना हो, (घ) कर्मवाच्य में, भाववाच्य में तथा क्तान्त और विधिकृदन्त का कर्ता तृतीया में होता है।

(२) तृतीया उपपद निम्नलिखित के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है—

(क) कार्य को पूरा करने में जितना समय लगे, (ख) शरीर के जिस अंग मे विकार हो, (ग) जिस चिह्न से किसी की पहचान हो, (घ) जिस कारण के उपस्थित होने पर अथवा जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कोई कार्य किया जाय, (ङ) जिस बात में किसी की किसी से समानता (Resemblance) हो या तुलना (Comparison) की जाय, (च) जिस बात मे कोई किसी से बढ़कर हो, (छ) जिसकी शपथ खाई जाय, (ज) जिस बात से संतोप या प्रसन्नता हो, (झ) जितने मूल्य मे कुछ खरीदा या बेचा जाय, (ञ) जिससे सयोग या वियोग हो, (ट) प्रकृति, व्याज, बुद्धि आदि शब्दों के योग में, (ठ) किं, कार्यं, प्रयोजनं, अर्थ , गुण , हीन, न्यून, रहित आदि के योग में, अलं, कृत आदि के योग में, सह, साकं, सार्धं, समं, विना आदि के योग में, (ड) जब किसी शब्द को क्रिया-विशेषण के रूप प्रयुक्त किया जाय तो उसे तृतीया में रखा जाता है।

उदाहरण (करण कारक)

कर्तृकरणयोस्तृतीया—२. ३ १८)

(क) (१) पुराने सिपाही तीरों से युद्ध किया करते थे।

(१) पुरातनाः योधा इषुभि. युध्यन्ते स्म।

(२) कुली लोग कंधे पर, सिर पर और पीठ पर भार उठाते हैं।

(२) स्कन्धेन शिरसा पृष्ठेन च भार वहन्ति भारहारा ।

(३) जल से शरीर शुद्ध होता है और मन सत्य से शुद्ध होता है

(३) अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।

(४) ब्रह्मचर्य और तपस्या से देवताओं ने मृत्यु को जीता।

(४) ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत॥।

(५) पुत्र वह है जो अच्छे कामों से पिता को प्रसन्न करता है

(५) प्रीणाति य सुचरितै पितरं स पुत्र ।

(६) उपाय से जो हो सकता है वह पराक्रम से नहीं।

(६) उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्य पराक्रमै ।

(७) वह मुँह से उसकी प्रशसा करता है पर दिल मे कोसता है।

(७) स त वाचा प्रशसति हृदयेन पुन निन्दति।

(८) भला करने से नहीं बल्कि बदला लेने से ही दुर्जन ठडा होता है।

(८) शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जन.।

(९) खाने से देह पुष्ट होता है और न खाने से सूखता है।

(९) अशनेन पुष्यति देहम् अनशनेन तु शुष्यति।

(१०) पुरुष संस्कृत बोलते हैं और स्त्रियाँ प्राकृत।

(१०) पुरुषा संस्कृतेन भाषन्ते स्त्रियः प्राकृतेन।

(११) परिश्रम करने से काम बनता है न कि इच्छा करने से।

(११) परिश्रमेण हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै.।

॥ उप.हन् 2A, लङ् प्रथमपुरुष; बहुवचन।

(ख) (१) मैं इतना थक गया हूं कि पैदल नहीं चल सकता। इसलिए तांगे पर जाऊँगा।

(१) एतावत् परिश्रान्तोऽस्मि यद् पद्भ्यां गन्तुं न शक्नोमि। तस्माद् यानेन यास्यामि।

(२) मोटर-गाडी में तो हमने बहुत बार सैर की है। अब कभी हवाई जहाज में सैर करना चाहते हैं।

(२) मोटरयानेन तु बहुश समचरामहि†। अथ कदाचिद् व्योमयानेन संचरितुमिच्छामः।

(ग) (१) चौक में पहुँच गया हूँ। अब नहीं जानता कि किस रास्ते से घर जाना है।

(१) चतुष्पथं प्राप्तोऽहम्। इदानीं न जाने कतमेन मार्गेण गृह गन्तव्यम्।

(२) महापुरुष जिस पर चलते आये हैं वही ठीक रास्ता है

(२) महाजनो येन गत· स पन्था।

(३) दूत खुफिया रास्ते से महल में प्रवेश करता है।

(३) दूतो गूढेन पथा राजगृहं प्रविशति।

(घ) (१) क्या आपने सुना? यह समाचार मैंने पहले नहीं सुना।

(१) अपि श्रुतं भवता। अश्रुतपूर्वो मयैष वृत्तान्त·।

(२) आप नये आये होंगे।

(२) आगन्तुकेन त्वया भाव्यम्

(३) मेरी ओर से तुम गृहस्वामी को यों कहो।

(३) मद्वचनात् त्वया गृहपतिर एवं वाच्य·।

(४) यहाँ जो कुछ देखने योग्य था वह सब हमने देख लिया है। अब कहाँ जाना और क्या करना चाहिए?

(४) यद् अत्र द्रष्टव्यम् आसीत तत्सवम् एव दृष्टम् अस्माभिः। इदानीं क्व गन्तव्यम् किं कर्तव्यम्।

---

† समस्तृनीयायुक्तात्—१ ३. ५४ स√चर् परस्मैपदी है, परन्तु यान के सम्बन्ध में आत्मनेपदी हो जाता है। यान अर्थ वाले शब्द को तृतीया में रखा जाता है।

(५) आप इस पुराने भक्त सेवक को याद रखिये।	(५) स्मर्तव्यो युष्माभिर् अयं चिरानुरक्तोऽनुचरः।
(६) आपका धन्यवाद।	(६) अनुगृहीतोऽस्मि (भवता)
(७) यह मेरे लिये असाध्य नहीं।	(७) इद मयाऽऽसाध्य नास्ति।
(८) राम के लिए क्या करना कठिन है?	(८) रामेण किं दुष्करम्।

उदाहरण—तृतीया उपपद

(अपवर्गे तृतीया २. ३. ६) अपवर्गः फलप्राप्तिः। तस्या द्योत्याया कालाध्वनोरत्यन्तसयोगे तृतीया स्यात्।

(क) (१) कितनी देर मे लौटोगे? थोड़ी देर मे ही लौट आऊँगा।	(१) कियता कालेन परापतिष्यसि। अचिरेणैव (कालेन) निवर्तिष्ये।
(२) टांगे पर जाते हुए दो घण्टे में लाहौर पहुँचते हैं पर गाडी से आधे घण्टे मे।	(२) अश्वयानेन गच्छन् होराद्वयेन लवपुर प्राप्नोति रेलयानेन तु अर्द्धहोरया।
(३) व्याकरण सीखने मे बारह साल लगते हैं।	(३) द्वादशभिर् वर्षैः श्रूयते व्याकरणम्।

(येनाङ्गविकारः २. ३. २०)

(ख) (१) पाँव से लंगडा आदमी धीरे चलता है।	(१) पादेन खञ्जो मन्थरं याति।

(इत्थंभूतलक्षणे २. ३. २१)

(ग) (१) न केवल शक्ल से बल्कि चाल और स्वर आदि से भी आदमी पहचाना जाता है।	(१) न केवलेन आकारेण किंतु गतिस्वरादिभिरपि अभिज्ञायते जनः।
(२) विवाह के कपडों से यह (लडकी) दुलहिन मालूम होती है।	(२) विवाहनेपथ्येन एषा वधूर् इति परिज्ञायते।

(३) इस नम्रता के कारण मैं उसे अच्छे कुल का समझता हूँ। | (३) अनेन प्रश्रयेण अहं तम् अभिजात मन्ये।

(हेतौ २. ३. २३)❀

(घ) (१) क्या इस बात से तुम्हें लज्जा नहीं आती ? | (१) किमनेन न जिह्रेषि (लज्जसे वा)।

(२) उस अपराध के लिए तुम्हें दण्ड मिलना चाहिए। | (२) तेनापराधेन दण्डयोऽसि।

(३) ठंडक और सुन्दरता के कारण चाँद आँखों को आनन्द देने वाला होता है। | (३) शीततया चारुतया च चन्द्रो नयनानन्दकरो भवति।

(४) आगन्तुक होने के कारण मैंने यह खबर पहले नहीं सुनी थी। | (४) आगन्तुकतया ऽश्रुपूर्वो मयैष वृत्तान्तः।

(सर्वनाम्नस्तृतीया च २. ३ २७)

(५) किसलिये यहाँ घूम रहे हो ? | (५) केन हेतुनाऽत्र भ्रमसि।

(हेतौ। फलमपीह हेतुः—सिद्धान्तकौमुदी)

(६) दिल बहलाने के लिए घूम रहा हूँ न किसी विशेष काम से। | (६) आत्मविनोदेन न तु कार्यविशेषेण परिभ्रमामि।

(७) मैंने तो समझा था कि गुरुजी की सेवा के लिए आये हो। | (७) मया पुनर्ज्ञातं गुरोः शुश्रूषया प्राप्तोऽसि।

(८) मैं तो वेतन के लिए मालिक की सेवा करता हूँ न कि केवल रोटी-कपडे के लिये। | (८) अहं तु वेतनेन स्वामिनं सेवे न तु अन्नाच्छादनमात्रेण।

❀ अन्य उदाहरण—महादेव से मिलने की इच्छा के कारण इस समय दो (व्यक्ति) शोचनीय बन गये हैं—द्वयं गतं संप्रति शोचनीयता समागमप्रार्थनया पिनाकिनः। (इति कुमारसम्भवे)

(६) विद्या-प्राप्ति के लिए गुरु की सेवा करनी चाहिए।
(६) विद्यया हेतुना गुरु सेव्यो भवति।

(१०) उसने मुझे खाने पर बुलाया।
(१०) स मां भोजनेन-न्यमन्त्रयत।*

(ङ) (१) गुणों मे अपने जैसी लड़की से विवाह करना चाहिए।
(१) गुणैर् आत्मसदृशीं कन्याम् उद्वहेत्।

(२) मेरे जैसा और कौन है?
(२) को ऽन्यो सदृशो मया।

(३) इस ससार मे ज्ञान के समान कुछ पवित्र नहीं।
(३) न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

(४) यह मेरे पाँव की धूल के बराबर नहीं।
(४) अयं न मे पादरजसा तुल्य.।

(च) (१) ललिता सब कलाओं में अपनी सहेलियों से बढ़कर है और वे सब ही सौन्दर्य मे उससे बढ़कर हैं।
(१) सर्वाभि· कलाभि ललिता स्वसखीर् अतिशेते, ताः अपि सर्वा रूपेण ताम् अतिक्रामन्ति।†

(छ) (१) तुम्हें अपने बेटे के प्राणों की शपथ यदि सच न कहो तो।
(१) शापितोऽसि निजसुतस्य प्राणैर् यदि सत्यं न कथयसि।

(२) ब्राह्मण को सच की शपथ दिलानी चाहिए।
(२) सत्येन शापयेद् विप्रम्।

(ज) (१) आपसे मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है।
(१) भवद्दर्शनेन परं प्रीतोऽस्मि।

---

* अन्य उदाहरण—तपस्या का स्वयं फल देने वाला (महादेव) किसी कामना (की पूर्ति) के लिए तपस्या कर रहा था = स्वयं विधाता तपसः फलानां केनापि कामेन तपश्चचार (इति कुमारसंभवे)

† तृतीया के स्थान में सप्तमी भी आ सकती है, यथा—सर्वासु कलासु · रूपे ···

(२) हम यहाँ वल्कल से संतुष्ट हैं और तू रेशमी कपड़ों से। | (२) वयमिह वल्कलैः परितुष्टास् त्वं दुकूलैः।

(झ) (१) गाय कितने को खरीदी है? | (१) कियता मूल्येन क्रीता गौः?

(२) हजारों मूर्खों के बदले एक समझदार को खरीद लो। | (२) सहस्रैरपि मूर्खाणामेकं क्रीणीत पण्डितम्।

(३) हाय! मैंने कांच के बदले चिन्तामणि को बेच डाला। | (३) काचमूल्येन विक्रीतो हन्त! चिन्तामणिर्मया।

(ञ) (१) अचानक एक बार रास्ते मे मेरा उससे मेल हो गया। | (१) यदृच्छयाऽहम् एकदा मार्गे तेन समगच्छे (समगसि वा)✽

(२) दुनिया की सैर करते हुए आदमी भाँति-भाँति के लोगों के सम्पर्क में आता है। | (२) भुवं भ्रमन् नरः नानाविधैः लोकैः सपृच्यते (संसृज्यते वा)।

(३) रत्न का सोने से संयोग हो। | (३) रत्नं समागच्छतु कांचनेन।

(४) उसकी लडकी विद्या, नम्रता, सौन्दर्य आदि गुणों से सम्पन्न है। | (४) तस्य कन्या विद्याविनयरूपादिभिः गुणैः युक्ता वर्तते।

(५) पति से विरहित सती क्षण भर भी कैसे जी सकती है! | (५) पत्या वियुक्ता सती क्षणमपि कथं जीवति।

(प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्। वार्त्तिक)

(ट) (१) स्वभावतः ही स्त्रियों का हृदय कोमल होता है। | (१) प्रकृत्या एव स्त्रीणां चित्तं सुकुमारं भवति।

(२) गाय का दूध स्वभाव से ही मीठा होता है। | (२) प्रकृत्या मधुरं गवां पयः।

✽ समो गम्यृच्छिभ्याम् (१ ३. २९)—गम् परस्मैपदी है परन्तु संगम् आत्मनेपदी है। समगच्छे=लङ्, उत्तम पुरुष, एकवचन, समगसि=लुङ, उत्तम पुरुष, एक वचन।

(३) जन्म से ब्राह्मण होता हुआ भी वह वाणिज्य से निर्वाह करता है

(३) जन्मना ब्राह्मणोऽपिसन्नसौ वणिग्वृत्या जीवति।

(४) किस बहाने घर जाऊँ ?

(४) केन व्याजेन गृहं गच्छामि ?

(५) सिर दर्द के बहाने छुट्टी ले लो।

(५) शिरोवेदनाव्याजेन अवकाशं प्राप्नुहि।

(६) सांप समझकर वह अंधेरे मे रस्सी से डर गया।

(६) तमसि असौ सर्पबुद्ध्या रज्ज्वाः अत्रसन (अत्रस्यत् वा)।

(७) घबराया हुआ मुसाफिर पानी के भ्रम से मृगमरीचिका से भी पीने को तैयार हो जाता है।

(७) आकुल पथिको जल-भ्रान्त्या मृगतृष्णिकायाम् अपि पातुं व्यवस्यति।

(८) मूर्ख आदमी शत्रु समझ कर मित्र से भी द्रोह करता है।

(८) मूर्खो जनः शत्रुधिया मित्रमपि अभिद्रुह्यति।

(९) मूर्ख ही सुख मान कर अन्त मे दुःख देने वाले विषयों में फंसता है।

(९) मूढो हि सुखबुद्ध्या दुःखानुबन्धिषु विषयेषु सज्जति।

(विशेष शब्दों के योग मे)

(ठ) (१) अगर तुम्हें जान की जरूरत हो तो दवाई पियो।

(१) यदि जीवितेन ते प्रयोजनं तर्हि अगदं सेवस्व।

(२) यदि मन शुद्ध हो तो तीर्थों से क्या लाभ ?

(२) शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् (किं कार्यम्, किं प्रयोजनम् को लाभः, कोऽर्थः वा)।

(३) यह जानकर मुझे क्या लाभ होगा ?

(३) अनेन विदितेन मम किं भविष्यति ?

(४) मुफ्त मे वेतन देने से क्या लाभ ? चला जा। मुझे तेरी जरूरत नहीं।

(४) किं मुधा वेतनदानेन। गच्छ, नाहं त्वया कार्यी।

(५) धन की मुझे आवश्यकता नहीं।	(५) धनेन मम कार्यं (प्रयोजनम् अर्थः वा) नास्ति। नाहं धनेन कार्यी (अर्थी वा)।
(६) अमीरों को तिनके से काम पड़ जाता है।	(६) तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम्
(७) राजाओं को धन की आवश्यकता होती है।	(७) हिरण्येनार्थिनो भवन्ति राजान।
(८) धर्म से हीन (लोग) पशुओं के समान हैं।	(८) धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।
(९) यदि तू किये को भूल जाय तो गुणों से रहित है।	(९) हीनोऽसि गुणैर्यदि कृतं विस्मरसि।

(सहयुक्तेऽप्रधाने। २. ३. १९.)।

(१०) क्या तुम यहाँ अकेले रहते हो या परिवार के साथ ?	(१०) किं त्वमत्र एकाकी वससि उत कुटुम्बेन सह।
(११) यह कैसी उच्छृखलता है कि कवारी लड़की भी भावी पति के साथ घूम-फिर लेती है।	(११) कीदृशीय स्वैरिता यद् कुमार्यपि भाविना पत्या सह संचरति।
(१२) आपने मानों मेरे दिल की बात कही है।	(१२) मम हृदयेन सह संमंत्र्य इव भवताऽभिहितम्।

(पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्। २. ३. ३२)।

(१३) तुम्हारे बिना मैं कैसे रहूँगा ?	(१३) त्वया विना कथम् अहं भविष्यामि।
(१४) पुण्यों के बिना तुम्हारा दर्शन भी नहीं होता।	(१४) पुण्यैविना तव दर्शनमपि न लभ्यते।
(१५) लज्जा से रहित स्त्री कैसी ?	(१५) का ललना लज्जया विना।

(१६) परिश्रम के बिना भाग्य भी नहीं फलता।	(१६) पौरुषेण विना दैवमपि न सिध्यति।
(१७) यह उपदेश रहने दो (= इस उपदेश की आवश्यकता नहीं)	(१७) अलमनेन उपदेशेन (उपदिष्टेन वा)।
(१८) यदि धर्म में तेरी श्रद्धा नहीं तो इन व्रतों को रहने दे।	(१८) यदि धर्मे ते श्रद्धा नास्ति तर्हि कृतमेभिर्व्रतैः।
(१९) मैंने पेट भरकर खा लिया है। अब ये फल और मिठाई रहने दीजिये।	(१९) कुक्षिपूरं भुक्तोऽस्मि। कृतमिदानीम् एभिः फलैर् मिष्टान्नैर् वा

(विशेषण के रूप में)

(ङ) (१) वहाँ का हाल संक्षेप से कह।	(१) तत्रत्यं वृत्तं समासेन ब्रूहि।
(२) तू अपना हाल विस्तारपूर्वक कह।	(२) त्वम् आत्मवृत्तान्तं विस्तरेण कथय।
(३) दिल की बात पूरी कह दूँगा।	(३) अशेषेण कथयिष्यामि मनोगतम्।
(४) शरीर को बिना कष्ट दिये धन एकत्र करना चाहिये।	(४) अक्लेशेन शरीरस्य कुर्वीत धनसंचयम्।
(५) क्या तू अपनी शक्ति के अनुसार तपस्या में लग रही है?	(५) अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे।
(६) पड़ी हुई वस्तु भी अँधेरे में कठिनता से दीखती है।	(६) विद्यमानम् अपि वस्तु तमसि कष्टेन लभ्यते।
(७) हम आपस में बड़ी मित्रता का बर्ताव करते हैं और सुख से रहते हैं।	(७) वयं परस्परस्मिन् परया मैत्र्या वर्तामहे सुखं च वसामः।

(८) बिना पूछे किसी से न बोलना चाहिए, और न ही अन्यायपूर्वक पूछने वाले से।

(८) नापृष्ट कस्यचिद् ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः।

(६) तेरी बात कुछ २ ठीक मालूम होती न कि सारी की सारी।

(६) तव कथनं मात्रया सत्यं प्रतिभाति न तु अशेषेण।

(१०) तू तुरन्त घर चला जा।

(१०) अविलबेन याहि गृहम्।

(११) मेरी बात ध्यान देकर सुन। पक्षपात से मत कह।

(११) सावधानतया शृणु मद्वच पक्षपातेन मा भण।

(१२) मित्र, हँसी मे कही हुई बात को सच न मान लेना।

(१२) परिहासविजल्पितं सखे! परमार्थेन न गृह्यता वचः।

—:०—

अभ्यास ३४

करण-कारक

(१) हाथ (अंजलि—पुंलिंग) से पानी नहीं पीना चाहिए। (२) वह सिर से भूमि को छूता है। (३) मित्रराष्ट्रों की सेना ने एक ही एटम-बम[3] से हीरोशीमा नगर को विध्वस कर दिया। (४) मैं कन्द-मूल से ऋषियों की सेवा करना चाहता हूँ (शुश्रूष, उप था)। (५) मैं उस जाते हुए पथिक को कुछ देर निर्निमेष दृष्टि से देखता रहा। (६) किसी न किसी उपाय से[3] इस बालक के प्राण अवश्य ही बचाने चाहिएँ। (७) विरही प्रिया-सम्बन्धिनी कथाओं से समय बिताता है (कालं √नी)। (८) झंडियों से सारा नगर सजाया गया। (६) बिजली के लैम्पों[4] के तीव्र प्रकाश से मेरी दृष्टि चकाचौंध हो गई। (१०) यात्री नाव मे बैठकर (नाव से) नदी को पार करते हैं। (११) प्यास से

---

१. 'न वार्यजलिना पिबेत्' (मनुस्मृतिः)। २. परमाणुविस्फोटास्त्र (नपुंसक) ३. येन केन प्रकारेण। ४. विद्युद्दीप (पुंलिंग)।

व्याकुल तथा घायल सिपाही बड़े यत्न से नदी के किनारे पहुंचा। (१२) उसने पीछे से आकर एकदम मेरा हाथ पकड़ लिया (—मुझे हाथ से पकड लिया)। (१३) क्या आपने कभी पहले ऐसा अद्भुत दृश्य देखा है (Use क्तान्त)। १४. अब हमें कहाँ जाना चाहिये और क्या करना चाहिए (Use विधिकृदन्त)। (१५) तू अपना हाल विस्तारपूर्वक कह (Use विधिकृदन्त)। (१६) अब तू सावधान हो जा (Use भाव्यम, भवितव्यम्)।

—:o.—

अभ्यास ३५

(तृतीया—उपपद)

(१) यह बीमार (आतुर—पुंलिंग) कुछ ही दिनों में बिल्कुल स्वस्थ हो जायगा। (२) मैं एक महीने में महाभारत का पारायण कर लूंगा। (३) जरा-जर्जर अंगों वाला तथा सफेद बालों वाला यह कौन बैठा है (Hint—इत्थंभूतलक्षणे)। (४) इस चोरी के कारण तू जेल में फेंक दिया जायगा (नि √क्षिप् कर्मवाच्य)। (५) इस स्थान के बहुत रमणीय तथा स्वास्थ्यप्रद होने के कारण मैं यहीं कुटिया बनाकर रहूँगा (६) सन्तानहीन होने के कारण[1] यह धनी आदमी अपनी जायदाद[2] भतीजे को दे देगा। (७) अपनी योग्यता के कारण वह प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्त किया गया। (८) किसी विशेष कारण से ही मैं इतनी देर चुप रहा[3]। (९) हर साल बहुत से भारतीय पढ़ाई के लिए इंगलैंड जाते हैं। (१०) तू विद्या, स्वभाव और सौन्दर्य में अपने जैसे पति को प्राप्त करे। (११) विद्या के समान कोई धन नहीं। (१२) इसका मुँह चाँद जैसा, हाथ पाँव कमल जैसे और स्वर कोयल की कूक जैसा है। (१३) तुम्हारे समान और कौन मेरा बन्धु है। (१४) मैं तेरे आगे

१. अनपत्यतया। २. रिक्थ=ऋक्थ (नपुंसक)। ३. [illegible]मवस्थान [illegible]। ४. अध्ययनेन (तृतीया विभक्ति)। ५. [illegible]। ६ कोकिल-कूजित (नपुंसक)।

अपनी और अपने बेटे की शपथ खाता हूँ (√शप)। (१५) हरिश्चन्द्र ने पाँच सौ मोहर में अपने आपको चांडाल के हाथ बेच दिया। (१६) धन्य हैं वे देश-भक्त जो जेल में भी घर समझकर[1] रहते हैं। (१७) प्राण निकल जाने पर वैद्य या औषध से क्या लाभ ? (१८) यह कहने से आपका क्या प्रयोजन है ? (१९) सब जानते है कि सीता अपनी इच्छा से राम के साथ बन में गई। (२०) पहले भी एक बार मै पिता के साथ यहाँ आया था। उन्हीं के साथ मैंने ये मन्दिर देखे थे। (२१) भोजन के बिना हम कितनी देर जियेगे ? (२२) परिश्रम के बिना कोई भी काम सिद्ध नहीं होता। (२३) लज्जा मत करो।[2] अपना ही घर समझकर यहाँ रहो। (२४) अब तो वह बड़ी कठिनता से पहचाना जाता है।

—.o:—

चतुर्थी विभक्ति

नियम (१)——सप्रदान कारक निम्नलिखित के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है—

(क) जिसे कोई वस्तु दी जाय, (ख) √रुच्, √स्वद् आदि के योग में—जिस व्यक्ति की रुचि हो, (ग) √धृ के योग मे जिस व्यक्ति का ऋण देना हो, (घ) √स्पृह् के योग मे जिस पदार्थ के लिए स्पृहा (Desire) हो। (ङ) √क्रुध, √द्रुह्, √ईर्ष्य्, √असूय् के योग में जिस व्यक्ति के प्रति क्रोध आदि हो, (च) प्रति√श्रु, आ√श्रु आदि के योग में, माँगने पर जिस व्यक्ति को कुछ देने का वचन (Promise) दिया जाय, (छ) √कथ्, √ख्या, √शस, √चक्ष, नि√विद् (णिजन्त) के योग मे जिसे कुछ कहा जाय, (ज) √गम् आदि के योग मे जिस स्थान पर चलकर जाना हो। (झ) प्र√हि, वि√सृज् के योग मे जिस व्यक्ति के पास किसी वस्तु या व्यक्ति को भेजा जाय,

---

१. गृहबुद्ध्या। २. Use अलम्।

(ञ) √मन् (4A) के योग में अनादर प्रकट करते हुए (नौका, अन्न, शुक, शृगाल के अतिरिक्त) जिसके साथ किसी की तुलना की जाय।

२. चतुर्थी उपपद निम्नलिखित के सम्बन्ध मे प्रयुक्त होती है—

(क) जिस कार्य के लिए कोई वस्तु बनी हो, (ख) जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कोई कार्य किया जाय, (ग) कई बार तुमुन्नन्त का लोप करके उसके कर्म को चतुर्थी मे प्रयुक्त किया जाता है, (घ) कई बार तुमुन्नन्त के स्थान मे उसी धातु से बनी भाववाचक संज्ञा को चतुर्थी मे प्रयुक्त किया जाता है, (ङ) √भू, √जन्, स √पद्, √क्लृप् के योग मे जो परिणाम हो, (च) हित, नम , स्वस्ति, स्वागत, अल, समर्थ, शक्त, प्रभु., (also प्र √भू) के योग मे चतुर्थी प्रयुक्त होती हैं।

उदाहरण—(सम्प्रदान कारक)

(चतुर्थी सम्प्रदाने २. ३. १३)

(क) (१) बेटा, यह किताब मुझे दे दे। मैं भी यह चित्र तुम्हें दूँगा।	(१) वत्स ! इद पुस्तक मह्यम् देहि अहम् अपि एतत् चित्र तुभ्यंदास्यामि
(२) धन्य है वह जो नगे को कपड़ा, प्यासे को पानी और भूखे को खाना देता है।	(२) धन्यो ऽसौ यो नग्नाय वस्त्रं तृषिताय जल बुभुक्षिताय च भोज्यं ददाति।
(३) हे गोविन्द ! मै तुम्हारी वस्तु तुम्हें ही सौंपता हूं।	(३) त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये।

(रुच्यर्थाना प्रीयमाणः. १. ४. ३३)

(ख) (१) जो तुझे पसन्द आये कर।	(१) कुरु यद् रोचते (यद् अभिरुचित वा) तुभ्यम्।
(२) बातचीत हो या गाना या नाच—इस नटी का मुझे कुछ भी पसन्द नहीं।	(२) आलापो वा गानं वा नृत्यं वा किमपि तस्याः नट्याः न रोचते मह्यम्।

(३) बेटों का झगड़ा पिता को अच्छा नहीं लगता।

(३) पुत्राणां कलहः न रोचते पित्रे।

(४) क्या दवाई भी किसी को स्वाद लगती है?

(४) किम् अगदम् अपि स्वदते कस्मैचित्।

(५) पानी से तृप्त हुए को पानी की स्वादु, सुगन्धित और शीतल धारा भी स्वाद नहीं लगती।

(५) अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादु सुगन्धि स्वदते तुषारा।

(धारेरुत्तमर्णः १. ४. ३५)

(ग) उसे देवदत्त के सौ रुपये देने हैं।

(१) असौ देवदत्ताय शतं धारयति।

(स्पृहेरीप्सितः १. ४. ३६)

(घ) (१) यदि सचमुच ही श्रीचन्द्र तुम्हारी लड़की को चाहता है तो इसे उसको दे दो। उसे दहेज़ की इतनी चाह नहीं जितनी कि कन्या के गुणों की।

(१) यदि सत्यमेव स्पृहयति तव कन्यकायै श्रीचन्द्रस् तर्हि प्रतिपादय तां तस्मै। नासौ यौतकाय तथा स्पृहयति यथा कन्यागुणेभ्यः।

(क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः १. ४. ३७)*

(ङ) (१) मुझ पर क्यों नाराज़ होते हो? मैंने यह नहीं किया।

(१) किमर्थं मह्यं कुप्यसि। न मया कृतम् इदम्।

(२) वह मूर्ख है जो अकारण नौकर पर नाराज होता है, मित्र के साथ द्रोह करता है, भाइयों के साथ ईर्ष्या करता है और बड़ों को देखकर जलता है।

(२) मूर्खोऽसौ यो निष्कारणं दासाय कुप्यति, मित्राय द्रुह्यति, भ्रातृभ्य ईर्ष्यति, गुरुभ्यश्च असूयति।

---

* देखिये, कर्मकारक नियम (२) (ङ)।

(प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता २. ४. ४०)

(च) विष्णु ने देवताओं को वचन दिया कि मैं रावण का वध करूंगा।	(१) विष्णुना देवेभ्यो रावणस्य वधः प्रतिश्रुतः।
(२) भगवान् विष्णु भक्तों को वचन देते हैं कि धर्म के नष्ट होने पर मैं संसार में जन्म लूंगा।	(२) नष्टे धर्मे भुवि भविष्यामि इति भक्तेभ्यः प्रतिश्रृणोति (आश्रृणोति वा) हरिः।
(३) बिना कहे भी उसने मेरी मदद करने का वादा किया।	(३) अयाचितोऽपि स मह्यं साहाय्यं प्रतिज्ञातवान्।

(कहना, निवेदन करना आदि के योग में द्वितीया, चतुर्थी और कभी षष्ठी भी होती है)

(छ) (१) दिल की बात किस से कहूँ।	(१) कस्मै कथयामि मनोगतम्।
(२) ठीक ठीक बात आपको बताता हूँ।	(२) यथास्थितं भवते निवेदयामि।
(३) दरबान राजा से कहता है कि दूत आ पहुँचा है।	(३) प्राप्तो दूत इति (प्राप्तं दूतं वा) नृपाय शंसति द्वारपालः।
(४) मुझे बता कि तू कौन है।	(४) आख्याहि मे कस्त्वमिति।

(गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि २. ३. १२)

(ज) (१) दिल बहलाने के लिये बाग को जा रहा हूँ।	(१) मनोविनोदेन उद्यानाय गच्छामि।
(झ) (१) तू ये कपड़े धोबी के यहां भेज दे।	(१) त्वम् इमानि वस्त्राणि रजकाय प्रहिणु।
(२) जल्दी ही नौकर को डाक्टर के पास भेज दे।	(२) झटित्येव भृत्यं वैद्याय विसृज।

(मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु । २. ३. १७. अप्राणिष्वित्यपनीय नौकान्नशुकशृगालवर्जेष्विति वाच्यम्)

(अ) (१) मैं तुम्हें तिनके के बराबर भी नहीं समझता।	(१) न त्वां तृणाय मन्ये ।*
(२) यह बड़े शोक की बात है कि धन के गर्व से भरे हुए मालिक नौकरों को जूती के बराबर भी नहीं समझते।	(२) वित्ताभिमाननिर्भरा प्रभवो न दासान् उपानहे मन्यन्ते इति महच्छोकस्थानम्।
(३) वह भिखारियों को कुत्ते के बराबर भी नहीं समझता।	(३) स भिक्षुकान् न शुने मन्यते।
(४) सुन्दर होते तुझ अनपढ़ को मैं पत्थर के बराबर भी नहीं समझता।	(४) दर्शनीयमपि निरक्षरं त्वां न पाषाणाय मन्ये।
(५) तपस्वी लोग सोने को मिट्टी के बराबर भी नहीं समझते।	(५) तपोधना स्वर्णं मृदेऽपि न मन्यन्ते।

उदाहरण—(चतुर्थी उपपद)

(तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या। वार्त्तिक)

(क) (१) स्नान का पानी मौजूद है पर पीने का नहीं।	(१) स्नानाय जलं विद्यते न पुनर् पानाय।
(२) खाने को कुछ दो।	(२) आहाराय देहि किंचित्।

---

* Cf. कर्मकारक, नियम (१) च. नोट—जब अनादर का भाव गम्य न हो, तो केवल कर्मकारक प्रयुक्त होता है, न कि सम्प्रदान। (१) वह सुन्दर स्त्री को चित्र के समान समझता है=सुघटिताकृतिं स्त्रियं चित्रं मन्यते (But not चित्राय)। वह चंचल पुरुष को बन्दर के समान समझता है=चपलमतिं नरं वानरं मन्यते (But not वानराय)।

(३) रात प्राणियों के सोने के लिये और दिन काम करने के लिए है।	(३) रात्रिः स्वप्नाय भूतानां चेष्टायै कर्मणामह ।
(ख) (१) नगर की रक्षा करने के लिये सेनापति को आज्ञा दी गई है।	(१) नगरस्य रक्षायै (रक्षणाय वा) आदिष्ट सेनापतिः।
(२) आओ ! सैर को चलें।	(२) एहि ! विहाराय गच्छाव.।
(३) मुझे जाने की आज्ञा दो। मैं सोने जा रहा हूँ।	(३) अनुजानीहि मां गमनाय। शयनाय (स्वप्नाय वा) गच्छामि।
(४) राजा प्रजा के हित साधन की चेष्टा करे।	(४) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः।
(५) यह बात हर कोई जानता है कि देहातियों की शिक्षा और मनोरजन के लिए यह प्रोग्राम शुरू किया गया है।	(५) सार्वलौकिकम् एतत् वृत्तं यद् ग्राम्यणा शिक्षणाय मनोरञ्जनाय च प्रवर्तित एष कार्यक्रम.।

(क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिन । २. ३. १४)

(ग) यह लड़का प्रतिदिन पानी (लाने) के लिये नदी को, दूध के लिये गोशाला को, फलों के लिये बाग को और भिक्षा के लिये गाव को जाया करता है।	(१) वटुरयं प्रत्यहं जलाय नदीं, दुग्धाय व्रजं, फलेभ्य उपवनं, भैक्ष्याय च ग्रामं गच्छति।❀

(तुमर्थाच्च भाववचनात् २. ३. १५)

(घ) (१) लड़की पढने के लिये स्कूल जाती है। उसे वापिस लाने के लिये प्रतिदिन नौकरानी भेजी जाती है।	(१) कन्याऽध्ययनाय (=अध्येतुं) विद्यालयं याति। तां प्रत्यानयनाय (=प्रत्यानेतुं) प्रत्यहं दासी प्रेष्यते।

❀ जलाय = जलम् आनेतुम्, इत्यादि।

(क्लृपि सपद्यमाने च । वार्तिक)

(ङ) (१) आपकी समय पर दी हुई सहायता से मुझे बहुत लाभ पहुँचा।	(१) भवद्विहितं कालिकं साहाय्यं मे बहूपकाराय अभूत् ।
(२) थोड़े से धन से भी मुझे सन्तोष हो जायगा ।	(२) स्वल्पम् अपि धनं मम सन्तोषाय भविष्यति ।
(३) मर्यादा से बढ़ा हुआ सब कुछ बुरा होता है ।	(३) सर्वमतिमात्रं दोपाय ।
(४) हे मूर्ख, तू माता-पिता को दुःख देने के लिये उत्पन्न हुआ है न कि सुख देने के लिये ।	(४) भो मूढ ! दुःखाय जातोऽसि पित्रोर्न तु सुखाय ।
(५) उपदेश से मूर्खों को क्रोध होता है न कि शान्ति ।	(५) उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।
(६) अधर्म का परिणाम सर्वनाश होता है ।	(६) अधर्मः सर्वनाशाय कल्पते ।

(हितयोगे च । वार्तिक)

(च) (१) दवाई बीमार को लाभ पहुँचाती है ।	(१) रुग्णाय हितम् औषधम् ।

(नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च । २. ३. १६)

(२) राम को नमस्कार । कृष्ण को नमस्कार । सब देवताओं को नमस्कार ।	(२) नमो रामाय । नमः कृष्णाय । नमः सर्वेभ्यो देवेभ्यः ।
(३) मित्र तुम्हें नमस्कार हो । मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ । यह मकान परिवारसहित तुम्हारे रहने के लिए पर्याप्त होगा ।	(३) नमस्ते सखे । स्वागतं ते । अलं अयम् आवासः सकुटुम्बस्य ते निवासाय ।

(४) मैं आशा करता हूँ कि सेर भर चावल प्रतिदिन तुम्हारे भोजन के लिए काफी होंगे।	(४) आशासे प्रस्थमात्रः शालिः प्रत्यहं युष्माकम् अभ्यवहाराय अलं भविष्यति इति।
(५) तुम मुझ दुःखी को बचाने के समर्थ हो।	(५) समर्थोऽसि (प्रभुरसि, प्रभवसि वा) विपन्नस्य मे रक्षणाय।
(६) सेनापति नगर को नष्ट करने की शक्ति (अथवा अधिकार) रखता है।	(६) प्रभवति सेनापतिः नगरस्य विध्वंसाय।

—:o:—

अभ्यास ३६

संप्रदान कारक

१. यज्ञ की समाप्ति पर राजा ने ब्राह्मणों को बहुत सा धन और गौएँ दीं। २. यहां बीमारों को औषध और भोजन निःशुल्क मिलता है (=दिया जाता है)। ३. मैंने उसे सारा वृत्तान्त संक्षेप से सुना दिया (नि√विद् णिजन्त)। ४. मुझे यह व्यर्थ का विवाद अच्छा नहीं लगता। इसे बन्द कर दो (सं√हृ)। ५. क्या आपको मेरा उपहार पसन्द आया? ६. सुख की किसे चाह नहीं (√स्पृह्)। ७. उदयसिंह ने दिल्लीश्वर से पद्मिनी का शीशे में प्रतिबिम्ब मात्र दिखाने का वादा किया (प्रति√श्रु)। ८. मैं तुझसे सच्ची प्रतिज्ञा करता हूँ[1] कि तू मुझे ही प्राप्त होगा। ९. दुर्योधन पाण्डवों से द्रोह करता था। १०. भगवान ने भक्त को स्वप्न में दर्शन देने का वचन दिया। ११. दासी ने महारानी से निवेदन किया कि एक तपस्वी कुमार द्वार पर खड़ा है। १२. सन्धि करने की इच्छा से महाराज ने एक विश्वस्त मित्र को विजयी सेनापति के पास भेजा। १३. मैं तुम्हें सच कहता हूँ राजन, मैं तुम्हारी इस सुन्दर राजधानी को श्मशान के बराबर और तुम्हारी विपुल धन-राशि को भस्म के ढेर के

---

१. सत्यं ते प्रतिजाने।

बराबर भी नहीं समझता। १४ हम आपके इन झूठे वादों को उन्मत्त के प्रलाप के समान समझते हैं।

—.o:—

अभ्यास ३७

चतुर्थी उपपद

१. उन दुष्टों को मारने के लिये ही यह उपाय किया गया है (Use वध-पु लिंग)। २. दु ख की विशेष अनुभूति के लिये ही मृग-तृष्णा के सदृश सुख की रचना की गई है। ३. गुरुओं का कटु उपदेश भी अन्त मे शिष्यों के कल्याण के लिये ही होता है (√संपद्, √क्लृप्)। ४ बिना विचारे किया हुआ काम पश्चात्ताप का कारण बनता है। ५ सांपों को दूध पिलाने का परिणाम उनका विप बढ़ाना ही है। ६ उन गुरुओं को नमस्कार हो जिन्होंने हमे सत्य का मार्ग दिखाया। ७. शस्त्रधारी अकेला भी नि.शस्त्र दस शत्रुओं के लिये पर्याप्त होता है (Use अलम्)। ८. अत्यन्त तीव्र गति से होने वाली विज्ञान की उन्नति मनुष्य-जाति के विनाश का कारण बनती है न कि सुख का। ९. काव्य यश के लिये होता है।

—·o·—

पंचमी विभक्ति

नियम (१)—अपादान कारक निम्नलिखित के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है—

(क) जिससे किसी का वियोग हो, (ख) प्रश्नोत्तर मे क्रिया का प्रयोग न करने पर भी जिस स्थान से कोई आया हो, (ग) जिस स्थान पर पहुंच कर या जिस स्थान पर बैठ कर अन्यत्र देखा जाय या कोई और कार्य किया जाय—यह तब होता है जब क्त्वान्त का लोप कर

दिया जय, (घ) जुगुप्सा (Abhorrence), विराम (Cessation), प्रमाद (Neglect to do) आदि अर्थ वाले शब्दों के योग मे, (ङ) जिससे उद्वेग या लज्जा हो, (च) जिससे डर लगे और जिससे किसी की रक्षा की जाय या छुडाया जाय, (छ) परा√जि (to find something unbearable) के योग में जो बात असह्य (Unbearable) हो, (ज) √वृ, नि√वृ, वि-आ√वृ, नि√वृत्, नि√यम् आदि के योग मे जिस वस्तु से किसी को हटाया जाय या जिस काम से किसी को रोका जाय, (झ) जिससे छिपा जाय, (ञ) जिससे कुछ सीखा, जाना या सुना जाय, (ट) √जन्, √भू आदि के योग मे जिससे उत्पत्ति आदि हो।

(२) पंचमी उपपद का प्रयोग निम्नलिखित के सम्बन्ध में होता है—

(क) कारणसूचक शब्द पंचमी में रखा जाता है, (ख) तुलना (Comparison) करने मे जिसकी अपेक्षा दूसरी वस्तु अच्छी या बुरी आदि कही जाय, (ग) अन्य, पर, भिन्न, इतर, अन्यत्र (All meaning 'different', 'other than'), ऋते (Except) आदि शब्दों के योग मे, और काल या दिशा के सम्बन्ध मे प्रयुक्त हुए प्राक्, प्रत्यक् आदि (अच् धातु से बने) दिशासूचक शब्दों के योग मे, (घ) आरम्भ या अन्त के अर्थ में प्रयुक्त हुई 'आ' उपसर्ग के योग मे, (ङ) प्रभृति, आरभ्य, बहिः, ऊर्ध्वं, परं, अनन्तरं आदि शब्दों के योग में, (च) जिस काल या स्थान से लेकर काल (Time) या दूरी (Distance) की गणना (Measurement) की जाय।

(अपादाने पञ्चमी २. ३. २८)

(क) (१) युद्धक्षेत्र से लौटे हुए विजयी सिपाहियों का आज विजय के दिन सम्मान किया जा रहा है।	(१) युद्धभूमे प्रतिनिवृत्ता. विजयिनो योद्धारोऽद्यविजयदिवसे संमान्यन्ते।

(२) माँ बच्चे के हाथ से पत्र लेकर पढ़ती है।	(२) माता शिशोः करात् पत्रम आदाय वाचयति।
(३) चुराये गये तुम्हारे धन को मैं चोरों से लौटा लाऊँगा।	(३) अपहृत ते धनं चौरेभ्य. प्रत्यानेष्यामि।
(४) विजय के दिन सब कैदी जेल से छोड़ दिये जायंगे।	(४) विजयदिवसे सर्वे बन्दिनः कारागृहात् मोक्ष्यन्ते।

(प्रश्नाख्यानयोश्च। वार्त्तिक) (गम्यमानापि क्रियाकारकविभक्तीना निमित्तम्)

(ख) (१) आप कहाँ से आये? ये लाहौर से और हम पेशावर से।	(१) कुतो यूयम्। इमे लवपुरात् वयं पुनः पुष्पापुरात्।
(२) ये फूल कहाँ से आये? किसी बगीचे से,न कि आकाश से।	(२) कुत इमानि पुष्पाणि। कुतश्चिद् उद्यानात् न तु आकाशात्।

(ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च। वार्त्तिक)

(ग) (१) हवाई जहाज से पृथ्वी कैसी लगती है।	(१) व्योमयानात्[1] कीदृशी प्रतिभाति भू.।
(२) स्त्रियाँ खिड़कियों से बरात को देख रही हैं।	(२) स्त्रियो वातायनेभ्यो[2] वरयात्रां पश्यन्ति।

(जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्)

(घ) (१) धर्मात्मा आदमी पाप करने से घबराता है।	(१) पापात् जुगुप्सते धर्मात्मा।
(२) सब्जी खाने वाला आदमी मांस से घृणा करता है (=परहेज करता है)।	(२) मांसात् जुगुप्सते शाकाहारः।
(३) स्वस्थ होकर मैंने दवाई पीना बन्द कर दिया।	(३) स्वस्थो भूत्वाऽहम् अगदसेवनात् व्यरमम्*।

१=व्योमयानम् आरुह्य पश्यतः जनस्य। २=वातायनेषु स्थित्वा।

* व्याङ्परिभ्यो रम. (१. ३ ८३) √रम् आत्मनेपदी है, परन्तु विरम् (to cease), आरम् और परिरम् परस्मैपदी हैं।

(४) विद्या के प्रेमी परीक्षा पास करके भी स्वाध्याय बन्द नहीं करते ।

(४) परीक्षामुत्तीर्य अपि स्वाध्यायाद् न विरमन्ति विद्याप्रिया ।

(५) बुद्धिमान् लोग निश्चित बात से नहीं टलते ।

(५) न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीरा. ।

(६) अपने कर्तव्य में प्रमाद करने वाले अफसरों को भी दण्ड मिलना चाहिए, तो फिर नौकरों की क्या बात ?

(६) स्वाधिकारात् प्रमत्ताः अधिकारवन्तोऽपि दाण्ड्या. भवन्ति किं पुन. प्रैष्या ।

(७) स्वाध्याय में प्रमाद मत कर।

(७) स्वाध्यायान्मा प्रमद.* ।

(ड) (१) क्रूर पुरुष की सेवा से नौकर तंग आ जाते हैं।

(१) क्रूरस्य सेवाया (सेवनाद् वा) उद्विजन्ते सेवकाः ।

(२) अपना कर्तव्य न किया होने के कारण ही प्रायः आदमी मौत से डरता है ।

(२) प्रायेणाकृतकृत्यत्वान्मृत्योरुद्विजते जन. ।

(३) ब्राह्मण सम्मान से सदा ऐसे घबराये जैसे कि विष से ।

(३) संमानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव ।

(४) मैं संसार से विरक्त हो गया हूँ।

(४) विरक्तो ऽहं संसारात् ।

(५) आजकल बहुएँ ससुरों से लज्जा नहीं करतीं, परन्तु विना

(५) अद्यत्वे वध्व. न लज्जन्ते श्वशुरेभ्य किन्तु अनवगुण्ठना.

---

* जब कोई कार्य न करने (Neglect to do something) का भाव प्रकट करना हो तो प्र √मद के योग में पञ्चमी आती है, जब किसी के करने में उपेक्षा (to be careless about) का भाव प्रकट करना हो तो सप्तमी आती है. यथा—इसलिये बुद्धिमान लोग स्त्रियों के बारे में उपेक्षा नहीं करते—अतोऽर्थान्न प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चित. (मनुस्मृति) ।

घूंघट निकाले उनके सामने बैठती हैं और बातचीत करती हैं।	सत्यः तत्समक्षं तिष्ठन्ति जल्पन्तिच
(६) यह करते हुए मुझे अपने दिल में ही शर्म आती है तो फिर लोगों से तो कहना ही क्या ?	(६) इदं कुर्वन् अहम् आत्मनोऽपि लज्जे कि पुनर् लोकेभ्यः।

(भीत्रार्थाना भयहेतुः। १. ४. २५)

(च) (१) बच्चा ! तू मौत से क्यों डरता है ? वह डरे हुए को छोड नहीं देती।	(१) मृत्योर्बिभेपि कि बाल ! न स भीत विमुंचति।
(२) दुष्ट आदमी से किसे डर नहीं लगता ?	(२) असज्जनात्कस्य भयं न जायते।
(३) पथिक सिंह की गरज से डर गये।	(३) पथिका सिंहगर्जिताद् अत्रसन (अत्रस्यन् वा)।
(४) थोड़ा सा भी यह धर्म बड़े भय से बचाता है।	(४) स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।
(५) मै तुम्हें सब पापों से छुटकारा दिलाऊँगा।	(५) अह त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि।

(पराजेरसोढः। १ ४ २६)

(छ) (१) वह पढने से कतराता है	(१) अध्ययनात् पराजयतेऽसौ।
(२) पतिव्रता नारी पर-पुरुप के प्रेम से बहुत घबराती है।	(२) पराजयते भृशं स्नेहात् परपुरुपस्य पतिव्रता।

(वारणार्थानामीप्सित.। १. ४. २७)

(ज) (१) किसान जौ से गाय को हटाता है।	(१) यवेभ्यो गां वारयति कृपक
(२) यह (लड़की) किसी प्रकार	(२) नेयमस्माद् व्यवसायात् कथं-

(३) काम मे लगा होने के कारण मैं आपकी सेवा में उपस्थित नहीं हो सकता।	(३) कार्यव्यग्रत्वान्न भवन्तमुपस्थातुं शक्नोमि।
(४) आजकल चीजों के महंगा होने के कारण थोड़े वेतन वाला आदमी कठिनता से गुजारा करता है।	(४) अद्यत्वे महार्घत्वाद् द्रव्याणां अल्पवेतनो जनः कष्टेन जीवति।
(ख) (१) पृथ्वी से सूर्य चाँद की अपेक्षा बहुत दूर है।	(१) पृथिव्या रविः चन्द्राद् अतिशयेन दवीयान्।
(२) वह मुझ से एक साल छोटा है।	(२) स मत्तो वर्षेण यवीयान (कनीयान् वा)।
(३) धन से विद्या अच्छी है।	(३) विद्या वित्ताच्छ्रेयसी।
(४) माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।	(४) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
(५) नौकरी-पेशे से अधिक अपमानजनक कुछ नहीं।	(५) सेवावृत्त्या न लाघवकरं किंचित्।
(६) कहने से करना अच्छा है।	(६) वाचः कर्मातिरिच्यते।
(७) घरवाली के बिना घर जंगल से भी बुरा है।	(७) गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते।
(८) चुप रहने से सच कहना अच्छा है।	(८) मौनात्सत्यं विशिष्यते।

(अन्यारादितरर्ते दिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते । २. ३. २९)

(ग) (१) कृष्ण के सिवाय मेरा कोई सहारा नहीं।	(१) अन्य (भिन्न, इतर वा) कृष्णान्न मे शरणम्।
(२) भाषा का भेद होने पर भी दूसरा प्रश्न पहले से भिन्न नहीं।	(२) सत्यपि भाषाभेदे न प्रथमाद् भिन्नो द्वितीयो प्रश्नः।

(३) बीमारी से दुबला हो जाने के कारण तुम पहले से भिन्न लगते हो। — (३) व्याधिकृतकार्श्यात् पूर्वस्मादन्य इव भासि।

(४) धन कमाने के अतिरिक्त तुम्हें कुछ नहीं भाता। — (४) नास्ति ते रुचिर् वित्तोपार्जनादन्यत्र।

(५) विद्या प्राप्त करने के अतिरिक्त छात्रों को किसी बात की चिन्ता (=ख्याल) न हो। — (५) विद्याधिगमादन्यत्र छात्राणां चिन्ता मा भूत।

(६) भारतवर्ष के पूर्व की ओर ब्रह्मदेश, पश्चिम की ओर अरब सागर, उत्तर की ओर हिमालय और दक्षिण की ओर हिन्द सागर है। — (६) भरतभूमे प्राक् ब्रह्मदेश, प्रत्यग् अरबपयोनिधिर् उदग् हिमालयो दक्षिणाहि च हिन्द-सागर।

(७) प्रश्न करने या उत्तर देने से पहले भलीभाति सोचना चाहिए। — (७) प्राक् प्रश्नात् प्रतिवचनाद् वा सुष्ठु विमृष्टव्यम्।

(८) सूर्य निकलने से पहले ही मैं सैर को निकल जाता हूँ। — (८) प्रागेव सूर्योदयात् भ्रमणाय निष्क्रामामि।

(आङ् मर्यादावचने १. ४. ८९)

(घ) (१) वह जन्म से लेकर दुःख भोग रहा है। — (१) आ जन्मनोऽसौ दुःखानि भुंक्ते।

(२) मैं शुरू से सुनना चाहता हूँ। — (२) आ मूलाच्छ्रोतुमिच्छामि।

(३) जब तक मुक्ति नहीं होती तब तक आवागमन है। — (३) आ मुक्तेः संसार।

(४) जब तक सफलता न हो तब तक बराबर यत्न करता रहूंगा। — (४) आसिद्धेर् अनवरतं यत्नम् आस्थास्यामि।

(ङ) (१) कल से लेकर प्रतिदिन सवेरे उठा करूँगा। — (१) ह्यः प्रभृति प्रत्यहं कल्ये जागरिष्यामि।

(२) बचपन लेकर हम (दोनों) मित्र हैं।

(२) बाल्यात् प्रभृत्यावां मित्रे स्वः।

(३) जब आपको पहली बार देखा था तब से ही आपके गुण गाता रहता हूँ।

(३) प्रथमावलोकक्षणात् प्रभृत्येव तव गुणान् कीर्तयामि।

(४) नगर के बाहर एक बड़ा भारी बाग है।

(४) नगराद् बहिर् विशालम् उद्यानं वर्तते।

(५) जो योगी नहीं, ईश्वर उनके चिन्तन से परे है।

(५) अयोगिनां ध्यानाद् बहिर् ब्रह्म।

(६) जिस नौकर को फिर न लौटने के लिए निकाल दिया गया था वह थोड़ी देर के बाद लौट आया।

(६) असन्निवृत्त्यै निष्कासितो (निर्वासितो वा) भृत्यो लघो कालाद् ऊर्ध्वं (अनन्तरं वा) प्रतिन्यवर्तत।

(७) बहुत देर के बाद तुम्हारे दर्शन हुए हैं।

(७) (ऊर्ध्वं) बहोः कालाद् दृष्टोऽसि।

(८) बताओ उसके बाद क्या हुआ।

(८) कथय ततः परं किं वृत्तम्।

(९) जो मालूम हुआ है सब बता दिया है। इसके आगे मुझे मालूम नहीं।

(९) यदुपलब्धं सर्वं निवेदितम्। अतः परं न जाने।

(१०) यह सिद्धान्त हम जैसों की समझ से परे है।

(१०) सिद्धान्तोऽयमस्मादृशां बुद्धेः परं वर्तते।

(११) विवाह के पश्चात् वह स्त्री को लेकर यात्रा के लिए परदेश चला गया।

(११) विवाहाद् अनन्तरं सभार्यो यात्रायै देशान्तरम् अगच्छत्।

(यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी, तद्युक्तादध्वन प्रथमासप्तम्यौ, कालात् सप्तमी च वक्तव्या। (वार्त्तिक)।

(१) स्कूल मेरे घर से दो कोस पर है। | (१) विद्यालय मम गृहात् क्रोशद्वय (क्रोशद्वये वा) अस्ति।

(२) मल-मूत्र का त्याग बस्ती से दूर जाकर करना चाहिए। | (२) आवसथाद् दूरं (दूरे वा) विण्मूत्रमुत्सृजेत्।

(३) आज से हमारी परीक्षा को एक महीना रहता है। | (३) ऽद्य दिनात् मासं (मासे वा) अस्माकं परीक्षा।

—:०:—

अभ्यास ३८

अपादान कारक

१. पके हुए फल स्वय ही वृक्षों से गिर पड़ते है। २. कौआ बच्चे के मुँह से रोटी का टुकड़ा छीन लेता है (आ √छिद्)। ३. अचानक आकाश से बर्फ गिरने लगी। ४. मध्याह्न को मजदूर (कर्मकार) थोड़ी देर के लिए काम बन्द कर देते है। ५. मुझे इन विश्वासघातकों के दर्शन से ही ग्लानि होती है (√ग्लै 1P)। ६. राजा यदि प्रजा-पीड़न और अन्याय करना छोड़ दे (वि√रम्) तो लोग भी राजद्रोह छोड़ दे। ७. आप भी अपने काम मे लापरवाही न करे (प्र√मद्)। ८. काम में लगा हुआ आदमी दर्शन चाहने वाले लोगों से बहुत तग आता है (उद् √विज्)। ९. जीवन से तग आकर बीमार कभी आत्महत्या की चेष्टा करता है। १०. मेरा प्यारा वही है जिससे न लोग उद्विग्न होते हैं (उद् √विज्) और न जो लोगों से ही उद्विग्न होता है। ११. सभ्य डाकुओं से भोली भाली लड़कियों को कौन बचा सकता है? १२. मैं अपने आपको इस संकट से कैसे छुडाऊँ? १३. भोजन से मक्खियों को हटाओ (√वृ-णिजन्त)। १४. मित्र मित्र को पाप से बचाये (नि √वृ C)। १५ तू किस अध्यापक से गणित सीखता है? १६. प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं। १७. काम से क्रोध पैदा होता है।

अभ्यास ३९

पंचमी उपपद

१. दूध और घी के दुर्लभ होने के कारण लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। २. पराधीनता से बढ़कर दुःखदायक कुछ नहीं। ३ ग्रीष्म से पहले (Use प्राक्) वसन्त आता है। ४. देवदत्त और वसुमित्र के अतिरिक्त (Use अन्य, भिन्न etc) कोई भी सभासद् अभी तक उपस्थित नहीं हुआ। ५. घर लौटने से पहले मैं आपसे मिलूँगा। ६. थोड़े समय बाद (Use ऊर्ध्वम्) तुम्हारी सब चिन्ता दूर हो जायगी। ७. आज से लेकर मैं आपका चेला बन गया। आप मुझे वेदान्त का तत्त्व समझाइये। ८. जब तक तारे न निकले[1] (Use 'आ') उसने पढ़ना बन्द न किया। ९. जब तक नींद न आई, बेचारा बीमार तड़पता रहा। १०. जब तक सफलता न मिली वह बराबर यत्न करता रहा। ११. मैं हिमालय प्रदेश से लेकर कन्या कुमारी तक सारे देश में अच्छी तरह घूमा हूं (Use आ with both)। १२. आपका घर इस स्थान से कितनी दूरी पर है ?

—:o:—

षष्ठी विभक्ति

नोट—षष्ठी साधारणतया कारक विभक्ति नहीं है, परन्तु जहाँ इसके द्वारा क्रिया का कर्ता अथवा कर्म सूचित हो वहाँ इसे कारक मान सकते हैं।

नियम (१) षष्ठी कारक का प्रयोग निम्नलिखित के सम्बन्ध में होता है—

---

१. आ तारकोदयात् ।

का दमन करने वाला, पतितों का उद्धार करने वाला, राजभक्तों को पुरस्कार देने वाला और प्रजा के हित के कामों को चलाने वाला हो।

लोकहितस्य स एव परमार्थतो राजपदभाग् भवति।

(कस्य च वर्तमाने। २. ३. ६७)

(ख) (१) (वर्तमान काल) कौन यह नहीं जानता कि पृथ्वी घूमती है? सारी दुनिया जानती है।

(२) (भूत काल) पहले यह किसने मालूम किया था कि पृथ्वी घूमती है। ज्योति शास्त्रज्ञों ने।

(१) कस्य न विदितमिदं यद् गतिमती भूः। विदितं सर्वं लोकस्य।

(२) केन विदितमिदं प्रथमं यद् गतिमती भूः। ज्योतिर्विद्भिः।

(कृत्यानां कर्तरि वा। २. ३. ७१)

(ग) (१) (विधिकृदन्त) यह तुम्हें करना होगा न कि मुझे।

(२) माना कि यह मुझे करना चाहिए। पर जल्दी क्या पड़ी है? यह बाद मे भी हो सकता है।

(३) यहाँ पर जो काम जिसे करना चाहिये वह उसे ही करना पडता है न कि दूसरे को।

(४) यह वन जिसकी रक्षा राक्षसेन्द्र को करनी चाहिए, मुझे काटना होगा।

(१) त्वया कर्तव्यमिदं न तु मया।†

(२) कामं कर्तव्यमिदं मम। किंतु का त्वरा। पश्चादप्येतत् भविष्यति।

(३) इह यद्धि यस्य कर्तव्य तत्तेनैव कर्तव्यं न त्वन्येन।

(४) राक्षसेन्द्रस्य संरक्ष्य मया लव्यमिद वनम्।

---

† अन्य उदाहरण—न वचनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः (=नौकर मालिकों को न ठगें)।

(५) अच्छे वर को दी हुई कन्या के लिए पिता को शोक नहीं करना चाहिए।	(५) अशोच्या हि पितुर्कन्या सद्भर्तृ प्रतिपादिता।
(६) इस दुनिया में बुद्धिमानों के लिए कुछ भी असाध्य नहीं।	(६) न किंचिदिह बुद्धिमतामसाध्यमस्ति।

उदाहरण (शेषिकी षष्ठी)

(षष्ठी शेषे २. ३ ५०)

(क) (१) लक्ष्मण राम का भाई है। फूल की सुगन्ध नाक के लिए आनन्ददायक है। चाँद का प्रकाश निर्मल है। सूर्य की गर्मी प्रचण्ड है।	(१) लक्ष्मणो रामस्य भ्राता। घ्राणतर्पणः पुष्पस्य गन्धः। निर्मला चन्द्रस्य कान्तिः। प्रखरं सूर्यस्य तेजः।
(२) यह काम का समय है न कि सोने का।	(२) कार्यस्य कालोऽयं न तु निद्रायाः।
(ख) (१) उसके पास धन-दौलत, जमीन, बाग और मकान हैं पर सन्तान नहीं।	(१) ऐश्वर्यं भूस्थानानि भवनानि च तस्य सन्ति सन्ततिस्तु नास्ति।
(२) धर्म का पालन करते हुए मुझे न डर है न शर्म न दुःख न चिन्ता।	(२) धर्ममाचरतो मम न भयं न लज्जा न व्यथा न चिन्ता।
(३) पर्दे पर जीते-जागतों की भांति चलते-फिरते और बोलते चालते चित्र देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था।	(३) जवनिकायां सजीवानीव गतिमन्ति वाङ्मयानि च चित्राणि प्रेक्ष्य मानसे विस्मयोऽभूत्।
(ग) (१) सीता राम की प्यारी थी।	(१) सीता रामस्य प्रिया ऽभूत्।

(२) जान किसे प्यारी नहीं ? — (२) जीवितं कस्य न प्रियम् ।

(घ) (१) बेटी मां जैसी है और बेटा बाप जैसा है । — (१) कन्या सदृशी मातुः, पुत्रः सदृशः पितुः ।✽

(२) तीनों लोकों में ज्ञान के बराबर कोई पवित्र वस्तु नहीं है । — (२) न हि ज्ञानस्य सदृशं (तुल्यं वा) पावनं त्रिषु लोकेषु ।

(३) ज्ञानी पुरुष भी अपनी प्रकृति के अनुसार ही आचरण करता है । — (३) सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेः ज्ञानवानपि ।

(४) सच कहने वाले को चापलूसी अच्छी नहीं लगती (=शाभा नहीं देती) । — (४) न चाटूक्तयोऽनुकूला यथार्थवादिनः ।

(५) दूसरों को ठगना भगवे कपड़ों को शोभा नहीं देता । — (५) न पराभिसंधानमनुरूपं काषायाणाम् (...शोभते काषायधारिणाम् वा) ।

(चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः । २. ३. ७३)

(ङ) मेरा तो सर्वथा कुशल है । आपका कुशल और सुख होवे । — (१) मम तु सर्वथा कुशलमस्ति । कुशलं सुखं च भूयात् युष्माकम् (युष्मभ्यं वा) ।

(च) (१) कालों और गोरों में भेद रंग का होता है न कि गुणों का । — (१) कृष्णाङ्गानां गौराङ्गानां च विशेषो वर्णः एव न तु गुणाः (वर्णतः एव न तु गुणतः, वा) ।

(२) स्वाधीन और पराधीन लोगों में आकाश-पाताल का भेद होता है । — (२) स्वतत्राणां परतंत्राणां चाकाशपातालयोरिवान्तरमस्ति ।

✽ षष्ठी के स्थान में तृतीया भी आ सकती है, यथा—मात्रा सदृशी कन्या, पित्रा सदृशः सुतः । (अन्यत्र भी ऐसा समझिये ।)

(३) जज तो ऐसा होना चाहिए जो गरीबों और अमीरों में कोई भेद न समझे।

(३) आधिकरणिकस्तु स भवतु यो न दरिद्राणामाढ्यानां च कमपि भेदं गणयति।

(षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन । २. ३. ३०)

(छ) (१) मेरे घर के पश्चिम की ओर थियेटर है, उत्तर की ओर मण्डी है, पूर्व की ओर अस्पताल है और दक्षिण की ओर सड़क है।

(१) मम भवनस्य पश्चिमतः प्रेक्षागृहम्, उत्तरतः पण्यशाला, पूर्वतः चिकित्सालयः, दक्षिणतश्च राजमार्गो वर्तते।

(२) पक्षी पेड़ के ऊपर बैठते हैं। पथिक पेड़ के नीचे आराम करते हैं।

(२) पक्षिणः वृक्षस्य उपरि तिष्ठन्ति पान्थाः वृक्षस्य अधः विश्राम्यन्ति।

(३) मैं उसके सामने खड़ा नहीं हो सकता।

(३) नाहं तस्य पुरः (अग्रे वा) स्थातुं पारयामि।

(४) रासायनिक आपकी आँखों के सामने ही पानी में आग लगा देगा।

(४) रासायनिको भवतः समक्ष-मेव जलं ज्वालयिष्यति।

(दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् । २. ३. ३४)

(१) गाड़ी में वह मेरे पास बैठा हुआ था।

(१) रेलयानेऽसौ समान्तिके (मम अन्तिकं निकटं, समीपं वा) निषण्णोऽभूत्।

(ज) (१) धिक्कार है तुझे जिसके लिये तुम्हारी माँ ऐसी हालत में रही है।

(१) धिक् त्वां यस्य कृते [illegible]-मीदृशी दशा [illegible]।

(षष्ठी हेतुप्रयोगे २. ३. २६)

(ञ) (१) भीख के लिए वह घर-घर फिरता है।

(१) भैक्ष्यस्य हेतो गृहाद् गृहं याति ।

(२) राज्य के लिए पुत्र पिताओं को और कभी पिता पुत्रों को भी मरवा देते हैं।

(२) राज्यस्य हेतोः पुत्राः पितॄन् पितरोऽपि पुत्रान् क्वचिद् घातयन्ति ।

(ट) (१) दुनिया के व्यवहारों का तुम्हें कुछ पता नहीं।

(१) अनभिज्ञोऽसि लोकव्यवहाराणाम् ।

(२) लालची आदमी संतोष के सुख को नहीं जानता।

(२) लुब्धको हि संतोषसुखस्यानभिज्ञो भवति ।

(यतश्च निर्धारणम् २. ३. ४१)

(ठ) (१) हिमालय की चोटियों में सबसे ऊँचा माऊँट एवरेस्ट है।

(१) हिमवतः शिखराणाम् उच्चैस्तमः एवरेस्टानामा शिखरः

(२) ऋतुओं में वसन्त सब से सुन्दर है।

(२) ऋतूणां पुष्पाकरो रम्यः।

(ड) (१) योरुप के युद्ध को आरम्भ हुए छः साल हुए है और बन्द हुए एक महीना।*

(१) प्रवृत्तस्य योरुपयुद्धस्य अद्य षष्ठं वर्षं निवृत्तस्य तु मास एव।

(२) तुम्हारी प्रतीक्षा करते मुझे दो घंटे हो गये हैं।

(२) त्वां प्रतीक्षमाणस्य मे होराद्वय गतम् ।

(विशेष क्रियाएँ)

(ढ) (१) मैंने तुम्हारा क्या बिगाडा है ?

(१) किं मया ते ऽपकृतम्।

तालाब है=मन्दिरस्य (मन्दिरात् वा) निकट पद्मसरः। गुरुकुल नगर से दूर है=नगराद् (नगरस्य वा) दूर गुरुकुलम्।

* अन्य प्रकार से अनुवाद—अद्य षष्ठे वर्षे प्रावर्तत योरुपयुद्धम, अद्य मासे पुनर् न्यवतत। (=अद्य षष्ठे वर्षे गते सति)

(२) दूसरों का उपकार करने वाला व्यक्ति भी वास्तव में अपना ही उपकार करता है।

(२) परेषामुपकुर्वाणो जनोऽपि परमार्थत आत्मन एवोपकुरुते।

(३) वाह बिजली का चमत्कार! यहाँ तेज रोशनी वाले लैम्पों से जगमगाती रात भी दिन के समान हो गई है।

(३) अहो विद्युतश्चमत्कारो यदत्र प्रखरप्रभैः प्रदीपैर्द्योतिता निशाऽपि दिनस्यानुकरोति।

(४) बिना सोचे-समझे दूसरों की नकल नहीं करनी चाहिए।

(४) नाऽविमृश्य परेषामनुकुर्यात्।

(अधीगर्थदयेशां कर्मणि २. ३. ५२)

(५) क्या यह नई सभ्यता का ही प्रभाव है कि माता-पिता का सन्तान पर, गुरुओं का शिष्यों पर, और मालिकों का नौकरों पर वश नहीं रहा?

(५) यन्न प्रभवन्ति पितरः प्रजानां, न गुरवः शिष्याणां, न प्रभवो भृत्यानां स प्रभावो नूतनसभ्यताया ननु।

(६) रमणोत्सुक स्त्री को देखकर यतियों के दिल भी वश में नहीं रहते, तो फिर काम के वशीभूत लोगों का तो कहना ही क्या!

(६) रमणीं रमणोत्सुकां वीक्ष्य न यतयोऽपि ईशते मनसः किं पुनः स्मरकिंकराः।

(७) आवागमन से तंग आया हुआ मोक्ष के लिए लालायित होता है।

(७) संसारस्य निर्विण्णो निर्वाणाय उत्कण्ठते।

(८) मैं आपके दर्शनों के लिए लालायित हूँ।

(८) भवद्दर्शनाय उत्कण्ठे।

(६) स्वर्गीय पिता को याद करके यह कभी-कभी आँसू बहाता है।	(६) दिवंगतस्य पितुः स्मृत्वाऽयम् यदाकदाऽश्रूणि विमुंचति[1]।
(७) मिठाई खा कर तृप्त हो गया हूं, अब केवल पानी पीना चाहता हूँ।	(७) मिष्ठान्नस्य तृप्तोऽहम् अधुना जलमात्रं पिपासामि।
(८) भूषणों से स्त्रियों की तृप्ति नहीं होती।	(८) नाभरणानां तृप्यन्ति योषितः।[2]

—.०—

अभ्यास ४०

षष्ठी (कारक विभक्ति)

१ मालविकाग्निमित्र नामक नाटक कालिदास की रचना (Use कृति—स्त्रीलिंग) है। २. यह सिंह का ही गर्जन (Use गर्जितम्) था जिससे कि यात्री त्रस्त हो गये, न कि मेघ का। ३. तुम्हारा यह नया कथन (Use उक्ति—स्त्रीलिंग) मेरे कथन का प्रतिषेध नहीं करता बल्कि समर्थन करता है। ४ विद्रोहियों की उपेक्षा करने वाला (Use उपेक्षितृ) शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। ५. राजा दशरथ धर्म तथा लोक के रक्षक (Use परिरक्षितृ) थे। ६ संकीर्ण हृदय वाला[3] दूसरों का बुरा और अपनों का ही भला करने वाला होता है (Use अपकर्तृ, उपकर्तृ)। ७. मैं विद्रोह करना नहीं चाहता (Use चिकीर्षित, with

---

१. अन्य उदाहरण—विस्मारिता वय महाराजदशरथस्य रामभद्रेण।

२. अन्य उदाहरण—नाग्निस्तृप्यति काष्ठाना नापगाना महोदधि.। नान्तकः सर्वभूताना न पुसा वामलोचना। नोट—√तृप् के साथ तृतीया बहुधा प्रयुक्त होती है, यथा—को न तृप्यति वित्तेन। वाक्य (७) में भी—मिष्ठान्नेन तृप्तोऽहम्...। ३ अनुदार adj

षष्ठी)। ८. मैं विद्रोह करना नहीं चाहता था (Use चिकीर्षित with तृतीया)। ९. शम्बूक नामक एक शूद्र पृथ्वी पर तपस्या कर रहा है। हे राम, तुम्हें उसका सिर काट देना चाहिए[1]। १०. हे मेघ तुम्हें अलका नगरी जाना चाहिए। ११. साइंसदानों[2] के लिए कुछ करना कठिन नहीं। १२. रानी का घर में रहना आपको सचमुच पसन्द नहीं[3] (Use अभिमत)। १३. इस समय में नाच और राग अच्छा नहीं समझता। (Use मत. क्तान्त from√मन)।

—:o:—

अभ्यास ४१

(शैषिकी षष्ठी)

१. जो जिसका प्रियजन है वह उसका बहुमूल्य द्रव्य है[4]। २. दुर्जन से किसे भय नहीं होता ? ३. आज भोजन मिलेगा या नहीं, ऐसी मुझे कुछ चिन्ता नहीं। ४. तुम्हारा यह उपहार तुम्हारे व्याजरहित स्नेह के सदृश ही तो है। ५. निरक्षरता ब्राह्मण के अनुरूप नहीं होती। ६. हे सखि ये दिव्य आभूषण तेरे अपूर्व रूप के अनुरूप ही तो हैं। ७. मैं आशा करता हूं कि आप सब कुशलपूर्वक होंगे। ८. मूर्ख और विद्वान में बस इतना ही भेद होता है कि पहला तो काम करने के बाद सोचता है और दूसरा सोचने के बाद काम करता है। ९. सब लोगों के सामने इस विद्रोही को फांसी पर लटका दिया जाय। १०. मेरे घर के फाटक के सामने एक विशाल वटवृक्ष है। ११. इस क्षण-भंगुर जीवन के लिए (Use कृते)

हमने क्या-क्या अपमान नहीं सहा ? १२. आप किस लिये[1] भूल गये ? १३. द्विजों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है। १४. तुम्हें यहां खड़े हुए कितनी देर हुई है ? १५. उसे यहां से गये एक वर्ष हो गया है। अब तक उसका कोई समाचार नहीं मिला। १६. औषध ने बीमार को लाभ ही पहुँचाया (उप√कृ) न कि हानि (अप√कृ)। १७. जब आकाश काले-काले मेघों से ढक जाता है तब दिन भी रात जैसा हो जाता है (Use अनु √कृ)। १८. वह इतना दुर्बल हो गया है कि अपने अंगों पर भी उसका वश नहीं रहा (√ईश्, प्र√भू)। १६ उसे संस्कृत भाषा पर पूरा अधिकार है (Use ईश्)। २०. रामचन्द्र के गुणों से मुग्ध होकर लोग दशरथ को भूल गये हैं। २१. लकड़ियों से अग्नि की तृप्ति नहीं होती।

—:o:—

सप्तमी विभक्ति

नियम (१) अधिकरण कारक निम्नलिखित के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है—

(क) क्रिया के कर्ता वा कर्म के आधारभूत स्थान को [illegible] कहते हैं। अधिकरण तीन प्रकार का होता है—(१) [illegible] (indicating contact), (२) अभिव्यापक (indica[illegible] sion) और (३) वैषयिक (indicatin[illegible] ct reference to which an act is [illegible]

(ख) क्रिया का काल सूचित करने [illegible] जाता है।

---

१. कस्य हेतो। (हेतु के साथ सर्वन[illegible] सकती है, यथा—केन हेतुना)।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित भी अधिकरण हैं—

(ग) जिसके प्रति किसी प्रकार का व्यवहार किया जाय (√वृत्, व्यव√हृ, आ√चर् आदि के योग से), (घ) जिस पर विश्वास किया जाय (वि√श्वस् के योग मे), (ङ) जिसमें किसी गुण, क्रिया आदि की संभावना की जाय (सं√भू—णिजन्त, उप√पद्—कर्मवाच्य, √युज् कर्मवाच्य आदि के योग मे), (च) जिस अङ्ग आदि से किसी को पकडा जाय (√ग्रह, अव√लम्ब् आदि के योग मे), (छ) जिस पर प्रहार किया जाय या शस्त्र आदि फेंका जाय (प्र√हृ, √अस् 4P, √मुच्, √क्षिप् आदि के योग मे), (ज) जिसे कोई वस्तु सौंपी जाय (न्यस्. निक्षिप्. समर्प् आदि के योग से) (झ) जिस कार्य मे किसी को व्यापृत या नियुक्त किया जाय (√युज्, नि√युज्, व्या√पृ के योग मे), (ञ) जिसके प्रति स्नेह आदि हो (स्निह्, अनु√रञ्ज्, √रम् आदि के योग मे)।

(२) सप्तमी उपपद का प्रयोग निम्नलिखित के सम्बन्ध में होता है—

(क) साधु और असाधु के योग मे—जिसके प्रति अच्छा या बुरा व्यवहार सूचित किया जाय, (ख) कर्म से उपश्लिष्ट जिस पदार्थ की प्राप्ति के लिये कर्म पर कोई क्रिया की जाय, (ग) दायाद, साक्षी आदि शब्दों के योग मे, (घ) निपुणता-सूचक शब्दो के योग मे—जिस विषय में निपुणता हो, (ङ) तत्पर, व्यग्र, व्यापृत आदि शब्दों के योग मे—जिस कार्य मे कोई व्यापृत हो. (च) प्रसित और उत्सुक के योग में—जिसके लिए उत्कट अभिलाषा प्रकट की जाय (तृतीया और सप्तमी)। (छ) हेतु या कारण आदि शब्दों के योग में परिणामवाची शब्द सप्तमी (या षष्ठी) में रक्खा जाता है। (ज) वर्ग में से किसी को पृथक् सूचित करने के लिये (Selection of an individual out of a group) सप्तमी (और षष्ठी) प्रयुक्त होती है।

—:o:—

हमने क्या-क्या अपमान नहीं सहा ? १२. आप किस लिये[1] भूल गये ? १३. द्विजों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है। १४. तुम्हें यहां खड़े हुए कितनी देर हुई है ? १५. उसे यहां से गये एक वर्ष हो गया है। अब तक उसका कोई समाचार नहीं मिला। १६. औषध ने बीमार को लाभ ही पहुँचाया (उप√कृ) न कि हानि (अप√कृ)। १७. जब आकाश काले-काले मेघों से ढक जाता है तब दिन भी रात जैसा हो जाता है (Use अनु √कृ)। १८. वह इतना दुर्बल हो गया है कि अपने अगों पर भी उसका वश नहीं रहा (√ईश्, प्र√भू)। १६ उसे संस्कृत भाषा पर पूरा अधिकार है (Use ईश्)। २०. रामचन्द्र के गुणों से मुग्ध होकर लोग दशरथ को भूल गये हैं। २१. लकड़ियों से अग्नि की तृप्ति नहीं होती।

—.०.—

सप्तमी विभक्ति

नियम (१) अधिकरण कारक निम्नलिखित के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है—

(क) क्रिया के कर्ता वा कर्म के आधारभूत स्थान को अधिकरण कहते हैं। अधिकरण तीन प्रकार का होता है—(१) औपश्लेषिक (indicating contact), (२) अभिव्यापक (indicating pervasion) और (३) वैषयिक (indicating subject matter with reference to which an act is done)।

(ख) क्रिया का काल सूचित करने वाला शब्द भी सप्तमी में रखा जाता है।

---

१ कस्य हेतो.। (हेतु के साथ सर्वनाम प्रयुक्त होने पर तृतीया भी आ सकती है, यथा—केन हेतुना)।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित भी अधिकरण है—

(ग) जिसके प्रति किसी प्रकार का व्यवहार किया जाय (√वृत्, व्यव√हृ, आ√चर् आदि के योग में), (घ) जिस पर विश्वास किया जाय (वि√श्वस् के योग में), (ङ) जिसमें किसी गुण, क्रिया आदि की संभावना की जाय (सं√भू—णिजन्त, उप√पद्—कर्मवाच्य, √युज् कर्मवाच्य आदि के योग में), (च) जिस अङ्ग आदि से किसी को पकड़ा जाय (√ग्रह्, अव√लम्ब् आदि के योग में), (छ) जिस पर प्रहार किया जाय वा शस्त्र आदि फेंका जाय (प्र√हृ, √अस् 4P. √मुच्, √क्षिप् आदि के योग में), (ज) जिसे कोई वस्तु सौंपी जाय (न्यस्, निक्षिप्, समर्प् आदि के योग में) (झ) जिस कार्य में किसी को व्यापृत या नियुक्त किया जाय (√युज्, नि√युज्, व्या√पृ के योग में), (ञ) जिसके प्रति स्नेह आदि हो (स्निह्, अनु√रञ्ज्, √रम् आदि के योग में)।

(२) सप्तमी उपपद का प्रयोग निम्नलिखित के सम्बन्ध में होता है—

(क) साधु और असाधु के योग में—जिसके प्रति अच्छा या बुरा व्यवहार सूचित किया जाय, (ख) कर्म से उपश्लिष्ट जिस पदार्थ की प्राप्ति के लिये कर्म पर कोई क्रिया की जाय, (ग) दायाद, साक्षी आदि शब्दों के योग में, (घ) निपुणता-सूचक शब्दों के योग में—जिस विषय में निपुणता हो, (ङ) तत्पर, व्यग्र, व्यापृत आदि शब्दों के योग में—जिस कार्य में कोई व्यापृत हो, (च) प्रसित और उत्सुक के योग में—जिसके लिए उत्कट अभिलाषा प्रकट की जाय (तृतीया और सप्तमी)। (छ) हेतु या कारण आदि शब्दों के योग में परिणामवाची शब्द सप्तमी (या षष्ठी) में रखा जाता है। (ज) वर्ग में से किसी को पृथक् सूचित करने के लिये (Selection of an individual out of a group) सप्तमी (और षष्ठी) प्रयुक्त होती है।

—:o:—

उदाहरण (अधिकरण कारक)
(सप्तम्यधिकरणे च । २ ३. ३६)

(क) (औपश्लेषिक) (१) इस गांव में बहुत से विद्वान् ब्राह्मण रहते हैं। | (१) अस्मिन् ग्रामे भूयांस बहुश्रुता ब्राह्मणा प्रतिवसन्ति।

(२) (अभिव्यापक) हे अर्जुन, ईश्वर सब प्राणियों के हृदय मे रहता है। | (२) ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

(३) राम में तनिक भी क्रोध नहीं। | (३) रामे क्रोधलवोऽपि नास्ति।

(४) (वैषयिक) मोक्ष की इच्छा नहीं है। | (४) मोक्षे इच्छा नास्ति।

(५) मुझे कर्म के फल की चाह नहीं। | (५) न मे कर्मफले स्पृहा।

(६) आपने दर्शन देकर ही मुझ पर कृपा की है। | (६) त्वया दर्शनेनैव दर्शितो मय्यनुग्रह ।

(७) इन्द्रियों का संयम करने का यत्न करना चाहिए। | (७) इन्द्रियाणां संयमे यत्नमातिष्ठेत्।

(८) भले आदमी निर्गुण प्राणियों पर भी दया करते हैं। | (८) निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दयां कुर्वन्ति साधवः।

(९) उसके लौटने की कोई आशा नहीं। | (९) तस्य प्रत्यागमने नास्ति काचिदाशा।

(१०) मूर्ख को ही दु खात भोगों में सुख का भ्रम होता है। | (१०) मूर्खस्य हि दु.खानुबंधिषु भोगेषु सुखभ्रमो भवति।

(११) कालिदास की रचना के प्रति परिषद् का बहुत आदर क्यों ? | (११) कालिदासस्य क्रियायां परिषद कथं बहुमान ।

(१२) तापस-कुमारी शकुन्तला की तो मुझे चाह नहीं। | (१२) न खलु तापसकन्यायां शकुन्तलाया ममाभिलाष.।

(ख) (१) उस समय मैं घर पर नहीं था।	(१) तस्मिन् काले ऽहं गृहेऽसन्निहितोऽभूवम्।
(२) सम्पत्ति और विपत्ति में बड़े आदमी एक-रूप रहते हैं।	(२) संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।
(३) जो जवानी में धन नहीं कमाता बुढ़ापे में उसका निर्वाह कठिनता से होता है।	(३) यो न यौवने धनमर्जयति वार्द्धकेऽसौ कष्टेन तिष्ठति।
(ग) (१) निर्धन के साथ हर कोई निरादर का व्यवहार करता है।	(१) निर्धने सर्वोऽवज्ञया व्यवहरति।
(२) मुझ आगन्तुक के साथ भी उसने आदरपूर्वक बर्ताव किया।	(२) आगन्तुके ऽपि मयि सोऽत्यादरेणावर्तत।
(३) यह कौन है जो भोली भाली तपस्वियों की लड़कियों के साथ उद्दण्डता का बर्ताव कर रहा है।	(३) को ऽयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यकासु। (अथवा कोऽयं मुग्धासु तपस्विकन्यकासु अविनयेन व्यवहरति, वर्तते वा)
(४) किसी पूज्य पुरुष के प्रति शकुन्तला अपराध कर बैठी है।	(४) कस्मिंश्चित् पूजार्हेऽपराद्धा शकुन्तला।
(घ) (१) मुझे तुम्हारी बात का विश्वास नहीं होता।	(१) नाहं त्वद्वचसि विश्वसिमि।
(२) भला कौन ऐसे आदमी पर विश्वास करे जो वचन देकर तुरन्त ही भूल जाता है।	(२) को नाम विश्वसेत् तस्मिन् जने यो वचनं दत्त्वा सद्य एव विस्मरति।
(ङ) (१) नीच आदमियों से उदारता की आशा नहीं की जाती।	(१) न क्षुद्रेषूदारता संभाव्यते।
(२) भला कौन यह मान सकता है कि राजा ने गहने बेचे हैं।	(२) नरपतौ भूषणविक्रयं को नाम संभावयेत्।

(३) परिषद् का सभापति बनना किसी दिग्गज पण्डित को ही शोभा देता है।	(३) कस्मिंश्चित् पण्डितप्रकाण्डे एव युज्यते (उपपद्यते वा) परिषदः सभापतित्वम्।
(४) वीरों को दब्बूपन शोभा नहीं देता।	(४) न वीरेषु भीरुत्वं युज्यते (उपपद्यते वा)।
(च) (१) बच्चा माँ को अंचल से पकड़ता है।	(१) सुतो मातरमंचले गृह्णाति।
(२) उसने अपने हाथ से मेरा हाथ पकड़ लिया।	(२) असौ पाणिना पाणौ मामवालम्बत्।
(छ) (१) उसने मुझे घूंसा मारा।	(१) मुष्ट्याऽसौ मयि प्राहरत्।
(२) उसने मुझे पीठ पर घूंसा मारा।	(२) मुष्ट्याऽसौ मा पृष्ठे प्राहरत्
(३) योधा लोग विपक्षी योधाओं पर तीर चलाते हैं।	(३) भटा प्रतिभटेषु क्षिपन्ति (मुंचन्ति वा) वाणान्।
(४) पुण्यों के बिना आप जैसे महात्मा हम जैसों पर दृष्टि भी नहीं डालते।	(४) महात्मानस्त्वादृशा पुण्यैर्विना अस्मद्विधेषु दृष्टिमपि न पातयन्ति।
(ज) (१) योग्य मन्त्री को सारा भार सौंप दिया गया।	(१) योग्यसचिवे न्यस्तः समस्तो भरः।
(२) गर्मियों में पहाड़ पर जाते हुए मैं घर का सामान एक पड़ोसी को सौंपा गया।	(२) ग्रीष्मे पर्वतं प्रतिष्ठमानोऽहं गृहोपकरणं प्रतिवेशिनि समार्पयम्।
(झ) (१) हे केशव, तो फिर किसलिए मुझे भयकर काम मे लगाते हो ?	(१) तत्किं कर्मणि घोरे मा नियोजयसि केशव।

(२) तू प्रजा को प्रसन्न रखने में लगा रह। | (२) युक्तः प्रजानामनुरंजने स्याः।
(३) नगर की रक्षा करने के लिए सेनापति को नियुक्त किया गया है। | (३) नगररक्षणे नियुक्तः सेनापतिः।
(ज) (१) रघुपति हम (दोनों) से प्यार करते हैं। | (१) रघुपतिः स्निह्यत्यावयोः।
(२) अशुद्ध स्वभाव वाले राजा से लोग प्यार नहीं करते। | (२) अशुद्धप्रकृतौ राज्ञि जनता नानुरज्यते।

उदाहरण (सप्तमी उपपद)

(साध्वसाधुप्रयोगे च। वार्तिक)

(क) (१) कृष्ण का माँ के साथ अच्छा बर्ताव है पर मामा के साथ बुरा है। | (१) साधुः कृष्णो मातर्यसाधुर्मातुले।
(२) भला करने वालों के साथ जो अच्छा बर्ताव करे उसके अच्छे बनने में क्या बड़ाई है? | (२) उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः।

(निमित्तात् कर्मयोगे। वार्तिक)

(ख) (१) चमड़े के लिए शेर को मारता है। | (१) चर्मणि द्वीपिनं हन्ति।
(२) [illegible] ने [illegible] के लिए [illegible] को मारा। | (२) [illegible] [illegible] [illegible]।
(३) वे फलों के लिए वृक्ष और शाखाओं को हिलाते हैं। | (३) फलेषु [illegible] [illegible]।

(स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च । २. ३. ३१)

(ग) (१) कई लोग चाहते हैं कि बेटों के होते हुए भी बेटियों को बाप की जायदाद का भाग मिले ।

(१) सत्स्वपि पुत्रेषु दुहितरो पितृरिक्थे दायादा भवेयुरिति समीहन्ते केचित् ।

(घ) (१) यह लड़की घर के काम काज में चतुर, सब शास्त्रों को समझने वाली, चित्रकारी मे निपुण, वीणा बजाने में प्रवीण, मीठी-मीठी बातें करने में पटु, और अतिथि-सेवा में दक्ष है ।

(१) दारिकेयं कुशला गृहकर्मणि, पण्डिता सर्वशास्त्रेषु, निपुणा चित्रणकलायां, प्रवीणा वीणावादने, पट्वी प्रियालापे, दक्षा चातिथिसेवायाम् ।

(ङ) (१) वह दूसरों की भलाई करने में सदा लगा रहता है ।

(१) सदैव परोपकारे तत्परोऽसौ ।

(२) उस समय मैं किसी भारी काम में लगा हुआ था ।

(२) कस्मिंश्चिद् गुरुणि कार्ये व्यापृत (व्यग्र वा) तदाऽहमासम्

(३) काम मे लगा हुआ भी वह (वस्तुतः) कुछ नहीं करता ।

(३) कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित् करोति स ।

(प्रसितोत्सुकाभ्या तृतीया च २. ३. ४४.)

(च) मैं आपसे मिलने के लिए लालायित हूँ ।

(१) उत्सुकोऽहं भवद्दर्शने (दर्शनेन वा) ।

(२) जिसे बहुत नींद आ रही हो उसकी आँखे अपने आप बन्द होने लगती हैं ।

(२) निद्रायामुत्सुकस्य नयने स्वयं निमीलत· (निद्रया उत्सुकस्य··· वा)।

(छ) (१) मनुष्यों की उन्नति और अवनति का कारण भाग्य ही है ।

(१) दैवमेव हि नृणां वृद्धौ क्षये कारणम् ।

(२) आपके वचन ही इन (दो) [राजाओं] के झगड़े का कारण हैं।

(२) अनयोर् भूपालयोर्विग्रहे भवद्वचनमेव निदानम्।

(३) विचार करती हुई मैं उनके [झू]ठ बोलने का तनिक भी कारण [स]मझ नहीं पाती।

(३) न चाल्पमपि विचारयन्ती कारणमस्य मिथ्याभिधाने पश्यामि।

(ज) (१) मनुष्यों में ब्राह्मण [श्रे]ष्ठ है।

(१) नृषु (नृणां वा) द्विजः श्रेष्ठः।

— ० —

अभ्यास ८२

अधिकरण कारक

१. उसके हृदय में दया और लज्जा है। शरीर में कोमलता और सलोनापन है, और वाणी में मधुरता और सभ्यता है। २. गत रवि-वार को इस नगर में बहुत वृष्टि हुई। ३. आपके दिल में कुछ बात अवश्य है, इसलिए आप खिन्न रहते हैं। ४. मुझे धन कमाने की चिन्ता नहीं। ५. इस कथन की सत्यता के बारे में तनिक भी सन्देह नहीं। ६. मन का निग्रह करने की मुझ में शक्ति नहीं। ७. इस प्रयोग की सिद्धि के बारे में मैं निराश हो चुका हूँ। ८. तप्त मरुभूमि में पथिकों को कई बार जल की भ्रान्ति होती है। ९. उसने मेरे साथ मित्र का सा व्यवहार किया [illegible]। १०. धर्म के [illegible] [illegible] चाहिए। ११. [illegible]। १२. [illegible]। १३. [illegible]

१४. किसी आदमी ने कुत्ते को ठोकर मारी। १५. कई लोग उस पर फूल बरसाते थे और कई पत्थर। १६. सीता ने अपने आपको गंगा के प्रवाह में फेंक दिया (√पत्-णिजन्त)। १७. बेटा, मैं तुम्हें वाणिज्य में लगाना चाहता हूँ। १८. महाराज को इस आगन्तुक रमणी से बहुत प्रेम हो गया है।

—:०:—

अभ्यास ४३

सप्तमी उपपद

१. बुरा करने वालों के साथ जो भला करता है (Use साधु) उसे सत्पुरुष साधु कहते हैं। २. महाराज के दर्शनों के लिए महारानी बहुत उत्सुक है। ३ सैनिकों के अचानक पीछे मुड़ने[1] का क्या कारण हो सकता है ? ४ आदर्श नेता[2] वही है जो निःस्वार्थ भाव से रात देश-सेवा में लगा रहता है।[3] ५. फलों में अंगूर सबसे मीठा है। ६. फूलों में शिरीष सबसे मृदु है।

—:०:—

भावलक्षण सप्तमी और षष्ठी

(The Locative & the Genitive Absolute)

व्याख्या—'अध्यापक के आने पर छात्र चुप हो गये।' इस वाक्य में दो क्रियाएँ हैं—(१) अध्यापक का 'आना' और (२) छात्रों का 'चुप हो जाना'। इन दोनों क्रियाओं में परस्पर यह सम्बन्ध है कि दूसरी क्रिया का समय पहली क्रिया के समय से सूचित होता है, अर्थात् यदि पूछा जाय कि 'छात्र कब चुप हुए ?' तो उत्तर यही होगा कि 'जब अध्यापक आया'। छात्रों के चुप होने' का समय वही है जो

१. पीछे मुड़ना=परावर्तन (नपुंसक)। २. आदर्श नेता=नेतृणाम् आदर्शः, ३. देशसेवाया तत्परः।

कि अध्यापक के 'आने' का है। ऊपर लिखे वाक्य का अनुवाद दो प्रकार से हो सकता है—(१) यदा अध्यापक आगच्छत्, छात्राः तूष्णीम् अभवन्। अथवा—(२) आगते ऽध्यापके छात्राः तूष्णीम् अभवन्। दूसरा वाक्य पहले की अपेक्षा बहुत सुन्दर है और यही संस्कृत प्रणाली के अनुकूल है।

अब हम दूसरे वाक्य पर ही विचार करते हैं। इस वाक्य में पहली क्रिया को अभिहित करने के लिए आगम् धातु को किसी लकार (Tense) में प्रयुक्त नहीं किया गया, प्रत्युत आगम् धातु के क्तान्त रूप (आगत) को सप्तमी विभक्ति में प्रयुक्त किया गया है, और अध्यापक शब्द (जोकि कर्ता है) को भी सप्तमी में रखा गया है। इस प्रकार प्रयुक्त हुई सप्तमी विभक्ति को 'भावलक्षणा सप्तमी' कहा जाता है, क्योंकि इसके द्वारा दूसरी क्रिया ('चुप हो जाना') लक्षित होती है।

एक और वाक्य लीजिये—'अध्यापक के उपस्थित होने पर भी छात्र शोर करते रहे'। यह वाक्य केवल इतना ही भाव प्रकट नहीं करता कि 'जब अध्यापक उपस्थित था—छात्र शोर कर रहे थे'—बल्कि इससे यह भी सूचित होता है कि छात्रों ने अध्यापक की उपस्थिति की परवाह न की। इस प्रकार पहली क्रिया की उपेक्षा करके जब दूसरी क्रिया की जाय, तो सप्तमी विभक्ति के अतिरिक्त षष्ठी भी प्रयुक्त होती है। इसे हम 'भावलक्षणा षष्ठी' कह सकते हैं। इस वाक्य का अनुवाद यों होगा—

१४. किसी आदमी ने कुत्ते को ठोकर मारी। १५. कई लोग उस पर फूल बरसाते थे और कई पत्थर। १६. सीता ने अपने आपको गगा के प्रवाह में फेंक दिया (√पत्-णिजन्त)। १७. बेटा, मै तुम्हें वाणिज्य में लगाना चाहता हूँ। १८. महाराज को इस आगन्तुक रमणी से बहुत प्रेम हो गया है।

—०—

अभ्यास ४३

सप्तमी उपपद

१. बुरा करने वालों के साथ जो भला करता है (Use साधु) उसे सत्पुरुष साधु कहते हैं। २. महाराज के दर्शनों के लिए महाराणी बहुत उत्सुक है। ३ सैनिकों के अचानक पीछे मुड़ने[1] का क्या कारण हो सकता है? ४ आदर्श नेता[2] वही है जो निःस्वार्थ भाव से रात देश-सेवा में लगा रहता है।[3] ५. फलों में अंगूर सबसे मीठा है। ६. फूलों मे शिरीष सबसे मृदु है।

—:o:—

भावलक्षणा सप्तमी और षष्ठी

(The Locative & the Genitive Absolute)

व्याख्या—'अध्यापक के आने पर छात्र चुप हो गये।' इस वाक्य में दो क्रियाएँ हैं—(१) अध्यापक का 'आना' और (२) छात्रों का 'चुप हो जाना'। इन दोनों क्रियाओं मे परस्पर यह सम्बन्ध है कि दूसरी क्रिया का समय पहली क्रिया के समय से सूचित होता है, अर्थात् यदि पूछा जाय कि 'छात्र कब चुप हुए?' तो उत्तर यही होगा कि 'जब अध्यापक आया'। छात्रों के चुप होने' का समय वही है जो

१. पीछे मुड़ना=परावर्तन (नपुंसक)। २. आदर्श नेता=नेतृणाम् आदर्शः, ३. देशसेवाया तत्परः।

कि अध्यापक के 'आने' का है। ऊपर लिखे वाक्य का अनुवाद दो प्रकार से हो सकता है—(१) यदा अध्यापक आगच्छत, छात्राः तूष्णीम् अभवन्। अथवा—(२) आगते ऽध्यापके छात्राः तूष्णीम् अभवन्। दूसरा वाक्य पहले की अपेक्षा बहुत सुन्दर है और यही संस्कृत प्रणाली के अनुकूल है।

अब हम दूसरे वाक्य पर ही विचार करते हैं। इस वाक्य में पहली क्रिया को अभिहित करने के लिए आगम् धातु को किसी लकार (Tense) में प्रयुक्त नहीं किया गया, प्रत्युत् आगम् धातु के क्तान्त रूप (आगत) को सप्तमी विभक्ति में प्रयुक्त किया गया है, और अध्यापक शब्द (जोकि कर्ता है) को भी सप्तमी में रखा गया है। इस प्रकार प्रयुक्त हुई सप्तमी विभक्ति को 'भावलक्षणा सप्तमी' ❀ कहा जाता है, क्योंकि इसके द्वारा दूसरी क्रिया ('चुप हो जाना') लक्षित होती है।

एक और वाक्य लीजिये—'अध्यापक के उपस्थित होने पर भी छात्र शोर करते रहे'। यह वाक्य केवल इतना ही भाव प्रकट नहीं करता कि 'जब अध्यापक उपस्थित था—छात्र शोर कर रहे थे'—बल्कि इससे यह भी सूचित होता है कि छात्रों ने अध्यापक की उपस्थिति की परवाह न की। इस प्रकार पहली क्रिया की अवहेलना करते हुए यदि दूसरी क्रिया की जाय, तो सप्तमी विभक्ति के अतिरिक्त षष्ठी भी प्रयुक्त होती है। इसे हम 'भावलक्षणा षष्ठी, कह सकते हैं। इस वाक्य का अनुवाद यों होगा—

'(१) उपस्थितेऽपि अध्यापके छात्राः शब्दम् अकुर्वन्।' अथवा
(२) उपस्थितस्य अपि अध्यापकस्य छात्राः शब्दम् अकुर्वन्।
ऊपर जो कहा गया उसे हम नीचे नियम के रूप मे लिखते हैं।

❀ 'भावलक्षणा' में 'भाव' का अर्थ है 'क्रिया'। भावलक्षणा=(दूसरी क्रिया) (के समय) को लक्षित करने वाली।

नियम (क)—जब एक क्रिया के होने से किसी दूसरी क्रिया का समय लक्षित हो, तो पहली क्रिया को अभिहित करने के लिए अभीष्ट धातु के वर्तमान अथवा भूत कृदन्त के रूप को सप्तमी में प्रयुक्त किया जाता है। फिर कर्ता भी सप्तमी में रखा जाता है, और कृदन्त पद के लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं। यदि कर्ता का कोई अन्य विशेषण हो तो वह भी सप्तमी में कर्ता के समान लिंग और वचन में प्रयुक्त होता है।

नियम (ख)—यदि पहली क्रिया की अवहेलना करके दूसरी क्रिया की जाय, तो सप्तमी के अतिरिक्त षष्ठी भी विहित है।

नोट (१)—यदि पहले वाक्य में आया कृदन्त √अस् (to be) से बना (सति etc. Loc from सत्) हो, तो प्राय उसका लोप कर दिया जाता है। यथा—जब तुम सत्पुरुषों के रक्षक हो तो धर्म के कामों में विघ्न कैसे!=कुतो धर्मक्रियाविघ्न सता रक्षितरि त्वयि (इति अभिज्ञानशाकुन्तले)।

नोट (२)—'भावलक्षण' का प्रयोग तभी हो सकता है यदि पहले वाक्य का कर्ता-पद या उसका स्थानापन्न सर्वनाम दूसरे वाक्य मे (षष्ठी के अतिरिक्त किसी विभक्ति में) प्रयुक्त न हुआ हो। यथा—'अध्यापक के आने पर छात्रों ने उसे प्रणाम किया' के अनुवाद में 'भावलक्षण' का प्रयोग नहीं हो सकता। इसलिए 'आगते ऽध्यापके छात्रा तम् प्रणेमु' अशुद्ध है। इसका शुद्ध अनुवाद है—आगतम अध्यापक छात्रा प्रणेमुः। परन्तु पहले वाक्य का कर्ता पद या उसका स्थानापन्न सर्वनाम, षष्ठी विभक्ति मे दूसरे वाक्य मे आ सकता है। यथा—मूल पुरुष के निस्सन्तान मर जाने पर, उसका धन राजा को मिलता है=अनपत्ये मूलपुरुषे मृते सति तस्य रिक्थ राजगामि भवति।

नोट (३)—कई बार ऐसा होता है कि पहले वाक्य में कोई संज्ञा वा सर्वनाम कर्ता के रूप मे प्रयुक्त नहीं होता, और 'इति, तथा. इत्थम, एवम् आदि शब्द कृदन्त के साथ प्रयुक्त किये जाते हैं यथा—ऐसी अवस्था होने पर प्रश्नोत्तर से क्या लाभ ?=एवं गते किं प्रश्नोत्तरेण। ऐसा किये जाने पर बीमार स्वस्थ हो गया=तथाऽनुष्ठिते रुग्णः स्वास्थ्यम् अलभत ।

नोट (४)—जब यह भाव प्रकट करना हो कि 'ज्यों ही पहली क्रिया हुई त्यों ही दूसरी क्रिया हुई' तो सप्तमी में आये कृदन्त के साथ 'एव' शब्द रखा जाता है, या कृदन्त के साथ 'मात्र' को समस्त करके, फिर समस्त पद को सप्तमी में प्रयुक्त किया जाता है। कई बार 'एव' और 'मात्र' दोनों प्रयुक्त किये जाते हैं।

—०—

उदाहरण (यस्य च भावेन भावलक्षणम् २ ३. ३७)

(क) (१) सूर्य के अस्त होने पर सर्वत्र अंधेरा छा गया।

(१) अस्तमिते सूर्ये सर्वत्र तमः प्रावर्तत।

(२) राजा के लौटने पर राजधानी को सजाया गया।

(२) परागते नृपे ऽलमक्रियत राजधानी।

(३) सूर्य के उदय होने पर प्राची दिशा लाल हो गई।

(३) उदिते रवौ प्राची दिग् अरज्यत् (अरज्यत वा)।

(४) ज्योंही संगीत शुरू हुआ, सामाजिक चुप हो गये।

(४) प्रवृत्ते एव संगीते (=प्रवृत्तमात्रे संगीते = प्रवृत्तमात्रे एव संगीते) सामाजिका मौनम् अभजन् (अभजन्त वा)।

(षष्ठी चानादरे २. ३. ३८)

(ख) (१) पहरेदारों के देखते रहने पर भी डाकुओं ने महल को आग लगा दी।	(१) प्रेक्षमाणानामपि रक्षिणां लुण्ठकाः राजगृहेऽग्निं ददु ।
(२) राक्षस देखता ही रह गया और नन्द पशुओं की भाँति मारे गये।	(२) नन्दा पशव इव हता पश्यतो राक्षसस्य।

—:o:—

अभ्यास ४४

(भावलक्षण का प्रयोग करो)

१. सूर्य के उदय होने पर कमल खिल उठे और कुमुद बन्द हो गये। २. वर्षा ऋतु के आने पर मेंढक पैदा हो गये। ३. ज्योंही सूर्य अस्त हुआ हिंस्र पशु और राक्षस जंगल मे घूमने लगे। ४. नये राजा के सिंहासन पर बैठने पर लोगों ने फिर सुख का साँस लिया (उच्छ्वस् 2P)। ५. जब वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा, अचानक आकाशवाणी हुई।[1] ६ जब मै पढ़ रहा था किसी ने दरवाजा खटखटाया।[2] ७. जब थोड़ी-थोड़ी वर्षा हो रही थी, मै सैर के लिए निकल पड़ा। अभी मैं बहुत दूर नहीं गया था कि मूसलाधार वर्षा होने लग पड़ी। ८ युद्ध और दुर्भिक्ष के वर्तमान होने पर, प्रतिदिन शस्त्र-प्रहार और अन्नाभाव से असंख्य बच्चों युवकों और वृद्धों के मरते रहने पर भी कई हृदयहीन धनिकों के घर अनवरत उत्सव लगा रहता है। ६. ज्योंही राष्ट्रपति ने पण्डाल में प्रवेश किया, चारों ओर तालियाँ बज उठीं, और जब वे बैठ गये तो नितान्त शान्ति हो गई। १०. जब लोग चुप हो गये सभापति ने बोलना शुरू किया। ११. इन्द्रियाँ इतनी प्रबल हैं कि मनुष्य के यत्न करने पर भी वे उसके मन को हर लेती

१. अशरीरिणी वाग् उदचरत्। २. कपाट आ √हन्।

है (Use षष्ठी)। १२. विकार के हेतु के उपस्थित होने पर भी जिनके मन में विकार नहीं आता वे ही धीर हैं।[1] १३. वसन्त में जब सुन्दर और सुगन्धित फूल खिलते हैं, और पक्षी मधुर कूजन करते हैं, तब किसका मन मुदित नहीं होता। १४. पहरेदारों के देखते-देखते ही बन्दी कारागार से भाग निकला (Use षष्ठी)। १५. यद्यपि वर्षा होती रही, अग्नि ने सारा वन जला दिया (Use षष्ठी) १६. मूसलाधार वर्षा की परवाह न करते हुए, पथिक बराबर चलता गया (Use षष्ठी)। १७. जब मकान को आग लगी हुई हो तब कुआँ खोदने से क्या लाभ? १८. पिता के मना करने पर भी पुत्र घर से निकल गया (Use षष्ठी)।

—॰—

१. विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः (कुमारसम्भव)।

चौथा अध्याय

विविध वाक्यों का अनुवाद

नियम—किसी व्यक्ति के कथन (statement) को उद्धृत करने में हिन्दी में जहाँ सम्बन्धक (conjunction) 'कि' का प्रयोग होता है, वहाँ संस्कृत में उसका अनुवाद निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है।*

(क) वक्ता के कथन को ज्यों का त्यों रखकर अन्त में 'इति' जोड़ा जाता है।

(ख) वक्ता के कथन से पूर्व 'यद्' अथवा 'यथा' रखकर कथन के अन्त में 'इति' विकल्प से लगाया जाता है।

उदाहरण—

(क) (१) पिता ने पूछा कि द्वार पर कौन खड़ा है।	(१) पिताऽपृच्छत् को द्वारि तिष्ठतीति।
(२) राम ने उत्तर दिया कि मुझे पता नहीं।	(२) राम प्रत्यवदन्नाहं जानामीति।
(३) पिता ने फिर कहा कि जाओ और पता करो।	(३) पिता पुनरुवाच याहि जानीहि चेति।

---

* नोट—ध्यान रहे कि संस्कृत मे अंग्रेजी की भांति Indirect Narration नही होता, और वक्ता के कथन में आये पुरुष (Person) और काल (Tense) का किसी प्रकार भी परिवर्तन नहीं किया जाता और सारे कथन को ज्यों का त्यों रख दिया जाता है।

(४) आगन्तुक प्रवेश करते ही एकदम बोल उठा 'आहा, कैसा सुन्दर है बगीचा !'

(४) आगन्तुक: प्रविशन्नेव सहसाऽब्रवीद् अहो रामणीयकमारामस्येति ।

(ख) (१) विना बताये भी ज्ञात हो ही रहा है कि यह तपोवन की परिसर भूमि है ।

(१) अकथितोऽपि ज्ञायत एव यथा ऽयमाभोगस्तपोवनस्येति ।

(२) यह कहावत सच्ची है कि सुख सुख का अनुगामी होता है।

(२) सत्योऽय जनप्रवादो यत्संपत्संपदमनुबध्नातीति ।

(३) उसे एक बार विचार हुआ कि धन कमाने के उपाय सोचने चाहिएँ और करने चाहिएँ ।

(३) तस्य कदाचिच्चिन्ता समुत्पन्ना यदर्थोत्पत्त्युपायाश्चिन्तनीया कर्तव्याश्च ।

नोट—इस प्रकार 'इति', 'यथा', 'यथा—इति', 'यद्', 'यद् इति' का प्रयोग केवल किसी के कथन को उद्धृत करने के लिए ही नहीं किया जाता, वल्कि कर्ता के विचार, अनुभव आदि के सम्बन्ध में जो कुछ कहना हो वह सब इस प्रकार कहा जा सकता है ।

उदाहरण—

(१) मुझे यह आशा है कि वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जायगा ।

(१) इयं मे आशंसा यत् सोऽचिरेणैव स्वास्थ्यं लप्स्यते ।

(२) यह मेरा सौभाग्य है कि आपके दर्शन हुए ।

(२) सौभाग्य ममैतद् यद् भवन्तमदर्शम् ।

(३) यह बात तो प्राय: आपके कान तक पहुँची होगी कि स्वर्ग मे अप्सरा नाम की कन्याएँ है ।

(३) एतत्प्रायेण भवत श्रुतिविषयमापतितमेव यथा विबुधसद्मनि अप्सरसो नाम कन्यका: सन्ति ।

(४) मैने यह सोचकर कि यह उसका पहला अपराध है, क्षमा कर दिया ।

(४) प्रथमोऽय तस्यापराध इति विचार्य मया मर्षित. ।

क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्द

संस्कृत व्याकरण में किसी पद को क्रियाविशेषण का नाम नहीं दिया गया। हिन्दी में जिन शब्दों को क्रियाविशेषण कह सकते हैं, संस्कृत में उनके स्थान में प्रयुक्त होने वाले अनेक अव्यय शब्द हैं। इनके अतिरिक्त कई नामों (nouns) के द्वितीया और तृतीया के एकवचन के रूप और नपुंसक लिंगवाचक विशेषणों (adjective in neuter gender) के द्वितीया एकवचन के रूप भी क्रिया-विशेषण का काम देते हैं।

उदाहरण--(१) अव्यय—सम्प्रति किं कर्तव्यम्। सहसा विदधीत न क्रियाम्।

(२) नाम (द्वितीया, एकवचन) सुखम् उपदिश्यते परस्य।

नाम (तृतीया, एकवचन) प्रकृत्या मधुरं गवां पय।

इसके अन्य उदाहरण कारक प्रकरण में तृतीया उपपद के ड) भाग के उदाहरणों में देखिये।

(३) विशेषण (नपुंसक लिंग, द्वितीया, एकवचन) शीघ्रं याहि) तीक्ष्णं रविस् तपति। श्यामा मधुरं गायति।

नीचे क्रमविशेष के अनुसार अव्ययों तथा ऐसे अन्य शब्दो की सूची दी गई है जो क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते है—

(१) कालवाचक क्रियाविशेषण (Adverbs of Time)

अद्य (आज), अद्यत्वे (आजकल, इन दिनों), ह्यः (कल yester-pay), पूर्वेद्यु (पहले दिन), अपरेद्युः=इतरेद्यु (दूसरे दिन, अगले दिन), श्व (कल tomorrow), परश्वः (परसों day after

tomorrow), परुत् (गत वर्ष), परारि (पिछले से पिछले वर्ष), एषमस् (इस वर्ष)।

पुरा (पहले, प्राचीन काल में), अधुना=इदानीम्=सम्प्रति=साम्प्रतम्=एतर्हि (अब), कदा=कर्हि (कब), कदाचित्=कर्हिचित (कभी), तदा=तदानीम्=तर्हि (तब), यदा=यर्हि (जब), यदाकदा (कभी कभी), एकदा (एक बार) सदा=सर्वदा, अजस्रम्=सततम्=अनिशम् (लगातार continuously)।

प्रातः (सवेरे), प्रातस्तराम् (बहुत सवेरे), सायं, नक्तं (रात के समय), दिवा (दिन के समय), नक्तदिवा=अहर्निशम् (दिन-रात), प्रतिदिनम्=प्रत्यहम्।

देश और दिशावाचक क्रियाविशेषण (Adverbs of Place)

अग्रे, अग्रतः, पुर, पुरत, पुरस्तात्, सम्मुखम् (=आगे, सामने), पश्चात् (पीछे), अध=अवस्तात् (नीचे), उपरि (ऊपर), अन्तर् (अन्दर), बहिर् (बाहर), अन्तरा (बीच मे, between)।

अत्र=इह (यहाँ), तत्र (वहाँ), यत्र (जहाँ), सर्वत्र=सर्वतः (सब जगह), कुत्र=क्व (कहाँ), कुत्रचित्=क्वचित् (कहीं), एकत्र (एक स्थान मे), अन्यत्र (अन्य स्थान मे), अमुत्र (वहाँ, दूसरे लोक में)।

दूरम्=दूरे (दूर), समीपं=समीपे=निकषा=समया=अन्तिके आरात् (near)।

पश्चात् (पीछे), पश्चिमत=प्रत्यक् (पश्चिम की ओर), दक्षिणा, दक्षिणाहि, दक्षिणेन, दक्षिणत (दक्षिण की ओर), उत्तरा, उत्तराहि, उत्तरेण, उदक् (उत्तर की ओर), प्राक, पूर्वतः (पूर्व की ओर), उभयत (दोनों ओर), सर्वत=समन्तत=अभितः (चारों ओर), इत (इस ओर, इधर), इतस्तत (इधर-उधर)।

प्रकारवाचक क्रियाविशेषण (Adverbs of Manner)

इत्थम्, एवम्, इति (इस प्रकार), कथम् (किस प्रकार, कैसे), कथंचित=कथंचन (किसी प्रकार), यथा (जैसे, जिस प्रकार), यथा-कथा (जैसे कैसे), यथाकथंचित् (with difficulty), तथा (वैसे, उस प्रकार), अन्यथा (अन्य प्रकार), सम्यक्=सुष्ठु=अजस्रा (अच्छी तरह), असाम्प्रतम् (अनुचित ढग से)।

अतीव (बहुत), निकामम्, नितराम्, सुतराम्, भृशम (अत्यन्त), ईषत्=मनाक् (थोड़ा सा, तनिक), किंचित (कुछ), वृथा=मुधा=मिथ्या (व्यर्थ ही)।

शनै (धीरे), शनै-शनै (धीरे-धीरे), सत्वरम्=द्रुतम्=शीघ्रम् (जल्दी quickly), अकस्मात्=सहसा (अचानक suddenly), अचिरम, अचिरेण, अचिरात्, अविलम्बम्, अह्नाय, सपदि=(तुरन्त, जल्दी ही), चिरम्, चिरेण, चिराय (देर से, देर बाद), पुनः=मुहुः (फिर), पुनः-पुनः=मुहुर्मुहुः=भूयो भूय (बार-बार), प्राय = बहुधा=असकृत् (अनेक बार), अभीक्ष्णम् (कई बार, अनेक बार), यथाक्रमम् (क्रम के अनुसार)।

जोषम्=तूष्णीम् (चुपचाप), उच्चै (ऊँचे स्वर से), बलात् (बल पूर्वक), बलवत् (प्रबल strongly), पृथक् (अलग), विना=ऋते=नाना (without), सह=सार्धं=साकम=समम् (साथ, with)।

—.○—

विविध सम्बन्धकों का प्रयोग

(Conjunctions & Conjunctional Phrases)

(क) जो ˙ सो=यद् तद्, जो कुछ ˙˙ सब कुछ=यद् यद् तद् तद्।

(१) वह जो पढ़ता है उसे याद रखता है।	(१) यद् अधीते तद् मनसा धारयति।
(२) वह जिसे देखता है उसे पूछता है।	(२) यं पश्यति त पृच्छति।
(३) वह जो कुछ पढ़ता है सव याद रखता है।	(३) यद् यद् अधीते तद् तद् मनसा धारयति।
(४) वह जिस किसी को देखता है उसे पूछता है।	(४) यं यं पश्यति तं तं पृच्छति।

(ख) (जो कुछ भी=यत् किञ्चित् etc)

(१) भूखे को जो कुछ मिलता है उसे वह खा लेता है।	(१) बुभुक्षित यत्किंचित् लभते तद् भक्षयति।

(ग) चाहे जो कोई भी=यो वा को वा

(१) मैं चाहे जो कोई भी होऊँ, तुम्हें इससे क्या?	(१) यो वो को वा भवाम्यहं। कि तवानेन।
(२) तुम चाहे हिन्दुस्तानी हो या अंग्रेज, राजमुद्रा के विना किले के भीतर नहीं जा सकते।	(२) भारतीयो वा ऽऽङ्गलो वा भवसि राजमुद्रां विना दुर्गं प्रवेष्टुं नार्हसि।

(घ) एक ˙ दूसरा=अन्य ˙ अन्य, एक ˙ अपर।

(१) करता कोई है भोगता कोई है।	(१) अन्य करोति अन्यो भुक्ते
(२) मेरे दो भाई हैं—एक वैद्य है दूसरा अध्यापक।	(२) द्वौ मे भ्रातरौ! एको वैद्यो ऽपरो ऽध्यापकः।

(३) कई कहते हैं कि विधवा-विवाह शास्त्र के प्रतिकूल है और कई कहते हैं कि शास्त्र के अनुकूल है।	(३) विधवानां पुनरुद्वाह शास्त्र-प्रतिषिद्ध इत्येके मन्यन्ते शास्त्र-विहित इत्यपरे (अन्ये वा)
(४) कई लोगों ने मेरी बात का समर्थन किया, पर कइयों ने उस पर कटाक्ष किया।	(४) मदुक्तं केचिदन्वमन्यन्त। अपरे पुनर्निनिन्दुः।

(ङ) जहाँ··वहा=यत्र·· तत्र

(१) विद्वान जहाँ जाता है वहीं आदर पाता है।	(१) विद्वान् यत्र गच्छति तत्रैव मान लभते।
(२) अभागा मनुष्य प्राय जहाँ जाता है विपत्तियाँ भी वहीं चली जाती हैं।	(२) प्रायो गच्छति यत्र भाग्य-रहितस्तत्रैव यान्त्यापदः।

(च) जो कुछ भी, जो कोई भी, जहा कही भी=यत् किंचित् etc.

(१) भूखे को जो कुछ भी मिलता है उसे वह खा लेता है।	(१) बुभुक्षित यत्किंचित्त लभते तद् भुक्ते।
(२) हर किसी को भेद नहीं बताना चाहिए।	(२) यस्मै कस्मैचिद् रहस्यं न कथयितव्यम्।
(३) ऐसी सुन्दर कन्या यों ही किसी को न दे देनी चाहिए।	(३) एतादृशी रूपवती कन्या यस्मै कस्मैचित न दातव्या।
(४) यात्रा से थका हुआ जहाँ कहीं भी सो लेता है।	(४) यत्र कुत्रापि स्वपिति मार्ग-परिश्रान्तः।

(छ) इधर·· उधर=एकत · अन्यत, क्वचित् क्वचित्

(१) एक ओर काँटों का ढेर है और दूसरी ओर फूलों का।	(१) एकत. कण्टकजालम् अन्यत कुसुमनिकर।

(२) एक ओर तो पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ प्रेम है और दूसरी ओर नितान्त उदासीनता। | (२) एकत. काष्ठागतः स्नेहो ऽन्यत नितराम् उदासीनता।

(३) कहीं गाना है और कहीं हाय-हाय करके रोना है। | (३) क्वचिद् वीणावाद्य क्वचिदपि च हा हेति रुदितम्।

(ज) जब ··तब=यदा·· तदा,यावत् · तावत्, ज्योंही···त्योंही, जब तक तब तक, जहां तक·· वहां तक=यावत्·· तावत्, जितना···उतना=यावत् तावत्।

(१) बिना विचारे काम करने वाला जब चेतता है तब बहुत पछताता है। | (१) असमीक्ष्यकारी यदा चेतयते तदा भृशमनुतप्यते।

(२) जब उस पथिक ने जागकर आंखे खोलीं, तब सूर्य छिप चुका था। | (२) यावदसौ पान्थः प्रबुध्य नेत्रे उदमीलयत् तावद् रविरस्तंगतोऽभूत्।

(३) मैं अभी घर से निकला ही न था कि वर्षा होने लगी। | (३) यावन्न गृहान्निष्क्रामामि तावद्देवो वर्षितुमारभत।

(४) जब तक एक दु'ख का अन्त नहीं होता तब तक दूसरा मुझे आ घेरता है। | (४) एकस्य दु'खस्य न यावदन्त गच्छामि तावद् द्वितीयं समुपस्थितं मे।

(५) मैं प्रातः यमुना तक सैर करने जाता हूँ। | (५) यमुनां यावत् विहरामि कल्ये।

(६) सूर्य के अस्त होने तक तेरी प्रतीक्षा करूंगा। | (६) सूर्यास्तमनं यावत्त्वां प्रतिपालयिष्यामि।

(७) जब तक धन है तभी तक बन्धु हैं। | (७) यावद् वित्तं तावदेव बांधवा।

(८) जब तक सांस तब तक आस। | (८) यावद् प्राणास्तावदाशा।

(९) जब तक देह का नाश नहीं होता तब तक ही सुख और दुःख मालूम होता है।	(९) यावन्न पतति देहस्तावदेव सुखदुःखानुभूतिः।
(१०) जब तक मुक्ति नही होती तब तक ही आवागमन है।	(१०) यावन्नमुक्ति तावदेव संसारः (=आ मुक्तेः संसार)।
(११) हे चन्द्र! छिप न जाना जब तक मै गीत गाऊ।	(११) यावद् गायामि रे चन्द्र! तावत्त्वं मा तिरोभूः।
(१२) जितना चाहा उतना पाया।	(१२) यावदिष्टं तावल्लब्धम्।
(१३) मुझ में इतना लालच नहीं जितना कि तुम समझते हो।	(१३) नास्ति मे तावती तृष्णा यावती त्वं तर्कयसि।

(झ) जैसे=इव, यथा, जैसे वैसे, जितना · उतना=यथा ··तथा, यादृश तादृश, ज्यो ज्यो · त्यो त्यो, जितना अधिक ··उतना अधिक, जितना कम · उतना कम=यथा यथा तथा तथा।

(१) मैं उसका अपने पिता की भांति आदर करता हूँ।	(१) अहं तं निजपितरमिव मानयामि=अहं तमाद्रिये यथा निजं पितरम्।
(२) वह भी मुझ से पिता की भाति स्नेह करता है।	(२) सोऽपि मयि पितेव स्निह्यति=सोऽपि मयि स्निह्यति यथा पिता।
(३) मै उसका वैसे ही आदर करता हूँ जैसे अपने पिता का।	(३) अह तं तथैवाद्रिये यथा स्वपितरम्।
(४) जैसे घी आयुवर्द्धक है वैसे और कुछ नहीं।	(४) यथा घृतमायुष्य न तथा किंचिदन्यत्। =यावद् घृतमायुष्यं न तावद् किंचिदन्यत्। = यादृश घृतमायुष्यं न तादृश किंचिदन्यत्*।

* अथवा—घृतवन्नायुष्यमन्यत्=घृतमिव नायुष्यमन्यत्=यथा घृतमायुष्यं न तद्वदन्यत्।

(५) ज्यों-ज्यों दवाई पीता हूँ त्यों-त्यों रोग बढ़ता है।	(५) यथा-यथा पिबाम्यगदं तथा-तथा कुप्यति गद·।
(६) आह! कैसी विडम्बना है कि ज्यों-ज्यों यौवन बीतता है त्यों-त्यों विषयों की अभिलाषा बढ़ती है।	(६) अहो विडम्बना! यथा-यथा-ऽतिक्रामति यौवनं तथा-तथा वर्धते विषयाभिलाप।
(७) ज्यों-ज्यों विषयों का चिन्तन छोड़ोगे त्यों-त्यों तुम्हारा मन निर्मल होगा।	(७) यथा-यथा विपयान्नानुध्या-स्यसि तथा-तथा चेतस्ते प्रस-त्स्यति।

(ञ) इसलिये=इति, अत, क्योकि ··इसलिये,=यत्··· तत्, यत ···तत., यथा · तथा।

(१) वह प्राप्त करना चाहता है, इसलिये खोजता है वह खोजता है क्योंकि वह प्राप्त करना चाहता है।	(१) विवित्सति इति मृग्यति।
(२) लता फूलती-फलती है क्योंकि उसे पानी दिया जाता है।	(२) सिच्यते इति चीयते लता।
(३) मनुष्य कर्म मे आसक्त हो जाता है, इसलिये बन्धन मे पड़ता है।	(३) कर्मणि सज्यते इति बध्यते देही।
(४) मैं परदेसी हूँ, इसलिये पूछता हूँ।	(४) वैदेशिकोऽस्मीति पृच्छामि।
(५) मुझे इस सोने के कंकण की आवश्यकता नहीं, इसलिये जिस किसी को भी दे देना चाहता हूँ।	(५) न ममानेन स्वर्णकङ्कणेन अर्थ इति यस्मै कस्मैचिद् दातु-मिच्छामि।

(६) राम राजा का बड़ा लड़का है, इसलिये वह युवराज बनने का अधिकारी है।	(६) रामो राजसुतो ज्येष्ठो यौवराज्यमतो ऽर्हति।
(७) मैं तुम्हारी पुस्तक लौटा दूंगा क्योंकि वह मुझे पसन्द नहीं।	(७) परावर्तयिष्यामि ते पुस्तकं यत् (Or यत.) तन्न रुचिकरं मे। =यत. न मे रुचिकरं ते पुस्तकं ततः परावर्तयिष्यामि एनत्। =यथा न मे रुचिकरं ते पुस्तकं तथा परावर्तयिष्यामि एनत्। = न मे रुचिकरम् इति परावर्तयिष्यामि ते पुस्तकम्। =न मे रुचिकर तव पुस्तकम अत. परावर्तयिष्यामि एनत्। =परावर्तयिष्यामि ते पुस्तकं तद्धि रुचिकरं न मे।

(ट) कि, ताकि, इतना ··· कि=यथा, येन, तथा ··यथा, इति
(Showing Cause and Effect etc)

(१) कोई दोष तो बताओ ताकि उसका प्रतिकार किया जाय।	(१) दोषं तु कञ्चित् कथय येन स प्रतिविधीयेत।
(२) वह चोर सिंह दिखाओ ताकि मैं उसे मार दूं।	(२) दर्शय तं चौरसिंहं यथा व्यापादयामि।
(३) उसने मुझ पर इतना ज़ोर का प्रहार किया कि मैं मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा।	(३) स मयि तथा बलवत् प्राहरद् यथाहं विसंज्ञो भूमावपतम्।
(४) ऐसा आचरण करो कि सब को प्रिय लगो।	(४) तथा वर्तस्व यथा सर्वप्रियो भवसि।

(५) राजा सदा ऐसा प्रबन्ध करे कि लोग उद्विग्न न हों।	(५) राजा सततं तथा निर्वाहयेत् यथा लोका न उद्विजेरन्।
(६) आज्ञा भंग करने वाले नेताओं को भी मुक्त कर दिया गया ताकि लोगों मे उद्वेग न फैले।	(६) प्रजा मा उद्विजिषत (= लोकेषु उद्वेग मा प्रवर्तिष्ट) इति मोचिता· आज्ञाभगकरा· अपि नेतारः।
(७) स्पष्ट कह दिया है ताकि तुम्हें कोई भ्रम न रहे।	(७) मा ते भ्रमो भूद् इति स्फुट-माख्यातम्।
(८) पहली ही पराजय से वह इतना निराश हुआ कि उसने फिर आक्रमण करने का विचार न किया।	(८) प्रथमेनैव पराजयेन असौ तथा मनोहतो बभूव यथा पुनरा-क्रमणे मतिं न चकार।

(ठ) (यद्यपि ··· तथापि, काम ·· न तु, काम ·· न पुन, न केवल ··· अपि, न केवल · तु, न केवल ·· प्रत्युत्

(१) सुन्दर होते हुए भी यह स्थान मुझे आनन्दित नहीं करता।	(१) रम्योऽपि सन् अयं प्रदेश न मां नन्दयति। =यद्यपि रम्योऽय प्रदेश तथापि न मां नन्दयति। = कामं रम्योऽय प्रदेश· न तु (Or न पुन·) मां नन्दयति।
(२) माना कि यह स्थान सुन्दर है पर मुझे आनन्दित नहीं करता।	(२) कामं रम्योऽयं प्रदेश तथापि मां न नन्दयति।
(३) यह बात नहीं कि यह स्थान सुन्दर नहीं है, पर मुझे आनन्दित नहीं करता।	(३) प्रदेशोऽयं न रम्य इति न केवलं मां न नन्दयति।
(४) तुम्हारे लिये केवल धन ही नहीं जान भी दे दूंगा।	(४) न केवलं वित्त प्राणानपि उत्स्रदयामि त्वत्कृते।

(५) बहू केवल पढ़ी-लिखी ही नहीं बल्कि घर के काम-काज में भी प्रवीण है।

(५) न केवलं सुशिक्षिता गृहकर्मणि अपि कुशला वधू ।

(६) यही बात नहीं कि वह मुझे लेने के लिये न बढ़ा बल्कि उल्टा मुझे दूर से देखकर कहीं उठकर चला गया।

(६) न केवलं स न मां प्रत्युदगच्छत् किंतु (Or प्रत्युत्) दूरतः एव मां प्रेक्ष्य उत्थाय अन्यतः अव्रजत्।

(७) यही बात नहीं कि मै तुम्हारी बात का समर्थन नहीं करूंगा बल्कि उल्टा पूरे जोर से इसका विरोध करूंगा।

(७) न केवलं न समर्थयिष्यामि त्वद्वच· प्रत्युत् सर्वात्मना विरोत्स्यामि एनत्।

(ड) दो पदार्थों, गुणो, क्रियाओ आदि मे महान् अन्तर लक्षित करने के लिये––क्व···क्व ।

(१) कहां पूर्ण चन्द्र से सुशोभित पूर्णिमा और कहां चन्द्रहीन अमावस्या।

(१) क्व पूर्णेन्दुविराजिता राका क्व च नष्टचन्द्रा कुहुः।

(२) कहां बिजलियों से जगमगाता हुआ वह महल और कहां अंधकार से ढकी हुई यह कुटिया।

(२) क्व विद्युद्दीपैरुद्योतितोऽसौ प्रासाद क्व चेयं तमोवृता कुटी।

(३) कहां मोक्ष और कहां विषयाभिलाषी लोग।

(३) क्व मोक्ष क्व च विषयैषिणो जना ।

(ढ) किं पुन , किमुत, का कथा; दूरे तावत्, तिष्ठतु तावत् etc.

यदि एक कठिन कार्य हो सकता है तो फिर सरल कार्य का तो कहना ही क्या (अर्थात् अवश्य हो सकता है)। जब एक सरल कार्य

नहीं हो सकता तो फिर एक कठिन कार्य का कहना ही क्या (अर्थात् कदापि नहीं हो सकता)। ऐसे वाक्यों के अनुवाद में उपरि-लिखित का प्रयोग होता है।

(१) दूध का तो कहना ही क्या, हमें तो दिन में दो बार खाना भी नहीं मिलता।	(१) न वयं द्विरह्नो भोजनमपि लभेमहि किं पुनः (Or किमुत) पयः। = का कथा दुग्धस्य (Or दुग्धस्य तु कथैव नास्ति) न वयं द्विरह्नो भोजनमपि लभमेहि।
(२) दूध की तो बात ही रहने दो हमे तो दिन में दो बार खाना भी नहीं मिलता।	(२) दूरे तावत् (तष्ठतु, आस्तां वा) पयः न वयं द्विरह्नो भोजनमपि लभेमहि।
(३) बहुत तपने पर लोहा भी नर्म हो जाता है तो फिर शरीरधारियों का कहना ही क्या।	(३) अतितप्तमयोपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिणाम।

(ण) वर···न (न च, न तु, न पुनः)।

दो व्यक्तियों या स्थितियों की तुलना करते समय जब एक को दूसरे से अच्छा या बुरा कहा जाय, तब इसका प्रयोग होता है।

(१) स्वर्ग मे सेवा करने से नरक में राज्य करना अच्छा है।	(१) वरं नरके राज्यं न तु सुरलोके ऽपि सेवा।
(२) अविद्वान् पुत्र होने से कन्या का होना ही अच्छा है।	(२) वरं कन्या जाता न चाविद्वां स्तनयः।
(३) नीच लोगों के पास रहने से मरना अच्छा है।	(३) वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः।
(४) झूठी चापलूसी से कटु सत्य ही अच्छा।	(४) वर कटवपि सत्यं न त्वलीकं चाटुवाक्यम्।
(५) मूर्ख मित्र से बुद्धिमान शत्रु अच्छा है।	(५) वरं धीमाश्छत्रुर्न पुनर्वालिशोहितः।

अभ्यास ४५
(विविध वाक्य)

१ तुम जानते ही हो कि मै तुम्हारे बिना एक क्षण भी नही रह सकता। २. क्या तू पागल है कि ऐसा निरर्गल प्रलाप करता है। ३. क्या तुम्हें सरदी नहीं लगती कि तुमने इतने पतले वस्त्र[1] पहने हुए है। ४. वह जिस किसी देश में जाता है उसे बाहुबल से अपने अधीन कर लेता है। ५. जो पुरुष किसी कारण के होने पर क्रुद्ध होता है वह अवश्य ही उस (कारण) के दूर होने पर प्रसन्न हो जाता है। ६. जिसकी इच्छा करते हुए लोग ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं वह पदवी मैं तुम्हें संक्षेप से समझाता हूँ। ७. वह ज्यों-ज्यों पानी पीता गया त्यों-त्यों उसकी प्यास बढ़ती गई। ८. मुझे यही चिन्ता है कि साथी तुम्हें कुमार्ग में न ले जायं।[2] ९. केवल मधुरभाषी होने के कारण ही एक आगन्तुक पर सहसा विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। १० केवल पुराना होने से ही प्रत्येक पदार्थ अच्छा नहीं होता।[3] ११. ये लोग स्वराज्य चाहते हैं, क्योंकि वह उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। १२ बूढ़ा छड़ी लेकर चलता है ताकि कहीं गिर न पड़े। १३ ऐसा प्रबन्ध करो (निर्√वह—णिजन्त) कि हमारी प्रिय सखी बन्धुवर्ग की शोक-पात्र न बन जाय।

अभ्यास ४६
(विविध वाक्य)

१. मजदूर लोग प्रतिदिन जितना कमाते है उतना व्यय कर देते हैं। २. जब तक पिताजी जीवित रहे हमें किसी प्रकार की चिन्ता न हुई। ३. जब तक सेनापति गिर न पड़ा तब तक सैनिक उत्साहपूर्वक लड़ते रहे। ४. आपने कहाँ तक[4] रामायण सुनी है? ५. जैसी मधुर संस्कृत है वैसी और कोई भाषा नहीं। ६ जैसी पावन गंगा है वैसी और कोई नदी नहीं। ७. मुझे भिक्षा न मिलने का इतना दु:ख नहीं

१. विरलनेपथ्यम्, २. सुहृदस्त्वाम् अपथं मा कर्षन्तु इति २. पुराण-मित्येव न साधु सर्वम् (मालविकाग्निमित्र) ४. कियन्तम् अवधि यावत्।

जितना कि इस अपमान का। ८. मनुष्य जैसा बीज बोता है, वैसा ही फल पाता है।[1] ६. ऐसी अपमानजनक नौकरी से भीख माँगना ही अच्छा है। १०. इस अपमान के जीवन से मर जाना ही अच्छा है। ११. विवाह के उत्सव पर ललित वेष धारण किये हुए[2] तथा बनाव शृंगार किये हुए[3] स्त्रियाँ चित्रकार द्वारा अभी-अभी बनाये गए चित्रों की भाति शोभा देती थीं।

अभ्यास ४७
(विविध वाक्य)

१. माना कि रावण बहुत पण्डित था पर उसका आचार तो अच्छा न था। २. अच्छे कुल में जन्म मिलना भाग्य के अधीन है पर पुरुषार्थ करना तो मेरे वश की बात है[4]। ३ न केवल वही जो बड़ों की निन्दा करता है परन्तु वह भी जो उससे सुनता है, पाप का भागी बनता है[5]। ४. यह कपड़ा केवल सस्ता ही नहीं प्रत्युत सुन्दर भी है। ५. मित्र, हँसी में कही बात को सच न मान लेना। कहाँ हम और कहाँ प्रेम से अनभिज्ञ वह तपस्वी-कन्या! ६. कहाँ वह अगाध समुद्र और कहाँ यह क्षुद्र कुल्या! ७. धनियों की भी यह अवस्था है, हम निर्धनों की तो बात ही क्या? ८ स्वयं उगाये हुए वृक्षों से भी स्नेह हो जाता है तो फिर अपने शरीर से उत्पन्न हुई सन्तान का तो कहना ही क्या? ६ नृप की नीति का विरोध करने का तो कहना ही क्या, हमें तो जनसमुदाय में बोलने तक की आज्ञा नहीं। १०. यहाँ पृथ्वी ऊँची-नीची है, इसलिए गाड़ी का वेग मन्द कर दो। ११ पुत्र मे पिता की केवल आकृति ही नहीं परन्तु सभी गुण प्रतिफलित हो रहे हैं। १२ यौवन में वैसे ही लोगों के दिल बिगड़ जाते है तो फिर कामोद्दीपक उपन्यास पढ़ने वालों और सिनेमा देखने वालों का कहना ही क्या!

---

१. यादृश वपते बीज तादृश लभते फलम्। २ कलितललितवेशा., ३. कृतप्रसाधना·। ४ दैवायत्त कुले जन्म मदायत्त तु पौरुषम्। ५. न कवल यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक (कुमारसभव)।

विविध अभ्यास

सरल अभ्यास

१. अर्जुन ने उन दोनों ही सेनाओं में स्थित हुए पिता के भाइयों को, पितामहों को, आचार्यों को, मामों को, भाइयों को, पुत्रों को, पौत्रों तथा मित्रों को, ससुरों को और सुहृदों को भी देखा। इस प्रकार उन खड़े हुए सम्पूर्ण बन्धुओं को देखकर अर्जुन अत्यन्त करुणा से युक्त हुआ, शोक करता हुआ बोला—हे कृष्ण! इस युद्ध की इच्छा वाले खड़े हुए स्वजनों को देखकर मेरे अंग शिथिल हुए जाते हैं और मुख भी सूखा जाता है और मेरे शरीर में कम्प तथा रोमांच होता है। मेरे हाथ से गाण्डीव धनुष गिरता है और त्वचा भी बहुत जलती है तथा मेरा मन भ्रमित-सा हो रहा है, मैं खड़ा रहने को भी समर्थ नहीं हूँ। हे कृष्ण! मैं विजय को नहीं चाहता, और राज्य तथा सुखों को भी नहीं चाहता, हमें राज्य से क्या प्रयोजन है अथवा भोगों से और जीवन से भी क्या प्रयोजन है। हे मधुसूदन! तीन लोक के राज्य के लिए भी मैं इन सबको मारना नहीं चाहता, फिर पृथ्वी के लिए तो, कहना ही क्या है। (P. U., F. A., 1952)

२. किसी गाँव में एक मंगता (भिक्षुक) रहता था। बेचारे को पेट के लिए दिन-रात माँगना पड़ता था। एक दिन जब उसे कुछ न मिला, वह थक गया और एक घर के सामने बैठ गया। दरवाजा अन्दर से बन्द था, किन्तु वह भीतर पकने वाली रोटियों की आवाज सुन सकता था, इन्हें उसने भली भाँति गिना। जब वह दस तक गिन चुका, तब आवाज बन्द हो गई और एक बूढ़ी स्त्री ने दरवाजा खोला। मंगता बोला, "आदरणीय माई, मुझे सारा दिन खाने को कुछ नहीं मिला। परमात्मा के नाम पर एक रोटी दे दो।" स्त्री बोली हटो, यहाँ रोटी का टुकड़ा भी नहीं है।" मंगता बोला "बड़ी माई! आपने अभी दस चपातियाँ पकाई हैं।" (P. U., F. A. 1951)

३. एक किसान के चार बेटे थे जो बिना कारण भी सदा आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे और पिता का उन्हें ऐसा न करने के लिए उपदेश देना व्यर्थ जाता।

एक दिन किसान ने अपने बेटों के सामने तिनकों का एक मुट्ठा ला रखा और बारी-बारी प्रत्येक को कहा कि इसे तोड़ डालो। सबने भरसक प्रयत्न किया पर वे तिनकों को न तोड़ सके। इस पर पिता ने मुट्ठे को खोल डाला। अब लड़कों ने एक-एक करके सब तिनकों को तोड़ डाला।

यह देखकर पिता बोला, "हे मेरे प्यारे बेटो! देखो, यदि तुम इन तिनकों के मुट्ठे की भांति प्रेम से मिलकर रहोगे तो दुनिया मे तुमको कोई भी हानि न पहुँचा सकेगा; परन्तु, यदि तुम आपस में बिगडे रहोगे, तो सब कोई आसानी के साथ तुमको हरा देगा।

(P. U., F. A., 1950)

४. श्याम एक धर्मात्मा और तपस्वी बालक था वह अपने अंधे माता-पिता के साथ जंगल में रहता और सदा उन्हीं की सेवा करने मे तत्पर था। एक दिन जब वह उनके लिए जंगल से पानी ला रहा था, उसके एक विषैला बाण लगा जिसे बनारस से राजा यज्ञदत्त ने यों ही शिकार खेलते हुए उस पर छोड़ा था। अपने असहाय माता-पिता की दशा पर करुणा-क्रन्दन के अतिरिक्त उस युवक के मुख से न कोई दुरासीस निकली और न ही क्रोध का शब्द। अब उनको उसका सहारा न रहा था। पश्चात्तापपूर्वक राजा ने बालक को सान्त्वना दी और उसके माता-पिता की रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया। इस पर श्याम ने राजा को बतला दिया कि उसके माता-पिता की कुटिया किस ओर है। तदनन्तर धन्यवाद के शब्द उचारता हुआ वह अचेत हो गया। (P U, F A, Supplementary 1949)

५. जब युधिष्ठिर ने अपने चारों भाइयों को मरे हुए देखा तो उसे

बड़ा शोक हुआ। इनको किसने मारा है, इस बात को जानने के लिए उसने सब ओर दृष्टि डाली, परन्तु उसे कोई शत्रु दिखाई नहीं दिया। तब वह जल की ओर चला जहाँ कमल उगे हुए थे।

इतने में शब्द हुआ कि "ठहर जाओ। यदि पानी पीने से पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दोगे, तो निश्चय ही तुमको मृत्यु आ जायगी। यहाँ का यही नियम है। मै बूढ़ा यक्ष इस जगह का राजा हूँ और तुमको पानी पीने से रोकता हूँ। मेरी चेतावनी सुनो और अभी पानी मत पियो।"

राजा ने कहा, "अपने प्रश्न बोलो।"

इस पर यक्ष ने चार प्रश्न पूछे और राजा ने उनके उत्तर दिये।

तब यक्ष बोला—"तुमने बहुत अच्छा कहा है। अब तुम पानी सकते हो।"

तब राजा ने झुककर पानी पिया और अपनी प्यास बुझाई।

(P. U F. A., 1949)

६. एक व्यापारी की चार पुत्र-वधुएँ थीं। उनकी परीक्षा के लिए उसने हर एक को चावलों के पाँच-पाँच दाने दिए और कहा कि इन दानों को संभाले रखो जब तक कि मैं इन्हें न माँगूँ। पहली पुत्रवधू ने दाने फेंक दिए और सोचा कि भंडार में चावलों के दाने बहुत है, मै पिता जी को और दाने दे दूँगी। दूसरी ने भी इसी तरह सोचा और दाने खा लिए। तीसरी ने उनको अपने गहनों के डिब्बे में सावधानी से रख छोड़ा। लेकिन चौथी ने उनको बो दिया और उनकी फसल काटी। फिर इस फसल को बोया और फिर काटा। आखिरकार पाँच बरस के बाद उसने चावलों का बड़ा ढेर इकट्ठा कर लिया।

(P U. F. A., 1948)

७. सम्राट् अशोक, मौर्य राजवंश के चन्द्रगुप्त का पौत्र था। कहा जाता है कि वह अपने प्रारम्भिक जीवन मे अत्यन्त उग्र स्वभाव का

था। उसने कलिंगों के विरुद्ध युद्ध में हजारों मनुष्यों की हत्या की थी। इससे उसके मनोभावों में एक बड़ा परिवर्तन हो गया। इसके पश्चात् वह धर्म और सेवा के मार्ग पर चलने लगा। उसने औरों के साथ भलाई करने का वास्तविक प्रयत्न किया। उसकी परोपकारिता किसी जाति तक ही सीमित न थी, अपितु अपने राज्य के तथा बाहर के सब मनुष्यों और पशु तथा पक्षियों तक फैली हुई थी। संसार मे बहुत कम राजा दया और सेवा मे अशोक की समता कर सकते हैं।

(P. U. F A., 1945)

८ जब मेनका स्वर्ग को लौटी तो उस शिशु को एक निर्जन वन मे छोड गई जहाँ शकुन्त अर्थात् पक्षियों ने उसकी देखभाल की, जिससे उसका नाम शकुन्तला पड़ा। बाद में कण्व ऋषि ने उसे पाया, जिसने उसका अपनी पुत्री की तरह पालन-पोपण किया। जब दुष्यन्त शिकार खेलता हुआ उस ऋषि के आश्रम में आया तो उसने उससे गांधर्व रीति से विवाह कर लिया। उससे उसके भरत नाम का एक लड़का हुआ, जो एक चक्रवर्ती राजा हुआ, जिसके पीछे इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। (P. U., F. A., 1944)

९. उर्वशी स्वर्ग की एक अप्सरा थी। एक समय केशी नाम के एक बड़े राक्षस ने उसे पकड़ लिया। राजा पुरूरवा से सहायता के लिए प्रार्थना की गई। उनमें विचित्र वीरता थी। उर्वशी को उन्होंने छुड़ा लिया। बिछुड़ने से पूर्व उनका आपस मे बहुत प्रेम हो गया। दोनों कामदेव से पीड़ित रहने लगे। एक दिन जब राजा विदूपक से बातचीत कर रहे थे उर्वशी अपनी सहेली को साथ लिये अदृश्य रूप मे प्रकट हुई। उसने भूर्जपत्र पर लिखा कामसंदेश नीचे फेंका। इससे राजा को सान्त्वना मिली। वे एक दूसरे से बातचीत करते रहे, पर शीघ्र ही उर्वशी को वापस स्वर्ग मे बुला लिया गया।

(P. U., F. A., 1943)

१० श्रीकृष्ण जी सत्यभामा को बहुत प्यार करते थे अतः उसको प्रसन्न करने के लिए स्वर्ग से कल्पवृक्ष ले आये और उसको अपने बगीचे में लगा दिया। इसके फूल की सुगन्ध ऐसी थी कि हर एक जीव मुग्ध हो जाता था। अगर कोई व्यक्ति उस वृक्ष की छाया में बैठता था तो उसको पूर्व जन्म का वृत्तान्त याद आ जाता था। कृष्ण ने नरकासुर का वध किया और जो कन्याएँ इसके यहाँ कैद में थीं उनको मुक्त किया। वे सब श्रीकृष्ण से प्रेम करने लगीं। इससे श्री कृष्ण ने इन सबसे विवाह कर लिया। पुराणों का कथन है कि श्री कृष्ण अलग-अलग रूप धारण कर हरएक को प्रसन्न रखते थे। पर वे समझती थीं कि श्रीकृष्ण केवल हमको ही मानते हैं।

(P U., F. A., 1942)

११. एक मनुष्य सब सासारिक काम-धन्धों को छोड़कर जंगल मे चला गया और वहाँ कुटिया बनाकर रहने लगा। कमर में बँधा हुआ कपड़े का टुकड़ा ही उसका एकमात्र परिधान था। दुर्भाग्य से उस जंगल में चूहे बहुत थे, इसलिए उसने एक बिल्ली पाली। बिल्ली को दूध चाहिए था, इसलिए उसने एक गाय भी रख ली। गाय की रखवाली के लिए उसने एक ग्वाले को नियुक्त किया। ग्वाले को अपने रहने के लिए घर की आवश्यकता हुई, इसलिए उसके लिए घर भी बनाया गया। इस प्रकार वहाँ एक छोटा सा गाँव बस गया।

(P. U., F. A., 1938)

बच्चों का स्वभाव

१२. भोलापन बच्चों का मुख्य स्वभाव है। विनीत शिशु यह कदापि नहीं सोचता कि मै अपने माता-पिता को शिक्षा दे सकता हू, या यह कि मैं सब कुछ जानता हूँ। बच्चा भले ही यह समझे कि मेरे माता-पिता अथवा दूसरे वयस्क जन सब कुछ जानते है, परन्तु अपने बारे मे उसे यह निश्चय ही होता है कि मैं सर्वज्ञ नहीं हूँ। तभी तो

वह सदा कुछ न कुछ पूछता रहता है और इस प्रकार अपने ज्ञान की वृद्धि करना चाहता है।

(रस्किन से अनूदित)

खट्टे अंगूर

१३. एक बार एक लोमड़ी ने अंगूरों का एक बड़ा सा गुच्छा लता से लटकता हुआ देखा। उसे पकड़ने के लिए वह लपकी पर पकड़ न सकी। बहुत बार प्रयत्न करके जब उसने देख लिया कि यह गुच्छा मेरी पहुँच से बाहर है तो उसने व्यर्थ प्रयत्न को छोड़ दिया और वहाँ से जाती हुई दिल में कहने लगी यह बहुत ही अच्छा हुआ कि मैं अंगूर न पा सकी। वे बिल्कुल खट्टे हैं, और यदि मैं उन्हें खा लेती तो अवश्य बीमार पड़ जाती।

नाव दुर्घटना

१४. एक समय कुछ यात्री एक नाव में बैठकर सिन्धु नदी पार कर रहे थे। नदी की धारा सदा की भांति वेग से बह रही थी। जब नाव मंझधार में पहुँची तो पवन भी बड़े वेग से चलने लगा। दुर्भाग्यवश नाविक का पतवार टूट कर नदी में जा गिरा। थोड़ी देर मे नाव एक भंवर में फंस गई और वड़े वेग से चक्कर खाती हुई उलट गई और नाविक सहित सभी यात्री डूबकर मर गये। (स्वरचित)

अनोखी चेतावनी

१५ एक सेठ के यहाँ बहुत से क्लर्क काम करते थे। उनमें से एक प्राय देर से दुकान पर आया करता था। सेठ जब उसे पूछता कि तुम देर से क्यों आये हो तो क्लर्क यही उत्तर देता कि इसमें मेरा दोप नहीं है, मेरी घड़ी कभी-कभी पीछे रह जाती है। एक बार वह फिर जब देर से पहुँचा, तो सेठ ने कहा, "कल या तो तुम्हें कोई नई वस्तु लेनी पडेगी या मुझे।" क्लर्क ने पूछा "वह क्या ?" सेठ ने उत्तर दिया. "कल या तुम नई घड़ी खरीदोगे या मैं नया क्लर्क रख लूंगा।"

आत्मविश्वास का अभाव

१६. एक बार एक बारासिंगा तालाब के जल में अपनी परछाईं देख कर अपने बच्चे को कहने लगा, "देखो, मैं कितना बलवान् हूँ, मेरे अंग कैसे हृष्ट-पुष्ट हैं और मैं कितना तेज भाग सकता हूँ।" इतने में दूर कहीं कुत्तों के भौंकने का शब्द हुआ। उसे सुनते ही बारासिंगा वहाँ से भागा। जब कई कोस भाग चुका तो फिर हाँपता हुआ अपने स्थान को लौटा। उसके बच्चे ने उससे कहा, "तुम तो अभी कह रहे थे कि मैं बहुत बलवान् हूँ, यह क्या बात है कि कुत्तों का शब्द सुनते ही तुम भाग पड़े।" बारासिंगा ने कहा, "बेटा, यह तो ठीक है कि मैं बलवान् हूँ, परन्तु जब कुत्ते भौंकते हैं तो मेरा आत्मविश्वास जाता रहता है।"

१७. हिन्दुस्तान में शराब पीना बहुत बुरा समझा जाता है। एक बार दो भाई रात के समय घर में गुप्त रूप से शराब पीना चाहते थे। उनका चचा उनके साथ वाले कमरे में सो रहा था। इसलिए शराब पीने से पहले उन्होंने एक दूसरे को कहा कि हमें बिल्कुल चुपचाप रहना चाहिये, ताकि चचा जाग न पड़े। जब वे शराब पी रहे थे तब भी वे एक दूसरे को बराबर यही बात कहते रहे, "चुप रहो, नहीं तो चचा जाग पड़ेगा।" हर एक दूसरे से अधिक ऊँचे स्वर में यही वाक्य चिल्ला कर कहता। धीरे-धीरे उनका चिल्लाना बढ़ा, जिससे चचा जाग पड़ा और उनके कमरे में आकर उसने देखा कि वे शराब के नशे में चिल्ला रहे हैं।

उत्तम चित्र

१८. एक बार तीन चित्रकार पारितोषिक पाने के लिए परस्पर स्पर्धा कर रहे थे। पहले ने पुष्पमाला का इतना सुन्दर चित्र बनाया कि एक मधु मक्खी उसे असली पुष्पमाला समझकर उस चित्र पर बैठ गई। दूसरे ने फलों की पिटारी का ऐसा सुन्दर चित्र बनाया कि एक गाय ने उन्हें खाने को मुँह बढ़ाया। तीसरे ने एक पर्दे का चित्र बनाया। जब तीनों चित्र एक परीक्षक के सामने रखे गये तो उसने पर्दे को हटाने

के लिए हाथ बढ़ाया। वह चित्र इतना स्वाभाविक था कि उसे देखकर परीक्षक को भी धोखा हुआ, जबकि पहले दो चित्रों ने एक मक्खी और गाय को ही धोखे में डाला था। इसलिए तीसरे चित्र को सबसे अच्छा घोषित किया गया।

१६. कालेज से घर लौटते ही मैं सीधा अपने कमरे में गया और पलंग पर लेटकर कालिदास के मेघदूत को लेकर पढ़ने लगा। उसके अध्ययन में मैं इतना मग्न हो गया कि मुझे समय बीतता पता न लगा। पूर्व मेघ को समाप्त कर जब आँख उठाकर देखा तो सूर्य अस्त हो चुका था। तब मुझे एकदम विचार हुआ कि ओहो! मुझे तो अपने मित्र लोकपाल को, जोकि दिल्ली से पेशावर जा रहा था, सात बजे रेलवे स्टेशन पर मिलने जाना है! मुझे आश्चर्य और खेद हो रहा था कि मैं यह भूल कैसे गया। बिना किसी को बताये मैं झटपट साईकल पर सवार होकर स्टेशन की ओर दौड़ा। पर जब वह पहुँचा तो गाड़ी निकल चुकी थी। यदि मैं पाँच मिनट पहले पहुँचता तो मित्र के दर्शन कर लेता। (स्वरचित)

प्रात विहार

२०. जब मेरी आँख खुली, रात्रि थोड़ी ही शेष थी। उजाला हो चला था। तारे एक-एक करके छिपते जा रहे थे और चन्द्रमा की कांति क्षीण होती जा रही थी। सौरभ से भरा हुआ पवन मन्द-मन्द गति से बह रहा था। बहुत सुहावना समय था। मैंने बिस्तर छोड़ा, कपड़े पहने और घर से निकल पड़ा। मेरा मित्र देवराज जो मुझे बुलाने आ रहा था, रास्ते में ही मुझे मिल गया। हम दोनों स्नान करने के लिए नदी की ओर चल पड़े। नदी पर भक्त लोगों की भीड़ थी। कोई स्नान कर रहा था। कोई कलसा भर रहा था। कोई कपड़े धो रहा था। कोई बालू पर आसन जमाये संध्या कर रहा था। जब सूर्य उदय हुआ हमने भी नदी मे उतर कर स्नान किया और तदनन्तर घर को लौटे। (स्वरचित)

सादा जीवन

२१. जीवन के अधिकांश सुख-साधन और विषय-भोग केवल अनावश्यक ही नहीं प्रत्युत् मनुष्य की उन्नति के मार्ग में निश्चित रूप से विघ्न हैं। जहाँ तक सुख-साधनों का सम्बन्ध है, यह बात सच है कि संसार भर के विद्वान् और ज्ञानी लोग तो निर्धनों से भी अधिक सादा जीवन व्यतीत करते रहे हैं। भारतीय, चीनी, ईरानी वा यूनानी दार्शनिक—सभी का एक ऐसे वर्ग में समावेश किया जा सकता है जिसकी अपेक्षा सांसारिक ऐश्वर्य से अधिक शून्य तथा आध्यात्मिक ऐश्वर्य से अधिक सम्पन्न संसार का कोई दूसरा वर्ग नहीं।

('थोरो' से अनूदित)

चालाक गीदड़

२२. ब्रह्मारण्य मे कर्पूरतिलक नामक हाथी रहता था। उसको देखकर सब गीदड़ सोचते थे कि यदि किसी उपाय से यह हाथी मर जाय तो हमारा चार महीने के लिए भोजन बन जाय। तब एक बूढ़े गीदड़ ने प्रतिज्ञा की कि मैं बुद्धि के बल से इसको मार दूँगा। इसके पश्चात् वह ठग कर्पूरतिलक के पास जाकर प्रणाम करके बोला—"महाराज, जंगल के रहने वाले सब पशुओं ने मिलकर यह निश्चय किया है कि राजा के बिना रहना ठीक नहीं और इस वन मे राजोचित गुणों से सम्पन्न आप ही हैं। इसलिए जल्दी आइए ताकि लग्नवेला बीत न जाय।" तब राज्य के लोभ से खिंचा हुआ वह हाथी गीदड़ के पीछे दौड़ता हुआ घोर दलदल में फँस गया और फिर निकल न सका। कुछ समय बाद वह मर गया और गीदड़ों ने उसे खा लिया।

(हितोपदेश, मित्रलाभ, कथा ८)

मूर्ख को उपदेश

२३. एक बार आकाश काले मेघों से ढक गया। एक वृक्ष पर कुछ पक्षी अपने घोंसलों में बैठे सुख अनुभव कर रहे थे और उसी वृक्ष के नीचे

खड़े हुए कुछ बन्दर सर्दी के मारे ठिठुर रहे थे। पक्षियों ने बन्दरों को देखकर दयापूर्वक कहा, "अरे बन्दरो, हम तो चोंच से तिनके ला-ला कर घौंसले बनाकर सुख से रहते हैं। हाथ पांव रखते हुए भी तुम क्यों इस तरह दु:ख उठाते हो?" यह सुनकर बन्दरों को क्रोध आ गया। उन्होंने समझा कि घौंसलों में सुख से बैठे हुए पक्षी हमारा उपहास और निन्दा कर रहे हैं।

थोड़ी देर बाद जब वर्षा रुकी तो बन्दरों ने वृक्ष पर चढ़ कर पक्षियों के सब घौंसले तोड़ दिये और उनके अण्डे नीचे फेंक दिये।

इसलिये मैं कहता हूँ कि समझदार को ही उपदेश देना चाहिये न कि मूर्ख को। (हितोपदेश, विग्रह, कथा १)

जैसे को तैसा

२४. किसी गांव मे एक गरीब बनिया रहता था। उसने विदेश जाते समय लोहे की एक तराजू किसी सेठ के घर में धरोहर रख दी। जब बहुत समय के पश्चात् अपने गांव को लौटा तो उसने सेठ के पास जाकर अपनी तराजू मांगी। सेठ ने उत्तर दिया है—"अरे, उसे तो चूहे खा गये हैं। मैं अब कहाँ से दूँ।"

बनिये ने कहा—"सेठजी, इसमें आपका क्या दोष है? इस संसार में कोई वस्तु सदा रहने वाली नहीं। अच्छा अब मैं स्नान के लिये नदी पर जा रहा हूं। आप अपने लड़के को स्नान की सामग्री देकर मेरे साथ भेजें।" तराजू की चोरी के कारण सेठ कुछ डरा हुआ था, इसलिये उसने निःसंकोच-भाव से पुत्र को बनिये के साथ भेज दिया। बनिये ने नदी में स्नान करके बालक को एक गुफा मे डालकर उसका द्वार भारी पत्थर से ढक दिया और स्वयं नगर को लौट आया। सेठ ने लड़के के बारे में पूछा तो बनिये ने कहा कि उसे तो नदी-तट से एक बाज़ उठा ले गया। सेठ बोला, "वाह रे झूठे, कभी बालक को बाज भी उठा सकता है।" बनिये ने कहा, "वाह रे सच्चे, यदि बाज बालक को उठा नहीं

सकता तो चूहे भी लोहे की तराजू को नहीं खा सकते। इसलिये यदि तुम अपना पुत्र चाहते हो तो मेरी तराजू लौटा दो।" इस प्रकार वे दोनों झगड़ते हुए राजा के पास गये। (पंचतंत्र, मित्र भेद, कथा २१)

बुद्धि ही बल है

२५. मन्दर नामक पर्वत पर दुर्दान्त नामक सिंह रहता था। वह सदा पशुओं को मारकर खाया करता था। एक बार सब पशुओं ने मिलकर उस सिंह से निवेदन किया, "हे पशुराज ! एक बार ही बहुत से पशुओं को क्यों मारते हो ? यदि तुम्हें स्वीकार हो तो हम ही तुम्हारे आहार के लिए प्रतिदिन एक-एक पशु भेज दिया करें।" तब सिंह ने उत्तर दिया, "यदि तुम्हें यही पसन्द है तो ऐसे ही सही।" तब से लेकर सिंह प्रतिदिन एक ही पशु को खाया करता। अब एक बार किसी बूढ़े सियार की बारी आई। वह धीरे-धीरे चलता हुआ देर से सिंह के पास पहुँचा। भूख से व्याकुल सिंह ने उससे क्रोधपूर्वक कहा, "तू देर करके क्यों आया है ?" सियार बोला, "महाराज, इसमें मेरा अपराध नहीं। मैं इधर ही आ रहा था कि रास्ते में दूसरे सिंह ने मुझे पकड़ लिया। उसके आगे फिर आने की शपथ लेकर मैं आपसे कहने आया हूँ।" सिंह ने कहा, "शीघ्र ही चलकर मुझे वह दुष्ट दिखाओ।" तब सियार ने सिंह को एक कुएँ के पास ले जा कर उसके जल मे उसकी अपनी ही परछाईं दिखलाई। तब सिंह ने कुएँ मे छलांग लगा दी और जान दे दी। सच है जिसके पास बुद्धि है उसके पास बल है।

(हितोपदेश, सुहृद्भेद, कथा ८)

निधिप्रिय नापित

२६. अयोध्या मे चूड़ामणि नामक एक क्षत्रिय रहता था। धन की इच्छा से उसने बड़े यत्नपूर्वक बहुत समय तक भगवान् शिव की आराधना की। भगवान् की आज्ञा से यक्षपति कुबेर ने एक बार स्वप्न में दर्शन देकर चूड़ामणि को कहा, "तुम आज प्रात सिर मुंडवा कर हाथ में डंडा लेकर अपने घर में छिप रहना। तब इसी आँगन मे

तुम्हें एक भिखारी आता हुआ दिखाई देगा। तुम उसे डंडा मारकर मार डालना और वह सोने का घड़ा बन जायगा।" तब वैसा करने पर वैसा ही फल हुआ। जिस नाई ने उसका मुंडन किया था उसने यह घटना देखकर मन में सोचा—'खजाना प्राप्त करने का यह विचित्र उपाय है। मैं भी ऐसा क्यों न करूँ ?' तब से लेकर वह नाई प्रतिदिन डंडा हाथ में लेकर भिखारी के आने की प्रतीक्षा करता रहता। एक दिन अचानक एक भिखारी उसके घर में घुसा और नाई ने उसे डंडे के प्रहार से मार डाला। उस बेचारे को खजाना तो क्या मिलना था उल्टा राजपुरुषों ने हत्या के अपराध में उसे फाँसी पर लटका दिया।

(हितोपदेश, विग्रह, कथा ६)

२७. प्राचीन काल में राजा दशरथ अयोध्या में राज्य करता था। बुढ़ापे में उसके चार लड़के हुए। उनमें राम बड़ा था। चारों राजकुमारों ने योग्य, बहुत पढ़े-लिखे तथा विख्यात गुरुओं से कला और विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। राम ने शिव के धनुप पर चिल्ला चढ़ाकर सीता को ब्याहा। जो काम दूसरे राजा लोग न कर सके उसमें राम ही सफल-प्रयत्न हुआ। अपने ज्येष्ठ पुत्र से विशेष स्नेह रखने वाले दशरथ ने अब उसे युवराज-पद पर अभिपिक्त करने का निश्चय किया, परन्तु राम की विमाता कैकेयी को राजा का यह निश्चय पसन्द न आया। उसने राजा के द्वारा राम को राज्य से निर्वासित करवा दिया। राम निर्वासित होकर दण्डकारण्य को चला गया जहाँ उसने चौदह वर्ष विताये। यहाँ से ही लंकेश्वर रावण सीता को चुरा ले गया। इस कारण राम और रावण के बीच घोर संग्राम हुआ। राम ने जय प्राप्त करके रावण के भाई विभीषण को लंका के सिंहासन पर विठाया। (P.U., F.A., 1936)

चार मित्र

२८. किसी नगर में चार ब्राह्मण आपस में बड़े मित्र बनकर रहते थे। उनमें से तीन ने यद्यपि शास्त्र पढ़ रखे थे पर वे बुद्धि-रहित

थे। एक में बुद्धि तो थी पर वह शास्त्र से विमुख था। अब एक बार उन मित्रों ने मन्त्रणा की कि "यदि दूसरे देशों में जाकर राजाओं को प्रसन्न करके धन न कमाया जाय तो फिर विद्या का क्या लाभ ? इसलिए हम पूर्व देश को चलते हैं ?" ऐसा निश्चय करके जब वे कुछ दूर गये तो उनमें से बड़ा बोल उठा, "हममें से एक मूढ़ है जिसके पास केवल बुद्धि है। परन्तु विद्या के न होते हुए केवल बुद्धि से राजाओं का अनुग्रह प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए मैं अपना कमाया हुआ धन इसको नहीं दूँगा। वह घर लौट जाय।" तब दूसरा बोला, "अरे अच्छी बुद्धि वाले तू अपने घर लौट जा क्योंकि तेरे पास विद्या नहीं है।" तब तीसरे ने कहा, "अहो, ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि हम बचपन से ही इकट्ठे खेले हैं। यह महानुभाव हमारे साथ ही चले। हमारे कमाये हुए धन से उसे बराबर का हिस्सा मिलेगा।'

(पचतंत्र, अपरीक्षितकारक, कथा ३)

कठिन अभ्यास

राजा सत्यव्रत का सत्यपालन

२६ राजा सत्यव्रत ने यह घोषणा कर रखी थी कि मेरे नगर मे बिकने के लिए आई हुई वस्तुएँ यदि सूर्यास्त होने तक न बिके तो उन्हें मैं खरीद लूँगा। राजा सदा इस नियम का पालन करता था। एक दिन एक लुहार लोहे की बनी हुई शनिश्चर की मूर्ति लाया और कहने लगा कि इसका मूल्य एक लाख रुपया है। पर जो कोई उसे खरीदेगा उसे लक्ष्मी, धर्म, कर्म, यश आदि सब छोड़ जायँगे। उस मूर्ति को किसी ने न खरीदा। नियमानुसार सायंकाल को वह मूर्ति राजा के सामने लाई गई। राजा ने सब कुछ सुन समझकर उसे खरीद लिया और अपना नियम भंग न किया। आधी रात के समय एक सुन्दर स्त्री ने राजा के पास आकर कहा, "मैं तुम्हारी राजलक्ष्मी हूँ। तुम्हारे घर शनिश्चर आ गया है, इसलिए अब मैं यहाँ नहीं रह

सकती। मुझे विदा कीजिए।" राजा ने कहा, "निस्संकोच भाव से चली जाओ।' इसी प्रकार धर्म, कर्म और यश भी राजा को छोड़ गये। अन्त में सत्य आया और बोला है "राजन्, मै सत्य हूँ। शनिश्चर के कारण मैं अब नहीं रह सकता, इसलिए जाता हूँ।" राजा ने उठकर दृढ़तापूर्वक उसका हाथ पकड़ लिया और बोला, "यदि लक्ष्मी, धर्म और यश जाय तो मुझे कुछ चिन्ता नहीं, पर आपको मै जाने नहीं दूँगा। आपको रखने के लिए ही तो मैंने शनिश्चर की मूर्ति इतने अधिक मूल्य में खरीदी थी।" सत्य अवाक् रह गया। उससे कुछ उत्तर देते न बना। जब सत्य वहाँ टिक गया तो लक्ष्मी, धर्म और यश आदि सब लौट आये। (भारतभारती से उद्धृत)

त्रिशंकु का स्वर्गारोहण

३०. एक समय इक्ष्वाकुवंशी राजा त्रिशकु ने विचार किया कि मैं यज्ञ करूँ और इसी शरीर से स्वर्ग को जाऊँ। जब वसिष्ठ ने उसे कहा कि ऐसा नहीं हो सकता, तब वह वसिष्ठ के पुत्रों के पास जाकर हाथ जोड़कर बोला कि मै आपकी शरण में आया हूँ। वे बोले, "राजन्" सत्यवादी वसिष्ठ के वचनों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। इसलिए आप अपनी राजधानी को लौट जाइये।" वह निराश होकर बोला, "मैं किसी अन्य की शरण लूँगा।" ऋषि-पुत्रों ने बहुत क्रुद्ध होकर उसे शाप दिया कि तू चाण्डाल बनेगा और वह सचमुच चाण्डाल हो गया। चाण्डाल के रूप मे त्रिशकु विश्वामित्र के पास गया जिसने उस पर दया करते हुए पूछा कि तुम्हारी ऐसी दशा क्योंकर हुई? तब उसने सब वृत्तान्त विश्वामित्र को कह सुनाया। विश्वामित्र बोला कि मैं सभी मुनियों को निमत्रण भेजता हूं और उनके आने पर तुम यज्ञ कर लेना। तब पधारे हुए ऋषियों से विश्वामित्र ने कहा कि आप इस प्रकार यज्ञ कीजिये जिससे कि त्रिशंकु मेरे साथ ही स्वर्ग को चला जाय। बहुत समय तक यज्ञ करके विश्वामित्र ने देवताओं का आवाहन किया पर देवता लोग वहाँ पर न आये। तब परमक्रोधी

विश्वामित्र ने मुनियों के देखते-ही-देखते अपने तपोबल से त्रिशंकु को शरीर सहित स्वर्ग में भेज दिया। पर इन्द्र ने उसे कहा, "हे त्रिशंकु, लौट जाओ" और वह फिर नीचे गिरने लगा। 'बचाओ, बचाओ' चिल्लाते हुए और नीचे गिरते हुए उसे विश्वामित्र ने कहा, "ठहरो, ठहरो।"

तब दूसरे प्रजापति के समान विश्वामित्र ने नये सप्त ऋषियों की और नये नक्षत्रों की रचना की। तदनन्तर वह एक नये इन्द्र तथा नये देवताओं की सृष्टि करने लगा। यह देखकर घबराये हुए देवताओं और ऋषियों ने उससे जब अनुनय-विनय की तब वह बोला कि मैंने त्रिशंकु को शरीर सहित स्वर्ग में भेजने की जो प्रतिज्ञा की है उसे झूठा नहीं कर सकता। मैं चाहता हूँ कि त्रिशंकु का शरीर सदा स्वर्ग में रहे। तब देवताओं ने कहा, "ऐसा ही हो।"

(रामायण से, स्वकृत संक्षेप)

सगर का यज्ञ और गंगावतरण

३१. एक बार महाराज सगर ने अश्वमेध यज्ञ किया। इन्द्र ने राक्षस का वेष बनाकर घोड़ा चुरा लिया और उसे कपिल ऋषि के निकट कहीं छोड़ दिया। घोड़े की खोज मे लगे हुए सगर के साठ हजार पुत्रों ने पाताल तक भूमि को खोद डाला और पाताल में कपिल ऋषि के पास घोड़े को चरता हुआ देखकर उससे बोले—तुमने ही हमारा घोड़ा चुराया है। क्रोध में आकर कपिल ने ऐसा हुंकार किया कि सगर के सारे पुत्र भस्म हो गये। बहुत काल तक उनके लौटने की प्रतीक्षा करके सगर ने अपने पोते अंशुमान् को अपने पिताओं तथा घोड़े की खोज के लिए भेजा। बहुत समय के पश्चात् वह वहाँ पहुँचा जहाँ उसके पितर भस्म हुए पड़े थे। वह उनकी जलक्रिया करना चाहता था पर उसे कहीं जलाशय दिखाई न दिया।

वैनतेय ने उसे बताया—"क्योंकि तुम्हारे पितर कपिल ऋषि के द्वारा भस्म किये गये हैं इसलिए साधारण जल की अपेक्षा तुम्हें गंगा

जल देना चाहिये। परन्तु पहले तुम घोड़ा लेकर लौट जाओ ताकि तुम्हारे पिता का यज्ञ सम्पूर्ण हो जाय। उसने ऐसा ही किया।"

अंशुमान के पश्चात् दिलीप और दिलीप के पश्चात् भगीरथ ने बहुत काल तक तपस्या की। ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर उससे कहा कि कोई वर मांगो। भगीरथ ने यह वर माँगा कि सगर के सारे लड़के मुझसे जल प्राप्त करें। तब ब्रह्मा गंगा को पाताल में जाने का आदेश करके अन्तर्धान हो गये।

गंगा का पतन पृथ्वी सहन नहीं कर सकती थी। महादेव ने भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर उसे वचन दिया कि मैं आकाश से गिरती हुई गंगा को अपने सिर पर धारण कर लूंगा। गंगा कई वर्ष तक महादेव की जटाओं में ही घूमती रही।

जब महादेव ने गंगा को छोड़ा तो उसकी सात धाराएँ हो गईं। उनमें से एक धारा रथ पर बैठे हुए भगीरथ के पीछे-पीछे चली। यज्ञ करते हुए महाराज जन्हु की यज्ञभूमि को गंगा ने आप्लावित कर दिया। जन्हु ने क्रुद्ध होकर गंगा का सारा जल पी लिया। तब ऋषियों के अनुनय-विनय करने पर उसने गंगा को कानों द्वारा बाहर निकाल दिया। (तब से गंगा जह्नु की पुत्री कहलाने लगी) तब गंगा समुद्र में गई और फिर पाताल में पहुँची जहाँ पर सगर के पुत्रों की भस्म पर उसका जल छिड़का गया और वे सब स्वर्ग को गये।

(रामायण, स्वकृतसंक्षेप)

सुकन्या और च्यवन ऋषि

३२. एक समय वन विहार करते हुए राजा शर्याति ने च्यवन ऋषि के आश्रम के पास अपना डेरा डाला। उसकी सुकन्या नाम की लड़की ने जो कि पिता के साथ वन में आई थी, घूमते-फिरते अकस्मात् एक स्थान पर मिट्टी का ढेर सा देखा जिसमें दो तारे से चमक रहे थे। कुतूहलवश उसने दो कांटे दोनों तारों मे चुभो दिये और उनमें से रुधिर बह निकला। रुधिर देखकर वह बहुत घबराई और अपने पिता

से सब वृत्तान्त कह सुनाया। राजा ने जब वहाँ जाकर देखा तो उसे मालूम हुआ कि वे वृद्ध च्यवन ऋषि हैं। असंख्य वर्ष तपस्या करते-करते उन पर मिट्टी चढ़ गई है। अब उनकी दोनों आंखे फूट गई हैं और उनसे रुधिर बह रहा है। राजा ने नम्र भाव से कहा, "महाराज, बिना जाने मेरी कन्या द्वारा जो यह अपराध हो गया है उसे कृपया क्षमा कर दीजिये।" तब च्यवन ने अपनी सेवा के लिये राजा की उसी पुत्री को मांगा। राजा सोच में पड़ गया, पर सुकन्या बोल उठी, "हे पिता, क्योंकि मैंने इन्हें कष्ट पहुँचाया है, इसलिये यह उचित ही है कि मैं इनकी सेवा करूँ।" निदान सुकन्या च्यवन ऋषि को ब्याह दी गई। सुकन्या ने न केवल अत्यन्त स्नेह से अपने पति की सेवा की बल्कि अश्विनीकुमारों को जैसे-तैसे प्रसन्न करके उनके द्वारा पति की चिकित्सा भी करवाई। तब च्यवन को दृष्टि भी मिल गई और साथ ही उसका यौवन भी लौट आया। (भारतभारती से उद्धृत)

अनुकूल पत्नी की खोज

३३. द्राविड़ देश में कांची नाम की एक नगरी में एक सेठ का पुत्र शक्तिकुमार रहता था, जिसके पास बहुत धन-सम्पत्ति थी। जब वह अठारह वर्ष का हुआ तो उसे यह विचार हुआ कि जिसकी स्त्री न हो, या जिसकी स्त्री अनुकूल गुण वाली न हो उसे तनिक भी सुख नहीं मिलता। तो मैं गुणवती स्त्री कैसे प्राप्त करूँ? फिर वस्त्र के आंचल में सेर भर शालि बांध कर और ज्योतिषी का वेष बनाकर वह देश-विदेश घूमने लगा। कन्याओं के पिता उसे ज्योतिषी समझ उसे अपनी कन्याएँ दिखाते और उनके भाग्य के सम्बन्ध में पूछा करते।

कावेरी के दक्षिण तीरवर्ती एक गांव में एक धाय ने उसे एक मातृ-पितृ-हीन कुमारी दिखाई जिसका भाग्य उसके माता-पिता के साथ ही नष्ट हो चुका था। यद्यपि कन्या को देखते ही शक्तिकुमार का हृदय उस पर आसक्त हो गया, पर उसने सोचा कि बिना विचारे काम करने वाले को निश्चय ही बाद मे पछताना पड़ता है। इसलिये परीक्षा करके

ही मुझे इससे विवाह करना चाहिये। यह निश्चय करके वह उससे कहने लगा, "भद्रे, क्या तुम इस शालि से अच्छी प्रकार भात पकाकर हमें खिला सकती हो ?"

पाक क्रिया में कुशल उस कन्या ने उसे इतना स्वादु भात पका कर खिलाया कि वह मन ही मन उसके गृहिणीजनोचित गुणों की प्रशंसा करने लगा। फिर विधिपूर्वक उसे ब्याह कर अपने घर ले गया। वह लड़की आलस्यरहित होकर देवता की भाँति पति की सेवा करती और गृह-कार्य बड़ी योग्यता से सम्पादन करती। सब नौकर-चाकर उसके वश में हो गये। उसके गुणों पर मुग्ध होकर पति अपने घर को स्वर्ग मान कर रहने लगा। (दशकुमारचरित से स्वकृत संक्षेप)

संगति का प्रभाव

३४. कहते हैं कि एक बार एक गर्भवती शेरनी भूख से व्याकुल हो कर भेड़ों के झुण्ड पर टूट पड़ी। तब अकस्मात् प्रसव-वेदना से उसकी वहीं मृत्यु हो गई और उसका बच्चा भी वहीं रह गया। भेड़ों ने उस सिंह के बच्चे को पाला-पोसा। वह बच्चा भेड़ों के साथ ही रहता, उन्हीं की भाँति घास खाता और मैं-मैं करता। तब कुछ समय बाद वह पूरा युवा सिंह हो गया, परन्तु वह अपने आपको भेड़ ही समझता रहा। एक दिन एक और सिंह शिकार की खोज में उधर आ निकला और भेड़ों के झुण्ड के बीच सिंह को देखकर बहुत विस्मित हुआ।

नये सिंह ने उसके पास जाकर यह बताना चाहा कि तुम भेड नहीं हो बल्कि सिह हो, पर वह तो सिंह को देखकर भेड़ों की भांति डर के मारे भाग गया। एक बार जब अपने आपको भेड़ समझने वाला सिंह सोया पड़ा था तो दूसरे सिंह ने उसके पास जाकर कान में कहा कि तुम सिंह हो। उसने उत्तर दिया, "नहीं, मैं भेड़ हूँ।" और भेड़ों की भाँति मैं-मैं करने लगा। तब सिह उसे एक तालाब के पास ले गया

और उससे कहने लगा—"तुम्हारी परछाई और मेरी परछाई एक जैसी हैं।" जब उसने दोनों परछाईं देखी तब वह एकदम समझ गया कि हाँ, मैं भी सिंह हूं। तब वह सिंह की भांति गरजने लगा।

यह माया है

३५. कहते हैं एक बार नारद ने भगवान् कृष्ण से कहा कि मुझे माया के दर्शन कराओ। तब कुछ दिन बाद नारद को साथ लेकर भगवान् मरुभूमि की ओर चल पड़े। कुछ कोस जाकर भगवान् ने कहा, "नारद, मुझे प्यास लगी है, कहीं से पानी ला दो।" "बहुत अच्छा," कह कर नारद चल पड़ा। पानी ढूंढते-ढूंढते उसने एक गाँव में पहुँच कर किसी के द्वार को खटखटाया। एक रूपवती युवती ने किवाड़ खोला, और उसे देखते ही नारद उस पर आसक्त हो गया। वह सारा दिन उस युवती से बातें करता रहा। प्रेम से पागल होकर उसने कन्या के पिता से कहा कि इसका मेरे साथ विवाह कर दो। तब उन दोनों का विवाह हो गया और समय पर सन्तान भी हुई। इस प्रकार नारद को वहाँ रहते-रहते बारह वर्ष हो गये। वह यही सोचता कि स्त्री और बच्चों के साथ मैं कितना सुखमय जीवन बिता रहा हूँ। तब एक दिन उस गाँव में बहुत बाढ़ आ गई, घर ढह गये, पशु और मनुष्य डूब गये। नारद ने एक हाथ से स्त्री को पकड़ा, दूसरे हाथ से दो बच्चों को पकड़ा और तीसरे बच्चे को कन्धे पर रख कर बाढ़ को पार करने लगा। जब दो पग बढ़ा तो कन्धे पर का बच्चा गिर पड़ा और पानी में बह गया। उसे बचाने के प्रयत्न में उसके दूसरे दोनों बच्चे भी छूट गये। तब उसने स्त्री को दृढ़तापूर्वक पकड़ लिया ताकि वह तो छूट न जाय, पर जल का प्रबल प्रवाह उसे भी बहा ले गया, नारद बेचारा दुःखी होता और रोता हुआ किनारे पर पहुँचा। तब उसके पीछे से आवाज आई, "अरे नारद! पानी कहाँ है? पूरा आधा घण्टा हुआ जबकि तुम पानी लेने गये थे?" नारद बोलता है। क्या मुझे गये आधा ही घण्टा हुआ है। मुझे तो ऐसा प्रती हुआ है,

कि मैंने बारह वर्ष बिता दिये हैं।" तब भगवान् हंस कर बोले, "अरे, यह सब माया ही तो है।"

अभिमानी योगी

३६. किसी बन में वृक्ष के नीचे एक योगी बैठा हुआ था। सहसा वृक्ष पर बैठे हुए दो पक्षियों ने इतना कोलाहल किया कि योगी उन पर बहुत क्रुद्ध हुआ। ज्योंही उसने अपनी तीक्ष्ण दृष्टि ऊपर डाली वे दोनों ही निष्प्राण होकर नीचे गिर पड़े। अपने योग-बल को देखकर योगी को बहुत गर्व हुआ। उसके पश्चात् एक समय किसी गांव में घूमते हुए उस योगी ने एक गृहस्थ का द्वार खटखटा कर भिक्षा मांगी। भीतर से गृहिणी ने उत्तर दिया, "तनिक ठहरो।" योगी ने अपने दिल में सोचा, "हे अभागिनी स्त्री, तू मुझे ठहरने को कहती है। निश्चय ही तुम्हें मेरे योग-बल का पता नहीं है।" जब वह मन में यह सोच ही रहा था, भीतर से फिर शब्द सुनाई दिये—"पुत्र! क्रुद्ध मत हो। यहा कोई पक्षी तो नहीं जिसे तू भस्म कर देगा।" यह सुनकर योगी के आश्चर्य की सीमा न रही। जब स्त्री बाहर आई तो उसके चरण पकड़ कर योगी आग्रहपूर्वक पूछने लगा, "माता, तू ने यह कैसे जाना?" स्त्री बोली, "मै योग से अनभिज्ञ एक साधारण स्त्री हूँ। परन्तु मैंने सदा अपने धर्म का पालन किया है। जब मैने तुम्हें ठहरने को कहा तब मैं अपने पति की सेवा में लगी हुई थी। पति-सेवा ही मेरा परम धर्म है। इस धर्म का पालन करने से मेरा हृदय इतना निर्मल हो गया है कि उसमें सब घटनाएं प्रतिबिम्वित हो जाती हैं। यदि तुम कर्तव्य-पालन से प्राप्त होने वाली दिव्य-दृष्टि के बारे मे अधिक जानना चाहते हो तो अमुक व्याध के पास जाओ।" तब वह योगी उस स्त्री द्वारा बताये गये व्याध के पास गया। उसने उसे अनेक सारगर्भित उपदेश दिये जो कि व्याध-गीता के नाम से प्रसिद्ध हैं।

(स्वामी विवेकानन्द के लेख से अनूदित)

मालविका और अग्निमित्र

३७. मालविका का चित्र देखकर ही राजा अग्निमित्र मन-ही-मन उससे प्रेम करने लग गया था। वह दिन-रात उसी का चिन्तन करता रहता और उसके दर्शनों के लिए बहुत उत्सुक रहता। सौभाग्य से उस दिन उसे साक्षात् देखने का पहला अवसर उपस्थित हुआ। भली भाँति सजा हुआ प्रेक्षागृह दीपमाला से जगमगा रहा था। चारों ओर अगुरु, धूप और कुसुमों की भीनी-भीनी सुगन्ध फैल रही थी। सामने रंगमच पर मालविका अपने शरीर की ओर संकेत करके अभिनय करती हुई, कोकिल को लज्जित करने वाले स्वर में गा रही थी—"मेरे प्रिय का मिलना कठिन है। हे हृदय तू उसकी आशा छोड़ दे।" धारिणी के पास होने के कारण वह बेचारी विवश थी। पर महाराज को उसका हार्दिक भाव समझने में तनिक देर न लगी। महाराज के लिये यह अपूर्व उत्सव था। खिलते हुए कमल के समान प्रिया के मुख को तथा उसकी लावण्यमयी अङ्ग-लतिका को देखकर उन्होंने अपने नेत्र सफल किये और गीत के व्याज से मालविका का प्रेम-संदेश सुनकर अपने-आपको धन्य माना।

(कालिदास के आधार पर स्वरचित)

३८. इस प्रकार चलते-चलते, वह अनेक नगरों, वनों और पर्वतों को पार कर हिमालय पर पहुँचा। हिमालय की शुभ्र कान्ति ने उसके मन को हरण कर लिया। उसे विश्वास हो गया कि उसकी यात्रा सफल होगी। उसने परमात्मा का नाम लेकर हिमाच्छादित पर्वत के ऊपर अपना चरण रखा और बराबर चलता गया। उस हिम में मनुष्य नहीं रहते, वृक्ष नहीं उगते, वृक्षों के ऊपर चिड़ियाँ घोंसला नहीं बनातीं। उसे भोजन नहीं मिला। उसने चिन्ता न की—चलता ही गया। जब भूख प्यास लगती तो वर्फ तोड़कर खा लेता और नींद लगती तो वह हिम-शय्या के ऊपर सो जाता और उस सपने का सपना देखता।

(P.U., B.A., 1944)

कालिदास

३९. यह सब स्वीकार करते हैं कि कालिदास संस्कृत साहित्य का सर्वोत्कृष्ट कवि है। वह सरस्वती का अवतार माना जाता है। परन्तु दुर्भाग्य से उसकी जन्मभूमि के विषय में बहुत कम जानकारी है। विद्वानों में साधारणतया यह विचार पाया जाता है कि वह उत्तरभारत का निवासी था। महाकाल की मूर्ति और च्तिप्रानदी का जैसा चित्रण हमारे कवि ने मेघदूत में किया है, उससे यह परिणाम निकलता है कि वह उज्जयिनी के आसपास सारे प्रदेश से पूर्णतया परिचित था। इसलिए हम इस परिणाम पर पहुंचने के लिए बाधित होते हैं कि उज्जयिनी या उसके आसपास का कोई स्थान उसकी जन्मभूमि थी। कुमारसम्भव में उसका हिमालय-प्रदेश का वर्णन हमें इस परिणाम पर पहुंचाता है कि वह उन प्रदेशों से पूर्णतया परिचित था। इसलिये कहा जा सकता है कि वह उत्तर भारत का एक कवि था।

(P.U , B.A. 1945)

हिन्दू-जाति का उत्कर्ष

४० यदि यह बात सत्य हो (हमारे विचार में यह सत्य ही है) कि केवल महान् जातियाँ ही सच्चे दार्शनिक और दर्शनशास्त्र उत्पन्न कर सकती है तो हिन्दुओं को ससार की सबसे बड़ी जाति मानना पड़ेगा। प्रोफेसर मैक्समूलर का कथन है कि "जो राज्य उन्नति के उच्चतम शिखर पर स्थित होता है, जिस राज्य मे भीतरी और बाहरी शत्रुओं के आक्रमण की तनिक भी आशका नहीं होती, जिस राष्ट्र के लोग धन सम्पत्ति की वृद्धि के साथ-साथ अनेक विद्या-मन्दिर और विश्वविद्यालय स्थापित करके, बिना किसी विघ्न-बाधा के, विद्या के अभ्यास मे मन लगा सकते हैं, उसी सभ्य समुन्नत राष्ट्र मे दर्शन शास्त्र का आविर्भाव होता है।

इससे यह सिद्ध होता है कि कपिल, गौतम और पतञ्जलि आदि

दार्शनिकों के जन्म लेने से पूर्व ही हिन्दू जाति सभ्यता के उच्चतम-शिखर पर आरूढ़ हो चुकी थी। (भारत भारती से उद्धृत)

उपभोग से अतृप्ति

४१. नहुष का पुत्र ययाति बहुत पराक्रमी राजा था। उसकी दो रानियाँ थीं—एक देवयानी, दूसरी शर्मिष्ठा। देवयानी से उसके यदु और तुर्वसु दो पुत्र हुए और शर्मिष्ठा से द्रुह्यु, अनु और पुरु तीन पुत्र हुए। अनेक वर्षों तक धर्मपूर्वक प्रजा का पालन करता हुआ जब वह बूढ़ा हो गया तो एक दिन पुत्रों को बुलाकर कहने लगा, "यौवन के सुख भोगने की मेरी अभिलाषा अभी शान्त नहीं हुई। मैं चाहता हूँ कि आप में से एक मुझे अपना यौवन देकर मेरा बुढ़ापा ले ले। जब बड़े चार पुत्रों ने उसके इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया तो पुरु पिता की अभिलाषा को पूरा करने के लिए तैयार हो गया। ययाति फिर युवा हो गया और पुरु वृद्ध शरीर से राज्य करने लगा।

बहुत समय तक विषय-सुखों को भोगकर भी जब ययाति की तृप्ति न हुई तो वह संसार से विरक्त होकर कहने लगा, "कामनाओं के उपभोग से कामनाएँ कभी शान्त नहीं होतीं, प्रत्युत ऐसे ही बढ़ती हैं जैसे कि घी डालने से आग। मनुष्य के जीर्ण होने से तृष्णा जीर्ण नहीं होती। मैं सहस्र वर्ष तक विषय-सुखों का उपभोग कर चुका हूं, फिर भी मेरी तृष्णा दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। इसलिए मैं कामना को छोड़कर अपने चित्त को ब्रह्म मे लगाकर शेष जीवन वन में बिताऊँगा।

"हे पुत्र पुरु, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। अब तू अपना यौवन और यह राज्य ले ले।" यह कहकर वह राज्य का भार पुरु को सौंपकर वन को चला गया। (महाभारत से संक्षिप्त)

चौदह वर्ष का बालक

४२. चौदह वर्ष के बालक के समान इस संसार में कोई घृणित पदार्थ नहीं। वह न तो गृह का अलंकार है और न किसी प्रकार उपयोगी होता है। एक नन्हें बच्चे की भाँति उस पर स्नेह की वर्षा नहीं

की जा सकती। वह हर बात में विघ्नसिद्ध होता है। यदि वह बच्चों की भाँति तोतली भाषा बोलता है तो उसे 'नन्हा-मुन्ना' कहा जाता है, और यदि वह प्रौढ की भाँति गम्भीर स्वर में उत्तर देता है तो उसे धृष्ट समझा जाता है। वस्तुत. वह जो भी बात कहे उसे बुरा समझा जाता है। छोटे बच्चों के अपराधों को तो क्षमा किया जा सकता है परंतु चौदह वर्ष के बालक के साधारण-से-साधारण अपराध को भी सहन करना कठिन है। कोई भी प्रकट-रूप मे उससे स्नेह करने का साहस नहीं कर सकता, क्योंकि ऐसा करना अनुचित उपलालन समझा जाता है जो कि बालक के लिये हानिकर होता है। चौदह वर्ष का बालक एक अवारा कुत्ते के समान है जिसका अपने स्वामी से साथ छूट गया हो।

(रवीन्द्रनाथ से संक्षिप्त अनुवाद)

४३. सुनिये! नगरवासियों का हार्दिक भाव जानने के लिए जब आपने मुझे नियुक्त किया तो मै यम का चित्र लेकर घूमता-फिरता चन्दनदास के घर पहुंचा और भीतर जाकर वहाँ यम का चित्र फैला-कर गीत गाने लगा। इतने मे लगभग पाँच वर्ष का एक बालक जिसकी आकृति सुन्दर थी और आँखे कौतूहल के मारे विकसित हो रही थीं, पर्दे से बाहर निकला। तब उसी पर्दे के भीतर स्त्रियों का यह शोर उठा कि 'हाय, निकल भागा, निकल भागा।' तब एक स्त्री ने द्वार के बाहर तनिक मुख निकाला और डाँटकर उस भागते हुए बालक को अपनी कोमल लता-सदृश भुजा से पकड़ लिया। जब उस स्त्री ने बच्चे को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया तब यह अंगूठी ढीली होने के कारण उसकी उँगली से खिसक कर नीचे गिर पड़ी और मेरे पाँव के पास आकर नव-वधू की भाँति प्रणाम करके रुक गई। अगूठी पर राक्षस का नाम अंकित था, इसलिए मैं इसे आपके पास लाया हूं। (मुद्राराक्षस से)

कठिनतर अभ्यास

नचिकेता और यम

४४. प्राचीनकाल में वाजश्रवस ने स्वर्ग की कामना से एक यज्ञ किया जिसमें सर्वस्व दान कर दिया जाता है। जब बूढ़ी, अंधी और लंगड़ी गौएँ दक्षिणा के रूप में दी जा रही थीं तो उसके पुत्र नचिकेता ने पूछा—"पिताजी, आप मुझे किसको देंगे?" पिता ने खिन्न भाव से कहा कि मैं तुम्हें यम को दूँगा। जब पिता के आदेश से नचिकेता यम के घर पहुंचा तो यम घर पर नहीं था। नचिकेता ने बिना खाये-पिये वहाँ तीन दिन प्रतीक्षा की। जब यम लौटा तो उसने इस विचार से कि जिसके घर में ब्राह्मण बिना भोजन किये रहता है, उसकी आशाएँ, पुण्य और शुभ कर्म, सन्तान और पशु नष्ट हो जाते हैं, नचिकेता से कहा कि क्योंकि तुम मेरे घर बिना खाये तीन दिन रहे हो, इसलिए तुम तीन वर माँगो ताकि मेरा कल्याण हो। नचिकेता बोला कि पहला वर मैं यह माँगता हूँ कि जब मैं यहाँ से लौटूँ तो मेरा पिता मुझे पहचान ले और उसका क्रोध शान्त हो जाय। तदनन्तर दूसरे वर के द्वारा उसने यम से पूछा कि किस यज्ञ के द्वारा मनुष्य स्वर्ग में पहुंच सकता है। जब यम के द्वारा दोनों वर दे दिये गए तो नचिकेता ने कहा कि मनुष्य के मरने पर कई कहते हैं कि वह है और कई कहते हैं कि वह नहीं है—ऐसी शंका होती है। आप कृपया यह रहस्य मुझको समझाइए। आपके सामन कोई दूसरा इस विषय को समझाने वाला नहीं मिल सकता। तब यम ने घबराकर कहा, "नचिकेता, तुम धन्य-धान्य, हाथी, घोड़े, पुत्र-पौत्र और लम्बी आयु माँगो, परन्तु मृत्यु के बारे में मत पूछो।"

दृढ़ संकल्प वाले नचिकेता ने उत्तर दिया—"धन से मनुष्य की तृप्ति नहीं हो सकती। हाथी-घोड़ों की मुझे आवश्यक्ता नहीं। मृत्यु के पश्चात् होने वाले उस जीवन के विषय मे मुझे उपदेश कोर

जिसके विषय में देवताओं को भी शंका होती है। यही मैं तीसरा वर माँगता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं माँगता।

(कठोपनिषद् से स्वकृत संक्षेप)

शुक का शशव (१)

४५. पम्पा नामक पद्मसरोवर के पश्चिमी तीर पर एक बहुत पुराना सेमर का वृक्ष है। कई देशों से आये हुए अनेक पक्षी उसकी शाखाओं पर घोंसले बनाकर निश्चिन्त रहा करते हैं। उसी वृक्ष की एक कोटर में मेरा पिता स्त्रीसहित रहता था। बुढ़ापे में मै ही उनका एकपुत्र उत्पन्न हुआ। दुर्भाग्यवश प्रसववेदना से मेरी माँ की मृत्यु हो गई। प्रिय स्त्री की मृत्यु के शोक से दुःखी होता हुआ भी मेरा पिता पुत्र-प्रेम से प्रेरित होकर उस तीव्र शोक को भीतर ही रोक कर मेरा पालन-पोषण करने में लग गया। परन्तु बहुत बूढ़ा और निर्बल होने के कारण वह दूसरे पक्षियों की भाँति आहार खोजने के लिए दूर नहीं जाता था। केवल दूसरों के घोंसलों से गिरे हुए चावलों के कणों को ला-ला कर और पक्षियों से तोड़े गये तथा नीचे गिरे हुए फलों के टुकड़ों को इकट्ठा करके मुझे देता था। मेरे खाने से जो बचता उससे अपना पेट भरता।

एक बार प्रभात के समय जब चन्द्रमा पश्चिम-सागर मे डूब रहा था, तपोवन मे अग्निहोत्र का धुआँ उठ रहा था, प्रातःकालीन पवन थकी हुई सी धीरे-धीरे बह रही थी, अकस्मात् समस्त वन्य जीवों को डराने वाली मृगया-ध्वनि उठी। उसे सुन कर कांपता हुआ और डरा हुआ मैं पास बैठे पिता के पक्ष-पुट मे घुस गया।

तदन्तर बाणों से घायल हुए सिंहों के निनाद से, हाथियों के विकराल गर्जन से, हथनियों की चीत्कार से, कुत्तों के द्वारा नोचे जाते हुए मृगों के करुण क्रन्दन से, अनेक धनुषों की टङ्कार से, पक्षियों के कोलाहल से और कुत्तों के भौंकने से वह वन कांप सा गया।

कुछ समय बाद जब वह कोलाहल शान्त हो गया और मेरा भय कम हो गया, तब मैंने कुतूहल के कारण पिता की गोद से तनिक निकल कर इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई और उस वन में यम के परिवार की भाँति घूमते हुए असंख्य शबर-सैनिकों को देखा।

(कादम्बरी से, स्वकृत संक्षेप)

शुक का शैशव (२)

४६. सत्पुरुषों के चित्त प्राय: बिना कारण ही उपकार करने वाले तथा करुणामय होते हैं। मुझे उस अवस्था में देख कर जाबालि के पुत्र हारीत को दया आ गई और वह पास खड़े दूसरे ऋषिकुमार को कहने लगा, "यह तोते का बच्चा, जिसके पंख नहीं निकले हैं, किसी प्रकार इस वृक्ष के शिखर से गिर पड़ा है, अथवा यह किसी बाज़ के मुख से छूट गया होगा। निश्चय ही बहुत ऊँचे स्थान से गिरने के कारण इसका जीवन अब थोड़ा ही शेष है और आँखे मूँद कर चलता हुआ यह बार-बार दीर्घश्वास लेता है, बार-बार चञ्चु-पुट को खोलता है तथा गर्दन को संभालने में असमर्थ है। इसलिए इसके प्राण निकलने से पहले ही तुम इसको पानी के पास पहुंचा दो।" यह कह कर उसने ऋषि-कुमार के द्वारा मुझे तालाब के किनारे पहुँचाया और स्वयं वहाँ आकर मुझे अपने हाथ से पानी की कुछ बूँदे पिलाईं। जब मुझे तनिक होश आया तो किनारे पर उगी हुई कमलिनी के पत्तों की छाया मे मुझे रख कर उसने स्वयं स्नान किया। स्नान के पश्चात् अनेक प्राणायामों से पवित्र होकर, अघमर्षण मन्त्रों को जपते हुए स्वयं तोड़े हुए लाल कमलों को लेकर सूर्य भगवान् को अर्ध्य दिया। तदन्तर धुले हुए सफेद वल्कल लेकर, हाथों से जटाओं को निचोड़ कर साफ करके, सरोवर के निर्मल जल से कमण्डल को भर कर, मुझे हाथ मे लेकर, मुनिकुमारों के समूह के साथ धीरे-धीरे तपोवन की ओर चला।

(कादम्बरी से, स्वकृत संक्षेप)

महाश्वेता और कादम्बरी

४७. तब महाश्वेता कहने लगी, "महाभाग, अमृत से उत्पन्न हुई जिन अप्सराओं का मैंने वर्णन किया था उनमें सबसे सुन्दर मदिरा नाम की एक कन्या थी। उसका विवाह चित्ररथ से हुआ। कुछ समय पाकर उनके यहा कादम्बरी नामक लड़की उत्पन्न हुई। वह मेरी सखी है और बचपन से ही एक साथ बैठने-सोने, खाने-पीने के कारण वह मेरी परम प्रेम-पात्र और विश्वास-भूमि है। उसने और मैंने इकट्ठे ही नृत्य, संगीत आदि कलाएँ सीखी हैं, और भांति-भांति के खेलों में इकट्ठे ही बचपन बिताया है। अब मेरे उस वृत्तान्त से दुःखी हो कर उसने निश्चय किया है कि जब तक महाश्वेता शोक मे दिन बिता रही है तब तक मैं कदापि विवाह नहीं कराऊँगी। उसने सखियों के आगे शपथ लेकर कहा कि यदि पिता मेरी इच्छा के प्रतिकूल मुझे बलात्कार किसी को देना चाहेगा तो मैं भूखी रह कर या आग में पड़ कर, फाँसी लेकर या विष खाकर निश्चय ही अपने प्राण त्याग दूँगी।" अपनी पुत्री का यह दृढ़ सकल्प चित्ररथ ने परिचारकों के मुख से सुना। तब कुछ समय बीतने पर पूर्ण यौवनवती पुत्री को देख कर गंधर्वराज को बहुत चिन्ता हुई और उसका धैर्य नष्ट होने लगा। पर एक ही सन्तान होने के कारण और उसके बहुत प्रिय होने के कारण वह उसे स्वयं कुछ न कह सका। अन्य कोई उपाय न देखते हुए उन्होंने महाराणी मदिरा के साथ मन्त्रणा करके आज प्रातः ही क्षीरोद नामक कञ्चुकी को मेरे पास यह सन्देश देकर भेजा है कि "हे बच्ची महाश्वेते, तुम्हारे वृत्तान्त के कारण पहले ही हमारा दिल जला हुआ था, और अब यह नई विपत्ति हमारे ऊपर आई है। अब तो तुम्हारे बिना कोई भी कादम्बरी को मना नहीं सकता।" तब बड़ों के कहने का आदर करते हुए तथा सखी के प्रेम से प्रेरित हो कर मैंने क्षीरोद के साथ तरलिका को यह सन्देश देकर कादम्बरी के पास भेजा है कि "हे सखि, मुझ दुखिया को और क्यों दुखी करती हो? यदि मुझे जीती देखना चाहती हो तो अपने

करेगा।" ऐसा सोचता हुआ वह चुप रहा और उसने कुछ उत्तर न दिया। (हर्षचरित से, स्वकृत संक्षेप)

दिल्ली

४६. बहुत वर्षों के पश्चात् आज मैंने दिल्ली मे पॉव रखा है। अनेक परिवर्तन हो जाने के कारण मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह कोई और ही नगर है। जहॉ पहले हरे-भरे विशाल खेत थे वहॉ अब बस्तियॉ बस गई है, जहॉ टूटी-फूटी कुछ एक झोंपड़ियॉ थीं वहॉ अनेक गगनचुम्बी प्रासाद खड़े हैं, जिन सड़कों पर एक तागे के चलने से धूलि-युक्त आंधी उठा करती थीं और वर्षा के होने पर दलदल हो जाता था, वे स्फटिक के समान स्वच्छ दिखाई देती हैं। कहीं-कहीं चौराहों पर कोमल घास से ढके हुए स्थल है जहॉ लोग इच्छा होने पर विश्राम करने बैठ जाते हैं। पुरानी दिल्ली के बाजारों मे चहल-पहल तो सदा रहती थी, पर लोगों की इतनी भीड़ मैंने पहले कभी नहीं देखी। एक क्षण भी असावधानी से चलने वाला सामने से आते हुए किसी-न-किसी व्यक्ति से भिड़ जाता है। रेलवे स्टेशन पर, सिनेमाघरों में, बाग बगीचों में, सड़कों पर, जिधर भी जाकर देखो असंख्य जनसमुदाय दिखाई देता है। (स्वरचित)

ग्रीष्म का एक दिन

५०. आषाढ का महीना था और ठीक दोपहर का समय था। आकाश के मध्य मे खड़ा हुआ सूर्य आग बरसा रहा था, मानों समस्त भूमण्डल को जला देना चाहता हो। मार्ग पर चलते हुए पथिक और खेतों मे हल चलाते हुए किसान बेहोश होकर गिर पड़ते थे। घरों में बैठे हुए लोगों को भी आराम न मिलता था। ईंट-पत्थर के बने हुए मकान तन्दूर की भांति तप रहे थे। बराबर पखा करते रहने पर भी सबके अंग-अंग से पसीना बह रहा था। अभी बदन पोंछा और अभी वह फिर गीला हो जाता। लोग बार-बार पानी पीते पर ज्योंही वह गले से नीचे उतरता जिह्वा सूख जाती। सबका बुरा हाल हो रहा

था। मनुष्यों का तो कहना ही क्या, पशु-पक्षी पर्यन्त सभी जीव गर्मी के कारण अधमरे हो रहे थे। प्यास के मारे कुत्तों की जिह्वा बाहर को निकल रही थी। घबराये हुए पक्षी सघन छाया वाले वृक्षों का आश्रय ढूंढ रहे थे। यह कोई अत्युक्ति नहीं कि उस दिन सभी प्राणी भट्टी में चनों की भांति भूने जा रहे थे। (स्वरचित)

ऋतुराज

५१. शीत से अत्यन्त उद्विग्न होकर आप जिसकी चिरकाल से उत्कण्ठापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे वह वसन्त आ पहुंचा है। अहो, कैसा मनोहर दृश्य है। वनस्थली तो नववधू की भांति सुशोभित हो रही है। प्रकृति के सौन्दर्य को देखने के लिये तथा अपने नेत्रों को सफल बनाने के लिये यदि आप बन अथवा उपवन में जायं तो आप बहुत मुदित होंगे। लताओं और वृक्षों पर नाना वर्ण के फूल उग आये हैं। नये पत्तों को नचाता हुआ सुगन्धित पवन धीरे-धीरे बह रहा है। जिधर देखो भांति-भांति के पक्षी कल्लोल कर रहे हैं। आम्र-मंजरी के आस्वादन से उन्मत्त हुई कोयल वनस्थली को मुखरित करती हुई तथा युवक-जनों के हृदयों को मोहित करती हुई कूजन कर रही है।

प्रातःकाल जब सूर्य की सुनहली रश्मियां कमलों को विकसित कर देती हैं तो मधु के लोभी भंवरे गुंजार करते हुए उन पर मँडराने लगते हैं। सायंकाल को मानों अमृत की वर्षा करता हुआ और पृथ्वी को नहलाता हुआ रजत-धवल चन्द्रमा उदय होता है। आह! मधु-मास की चन्द्रोज्ज्वल रजनियों में मधुर गंध वाली वनस्थली में विहार करने वाले रसिकों को कितना आनन्द मिलता है! सच है वसन्त दुःख-रूपी आतप से कुम्हलाये हुए जीवन-रूपी कमल को विकसित करके उसमें सुख-रूपी सुगन्ध का संचार कर देता है।

अपने वेष के अनुपम सौन्दर्य के कारण, अपने गुणों द्वारा सकल प्राणियों के हृदयों को आनन्द देने के कारण, पक्षी-कलरव के व्याज से

भाई भाई हैं, सब साथी हैं। महात्मा जी ने अपना सर्वस्व दान कर दिया था। वे अपने पास कुछ नहीं रखते थे। जो कुछ उन्हें मिलता था सब दान कर देते थे। आत्मोत्सर्ग और स्वार्थत्याग ही उनकी प्रकृति थी। वस्तुतः वे धार्मिक पुरुष थे। उनकी अगाध आध्यात्मिकता चारों ओर इतना प्रभाव डालती थी कि उनकी उपस्थिति में किसी को पाप करने का साहस नहीं होता था।

(नटेशन महाशय के अंग्रेजी लेख से अनूदित)

भारतवर्ष

५४. दूसरे देशों में अनेक जातियों तथा धर्मों का आविर्भाव, विस्तार और क्रमशः विनाश हो चुका है, परन्तु भारतवर्ष पर विधाता का विशेप अनुग्रह रहा है। कई एक बातों में भारत-वासियों के नितान्त अध:पतन होने पर भी ये लोग महान् संकट-आपदाओं से सुरक्षित रखे जाते रहे हैं, मानों विधाता ने इन्हें कोई विशेष कार्य सौंपा हुआ हो।

हम भारतवासी उस धर्म के, उन रूढ़ियों के, उस साहित्य के, उस तत्त्व-विद्या के, उन जीवन-पद्धतियों तथा उन विचार-पद्धतियों के प्रतिनिधि हैं, जो कि हमारे ही देश की विशेषताएं हैं और जिन्हें हमारे प्रख्यात पूर्वज दूसरे देशों में ले गये थे।

उल्लासमयी आशा, कर्तव्यपरायण श्रद्धा, सबसे यथायोग्य व्यवहार करने वाली न्याय की भावना से, पक्षपातरहित बुद्धि से, सर्वथा परिपुष्ट बल से तथा अपरिसीमित स्नेह से युक्त नवीन भारत फिर संसार भर के राष्ट्रों में उचित पदवी को प्राप्त करेगा। यही हमारा लक्ष्य है। धन्य हैं वे जिनकी दूर-दृष्टि इस लक्ष्य को देख पाती है, उनसे भी अधिक धन्य वे हैं जो इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये यत्नशील हैं और सबसे धन्य वे हैं जो अपनी आंखों से भारत को स्वतन्त्र देखा और अब इस पुण्यभूमि पर विचरेंगे।

(रानाडे महोदय के लेख से अनूदित)

स्त्रियों की योग्यता

५५. विद्या, कला-कौशल और सद्गुण-ग्रहण पुरुषों के ही बांट मे नहीं पड़ा। स्त्रियां भी इन बातों में पुरुषों ही के सदृश नैपुण्य प्राप्त कर सकती हैं। पुराने ज़माने में भी भारती, लीलावती, आत्रेयी आदि स्त्रियां विद्वत्ता में पुरुषों से किसी तरह कम न थीं। यहां, इस देश में, अनेक स्त्रियां ऐसी भी हो गई है, जो संस्कृत शास्त्रों की ज्ञाता और उत्कृष्ट कवि भी थीं। विश्ववरा, घोषा और अदिति आदि विदुषी स्त्रियों ने तो ऋग्वेद के मन्त्रों की रचना तक की है। इस वेद के कितने ही मन्त्र स्त्रियों तथा औरों के भी नाम से प्रसिद्ध हैं। वहीं, वेद ही मे लिखा है कि अमुक मन्त्र की ऋषि अमुक स्त्री है। आधुनिक समय मे स्त्रियों की विद्वत्ता के विषय मे तो प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं। अहल्यावाई के सदृश भारत की कितनी ही पुण्य-श्लोक महिलाओं ने तो वड़े-वड़े राज्यों का संचालन तक योग्यतापूर्वक किया है। स्त्रियों को मौका देने और उनके लिये गुण ग्रहण तथा योग्यता सम्पादन के साधन सुलभ कर देने से, कोई विषय ऐसा नहीं जिसको वे सफलतापूर्वक आयत्त न कर सके। (महावीरप्रसाद द्विवेदी)

स्त्री शिक्षा का उद्देश्य

५६. इस समय विवाद इस बात पर नहीं कि स्त्रियों को पढ़ना चाहिए या नहीं। स्त्री-शिक्षा की उपयोगिता के सम्बन्ध में आज इस देश में दो मत नहीं हैं। इस समय हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थित है कि क्या स्त्रियों और पुरुषों के पाठ्य-क्रम सर्वथा समान हों अथवा भिन्न-भिन्न। कई कहते हैं कि जैसी बुद्धि और मस्तिष्क विधाता ने पुरुष को दिये हैं वैसे ही स्त्री को भी दिये हैं। तत्त्वविद्या, साहित्य, विज्ञान या गणित सभी विषयों को समझने की स्त्रियों में उतनी ही क्षमता है जितनी की पुरुषों मे। समाज के प्रत्येक कार्य को स्त्रियां पुरुषों की भांति सुचारु रूप से सम्पादन कर सकती हैं, इसलिये प्रत्येक व कला पढ़ने-लिखने की जो सुविधाएं पुरुषों के लिये उप

जाती हैं वे सब स्त्रियों के लिये भी समान रूप से होनी चाहिएं। दूसरे कहते हैं कि व्यावहारिक जीवन में साधारणतया स्त्री और पुरुष का कार्य-क्षेत्र भिन्न-भिन्न है। धन कमाने का भार पुरुष पर है और घर के काम-काज को संभालना, सन्तान का पालन पोषण करना स्त्री का कर्तव्य है। इसलिये जिस प्रकार पुरुष को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उसे जीविका कमाने के समर्थ बनाए, उसी प्रकार स्त्री को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उसे अच्छी गृहिणी और अच्छी माता बनने में उपयोगी सिद्ध हो। (स्वरचित)

स्त्री और पारिवारिक जीवन

५७. स्त्रियों की अशान्ति का असली कारण यही है कि उन्हें वैसा कोई कार्य करने को नहीं मिलता जिसमें उनके समय और सामर्थ्य का सदुपयोग हो। हम सभी यह समझते हैं कि स्त्री का स्थान उसका घर है, पर घर उजड़ते जा रहे हैं। मिल-मशीन के कारण घर का काम धन्धा कम हो गया है, घर की जगह होटल ने ले ली है। इससे बहुत सी ऐसी शक्ति जमा हो जाती है जिसके लिये कोई काम नहीं रहता। पति अपने काम में पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक व्यस्त रहता है और स्त्री का समय काटे नहीं कटता। कोई ऐसा काम न होने से कि जिसमें उसका मन लगता, वह दु:खी और वातव्याधिग्रस्त हो जाती है। उसका जीवन निरर्थक, निरुद्देश्य हो जाता है। ऐसी अवस्था में यदि वह अपने रुपये और अवकाश के द्वारा अपना खाली समय खेल-खिलवाड़ या मूर्खता, मौज और अपनी लालसा की तृप्ति से पूरा करती है तो इसके लिये हम उसे दोषी नहीं कह सकते। उसका जो काम पहले था वह जाता रहा और नया कोई काम-काज अभी तक उसके हाथ में नहीं आया है। सारे झगड़े की जड़ यही है कि स्त्रियों के करने के लिये पर्याप्त काम नहीं है। रिक्त जीवन की नीरसता उन्हें अप्राकृतिक मार्ग में लिये जा रही है और उचित यही है कि उन्हें उनके स्वभाव और रुचि के अनुकूल कार्य में लगाया जाय। (एस० राधाकृष्ण)

परिशिष्ट १ (क)

नामों के रूप

अजन्त पुल्लिग शब्द

प्रारम्भिक पाठ में पृष्ठ २ और ३ पर (क), (ख) और (ग) श्रेणियों में दिये गये पुंलिंग शब्दों के रूप देव की भांति होंगे।

देव (अकारान्त शब्द)

१	कर्ता	देवः	देवौ	देवा
२	कर्म	देवम्	देवौ	देवान्
३	करण	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
४	सम्प्रदान	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
५	अपादान	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
६	संबंध	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
७	अधिकरण	देवे	देवयोः	देवेषु
८	सम्बोधन	हे देव	हे देवौ	हे देवाः

स्मरण करने की विधि—कण्ठस्थ करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि अन्तिम शब्द कहां-कहां हल् होता है, और विसर्ग कहां-कहां आता है।

(१) नामों और सर्वनामों के उच्चारण मे अन्तिम 'म्' सदा हल होता है, जैसे देवम्, देवाभ्याम्, देवानाम्। केवल 'मम' (अस्मद्, षष्ठी एकवचन) एक ऐसा रूप है, जहा अन्तिम 'म' हल् नहीं है।

(२) द्वितीया विभक्ति के वहुवचन के अन्त मे जो 'न्' होता है, वह सदा हल् होता है, जैसे—देवान्, कवीन्, साधून्, पितॄन्, अस्मान्, युष्मान् इत्यादि।

(३) अकारांत शब्दों के पञ्चमी, एकवचन के रूप मे अन्तिम 'त्' हल् होता है, जैसे देवात्, रामात्।

(४) अकारांत, इकारांत और उकारांत शब्दों के प्रथमा एकवचन और बहुवचन के अन्त में विसर्ग आता है, जैसे देवः, कविः, साधु, देवाः, कवय, साधवः।

(५) तृतीय, चतुर्थी और पञ्चमी के बहुवचन के अन्त में विसर्ग आता है, जैसे देवैः, देवेभ्य., साधुभिः, साधुभ्य इत्यादि।

(६) सभी शब्दों के षष्ठी और सप्तमी द्विवचन के अन्त में विसर्ग आता है, जैसे, देवयो, कव्यो, साध्वोः, पित्रो, आवयो, तयो इत्यादि।

पृष्ठ ३ पर (घ) श्रेणी में दिये गये पुंल्लिग शब्दों के रूप कवि की भांति होंगे।

कवि (इकरात शब्द)

१	कवि	कवी	कवय
२	कविम्	कवी	कवीन्
३	कविना	कविभ्याम्	कविभि
४	कवये	कविभ्याम्	कविभ्य.
५	कवे	कविभ्याम्	कविभ्य
६	कवेः	कव्यो	कवीनाम्
७	कवौ	कव्यो.	कविषु
८	हे कवे	हे कवी	हे कवय

स्मरण विधि—इकारान्त, उकारान्त शब्दों के प्रथमा और द्वितीया के द्विवचन के अन्त मे दीर्घ स्वर आता है, जैसे कवी, साधू।

साधु (उकारान्त शब्द)

(१) साधु साधू साधवः (२) साधुम् साधू साधून् (३) साधुना साधुभ्याम् साधुभि· (४) साधवे साधुभ्याम् साधुभ्य (५) साधो साधुभ्याम् साधुभ्य (६) साधोः साध्वो साधूनाम् (७) साधौ साध्वो· साधुषु (८) हे साधो हे साधू हे साधव.।

परिशिष्ट १ (ख)

अजन्त स्त्रीलिंग शब्द

पृष्ठ ३ पर (क) श्रेणी मे दिये गये आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के रूप लता की भांति होंगे।

लता (आकारान्त शब्द)

(१) लता लते लता (२) लताम् लते लता (३) लतया लताभ्याम् लताभिः (४) लतायै लताभ्याम् लताभ्य (५) लताया. लताभ्याम् लताभ्य. (६) लतायाः लतयोः लतानाम् (७) लतायाम् लतयो लतासु। (८) हे लते हे लते हे लताः।

नगरी, कुमारी, कौमुदी, विदुषी, तरुणी शब्दों के रूप नदी की भाति होंगे।

नदी (ईकारान्त शब्द)

(१) नदी नद्यौ नद्य (२) नदीम् नद्यौ नदी (३) नद्या नदीभ्याम् नदीभि. (४) नद्यै नदीभ्याम् नदीभ्यः (५) नद्या नदीभ्याम् नदीभ्यः (६) नद्या· नद्यो नदीनाम् (७) नद्याम् नद्यो. नदीपु (८) हे नदि हे नदी हे नद्यः।

स्त्री (ईकारान्त शब्द)

(१) स्त्री स्त्रियौ स्त्रियः (२) स्त्रियम-स्त्रीम ❀ स्त्रियौ स्त्रिय. (३) स्त्रिया स्त्रीभ्याम् स्त्रीभि (४) स्त्रियै स्त्रीभ्याम् स्त्रीभ्य (५) स्त्रिया. स्त्रीभ्याम् स्त्रीभ्यः (६) स्त्रिया. स्त्रियो स्त्रीणाम् (७) स्त्रियाम् स्त्रियो. स्त्रीपु (८) हे स्त्रि हे स्त्रियौ हे स्त्रिय.॥

❀ द्वितीया एकवचन में दो रूप बनते हैं। 'श्री' शब्द भी 'स्त्री' की भांति जानो। द्वितीय एकवचन में 'श्री' का एक ही रूप 'श्रियम्' बनता है। पञ्चमी, षष्ठी में 'श्रिय'।

पृष्ठ ४ पर स्त्रीलिंग के (ग) श्रेणी में दिये गये शब्दों के रूप मति की भांति होंगे।

मति (इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

(१) मतिः मती मतयः (२) मतिम् मती मती (३) मत्या मतिभ्याम् मतिभि· (४) मतये or मत्यै मतिभ्याम् मतिभ्यः (५) मतेः or मत्याः मतिभ्याम् मतिभ्य· (६) मते· or मत्याः मत्योः मतीनाम् (७) मतौ or मत्याम् मत्योः मतिषु (८) हे मते हे मती हे मतय ।

परिशिष्ट १ (ग)

अजन्त नपुसक लिंग शब्दो के रूप

पृष्ठ ४ और ५ पर दिये गये नपुंसक लिंग के अकारान्त शब्दों के रूप 'फल' की भांति होंगे।

फल (अकारान्त नपुसक लिंग)

(१) फलम् फले फलानि (२) फलम् फले फलानि (३) फलेन फलाभ्याम् फलै· (४) फलाय फलाभ्याम् फलेभ्य (५) फलात् फलाभ्याम् फलेभ्य. (६) फलस्य फलयोः फलानाम् (७) फले फलयो फलेषु (८) हे फल हे फले हे फलानि।

अब कुछ अन्य शब्दों के रूप दिये जाते हैं।

पितृ (ऋकारान्त पुल्लिग शब्द)

(१) पिता पितरौ पितरः (२) पितरम् पितरौ पितॄन् (३) पित्रा पितृभ्याम् पितृभिः (४) पित्रे पितृभ्याम् पितृभ्यः (५) पितुः पितृभ्याम् पितृभ्य (६) पितु. पित्रो पितॄणाम् (७) पितरि पित्रोः पितृषु (८) हे पित· हे पितरौ· हे पितर ।

भ्रातृ शब्द के रूप भी पितृ की भांति होते हैं।

मातृ (ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

(१) माता मातरौ मातर. (२) मातरम् मातरौ मातॄ· (३) मात्रा

मातृभ्याम् मातृभि. (४) मात्रे मातृभ्याम् मातृभ्य (५)मातुः मातृभ्याम् मातृभ्यः (६) मातु मात्रोः मातॄणाम् (७) मातरि मात्रो मातृषु (८) हे मात हे मातरौ हे मातरः ।

परिशिष्ट २

सर्वनामों के रूप

अस्मद् (तीनो लिगो मे समान रूप)

(१) अहम् आवाम् वयम् (२) माम् (or मा) आवाम् (or नौ) अस्मान् (or न·) (३) मया आवाभ्याम् अस्माभिः (४) मह्यम् (or मे,) आवाभ्याम् (or नौ) अस्मभ्यम् (or न) (५) मत् आवाभ्याम् अस्मत् (६) मम (or मे) आवयोः (or नौ) अस्माकम् (or न) (७) मयि आवयो. अस्मासु ।

युष्मद् (तीनो लिंगो के समान रूप)

(१) त्वम् युवाम् यूयम् (२) त्वाम् (or त्वा) युवाम् (or वाम्) युष्मान् (or व) (३) त्वया युवाभ्याम् युष्माभि· ४) तुभ्यम् (or ते) युवाभ्याम् (or वाम्) युष्मभ्यम् (or व.) (५) त्वत् युवाभ्याम् युष्मत (६) तव (or ते) युवयो· (or वाम्) युष्माकम् (or व) (७) त्वयि युवयो. युष्मासु ।

शेष सर्वनामों के रूप तीनों लिंगों में भिन्न-भिन्न होते हैं ।

तद् (पुल्लिग) वह (पुरुष)

(१) स तौ ते (२) तम् तौ तान् (३) तेन ताभ्याम् तै. (४) तस्मै ताभ्याम् तेभ्य. (५) तस्मात् ताभ्याम् तेभ्य· (६) तस्य तयो तेषाम् (७) तस्मिन् तयोः तेषु ।

तद् (स्त्रीलिग) वह (स्त्री)

(१) सा ते ता· (२) ताम् ते ता. (३) तया ताभ्याम् ताभि.

(४) तस्यै ताभ्याम् ताभ्यः (५) तस्याः ताभ्याम् ताभ्यः (६) तस्याः तयोः तासाम् (७) तस्याम् तयो तासु ।

तद् (नपुंसक लिंग)

(१) तद् ते तानि (२) तद् ते तानि । शेष विभक्तियों के रूप पुंल्लिंग की भांति होते हैं।

इदम् (पुंल्लिंग) यह (पुरुष)

(१) अयम् इमौ इमे (२) इमम् इमौ इमान् (३) अनेन आभ्याम् एभि (४) अस्मै आभ्याम् एभ्यः (५) अस्मात् आभ्याम् एभ्यः (६) अस्य अनयो. एषाम् (७) अस्मिन् अनयो एषु ॥

इदम् (स्त्रीलिंग) यह (स्त्री)

(१) इयम् इमे इमाः (२) इमाम् इमे इमाः (३) अनया आभ्याम् आभिः (४) अस्यै आभ्याम् आभ्य' (५) अस्या आभ्याम् आभ्य (६) अस्या अनयो. आसाम् (७) अस्याम अनयो आसु ।

इदम् (नपुंसक लिंग)

(१) इदम् इमे इमानि (२) इदम् इमे इमानि । शेष विभक्तियों के रूप पुंलिंग की भांति होते हैं ॥

———

परिशिष्ट ३

धातु रूपावली

भ्वादिगण

(गम्) लट् (वर्तमान काल) (वह जाता है)

सः गच्छति	तौ गच्छतः	ते गच्छन्ति
त्वं गच्छसि	युवां गच्छथः	यूयं गच्छथ
अहं गच्छामि	आवां गच्छावः	वयं गच्छामः

कण्ठस्थ करने की विधि—विद्यार्थी को चाहिये कि वह कर्ता सहित क्रिया के रूप कण्ठस्थ करे, न कि केवल क्रिया के रूप, अर्थात् कण्ठस्थ करते समय स गच्छति, तौ गच्छतः, ते गच्छन्ति, त्वं गच्छसि, युवां गच्छथ , यूयं गच्छथ इत्यादि पढ़ा जाय, न कि केवल गच्छति गच्छतः गच्छन्ति, गच्छसि गच्छथ गच्छथ इत्यादि।

नोट—आगे जो रूप दिये जायंगे उनके साथ कर्ता लिखा नहीं जायगा। विद्यार्थी को चाहिये कि वह कण्ठस्थ करते समय स्वयं कर्ता पद जोड़ ले।

लङ् (भूतकाल) (वह गया)

अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्, अगच्छः अगच्छतम् अगच्छत, अगच्छम् अगच्छाव अगच्छाम।

लोट् (वह जाय)

गच्छतु गच्छताम् गच्छन्तु, गच्छ गच्छतम् गच्छत, गच्छानि गच्छाव गच्छाम।

विधि लिङ् (उसे जाना चाहिये)

गच्छेत् गच्छेताम् गच्छेयुः, गच्छेः गच्छेतम् गच्छेत, गच्छेयम् गच्छेव गच्छेम।

लृट् (भविष्यत्काल) (वह जायगा)

गमिष्यति गमिष्यतः गमिष्यन्ति, गमिष्यसि गमिष्यथः गमिष्यथ, गमिष्यामि गमिष्यावः गमिष्यामः।

अन्य धातुओं के रूप

(दिव्) दीव्यति अदीव्यत् दीव्यतु दीव्येत् देविष्यति, (श्लिष्) श्लिष्यति अश्लिष्यत् श्लिष्यतु श्लिष्येत् श्लेक्ष्यति। (मुह्) मुह्यति अमुह्यत् मुह्यतु मुह्येत् मोहिष्यति (also मोक्ष्यति)। (कुप्) कुप्यति अकुप्यत् कुप्यतु कुप्येत् कोपिष्यति। (क्रुध्) क्रुध्यति अक्रुध्यत् क्रुध्यतु क्रुध्येत् क्रोत्स्यति। (द्रुह्) द्रुह्यति अद्रुह्यत् द्रुह्यतु द्रुह्येत् द्रोहिष्यति (also ध्रोक्ष्यति)। (शुष्) शुष्यति अशुष्यत् शुष्यतु शुष्येत् शोक्ष्यति (तृष्) तृष्यति अतृष्यत् तृष्यतु तृष्येत् तर्षिष्यति, (क्षुध्) क्षुध्यति अक्षुध्यत् क्षुध्यतु, क्षुध्येत्, क्षोत्स्यति, (तृप्) तृप्यति अतृप्यत् तृप्यतु तृप्येत् तर्पिष्यति (also तप्स्र्यति); (तुष्) तुष्यति अतुष्यत् तुष्यतु तुष्येत् तोक्ष्यति, (व्यध्) विध्यति, अविध्यत् विध्यतु विध्येत् व्यत्स्यति (सिध्), सिध्यति असिध्यत् सिध्यतु सिध्येत् सेत्स्यति, (हृष्) हृष्यति अहृष्यत् हृष्यतु हृष्येत् हर्षिष्यति, (त्रस्) त्रस्यति अत्रस्यत् त्रस्यतु त्रस्येत् त्रसिष्यति (यह धातु भ्वादिगणी भी है), (शुध्) शुध्यति अशुध्यत् शुध्यतु शुध्येत् शोत्स्यति (त्रुट्) त्रुट्यति अत्रुट्यत् त्रुट्यतु त्रुट्येत् त्रुटिष्यति।

N.B. वृत् (होना) भ्वादिगण में है, न कि दिवादिगण में।

तुदादिगण

इष् (लट्) इच्छति इच्छतः इच्छन्ति। इच्छसि इच्छथ इच्छथ। इच्छामि इच्छाव इच्छाम। (लङ्) ऐच्छत् ऐच्छताम् ऐच्छन्। ऐच्छः एच्छतम् एच्छत। ऐच्छम् ऐच्छाव ऐच्छाम। (लोट्) इच्छतु इच्छताम् इच्छन्तु। इच्छ इच्छतम् इच्छत। इच्छानि इच्छाव इच्छाम। (विधिलिङ्) इच्छेत् इच्छेताम् इच्छेयु। इच्छेः इच्छेतम इच्छेत। इच्छेय इच्छेव इच्छेम। (लृट्) एषिष्यति एषिष्यत. एषिष्यन्ति। एषिष्यसि एषिष्यथः एषिष्यथ। एषिष्यामि एषिष्याव एषिष्यामः।

अन्य धातुओ के रूप

(तुद्)	तुदति	अतुदत	तुदतु	तुदेत्	तुदिष्यति।
(विश)	विशति	अविशत्	विशतु	विशेत्	वेक्ष्यति

(मुच्) मुञ्चति अमुञ्चत् मुञ्चतु मुञ्चेत् मोक्ष्यति
(पृच्छ्) पृच्छति अपृच्छत् पृच्छतु पृच्छेत प्रक्ष्यति
(लिख) लिखति अलिखत् लिखतु लिखेत् लिखिष्यति
(सिच्) सिञ्चति असिञ्चत सिञ्चतु सिञ्चेत् सेक्ष्यति
(सृज) सृजति असृजत् सृजतु सृजेत् स्रक्ष्यति
(स्पृश्) स्पृशति अस्पृशत् स्पृशतु स्पृशेत् स्प्रक्ष्यति
(मृ) म्रियते अम्रियत म्रियै म्रियेय मरिष्यति
(लृट् में यह धातु परस्मैपदी है)।

चुरादिगण

चुर् (लट्) चोरयति चोरयतः चोरयन्ति। चोरयसि चोरयथः चोरयथ। चोरयामि चोरयावः चोरयामः। (लङ्) अचोरयत् अचोरयताम्। अचोरयन्। अचोरयः अचोरयतम् अचोरयत। अचोरयम् अचोरयाव अचोरयाम। (लोट्) चोरयतु चोरयताम् चोरयन्तु। चोरय चोरयतम् चोरयत। चोरयाणि चोरयाव चोरयाम। (विधिलिङ्) चोरयेत् चोरयेताम् चोरयेयुः। चोरयेः चोरयेतम् चोरयेत। चोरयेयम् चोरयेव चोरयेम। (लृट्) चोरयिष्यति चोरयिष्यतः चोरयिष्यन्ति। चोरयिष्यसि चोरयिष्यथः चोरयिष्यथ। चोरयिष्यामि चोरयिष्यावः चोरयिष्यामः।

अन्य धातुओं के रूप

(तड्) ताडयति अताडयत् ताडयतु ताडयेत् ताडयिष्यति। (दण्ड) दण्डयति अदण्डयत् दण्डयतु दण्डयेत् दण्डयिष्यति। (कथ्) कथयति अकथयत् कथयतु कथयेत् कथयिष्यति। (भक्ष्) भक्षयति अभक्षयत् भक्षयतु भक्षयेत् भक्षयिष्यति। (चिन्त) चिन्तयति अचिन्तयत् चिन्तयतु चिन्तयेत् चिन्तयिष्यति। (पूज्) पूजयति अपूजयत् पूजयतु पूजयेत् पूजयिष्यति। (गण्) गणयति अगणयत् गणयतु गणयेत् गणयिष्यति। (रच्) रचयति अरचयत् रचयतु रचयेत् रचयिष्यति। (धृ) धारयति अधारयत् धारयतु धारयेत् धारयिष्यति। (स्पृह्) स्पृहयति अस्पृहयत्

स्पृहयतु स्पृहयेत् स्पृहयिष्यति । (अर्ज्) अर्जयति आर्जयत् अर्जयतु अर्जयेत् अर्जयिष्यति । (छद्) छादयति अच्छादयत् छादयतु छादयेत् छादयिष्यति ।

अदादिगण

अद् (लट्) अत्ति अत्त अदन्ति । अत्सि अत्थः अत्थ । अद्मि अद्व अद्म. । (लङ्) आदत् आत्ताम् आदन् । आदः आत्तम् आत्त । आदम् आद्व आद्म । (लोट) अत्तु अत्ताम् अदन्तु । अद्धि अत्तम् अत्त । अदानि अदाव अदाम । (विधिलिङ्) अद्यात् अद्याताम् अद्यु । अद्या. अद्यातम् अद्यात । अद्याम् अद्याव अद्याम । (लृट्) अत्स्यति अत्स्यत अत्स्यन्ति इत्यादि ।

अस् (लट्) अस्ति स्तः सन्ति । असि स्थ स्थ, अस्मि स्व स्म । (लङ्) आसीत् आस्ताम् आसन् । आसीः आस्तम् आस्त । आसम् आस्व आस्म । (लोट्) अस्तु स्ताम् सन्तु । एधि स्तम् स्त । असानि असाव असाम । (विधिलिङ्) स्यात् स्याताम् स्यु । स्या स्यातम् स्यात । स्याम् स्याव स्याम। (लृट्) भविष्यति भविष्यत इत्यादि भू के लृट् की भाँति।

या (लट्) याति यात यान्ति । यासि याथ याथ । यामि यावः याम. । (लङ्) अयात् अयाताम् अयान् (also अयु ।) अया अयातम् अयात, अयाम् अयावअयाम । (लोट्) यातु याताम् यान्तु। याहि यातम् यात । यानि याव याम । (लृट्) यास्यति यास्यत यास्यन्ति इत्यादि ।

स्ना और वा के रूप या की भाति होते हैं ।

स्वप् (लट) स्वपिति स्वपित. स्वपन्ति । स्वपिषि स्वपिथ स्वपिथ । स्वपिमि स्वपिव स्वपिमः। (लङ्) अस्वपत (or अस्वपीत्) अस्वपिताम् अस्वपन्। अस्वप (or अस्वपी) अस्वपितम् अस्वपित। अस्वपम् अस्वपिव अस्वपिम । (लोट्) स्वपितु स्वपिताम् स्वपन्तु। स्वपिहि स्वपितम् स्वपित । स्वपानि स्वपाव स्वपाम । (विधिलिङ्) स्वप्यात् स्वप्याताम स्वप्यु. । स्वप्या स्वप्यातम् स्वप्यात। स्वप्याम् स्वप्याव स्वप्याम । (लृट्) स्वपिष्यति स्वपिष्यत· स्वपिष्यन्ति इत्यादि । श्वस् के रूप स्वप् की भांति होंगे—श्वसिति अश्वसीत् (or अश्वसत्) श्वसितु श्वस्यात् श्वसिष्यति

रुद् (लोट्) रोदिति रुदित. रुदन्ति। रोदिषि रुदिथ रुदिथ। रोदिमि रुदिव. रुदिम । (लङ्) अरोदीत् (or अरोदत्) अरुदिताम् अरुदन् अरोदीः (or अरोदः) अरुदितम् अरुदित। अरोदम् अरुदिव अरुदिम। (लोट्) रोदितु रुदिताम् रुदन्तु। रुदिहि रुदितम् रुदित। रोदानि रोदाव रोदाम। (विधिलिङ्) रुद्यात् रुद्याताम् रुद्युः। रुद्या. रुद्यातम् रुद्यात। रुद्याम् रुद्याव रुद्याम। (लृट्) रोदिष्यति रोदिष्यतः रोदिष्यन्ति इत्यादि।

जागृ (लट्) जागर्ति जागृतः जाग्रति। जागर्षि जागृथ जागृथ। जागर्मि जागृवः जागृम.। (लङ्) अजाग. अजागृताम् अजागरु। अजागः अजागृतम् अजागृत। अजागरम् अजागृव अजागृम। (लोट्) जागर्तु जागृताम् जाग्रतु। जागृहि जागृतम् जागृत। जागराणि जागराव जागराम। (विधिलिङ्) जागृयात् जागृयाताम् जागृयुः। जागृयाः जागृयातम् जागृयात। जागृयाम् जागृयाव जागृयाम। (लृट्) जागरिष्यति जागरिष्यतः जागरिष्यन्ति इत्यादि।

विद् (लट्) वेत्ति वित्त विदन्ति। वेत्सि वित्थ. वित्थ। वेद्मि विद्व. विद्म.। (लट् मे विद् धातु के दो-दो रूप बनते हैं। यहा केवल सरल रूप दिया है।) (लङ्) अवेत् अवित्ताम् अविदु। अवे (or अवेत्) अवित्ताम् अवित्त। अवेदम् अविद्व अविद्म। (लोट्) वेत्तु वित्ताम् विदन्तु। विद्धि वित्तम् वित्त। वेदानि वेदाव वेदाम। (विधिलिङ्) विद्यात् विद्याताम् विद्युः। विद्या. विद्यातम् विद्यात। विद्याम् विद्याव विद्याम। (लृट्) वेदिष्यति वेदिष्यत. वेदिष्यन्ति इत्यादि।

हन् (लट्) हन्ति हत. घ्नन्ति। हंसि हथ हथ। हन्मि हन्व. हन्म. (लङ्) अहन् अहताम् अघ्नन्। अहन अहतम अहत। अहनम अहन्व अहन्म। (लोट्) हन्तु हताम घ्नन्तु। जहि हतम हत। हनानि हनाव हनाम। (विधिलिङ्) हन्यात हन्याताम हन्यु। हन्या. हन्यातम हन्यात। हन्याम हन्याव हन्याम। (लृट्) हनिष्यति हनिष्यत हनिष्यन्ति इत्यादि।

स्पृहयतु स्पृहयेत् स्पृहयिष्यति। (अर्ज्) अर्जयति आर्जयत् अर्जयतु अर्जयेत् अर्जयिष्यति। (छद्) छादयति अच्छादयत् छादयतु छादयेत् छादयिष्यति।

अदादिगण

अद् (लट्) अत्ति अत्तः अदन्ति। अत्सि अत्थः अत्थ। अद्मि अद्वः अद्मः। (लङ्) आदत् आत्ताम् आदन्। आदः आत्तम् आत्त। आदम् आद्व आद्म। (लोट्) अत्तु अत्ताम् अदन्तु। अद्धि अत्तम् अत्त। अदानि अदाव अदाम। (विधिलिङ्) अद्यात् अद्याताम् अद्युः। अद्याः अद्यातम् अद्यात। अद्याम् अद्याव अद्याम। (लृट्) अत्स्यति अत्स्यतः अत्स्यन्ति इत्यादि।

अस् (लट्) अस्ति स्तः सन्ति। असि स्थः स्थ, अस्मि स्वः स्मः। (लङ्) आसीत् आस्ताम् आसन्। आसीः आस्तम् आस्त। आसम् आस्व आस्म। (लोट्) अस्तु स्ताम् सन्तु। एधि स्तम् स्त। असानि असाव असाम। (विधिलिङ्) स्यात् स्याताम् स्युः। स्याः स्यातम् स्यात। स्याम् स्याव स्याम। (लृट्) भविष्यति भविष्यतः इत्यादि भू के लृट् की भाँति।

या (लट्) याति यातः यान्ति। यासि याथः याथ। यामि यावः यामः। (लङ्) अयात् अयाताम् अयान् (also अयुः।) अयाः अयातम् अयात, अयाम् अयाव अयाम। (लोट्) यातु याताम् यान्तु। याहि यातम् यात। यानि याव याम। (लृट्) यास्यति यास्यतः यास्यन्ति इत्यादि।

स्ना और वा के रूप या की भाति होते हैं।

स्वप् (लट्) स्वपिति स्वपितः स्वपन्ति। स्वपिषि स्वपिथः स्वपिथ। स्वपिमि स्वपिवः स्वपिमः। (लङ्) अस्वपत् (or अस्वपीत्) अस्वपिताम् अस्वपन्। अस्वपः (or अस्वपीः) अस्वपितम् अस्वपित। अस्वपम् अस्वपिव अस्वपिम। (लोट्) स्वपितु स्वपिताम् स्वपन्तु। स्वपिहि स्वपितम् स्वपित। स्वपानि स्वपाव स्वपाम। (विधिलिङ्) स्वप्यात् स्वप्याताम् स्वप्युः। स्वप्याः स्वप्यातम् स्वप्यात। स्वप्याम् स्वप्याव स्वप्याम। (लृट्) स्वपिष्यति स्वपिष्यतः स्वपिष्यन्ति इत्यादि। श्वस् के रूप स्वप् की भाति होंगे—श्वसिति अश्वसीत् (or अश्वसत्) श्वसितु श्वस्यात् श्वसिष्यति

रुद् (लोट्) रोदिति रुदित रुदन्ति। रोदिषि रुदिथ रुदिथ। रोदिमि रुदिव. रुदिम । (लङ्) अरोदीत् (or अरोदत्) अरुदिताम् अरुदन् अरोदीः (or अरोदः) अरुदितम् अरुदित। अरोदम् अरुदिव अरुदिम। (लोट्) रोदितु रुदिताम् रुदन्तु। रुदिहि रुदितम् रुदित। रोदानि रोदाव रोदाम। (विधिलिङ्) रुद्यात् रुद्याताम् रुद्यु । रुद्या रुद्यातम् रुद्यात । रुद्याम् रुद्याव रुद्याम । (लृट्) रोदिष्यति रोदिष्यत. रोदिष्यन्ति इत्यादि ।

जागृ (लट्) जागर्ति जागृतः जाग्रति। जागर्षि जागृथ. जागृथ। जागर्मि जागृवः जागृम । (लङ्) अजाग अजागृताम् अजागरु । अजागः अजागृतम् अजागृत। अजागरम् अजागृव अजागृम। (लोट्) जागतु जागृताम् जाग्रतु। जागृहि जागृतम् जागृत। जागराणि जागराव जागराम। (विधिलिङ्) जागृयात् जागृयाताम् जागृयु । जागृयाः जागृयातम् जागृयात। जागृयाम् जागृयाव जागृयाम। (लृट्) जागरिष्यति जागरिष्यत जागरिष्यन्ति इत्यादि ।

विद् (लट्) वेत्ति वित्त विदन्ति। वेत्सि वित्थ. वित्थ। वेद्मि विद्व विद्म. । (लट् में विद् धातु के दो-दो रूप बनते हैं। यहा केवल सरल रूप दिया है।) (लङ्) अवेत् अवित्ताम् अविदु । अवे. (or अवेन्) अवित्ताम् अवित्त। अवेदम् अविद्व अविद्म। (लोट्) वेत्तु वित्ताम् विदन्तु। विद्धि वित्तम् वित्त। वेदानि वेदाव वेदाम । (विधिलिङ्) विद्यात् विद्याताम् विद्युः। विद्याः विद्यातम् विद्यात। विद्याम् विद्याव विद्याम। (लृट्) वेदिष्यति वेदिष्यत. वेदिष्यन्ति इत्यादि।

हन् (लट्) हन्ति हत घ्नन्ति। हंसि हथ हथ। हन्मि हन्वः हन्म. (लङ्) अहन् अहताम् अघ्नन्। अहन् अहतम् अहत। अहनम् अहन्व अहन्म। (लोट्) हन्तु हताम् घ्नन्तु। जहि हतम् हत। हनानि हनाव हनाम । (विधिलिङ्) हन्यात् हन्याताम् हन्युः। हन्याः हन्यातम् हन्यात। हन्याम् हन्याव हन्याम। (लट्) हनिष्यति हनिष्यत हनिष्यन्ति इत्यादि ।

आस् (लट्) आस्ते आसाते आसते। आस्से आसाथे आध्वे। आसे आस्वहे आस्महे। (लङ्) आस्त आसाताम् आसत। आस्था आसाथाम् आध्वम्। आसि आस्वहि आस्महि। (लोट्) आस्ताम् आसाताम् आसताम्। आस्स्व आसाथाम् आध्वम्। आसै आसावहै आसामहै। (विधिलिङ्) आसीत आसीयाताम् आसीरन्। आसीथा आसीयाथाम् आसीध्वम्। आसीय आसीवहि आसीमहि। (लृट्) आसिष्यते।

शी (लट्) शेते शयाते शेरते। शेषे शयाथे शेध्वे। शये शेवहे शेमहे। (लङ्) अशेत अशयाताम् अशेरत, अशेथा अशयाथाम् अशेध्वम्। अशयि अशेवहि अशेमहि। (लोट्) शेताम् शयाताम् शेरताम्। शेष्व शयाथाम् शेध्वम्। शयै शयावहै शयामहै। (विधिलिङ्) शयीत शयीयाताम् शयीरन्। शयीथा. शयीयाथाम् शयीध्वम्। शयीय शयीवहि शयीमहि।

अधी (अधि+इ) आत्मनेपदी है।

(लट्) अधीते अधीयाते अधीयते। अधीषे अधीयाथे अधीध्वे। अधीये अधीवहे अधीमहे। (लङ्) अध्यैत अध्यैयाताम् अध्यैयत। अध्यैथाः अध्यैयाथाम् अध्यैध्वम्। अध्यैयि अध्यैवहि अध्यैमहि। (लोट्) अधीताम् अधीयाताम् अधीयताम्। अधीष्व अधीयाथाम् अधीध्वम्। अध्ययै अध्ययावहै अध्ययामहै। (विधिलिङ्) अधीयीत अधीयीयाताम् अधीयीरन्। अधीयीथा अधीयीयाथाम् अधीयीध्वम् अधीयीम अधीयीवहि अधीयीमहि। (लृट्) अध्येष्यते इत्यादि।

ब्रू (लट्) ब्रवीति-आह ब्रूतः-आहतु ब्रुवन्ति-आहु। ब्रवीषि-आत्थ ब्रूथ-आहथु ब्रूथ। ब्रवीमि ब्रूवः ब्रूमः'। (लङ्) अब्रवीत् अब्रूताम् अब्रुवन। अब्रवीः अब्रूतम् अब्रूत। अब्रवम् अब्रूव अब्रूम। (लोट्) ब्रवीतु ब्रताम् ब्रुवन्तु। ब्रूहि ब्रूतम् ब्रूत। ब्रवाणि ब्रवाव ब्रवाम। (विधिलिङ्) ब्रूयात् ब्रूयाताम् ब्रूयुः। ब्रूया ब्रूयातम् ब्रूयात। ब्रूयाम् ब्रूयाव ब्रूयाम। (लृट्) वक्ष्यति वक्ष्यत वक्ष्यन्ति इत्यादि।

आत्मनेपद

(लट्) ब्रूते ब्रुवाते ब्रुवते। ब्रूषे ब्रुवाथे ब्रूध्वे। ब्रुवे ब्रूवहे ब्रूमहे। (लङ्) अब्रूत (लोट्) ब्रूताम् (विधि-लिङ्) ब्रुवीत (लृट्) वक्ष्यते।

स्तु (लट्) स्तौति स्तुतः स्तुवन्ति। स्तौषि स्तुथः स्तुथ। स्तौमि स्तुवः स्तुमः। (लङ्) अस्तौत् (लोट्) स्तौतु (विधिलिङ्) स्तुयात् (लृट्) स्तोष्यति।

जुहोत्यादिगण

हु (लट्) जुहोति जुहुत जुह्वति। जुहोषि जुहुथः जुहुथ। जुहोमि जुहुव जुहुम। (लङ्) अजुहोत् अजुहुताम् अजुहवु। अजुहो अजुहुतम् अजुहुत। अजुहवम् अजुहुव अजुहुम। (लोट्) जुहोतु जुहुताम् जुह्वतु। जुहुधि जुहुतम् जुहुत। जुहवानि जुहवाव जुहवाम। (विधिलिङ्) जुहुयात् जुहुयाताम् जुहुयु। जुहुया जुहुयातम् जुहुयात। जुहुयाम् जुहुयाव जुहुयाम। (लृट्) होष्यति होष्यत होष्यन्ति etc

दा (लट्) ददाति दत्त ददति। ददासि दत्थ दत्थ। ददामि दद्व दद्म। (लङ्) अददात् अदत्ताम् अददुः। अददा अदत्तम् अदत्त। अददाम् अदद्व अदद्म। (लोट्) ददातु दत्ताम् ददतु। देहि दत्तम् दत्त। ददानि ददाव ददाम। (विधिलिङ्) दद्यात् दद्याताम् दद्यु। दद्याः दद्यातम् दद्यात। दद्याम् दद्याव दद्याम। (लृट्) दास्यति दास्यत दास्यन्ति इत्यादि। 'भी' और 'हा' धातु के कई स्थानों में दो-दो रूप बनते हैं, परन्तु यहा केवल एक-एक रूप ही दिया गया है। भी (लट्) बिभेति बिभीत बिभ्यति। बिभेषि बिभीथः बिभीथ। बिभेमि बिभीवः बिभीम। (लङ्) अबिभेत् अबिभीताम अबिभयु। अबिभे अबिभीतम् अबिभीत।। अबिभयम् अबिभीव अबिभीम। (लोट्) बिभेतु बिभीताम् बिभ्यतु। बिभीहि बिभीतम् बिभीत। बिभयानि बिभयाव बिभयाम। (लृट्) भेष्यति etc.

भृ (लट्) बिभर्ति बिभृतः बिभ्रति। बिभर्षि बिभृथः बिभृथ। बिभर्मि बिभृवः बिभृमः। (लङ्) अबिभः etc. (लोट्) बिभर्तु etc. (विधिलिङ्) बिभृयात् etc. (लृट्) भरिष्यति etc.

हा (लट्) जहाति जहीतः जहति। जहासि जहीथ जहीथ। जहामि जहीव. जहीम.। (लङ्) अजहात् अजहीताम् अजहुः। अजहा अजहीतम् अजहीत। अजहाम् अजहीव अजहीम। (लोट्) जहातु जहीताम् जहतु। जहाहि जहीतम् जहीत। जहानि जहाव जहाम। (विधिलिङ्) जह्यात् etc.। (लृट्) हास्यति हास्यत हास्यन्ति etc.

स्वादिगण

शक् (लट्) शक्नोति शक्नुतः शक्नुवन्ति। शक्नोषि शक्नुथ शक्नुथ। शक्नोमि शक्नुव शक्नुमः। (लङ्) अशक्नोत् अशक्नुताम् अशक्नुवन्। अशक्नो अशक्नुतम् अशक्नुत। अशक्नवम् अशक्नुव अशक्नुम। (लोट्) शक्नोतु शक्नुताम् शक्नुवन्तु। शक्नुहि शक्नुतम् शक्नुत। शक्नवानि शक्नवाव शक्नवाम। (विधिलिङ्) शक्नुयात् शक्नुयाताम् शक्नुयुः। शक्नुया शक्नुयातम् शक्नुयात। शक्नुयाम् शक्नुयाव शक्नुयाम। (लृट्) शक्ष्यति शक्ष्यत शक्ष्यन्ति। इत्यादि।

आप और साध् के रूप भी शक् की भाति बनते हैं। (आप्) आप्नोति आप्नोत् आप्नोतु आप्नुयात् आप्स्यति। (साध्) साध्नोति असाध्नोत् साध्नोतु साध्नुयात् सात्स्यति।

श्रु (लट्) शृणोति शृणुत शृण्वन्ति। शृणोषि शृणुथः शृणुथ। शृणोमि शृणुवः शृणुम (लङ्) अशृणोत् अशृणुताम् अशृण्वन्। अशृणो अशृणुतम् अशृणुत। अशृणवम् अशृणुव अशृणुम।

(लोट्) शृणोतु शृणुताम् शृण्वन्तु। शृणु शृणुतम् शृणुत। शृणवानि शृणवाव शृणवाम। (विधिलिङ्) शृणुयात् शृणुयातम् शृणुयु। शृणुया. शृणुयातम् शृणुयात। शृणुयाम् शृणुयाव शृणुयाम। (लट) श्रोष्यति श्रोष्यत. श्रोष्यन्ति इत्यदि।

'चि' के रूप 'श्रु' की भांति होंगे। चिनोति अचिनोत् चिनोतु चिनुयात् चेष्यति।

रुधादि गण

रुध् (लट्) रुणद्धि रुन्द्धः रुन्धन्ति। रुणत्सि रुन्द्धः रुन्द्ध। रुणध्मि रुन्ध्व. रुन्ध्मः। (लङ्) अरुणत् अरुन्द्धाम् अरुन्धन्। अरुणत् अरुन्द्धम् अरुन्द्ध। अरुणधम् अरुन्ध्व अरुन्ध्म। (लोट्) रुणद्धु रुन्द्धाम् रुन्धन्तु इत्यादि। (विधिलिङ्) रुन्ध्यात् रुन्ध्यताम् रुन्ध्यु इत्यादि। (लृट्) रोत्स्यति रोत्स्यत रोत्स्यन्ति इत्यादि।

छिद् (लट्) छिनत्ति छिन्त्त छिन्दन्ति। छिनत्सि छिन्त्थ छिन्त्थ। छिनद्मि छिन्द्वः छिन्द्म.। (लङ) अच्छिनत् (लोट्) छिनत्तु (विधिलिङ) छिन्द्यात् (लृट्) छेत्स्यति।

भिद् (लट्) भिनत्ति भिन्त्तः भिन्दन्ति । भिनत्सि भिन्त्थ भिन्त्थ भिनद्मि भिन्द्व भिन्द्मः। (लङ्) अभिनत् (लोट) भिनत्तु (विधिलिङ्) भिन्द्यात् (लृट्) भेत्स्यति।

भुज् (लट्) भुनक्ति भुङ्क्तः भुञ्जन्ति। भुनक्षि भुङ्क्थ भुङ्क्थ। भुनज्मि भुञ्ज्वः भुञ्ज्मः। (लङ्) अभुनक् (लोट्) भुनक्तु (विधिलिङ्) भुञ्ज्यात् (लृट्) भोक्ष्यति। (आत्मनेपदी) लट् भुङ्क्ते भुञ्जाते भुञ्जते। भुङ्क्षे भुञ्जाथे भुङ्ग्ध्वे भुञ्जे भुञ्ज्वहे भुञ्ज्महे। (लङ्) अभुङ्क्त (लोट्) भुङ्क्ताम् (विधिलिङ्) भुञ्जीत (लृट्) भोक्ष्यते।

युज् के रूप भुज् की भांति बनते है।

तनादिगण

तन् (लट्) तनोति तनुत' तन्वन्ति। तनोषि तनुथ तनुथ। तनोमि तनुव (also तन्व)' तनुम. (also तन्म')। (लङ्) अतनोत अतनुताम् अतन्वन्। अतनो अतनुतम् अतनुत। अतनवम अतनुव (also अतन्व) अतनुम (also अतन्म)। (लोट्) तनोतु तनुताम् तन्वन्तु। तनु तनुतम् तनुत। तनवानि तनवाव तनवाम। (वि[illegible] तनुयात् तनुयाताम् तनुयु.। इत्यादि (लट्) तनिष्यति त[illegible] तनिष्यन्ति इत्यादि।

कृ (लट्) करोति कुरुतः कुर्वन्ति। करोषि कुरुथः कुरुथ। करोमि कुर्वः कुर्मः। (लङ्) अकरोत् अकुरुताम् अकुर्वन्। अकरो. अकुरुतम् अकुरुत। अकरवम् अकुर्व अकुर्म। (लोट्) करोतु कुरुताम् कुर्वन्तु। कुरु कुरुतम् कुरुत। करवाणि करवाव करवाम॥ (विधिलिङ्) कुर्यात् कुर्याताम् कुर्युः। कुर्याः कुर्यातम् कुर्यात्। कुर्याम् कुर्याव कुर्याम। (लृट्) करिष्यति करिष्यतः करिष्यन्ति। करिष्यसि करिष्यथः करिष्यथ। करिष्यामि करिष्यावः करिष्यामः।

आत्मनेपद

(लट्) कुरुते (लङ्) अकुरुत (लोट्) कुरुताम् (विधिलिङ्) कुर्वीत (लृट्) करिष्यते।

क्रयादिगण

क्री (लट्) क्रीणाति क्रीणीतः क्रीणन्ति। क्रीणासि क्रीणीथः क्रीणीथ। क्रीणामि क्रीणिव· क्रीणीमः। (लङ्) अक्रीणात् अक्रीणीताम् अक्रीणन्। अक्रीणाः अक्रीणीतम् अक्रीणीत। अक्रीणाम् अक्रीणीव अक्रीणीम। (लोट्) क्रीणातु क्रीणीताम् क्रीणन्तु। क्रीणीहि क्रीणीतम् क्रीणीत। क्रीणानि क्रीणीव क्रीणीम। (विधिलिङ्) क्रीणीयात् क्रीणी-याताम् क्रीणीयु। क्रीणीयाः क्रीणीयातम् क्रीणीयात। क्रीणीयाम् क्रीणी-याव क्रीणीयाम। (लृट्) क्रेष्यति क्रेष्यतः क्रेष्यन्ति इत्यादि।

ज्ञा (लट्) जानाति जानीत जानन्ति। जानासि जानीथ जानीथ। जानामि जानीवः जानीमः। (लङ्) अजानात् अजानीताम् अजानन्। अजाना. अजानीतम् अजानीत। अजानाम् अजानीव अजानीम। (लोट्) जानातु जानीताम् जानन्तु। जानीहि जानीतम् जानीत। जानानि जानीव जानीम। (विधिलिङ्) जानीयात् जानीयाताम् जानीयुः। जानीयाः जानीयातम् जानीयात। जानीयाम् जानीयाव जानीयाम। (लृट्) ज्ञास्यति ज्ञास्यतः ज्ञास्यन्ति। ज्ञास्यसि ज्ञास्यथः ज्ञास्यथ। ज्ञास्यामि ज्ञास्याव ज्ञास्याम.।

हिन्दी-संस्कृत कोष

अकेला (वि) एकल, एकाकिन्, केवल

अग्नि (स) अग्नि m, पावक, अनल, वह्नि', कृशानु', हुतभुक्, उषर्बुध All are m.

अंग (स) अंगं, अवयव', गात्रं

अंगड़ाई (स) जृंभ', जृंभा, जृंभं, जृंभणं

अंगड़ाई लेना (क्रि) जृंभ् 1a. (जृंभते)

अंगूठी (स) अंगुलीय, अंगुलीयक, मुद्रा

अंगूर (स) [बेल अथवा फल] मृद्वी f, मृद्वीका, द्राक्षा

अच्छा (वि) वर, साधु, शुभ, योग्य, उचित

अचानक (क्रि. वि) अकस्मात् सहसा

अचम्भा (स) आश्चर्यं, अद्भुतं, कौतुकं

अजगर (स) अजगर., वाहस

अजनबी (स) आगंतुक, अपरिचित', वैदेशिक

अड़ोस-पड़ोस (स) प्रतिवेश.

अतिथि (स) अतिथिः, अभ्यागतः, गृहागत., आवेशिक.

अतिथि-सत्कार (स) अतिथि सत्कार, आतिथ्यं, आतिथेयं

अतिथि-सत्कार करने वाला (वि) आतिथेय, (आतिथेयी f)

अतिरिक्त (क्रि. वि.) विना, ऋते, अंतरा, अंतरेण, वर्जयित्वा।

अत्यन्त (क्रि. वि.) अत्यन्तं, अतीव अतिमात्रं, अत्यर्थं, एकान्तं, नितान्तं, भृशं

अत्याचार (स) अत्याचारः, पापं, निर्दयता

अद्भुत (वि) अद्भुत, आश्चर्य, विचित्र, विस्मयकारक

अधिकार (स) अधिकारः, स्वत्व', स्वाम्यं, प्रभुत्वं

अध्ययन करना (क्रि) अधि-इ 2a, पठ् 1p, शिक्ष् 1a, परिशील् 10u

अनजान (वि) अज्ञ, अनभिज्ञ, अपरिचित, असंविदान

अनपढ़ (वि) निरक्षर, अशिक्षित, अनक्षर

अनमना (वि) उन्मनस्, उन्मनस्क, चिन्तामग्न, उद्विग्न

अनाज (सं) अन्न, धान्य

अनाड़ी (वि) अकुशल, अपटु, अनिपुण

अनार (स) [फल] दाडिम [पेड़] दाडिम ।

अनुमान करना अनुमा 2p, 3a, ऊह् la, उत्प्रेक्ष् la

अनुमोदन करना समर्थ् 10u, अनुमुद् la, अभिनंद् lp.

अन्दर (क्रि वि.) अभ्यन्तर, अभ्यन्तरे, अन्तरे

अंधा (वि) अन्ध

अंधेरा (स) अन्धकारः, तमः n (तमस्) तिमिरं, ध्वान्तं

अपना (वि) निज, स्व, स्वकीय, आत्मीय

अपमान करना अवज्ञा 9p, अपमन् c, अवमन् c,

अवमन् 4a, अवगण् 10p

अपराध (स) अपराधः, दोष, स्खलन, आगः n (आगस्)

अपराध करना अपराध् 4p (with loc or gen)

अब (क्रि वि) इदानीं, अधुना, सम्प्रति, साम्प्रत

अफवाह (स) किंवदन्ती f, जनश्रुति f, जनप्रवाद.

अभागा (वि) मन्दभाग्य, अधन्य

अभिप्राय (स) अभिप्राय आशय, भाव, अर्थ, प्रयोजनं

अभिमान तोड़ना अभिभू lp.

अभिषेक करना अभिषिच् 6p

अभ्यास करना अभ्यस् 4u

अमानत (स) न्यासः, निक्षेपः, उपनिधिः m

अमानत रखना न्यस् 4p, (न्यस्यति), निक्षिप् 6p

अस्पताल (स) चिकित्सालयः, आतुरालयः, आतुरशाला

अर्पण करना ऋ c (अर्पयति etc.), समृ c (समर्पयति etc.), दा lp, 3u, न्यस् 4p.

अहीर (स) आभीर, गोप, गोपालः, बल्लव

आंख (स) नेत्रं, नयनं, लोचनं, अक्षि n, चक्षुः n (चक्षुस्), दृष्टिः f, दृक् f

आंत (स) अन्त्रं

आसू (स) अश्रु n, अस्रु n, वाष्प

आंसू बहाना (क्रि) रुद् 2p विलप् lp, परिदेव् lp, अश्रूणि मुच्

आंधी (स) झंझावात, प्रभजनः, वात्या

आकर्षण करना आकृष् 1p
आक्रमण (स) see हमला
आक्रमण करना आक्रम 1p, अवस्कन्द् 1p (अवस्कन्दति), अभिया 2p, अभिद्रु 1p
आखेट (स) आखेटः, मृगया
आग See अग्नि above
आगे (क्रि वि.) अग्रे, अग्रत., पुर, पुरत.
आग्रह (स) आग्रह' निर्बन्ध.
आदत (स) अभ्यास, शील, वृत्ति f
आधा (वि) अर्ध
आन की आन मे—सद्य, सपदि, तत्काल, तत्क्षणं
आनाकानी (स) पराङ्मुखता, अरुचि f व्यपदेश
आन्दोलन (स) आन्दोलनं, उपप्लव', सक्षोभः
आपस में (क्रि. वि.) अन्योन्यं, परस्परं, मिथ
आभारी (वि) कृतज्ञ, उपकारवेदिन्
आरम्भ (स) आरभ, उपक्रमः, प्रक्रमः, उद्घात, आदि. m
आरम्भ करना—आरभ्—प्रारभ् 1 a, प्रतु 2 u, उपक्रम्—प्रक्रम् 1 a.
आय (स) आयः, उदयः, आगम.
आरसी (स) आदर्श., दर्पण, मुकुरः
आराम (स) (१) सुख. शर्मन् n, विश्राम, विश्रांति. f, शांतिः f, विराम, (२) स्वास्थ्य
आराम करना—विश्रम् 4 p, (कार्याद्) विरम् 1 p, शी 2 a, सविश् 6 p.
आलसी (वि) अलस, आलस, अलस्य, आलस्य, अनुद्योगिन्, तुन्दपरिमृज-मृज्, तुन्दपरिमार्ज
आलोचना (स) गुणदोषनिरूपणं, गुणागुणविमर्शः
आलोचना करना—(गुणागुणं) परीक्ष् 1 a, विविच् 7 u, विमृश् 6 p
आवश्यकता (स) आवश्यकता, प्रयोजनं
आवाज़ (स) शब्द, ध्वनि m. स्वन, निस्वन'
आशा करना—आशास् 1 a, आशास् 2 a, विश्वस् 2 p
आशीर्वाद देना—आशास् 2 a, आशिषं वितॄ 1 p.

आसक्त होना—आसज् pass, आकृष् pass, भावं (or अनुरागं) बंध् 9p, अनुरंज् 4 u.
आस-पास (क्रि. वि.), अभित· परित ,समीपं, समीपे, निकषा समया, अन्तिकं अन्तिके
आसान (वि) सुकर,सुगम, सुबोध, सुसाध्य, अनायास
आसानी (स) अनायास., सौकर्यं, सुखं ।
आहिस्ता (क्रि. वि.) शनै ,मन्द
इकट्ठ (सं) समुदायः, समूह
इकट्ठा करना संग्रह् 9p, संचि 5p, समाहृ 1p,
इच्छा (स) इच्छा, मनोरथ., कामः, अभिलाषः, वाञ्छा, स्पृहा, ईहा, ईप्सा, कामना
इच्छा करना इष् 6p, ईह् 1a, कम् 1a, अभिलष् 1p, 4p; आकाङ्क्ष् 1u, स्पृह् 10 u (with Dat)
इठलाना दृप् 4p, अवलिप् 6 (pass)
इतना (वि) इयन् , एतावत्
इनकार करना न अगीकृ न उरीकृ, प्रत्याख्या 2p, विहन् 2p, प्रत्यादिश् 6p
इतिहास (स) इतिहास , पुरावृत्त
इरादा (स) निश्चयः, निर्णयः, संकल्प , अध्यवसाय.
इलाज (स) प्रतिकारः, प्रतीकार., प्रतिक्रिया, उपचार·, चिकित्सा
इलाज करना कित् 1p (चिकित्सति), प्रतिकृ 8u, उपशम् c
इशारा (स) सकेत , इंगितं, सूचना
इशारा करना उद्दिश् 6p, निर्दिश् 6p, सूच् 10u, लक्ष् 10 u, व्यज् 7p, उपक्षिप् 6p.
ईंट (स) इष्टका
ईंधन (स) इन्धनं, समिध् f, एधः इध्म , इन्ध.
उकताना खिद् 4a, निर्विद् 4a, उद्विज् 6a, ग्लै 1p (ग्लायति)
उकसाना उत्तिज् c, उद्दीप् c, प्रेर् c प्रचुद् c, प्रोत्साह् c, प्रवृत् c,
उखाड़ना उन्मूल 10u, उत्पट् 10u, उच्छिद् 7p
उगना (क्रि) जन् 4a (जायते) रुह् 1p, उद्भू 1p, उत्पद् 4p, उद्भिद् 7 (Pass)
उगलना (क्रि) वम् 1p, उद्वम् 1p उद्गॄ 6p (उद्गिरति etc)

उचक्का (स) कितव., धूर्त, वञ्चकः
उचित (वि) उचित; युक्त, उत्पन्न
उछलना (क्रि) उत्पत् 1p, प्लु 1a, उत्प्लु 1a, वल्ग् 1u
उजड़ना (क्रि) नश् 4p, अवसद् 1p (अवसीदति), ध्वंस् 1a.
उजाड (स) निर्जनं, शून्यस्थानं, वनं, अरण्य
उजाला (स) उज्ज्वला, प्रकाशः, आलोकः, ज्योतिस् n
उठना (क्रि) उत्था 1p (उत्तिष्ठति) उदि 2p (उदेति), उद्गम् 1p आरुह् 1p, अधिरुह् 1p.
उडना (क्रि) डी 1a उड्डी 1a (उड्डयते), डी 4a (डीयते), उत्पत 1p
उतरना (क्रि) अवतॄ 1a अवरुह् 1a
उतावला (वि) चंचल, अधीर, चपल, उत्सुक, (अविमृश्यकारिन् m)
उत्तर देना प्रतिवद् 1p, प्रतिभाष् 1a, प्रतिवच् 2p (प्रतिवक्ति)
उत्पन्न होना जन् 4a, भू, प्रभू, उद्भू 1p. उद्भिद् 7 (Pass) उत्पद् 4a, सृज् 6 (Pass)
उत्पन्न करना जन् c, सू 2a (सूते), सू 4a (सूयते), प्रसू 2a, 4a.
उत्सव (स) See जलसा
उथल-पुथल (स) विप्लव., व्यस्तता, अव्यवस्था, क्रमभंगः, व्युत्क्रम.
उदास (वि) खिन्न, उद्विग्न, दुर्मनस्क, विषण्ण
उदासीन (वि) उदासीन, तटस्थ, निष्पक्ष, निरपेक्ष, मध्यस्थ, निस्पृह
उद्देश्य (स) उद्देश्यं. उद्देशः लक्ष्यं, लक्षं, प्रयोजन, तात्पर्य, अभिप्रायः
उद्यम करना आयस् 4p प्रयत्
उद्योग करना 1a, श्रम् 4p
उद्धार करन उद्धृ 1p परित्रै 1a (परित्रायते)
उधार (स) ऋणं, उद्धारः, पर्युदंचनं
उपकार करना उपकृ 8u, अनुग्रह् 9p.
उपजाऊ (वि) उर्वर, अवन्ध्य,
उपदेश करना उपदिश् 6p, अनुशास् 2p, बुध् c.
उपयोगी (वि) उपयोगिन्, उपयुक्त, उपकारक

उपस्थित होना उपस्था 1u
उपहार देना उपहृ 1p, ऋc (अर्पयति), उत्सृज् 6p
उपढौक् c, वितॄ 1p (वितरति)
उपाय (स) उपाय , साधनं, प्रकारः
उपेक्षा करना उपेक्ष् 1a, अवधीर् 10u, अवगण् 10u, प्रमद् 4p (with abl. or loc.)
उबासी (स) see अंगड़ाई
उलझन (स) व्यामोह, संभ्रमः, प्रहेलिका
(काम मे) उलझना (कर्मणि) व्यापृ 6a, (व्याप्रियते)
उलटना (क्रि) अधोमुखी भू , अधोमुखी कृ, पर्यस् 4a, विपर्यस् 4a, व्यत्यस् 4a.
उलटा (वि) विपरीत, प्रतीप, व्यस्त, पर्यस्त
उलाहना (स) उपालंभः
उलाहना देना उपालभ् 4a, निन्द् 1p
उलथा (स) अनुवादः, भाषान्तरं
उलथा करना (भाषान्तरेण) परिवृत् c, विपरिणम् c
उल्लंघन करना उल्लंघ् 1a 10u, अतिक्रम् 1u, 4p,
(आज्ञा etc. का) उल्लंघन करना (आज्ञा) उल्लंघ् , अतिक्रम्
ऊंघना (क्रि) तन्द्रया अभिभू pass
ऊँचा (वि) उच्च , उन्नत, उच्छ्रित, तुङ्ग, प्रांशु
ऊँचाई (स) उच्छ्रय उच्छ्रायः, उत्सेध, उच्चत्वं, प्रांशुत्वं, आरोहः
ऊटपटांग (वि) असम्बद्ध, असंगत, अप्रासगिक,
ऊधम (स) उत्पात , उपद्रव.,
ऊबना (क्रि) See उकताना
ऋण (सं) See उधार, कर्ज
एकदम (क्रि वि.) युगपत्, समकालं, अकस्मात्
एकत्र करना See इकट्ठा करना
एतराज (स) आक्षेप , प्रतिक्षेपः, परिवादः, परीवाद. अपवादः, दोषः, अननुमोदनं आशंका
ऐंठ (सं) गर्व दर्पः अवलेपः, आटोप , मदः
ओट (स) व्यवधानं, आच्छादनं, आवरणं, गोपनं, निह्नवः,
ओछा (वि) क्षुद्र, कदर्य, कृपण
ओझल होना तिरोधा 3u, अन्तर्धा 3u, तिरोभू 1p, विली

Pass, or 4a. (विलीयते)
ओढ़ना (क्रि) वेष्ट् 1a, परिवेष्ट्,
आच्छद् 10p (आच्छादयति)
ओला (स) करक , करकं, करका,
वर्षोपल
ओस (स) प्रालेयं, तुहिन, तुषारः
नीहारः
कंगाल (वि) दरिद्र, निर्धन, निःस्व,
अकिंचन
कंघी (स) कंकत -त, कंकती,
कंकतिका, प्रसाधनी f
कच्चा (वि) अपक्व अपरिणत, आम
कंजूस (वि) कृपण, कदर्य, अनुदार,
अवदान्य
कठिन (वि) दुष्कर, दुःसाध्य
कठिनाई (वि) बाधा, प्रतिबन्धः,
विघ्नः
कठोर (वि) कठोर, कठिन, कर्कश,
क्रूर, निष्ठुर
कड़वा (वि) कटु
कंधा (स) अंस
कपड़ा (स) वस्त्रं, वासस् n, वसनं,
अंशुक
कमर (स) कटिः=कटी f, मध्यं,
मध्य.
कमरा (सं) अगारं, शाला, कोष्ठः
कमाना (क्रि) अर्ज्, उपार्ज् 1p,
10u, प्राप् 5p.
कर्ज=कर्जा (स) ऋणं, पर्युदंचनं,
see. उधार
कर्जा उतारना (क्रि) ऋणं शुध् c
(शोधयति)
कलसा (स) कलश , कुंभः, घटः
कल्पना करना उत्प्रेक्ष् 1a, ध्यै
1p, चिंत् 10u, तर्क् 10u, मन्
4a.
कसवटी (स) कषः, निकषः,
शाणः
कहना (क्र) कथ् 10u, ख्या,
आख्या 2p, चक्ष् 2a (चष्टे),
अभिधा 3u, निविद् c. see
बोलना
कहानी (स) कथा, आख्यानं
कहावत (स) लोकोक्तिः f,
आभाणक.
काटना (क्रि) कृत् 6p (कृन्तति),
छिद् 7p (छिनत्ति), भिद्
1p (भिंदति), 7u (भिनत्ति,
भिंत्ते)
कांपना (क्रि) कम्प् 1a, वेप् 1a,
स्पन्द् 1a.
काफिला (सं) सार्थ.

काफ़ी (वि) पर्याप्त, यथेष्ट, यथेप्सित, प्रचुर, बहुल, प्रभूत
काम-धन्धा (स) व्यवसायः, व्यापारः,
कारखाना (स) कर्मशाला, प्रावेशनं
कारीगर (स) शिल्पिन् m, शिल्पकारः, कारुः m
काला (वि) कृष्ण, नील, काल, श्याम, असित
किनारा (स) कूलं, तीर, तट, तट, तटा f, तटी f, रोधस् n
किराया (स) भाटं, भाटकं
किला (स) दुर्ग, दुर्ग, कोटः
किवाड़ (स) कपाटः कपाटं
किश्ती (स) नौ f, नौका f, तरणिः =तरणी f, तरिः=तरी f, पोतः (छोटी किश्ती=) उडुपं, प्लवः
कीचड़ (सं) पंक, कर्दमः
कीमत (स) मूल्यं, अर्घः, पण्यः
कील (स) कीलः शंकुः m.
कुआं (स) कूप, उदपान
कुंजी (सं) कुंचिका, उद्घाटकः
कुचलना (कि) मृद् 9p (मृद्नाति)
कुटिया (सं) कुटिः=कुटी f, कुटीरः, कुटीरं, उटजः, उटजं
कुढ़ना (क्रि) ईर्ष्य् lp, असूयति Den.
कुत्ता (स) कुक्कुर., सारमेय, श्वा (श्वन् m)
कुम्हलाना (क्रि) म्लै lp (म्लायति), ग्लै lp (ग्लायति)
कुर्सी (स) विष्टरः, आसनं, पीठ
कूड़ा (सं) अवस्करः, मलः, मलं
कूदना (क्रि) कूर्द् lu, see उछलना
कैद (स) कारावासः, निरोधः, आसेधः
कैदी (स) वंदिन्=बंदिन m, बंदिः =बंदी f
कोसना (क्रि) आक्रुश् lp, गर्ह् lu 10u, अभिशप् lu, गुप् la (जुगुप्सते)
कौड़ी (स) वराट., वराटक
क्लर्क (स) लिपिकर, लिपिकारः कायस्थः, लेखक
क्षय होना (क्रि) क्षि (pass क्षीयते); ह्रस् lp ह्रसति, अपचि, pass अपचीयते)
खजाना (सं) निधि m, कोश., कोशं, कोष, कोषं, शेवधिःm
खट्टा (वि) अम्ल

खण्डन करना खंड् 10p प्रत्याख्या 2p, निरस् 4p, निराकृ 8u
खण्डहर (स) भग्नावशेष
ख़तरा (स) भयं, भीति f, त्रास
ख़बर (स) समाचार, वार्ता, वृत्तांत, वृत्तं, उदन्त, प्रवृत्तिः f
खरीदना (क्रि) क्री 9u (क्रीणाति, क्रीणीते), पण् 1a (पणते)
खाई (स) परिखा, खात
खाट (स) खट्वा, पर्यङ्क
खान (स) खनि = खनी f, खानि f, आकर
खाना (क्रि) खाद् 1p, अद् 2p (अत्ति), अश् 9p, भक्ष् 10p, भुज् 7a (भुङ्क्ते), अभ्यवहृ 1p
खाना (स) भोजन, भोज्य, अशन, आहारः, अभ्यवहार
खाली (वि) रिक्त, शून्य
खिड़की (स) वातायनं, गवाक्ष
खिसकना (क्रि) सृ 1p, अपसृप् 1p, प्रस्खल् 1p
खीजना (क्रि) दू 4a (दूयते) खिद् 4a (खिद्यते), तम् 4p (ताम्यति), विषद् 1p विषीदति
खींचना (क्रि) कृष् 1p, वह् 1p, नी 1p
खुशामद (स) चाटु n चाटु चाटूक्तिः f
खेत (स) क्षेत्र
खेती (स) कृषि f, कृषिकर्मन् n
खेल (स) क्रीडा, खेला, केलि f
खेलना (क्रि) क्रीड् 1p, खेल् 1p
खोजना (क्रि) अन्विष् 4p (अन्विष्यति), गवेष् 1a, 10p, मृग् 4p, 10a, मार्ग् 1p, 10u.
खोदना (क्रि) खन् 1p
खोलना (क्रि) व्यादा 3u, अपावृ 5p (अपावृणोति), उद्घट् c
गवार (स, वि) ग्राम्य, ग्रामीण, असभ्य. प्राकृत, अशिष्ट
गढ़ा (स) गर्त, गर्त, खातं
गन्दा (वि) मलिन, आविल, कलुष
गलती (स) भ्रम, भ्रांति f, प्रमाद, दोष, स्खलितं
गलती करना भ्रम् 4p, स्खल् 1p, प्रमद् 4p
गहरा (वि) अगाध, गभीर, गंभीर गहन
गाना (क्रि) गै 1p (गायति,

गाना (स) गानं, गेयं, गीतं, गायनं
गाली देना (क्रि) अपभाष् 1 a, अपवद् 1 u कुत्स् 10 a, (कुत्सयते)
गिरना (क्रि) गण् 10 u, संख्या 2 p.
गिरना (क्रि) पत्, अवपत् 1 p, भ्रंश् 1 a (भ्रंशते), भ्रंश् 4p. (भ्रश्यति), च्युत 1 p. (च्योतति)
गीदड़ (सं) शृगालः, गोमायुः m, क्रोष्टु, जंबुकः, जंबूकः
गुच्छा (स) गुच्छ गुच्छक स्तबक
गुज़ारा (स) निर्वाह, जीविका, आजीविका, आजीवः, वृत्ति f
गुज़ारा करना जीव् 1 p, वृत् 1 a, निर्वह् 1 p.
गुफा (स) गुहा, दरी f, कंदरः, कंदरं, गह्वरं
गुस्ताख़ (वि) धृष्ट, उद्धत, प्रगल्भ
गेंद (स) कंदुक
गोद (स) अंक, उत्संग, क्रोडं
गोरा (वि) गौर, शुक्ल, सित, श्वेत
गोल (वि) गोल, वर्तुल, गोलाकार मंडलाकार
ग्रहण लगना (क्रि) उपरंज् 4 u, ग्रस् pass ग्रह् pass
घड़ा (स) see—कलसा
घबराना (क्रि) क्षुभ् 1 a (क्षोभते), 4 p (क्षुभ्यति), आकुलीभू, संभ्रम् 1 p, 4 p.
घबराहट (सं) क्षोभः, आकुलता. संभ्रम
घमंड (स) अहंकारः, अभिमानः, see also ऐंठ
घमण्ड करना (क्रि) गल्भ्, प्रगल्भ् 1 a (प्रगल्भते), कथ्, विकत्थ् 1 a (विकत्थते) see also इठलाना
घमण्ड तोड़ना (क्रि) अभिभू 1 p, परिभू 1p, न्यक्कृ 8u
घर (स) गृह, गेहं, भवनं, सदन, निकेतनं, आलय आलयं, निलय, वेश्मन् n, सद्मन् n, धामन् n, आवास
घरेलू (वि) गृह्य, गृहवर्धित
घसीटना (क्रि) see खींचना
घाटा (स) हानि f, अपचयः, नाश
घायल (वि) क्षत, विक्षत, व्रणित
घाव (स) क्षतं क्षतिः f, व्रणः
घास (स) तृणं, घास, शाद, शष्पं

घिसना (क्रि) घृष् 1p (घर्षति etc)

घी (स) घृत, आज्यं, सर्पिस् n

घूमना (क्रि)(सैर करना=)क्रम 1p 4p, परिक्रम् 1u, विहृ 1p, (चक्कर काटना=) परिपत 1p परिवृत् 1a, परिक्रम् 1p

घोषित करना घुष् 1p, 10 u, उद्घुष्, प्रख्या c

घौंसला (स) नीड., नीड, कुलाय, कुलाय, निलय

चखना (क्रि) स्वद् 1a, स्वाद् 10u, आस्वाद् 10u, रस् 10u

चढ़ना (क्रि) रुह, आरुह, अधिरुह् 1p, (सूर्य आदि का चढ़ना=) उदि 2p, आक्रम् 1a

चतुर (वि) चतुर, दक्ष, पटु, निपुण निष्णात, विचक्षण, विदग्ध, पेशल

चन्दन (स) चन्दन, मलयज

चन्दोवा (स) वितान, वितानं, आच्छादनं, उल्लोचः

चमक (स) दीप्तिः, द्युति., भा, भास्, प्रभा, त्विष्, रुच् रुचा, रुचिः, रुची All f, रोचिस n

चमकना (क्रि) दीप् 4a, द्युत्, उद्द्युत् 1a; भा, विभा 2p, दिव् 4p (दीव्यति), रुच् 1a, (वि राज् 1u, भ्राश् 1a, (वि) भ्राज् 1p

चमकीला (वि) भासुर, भास्वर, भास्वत्, उज्ज्वल, देदीप्यमान, दीप्तिमत, द्युतिमत्, रुचिर, (बहुत चमकीला=) रोचिष्णु, भ्राजिष्णु

चमड़ा (स) त्वच् f, चर्मन n, अजिनं, कृत्ति f

चमत्कार(स)चमत्कार, चमत्कृतिः f see also अचम्भा

चम्पत होना (क्रि) पलाय् 1a धाव् 1p, see also ओझल होना

चरना (क्रि) चर्व् 1p, चर् 1p

चसका (स) आस्वाद, आसक्ति f, अभिनिवेशः (used with loc)

चहकना, चहचहाना कूज् 1p, रु 2p (रौति, etc रवीति etc.) रट् 1p

चहलपहल (स) जनसंपातः, जन-समुदाय·

चांद (स) चन्द्रः चन्द्रमस् m क्षपाकर., निशाकर इन्दुः m विधु· m, सुधांशुः शशाङ्क.,

मृगाङ्क, etc. शशिन् m
चांदनी (स) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी f, चन्द्रप्रभा
चांदी (स) रजत, रूप्यं, कलधौत (=gold also)
चादर (स) पट, प्रच्छद, प्रच्छदपट
चापलूसी (स) see खुशामद
चाल-चलन (स) चरित, चरित्रं, आचारः, आचरणं, वृत्त
चालाक (वि) see चतुर
चाहना (क्रि) see इच्छा करना
चिनगारी (सं) स्फुलिंग, स्फुलिंग, स्फुलिंगा, अग्निकणः
चिकना (वि) चिक्कण, स्निग्ध, मसृण, श्लक्ष्ण
चिकित्सा (स) see इलाज
चिट्ठी (स) पत्रं, लेख, लेख्य
चितकबरा (वि) चित्र, कुर्बुर, कर्बुरित, शबल, नानावर्ण, कल्माष
चित्र (सं) चित्रं, आलेख्य, प्रतिमा
चित्र बनाना (क्रि) अलिख् 6 p, चित्र् 10 u.
चिथड़ा (स) चीरं चीवर, कर्पट, कर्पटं, पटच्चरं

चिल्लाना (क्रि) आक्रन्द् 1 u, उत्क्रुश् 1p (उत्क्रोशति), रु 2p (रौति or रवीति etc)
चीरना (क्रि) विदॄ 10u (विदारयति-ते), विपट् 10 u
चुगली (स) परोक्षनिन्दा f, पैशुन, पैशुन्य, पिशुनता
चुंधियाना (क्रि) दृष्टि प्रतिहन् 2p
चुनना (क्रि) वृ 5 u (वृणोति, वृणुते), वृ 9 u (वृणाति, वृणीते) वृ 10 u (वरयति-ते)
चुप (वि) मूक, मौनिन्, तूष्णीक, अवाच्
चुपचाप (स) मौनं, निःशब्दता, मूकता, अभाषण
चुभाना (क्रि) व्यध् 4p (विध्यति) विध् 6p (विधति)
चुराना (क्रि) चुर् 10 u, मुष् 9p, स्तेन् 10u
चूक (स) see गलती
चूर-चूर करना चूर्ण् 10 u क्षुद् 7 u, पिष् 7 p. (पिनष्टि)
चूल्हा (सं) चुल्लि f, चुल्ली f, अश्मन्तं

चूमना (क्रि) चुम्ब् 1 p, धे 1 p (धयति)

चूहा (स) मूषः, मूषक मूषिक, आखु., उन्दरः, उन्दुरुः All m

चेतावनी (स) पूर्वप्रबोधन

चेला (स) शिष्य., छात्र, अन्तेवासिन् m

चोंच (स) चञ्चुः f, चंचू f, त्रोटिः f, त्रोटी f

चोट (स) आघात, प्रहार

चोर (स) चोरः, चौर, तस्कर, स्तेन., पाटच्चर.

चौराहा (स) चतुष्पथ, शृङ्गाट, शृंगाटकं

चौड़ा (वि) आयत, पृथु, विशाल, विस्तीर्ण

छकड़ा (स) शकट. शकटं, वाहनं

छड़ी (स) दंड, दण्ड, यष्टि f

छत (स) छदि f, छदिस् n, पटलं

छलनी (स) चालनी f, तितउ m

छलांग लगाना (क्रि) see कूदना, उछलना

छाती (स) वक्षस् n उरस् n, वक्ष.स्थलं

छाया, (स) छाया, प्रच्छाय

छिपना (क्रि) निली 4A (निलीयते) see also ओझल होना

छिपाना (क्रि) गुप् 1p (गोपायति), अपन्हु=निन्हु 2a (निन्हुते etc), प्रच्छद् 10u, गुह् 1u (गूहति-ते)

छीनना (क्रि) आच्छिद् 7u, अपहृ 1p, आमृश् 6p

छुटकारा (स) मोक्ष, मुक्ति f, निस्तार

छुट्टी (स) अवकाश, (पढ़ने से छुट्टी=) अनध्यायः, अनध्यायदिवस.

छूना (क्रि) स्पृश् 6p, आमृश् 6p, परामृश्

छोड़ना (क्रि) त्यज्, परित्यज् 1p, मुच् 6p, उज्झ् 6p, हा 3p (जहाति)

जंगल (स) वनं, अरण्यं, विपिनं, काननं, अटवि, f, अटवी f

जंगली (वि) वन्य, आरण्यक

जँचना (क्रि) घट् 1A,

जंजाल (स) बन्धनं

जन्म (सं) जन्मन् n, उत्पत्ति f भव, प्रभवः, उद्भव., जनन, जनि f, जनी f, जनुस् n

जन्म लेना see उत्पन्न होना
जमघट (स) जनसमुदायः, जनसंमर्द, समूहः
जलना (क्रि) ज्वल् 1p, दह् pass. (दह्यते)
जलाना (क्रि) दह् 1p, ज्वल् c (ज्वालयति), तप् 1p 10u or c
जलसा (स) (१) उत्सव, मह m, महस् n, पर्वन् n; (२) अधिवेशन, सम्मेलनं, गोष्ठि· f गोष्ठी f, परिषद् f, सभा, समज्या, मेला f
जलूस (स) यात्रा
जवान (वि स.) युवन् m (युवा etc.) , तरुण, वयस्थः, वय स्थः
जवानी (स) यौवनं, तारुण्यं
जहाज़ (स) see किश्ती
जानना (क्रि) ज्ञा 9u (जानाति, जानीते), अवगम् 1p, अव-इ 2p (अवैति), विद् 2p (वेत्ति) बुध् 1u (बोधति, बोधते), बुध् 4A (बुध्यते)
जानकार (वि) अभिज्ञ, प्राज्ञ, अनुभविन m, विज्ञ, विदग्ध
जानकारी (स) अनुभवः, अभिज्ञानं
जायदाद (सं) संपत्ति· f, रिक्थं, ऋक्थ
जाल (स) जालं, जालकं, पाश, वागुरा
जासूस (स) चरः, चार, अपमर्प, प्रणिधिः m, गूढपुरुष
जीतना (क्रि) जि 1p, पराजि 1a
जीना (क्रि) जीव् 1p, प्राण् 2p (प्राणिति); श्वस् 2p श्वसिति) also उच्छ्वस् 2p, धृ 6a (ध्रियते)
जुटाना (क्रि) संभृं 3u (सबिभर्ति , संबिभृते) see इकट्ठा करना
जूठन उच्छिष्ट, अवशेष
जोखिम (स) आशंका, सशयः अपायः, कृच्छ्र see ख़तरा
जोड़ना (क्रि) युज् 7u (युनक्ति, युङ्क्ते) also संयुज् 7u, युज् 10u (योजयति-ते), also सयुज् 10u, घट् or संघट् c (घटयति etc.), संधा 3u
जोड़ा (स) युगं, युगलं, युग्मं, द्वन्द्वं, मिथुन
जोतना (क्रि) see जोड़ना

झगड़ना (क्रि) विवद् 1a (विवदते)
झंडा (स) ध्वज , पताका, केतन, केतु m
झाड़ू (स) वैजयन्ती f see बुहारी
झिझक (स) अनिश्चयः, विकल्प , विचारः
झिझकना (क्रि) विमृश् 6p, विक्लृप् 1a (विकल्पते), विचर् c
झिड़कना (क्रि) भर्त्स 10a (भर्त्सयते), also निर्भर्त्स्, अधिक्षिप् 6p. तज् 1p, 10u
झुकना (क्रि) नम् 1p, अवनम्
झूठ (स) अनृतं, असत्यं, वितथं
झूठा (वि) वितथ, असत्य
झूठ बोलने वाला (स) अनृतवादिन् m
झूला (स) दोल , दोला, प्रेंखा, हिंदोल
टकराना (क्रि) संघट्ट् 1a, संघृष् 1p
टक्कर (स) संघट्ट , संघट्टनं, संघट्टना, समर्द
टपकना (क्रि) स्यंद् 1a, श्चुत् 1p (श्चोतति), च्युत 1p (च्योतति), च्यु 1a (च्यवते), क्षर् 1p, स्रु 1p (स्रवति)

टहनी (स) शाखा, विटप
टहलना (क्रि) See घूमना
टहलना (स) चक्रम ,चंक्रमा, चक्रमणं, विहार , विहरणं
टालमटोल (स) व्यपदेश ,वाक्छलं, व्याज
टुकड़ा (स) शकल , शकलं, खंड , खंडं, लव , अंश
टूटना (क्रि) त्रुट् 4p, 6p (त्रुट्यति, त्रुटति), स्फुट् 6p, दल् 1p भिद् pass, भंज pass (भज्यते)
टेढा (वि) वक्र, कुटिल जिह्म, अराल
टोकरी (स) मञ्जूषा, पिटक , पिटाक , पिटकं, पेट , पेटक , पेटकं, पेटिका
ठग (स) वंचक., धूर्त ,लुंठक ,लुंटाक
ठगी (स) वंचना, प्रतारणा, छलं, कपटं, कैतवं, छद्मन् n
ठंडा (वि) शीत, शीतल, शिशिर, हिम
ठहरना (क्रि) स्था 1p (तिष्ठति), विरम 1p (विरमति)

ठिकाना (स) स्थान, आश्रय See also घर
ठिठुरना (क्रि) शीतेन कम्प्
ठोकर (स) आघात , प्रहार.
ठोकर लगाना (क्रि) प्रहृ 1p, आहन् 2p, तड् 10u
डर (स) शंका, साध्वसं, see खतरा
डरना (क्रि) भी 3p (बिभेति), त्रस् 1p, 4p, शंक् 1a.
डरपोक (वि) कातर भीरु, त्रस्नु, त्रसुर
डसना (क्रि) दंश् 1p (दशति)
डाका (स) लुंटा, लुंठा, लुंठनं, लुंटाकता, स्तैन्यं, स्तेय, चौर्य
डाकू (सं) See चोर and ठग
डांटना (क्रि) See झिड़कना and कोसना
डांट-डपट (स) तर्जनं, तर्जना, भर्त्सनं, भर्त्सना
डांवाडोल (वि) चंचल, चल, चपल, अस्थिर, लोल, तरल
डींग (सं) आत्मश्लाघा, विकत्थनं विकत्था
डींग मारना (क्रि) विकत्थ् 1a, आत्मानं श्लाघ् 1a
डूबना (क्रि) मस्ज् 6p (मज्जति) निमस्ज्
डेरा (स) शिविरं, शिविर, निवेश See घर
डेरा डालना (क्रि) निविश् 6a (निविशते)
ढकना (स) पिधान, आवरण, आच्छादनं
ढङ्ग (स) प्रकार , विधा, रीति f, पद्धति ,-ती, सरणि f, सरणीf
ढंढोरा (स) घोषणा. प्रख्यापन
ढापना (क्रि) छद् - प्रच्छद्- आच्छद् 10u छादयति etc) आवृ 5,9,10 u (आ-वृणोति, वृणाति,-वरयति etc), पिनह् 4u (पिनह्यति, पिनह्यते), अवगुण्ठ् 10u see छिपाना
ढारस (स) सान्त्वनं, सान्त्वना, सान्त्व , आश्वासनं
ढारस बंधाना (वि) आश्वस्- समाश्वस् c (समाश्वासयति) सान्त्व् 10 u.
ढीठ (वि) धृष्ट
ढीला (वि) श्लथ, शिथिल
ढूंढना (क्रि) See खोजना
ढेर (स) राशि m, पुंज., निकर

ढोंग (स) पाषंड·, पापंडं, दंभ See ठग्गी

ढोंगी (स) पाखंड , पापंडः,दंभिन् m दांभिक·

तंग (वि) संकुचित, अविशाल, अनुदार

तडपना (क्रि) संतप् 4a Or pass, व्यथ् 1a (व्यथते)

तनिक (वि) तनु, अल्प, स्तोक (क्रि वि) अल्पं, किंचित्, ईषत्, मनाक्, स्तोकं

तन्दूर (स) कंदु·, m, f

तपस्या (स) तपस्या f, तपस् n कृच्छ्र·, कृच्छ्रं

तपस्या करना (क्रि) तप· तप् (1p, 4a), also तपस्यति Den

तपस्वी (स) तपस्विन् m, तापस, वैखानसः, यति· m

तवेला (स) मंदुरा, वाजिशाला

तम्बू (स) पटमडप, केणिका

तराजू (स) तुला

ताज़ा (वि) नव, अभिनव, प्रत्यग्र

तारा (स) तार, तारं, तारका, उडु n, उडु· f

तालाब (स) तड़ाग·,तड़ागं,तटाक, तटाकं, जलाशयः, दीर्घिका, वापी f, पल्वलं, सरस् n, सरोवर, सरसी f

ताली (१) See कुञ्जी (२)करतालः, करतालकं

ताली बजाना (क्रि) करताल दा 3u

तिनका (स) तृण, (अर्जुन)

तिरछा (वि) तिर्यच् (f=तिरश्ची), तिरश्चीन

तिरछा (क्रि.वि) तिर्यक्, तिरश्चीन

तेज (वि) १. द्रुत, त्वरित, जवन, वेगवत् (२) तीक्ष्ण, निशित, प्रखर, तीव्र

तैरना (क्रि) तॄ 1p, प्लु 1a

तोड़ना (क्रि) भिद् 7u, (भिनत्ति, भिन्ते), भज् 7p (भनक्ति), खड् 10u

तोतली बोली (स) अस्पष्टोच्चारण

तोता (स) शुक, कीर

त्योहार (स) See जलसा (१)

थकना (क्रि) क्लम् 1p,4p (क्लामति, क्लाम्यति), ग्लै 1p (ग्लायति)

थमना (क्रि) See ठहरना

थूकना (क्रि) ष्ठिव् 1p,4p (ष्ठीवति, ष्ठीव्यति), क्षिव् 1p, 4p (क्षेवति, क्षीव्यति)

थोड़ा (वि) See तनिक (वि)

थोपना (क्रि) आरुह c (आरोपयति) also अध्यारुह् c
दरबार (स) राजसभा
दरवाजा (स) द्वार, द्वार् f
दही (स) दधि n
दहेज (स) यौतक, यौतुक, स्त्रीधन
दलदल (स) अनूप -प, कच्छ·, कच्छ
दान (स) दान, वितरण
दान्त (सं) दन्त, दशन·, रदन, रद
दिन (स) दिन, दिवस, वार·, वासर, अहन् n
दिल (सं) हृदय, हृद् n, चित्त, चेतस् n, मनस् n
दीवार (स) कुड्य, भित्ति f
दुकान (स) आपण·, पण्यशाला, विपणि f, निपद्या
दुकानदार (स) आपणिक, विपणिन् m
दु.ख (स) दु ख, कष्ट, कृच्छ्र, पीडा व्यथा, क्लेश
दु ख देना दु 5 p, तुद् 6 u, क्लिश् 9 p क्लिश्नाति), तप् c (तापयति), पीड् 10 u, व्यथ् c (व्यथयति-ते), बाध् 1 a, दु ख् 10 u
दु खी होना व्यथ् 1 a, दू 4 a, खिद् 4a, तम 4 p (ताम्यति) विपद् 1, p, (विषीदति), तप् pass तप्यते
दुर्भाग्य (स) दुर्भाग्य, दुर्दैव, अनर्थ·
दुलहन (स) नवोढा f, नववधू f,
दूध (स) दुग्ध, पयस् n, क्षीर
देखना (क्रि) दृश् 1 p (पश्यति) ईक्ष् 1 a, आ-, वि-, लोक् 1 a, 10 u, लक्ष् 1 a, 10 u, निर्वर्ण् 10 u, निरूप् 10 u
देना (क्रि) दा 1 p (यच्छति) दा 3u (ददाति, दत्ते)
देर, देरी (स) चिर, विलब
देर करना (क्रि) विलम्ब् 1a, चिरायति-ते Den
देश निकाला (स) निर्वासन, निवासन
देश निकाला देना (क्रि) निर्वस् c विवस् c
दौड़ना (क्रि) धाव् 1 p, द्रु 1 p (द्रवति), पलाय् 1a (पलायते)
धकेलना (क्रि) (हस्तादिकेन) प्रणुद् 6p, प्रेर् c, प्रचल् c

धड़कना (क्रि) स्पद् 1a, कप् 1 a

धमकी (स) विभीषिका, See डाट-डपट

धरोहर (स) See अमानत

धांधली (स) विप्लवः, अवयवस्था, उपद्रवः अत्याचार.

धाय (स) धात्री f, उपमातृ f (उपमाता etc)

धूल (स) धूलि. f, धूली f, रजस् n, पाशु m=पासुः m, रेणु. m, f

धुआ (स) धूम.

धोखा (स) भ्रमः, भ्रांति f, माया, इन्द्रजालं, आभास. See also ठग्गी।

धोखा देना (क्रि) वंच् c (वंचयति-ते, प्रतृ c, विप्रलभ् 1 a, अतिसधा 3 u

धोबी (स) रजकः, निर्णेजक

धोना (क्रि) क्षल् 10u (क्षालयति, -ते), धाव् 1 p (धावति) निज् 3 u (नेनेक्ति, नेनिक्ते) मृज् 2p, 10 u etc.

ध्यान करना (क्रि) ध्यै 1 p (ध्यायति), अनुध्यै 1 p See सोचना

नकल करना (क्रि) अनुकृ 8 u, विडब् 10u (विडम्बयति,-ते)

नकली (वि) कृतक, कृत्रिम, कूट

नगा (वि) नग्नं, विवस्त्र, दिगंबर

नतीजा (स) परिणाम ,फलं,उदर्कः

नमूना (स) आदर्श , प्रतिरूपं

नया (वि) नव, अभिनव, नवीन, नूतन, नूत्न,

नहाना (क्रि) स्ना 2p (स्नाति), मस्ज् 6 p (मज्जति), निमस्ज् 6p, अवगाह् 1a

नाई (स) नापित , क्षुरिन m, मुण्डिन् m

नाच (स) नृत्य, नर्तनं, लास्यं, तांडव , तांडवं

नाचना (क्रि) नृत् 4p (नृत्यति), नट् 1p

नाता (स) संबंध , बन्धुता

नाम (स) नामन् n, नामधेयं, अभिधा,अभिधानं, व्यपदेशः

नाराज़ होना क्रुध् 4p (क्रुध्यति) with Dat, कुप् 4p, with Dat.

नाला=नहर (स) कुल्या

नाव (स) See किश्ती

नाविक (स) नाविकः नौवाहः

निकम्मा (वि) (२) निरर्थक, व्यर्थ असार, निष्प्रयोजन, फल्गु, मोघ, निष्फल, तुच्छ (२) अव्यापार, अव्यापृत

निकलना (क्रि) निर्गम् 1p, निर्या 2p; निष्क्रम् 1 u (निष्क्रामति, निष्क्रमते)

निगलना (क्रि) निगॄ 6p (निगिरति) ग्रस् 1 a

निचोड़ (स) सार॰, निष्कर्षः

निचोडना (कि) निपीड् 10u (निपीडयति,-ते)

निन्दा करना (क्रि) निन्द् 1 p (निन्दति) See अपमान करना, उलाहना देना, कोसना

निपटाना (क्रि) समाप् c, निर्वृत् c (निर्वर्तयति)

निमन्त्रण देना (क्रि) निमंत्र्, आ-मंत्र् 10 a (निमंत्रयते etc)

नियत करना (क्रि) स्थिरीकृ 8 u, व्यवस्था c

नियुक्त करना (क्रि) नियुज् 7 a, 10u नियोजयति,-ते, व्यापृc

निराला (वि) असाधारण, असामान्य, विलक्षण

निराश (वि) मनोहत, भग्नाश, भग्नमनोरथ

निर्णय करना (क्रि) अवधृ 10 u, see निश्चित करना

निर्माण करना निर्मा 2 p रच् 10 u कृ 8u

निशान (स) चिह्न॰, लक्षण, अंक , लक्ष्मन् n

निशाना (स) लक्ष्यं, वेध्य, शरव्यं

निशाना बांधना (क्रि) लक्षीकृ 8u

निश्चित करना निश्च 5 u, निर्णी 1 p

निस्तारा (सं) निस्तार , उद्धार , मोक्षः, मुक्ति f.

नीच (वि) नीच, अधम, अपकृष्ट, see ओछा

नींद (स) निद्रा, सुप्ति॰ f, स्वप्न॰, स्वाप॰ (गहरी नींद=)सुषुप्तिः f (हल्की नींद) तद्रा, तन्द्रि f तन्द्री f, प्रमीला

नीला (वि) नील, श्याम

नोक (स) धारा, पालि॰=पालीf, प्रांतः, उपातः

नौकर (सं) भृत्य , दासः, दासेरः,

किङ्कर, प्रैष्य, प्रेष्य, परिचारक चेटक, नियोज्य
नौकरी (स) सेवा, दासवृत्ति f, दास्य
नौकरी-चाकरी (स) नियुक्ति f
न्यायाधीश (स) अधिकरणिक, आधिकरणिक, धर्माधिकारिन् m, अक्षदर्शक, प्राड्विवाक।
पकड़ना (क्रि) ग्रह् 9p (गृह्णाति, गृह्णीते) धृ 1p, 10u
पकाना (क्रि) पच् 1p (पचति), श्री 9u (श्रीणाति श्रीणीते), श्रा 2p, c (श्रापयति)। (भोजन पकाना=) अन्न सस्कृ 8u
पख (स) पक्ष, गरुत् m.
पखा (स) व्यजन, वीजन,
पख करना (क्रि) 10u, (वीजयति -ते
पछताना (क्रि) अनुशुच् 1p, अनुशी 2a (अनुशेते), अनुतप् 4a
पछतावा (स) पश्चात्ताप, अनुशय, अनुताप
पडाव (स) विश्रातिस्थान म see डेरा
पड़ोस (स) प्रतिवेश
पड़ोसी (स) प्रतिवेश, प्रतिवेशिन्, प्रतिवेशवासिन्, प्रातिवेश्य, प्रातिवेश्यक· प्रातिवेशिक
पढ़ना (क्रि) पठ् 1p अधी 2a (अधीते), शील्, अनुशील्, परिशील् 10u (ऊचे स्वर से पढ़न=वच् c वाचयति)
पतगा (स) पतग, शलभ
पतवार (स) अरित्र, नौदड.
पत्थर (स) प्रस्तर, शिला, पाषाण, दृषद् f, अश्मन् m, ग्रावन् m
परखना (क्रि) परीक्ष् 1a विमृश् 6p.
परछाई (स) छाया, प्रतिच्छाया, प्रतिबिम्ब, प्रतिरूप
परदा (स) तिरस्करिणी f, प्रतिसीरा, य(ज-)वनिका, व्यवधान
परवाह (स) (१) आदर, अपेक्षा (२) चिन्ता
परिपाटी (स) पद्धति -ती, रीति f
पिरोना (क्रि) ग्रथ् 9p, 10u (ग्रथ्नाति, ग्रंथयति,-ते)
परीक्षा करना (क्रि) समीक्ष् 1a. see परखना

पलंग (स) see खाट
पसद (स) रुचि. f, अभिरुचिः f, छन्द.
पसारना (क्रि) प्रसृ c प्रसारयति
पहचान(स) अभिज्ञानं,प्रत्यभिज्ञान
पहचानना (क्रि) अभिज्ञा 9 u, प्रत्यभिज्ञा 9 u
पहनना (क्रि) धृ 10 u, परिधा 3 u, वस् 2 a (वस्ते etc)
पहरेदार (स) प्रहरिन्m रक्षिन्m रक्षापुरुष
पहाड़ (स) पर्वत , नग , अचलः, शैल , अद्रि·m, गिरि·, भूधर , धराधर. etc, भूभृत् m क्ष्माभृत् m etc शिखरिन् m
पहुंचना (क्रि) आसद् 1 p (आसीदति), समासद् 1 p, प्राप् 5p, उप इ 2p (उपैति) उपगम् 1 p
पहेली (स) प्रहेलिका
पांव (स) चरणः, चरणं, पाद·, पदं, अंघ्रि m
पाखड (स) see ढोंग
पागल (वि) उन्मत्त, मूर्ख
पाना (क्रि) see प्राप्त करना
पानी (स) जलं, सलिलं,तोय, नीर पानीयं, जीवनं, उदकं, वारि n, अम्बु n, वार् n अम्भस्. n अप् f, pl (आप etc)
पाप (स) पापं, पातकं, पाप्मन् m (पाप्मा etc), अघं, कल्मषं, किल्विषं, दुरितं, एनस् n, अंहस् (अंहः etc)
पापी (वि) पापिन् m, पातकिन्m पापः अधर्मिन् m
पारखी (स) परीक्षक , मार्मिकः
पालना (क्रि) पा c (पालयतिetc) पुष् 1, 4, 9 p (पोषति, पुष्यति, पुष्णाति respectively), भृ, 3u (भरति, बिभर्ति—बिभृते)
पिघलना (क्रि) गल् 1 p, द्रु 1 p (द्रवति), द्रवीभू, विली 4 a
पिंजरा (स) पञ्जर, पिंजर
पिटारी (स) see टोकरी
पीटना (क्रि) तड् 10 u (ताडयति -ते), प्रहृ 1 p
पीठ (स) पृष्ठ, पृष्ठदेश
पीना (क्रि) पा 1 p (पिबति), (थोड़ा २ पीना=) आचम 1 p (आचामति)

पीला (वि) पीत, पांडु
पीसना (क्रि) पिष् 7 p (पिनष्टि) मृद् 9p क्षुद् 7 u (क्षुणत्ति, क्षुन्ते), घृष् 1p, चूर्ण 10u
पुकारना (क्रि) ह्वे, आह्वे 1 p (आह्वयति,-ते), आकृ c (आकारयति,-ते)
पुल (स) सेतु m, सवर
पूजा (स) पूजा, नमस्या, अर्चन, अर्चना, अभ्यर्चन, आराधन, अराधना See also सम्मान
पूजा करना (क्रि) पूज् 10u अर्च् 1p, 10u, आराध् 5, 10p (आराध्नोति, आराधयति), उपास् 2a
पूछना (क्रि) प्रच्छ् 6p (पृच्छति,) अनुयुज् 7a (अनुयुङ्क्ते)
पूरा (वि) सपूर्ण, सकल, अशेष, समग्र, कृत्स्न
पृथक् करना (क्रि) पृथक्कृ 8u, विश्लिष् c, वियुज् c, विघट् c
पृथ्वी (स) पृथ्वी, पृथिवी भू भूमि, धरा, धरणि -णी, क्षिति:, क्षोणि -णी, वसुधा, वसु धरा वसुमती, मही, मेदिनी, उर्वी अवनि -नी, क्ष्मा—All are feminine.
पेचीदा (वि) जटिल क्लिष्ट
पेट (स) उदरं, जठर, जठर, कुक्षि: m.
पेटू (वि) घस्मर, अतिभक्षक, अद्मर, उदरंभरि, आद्यून
पैदल (वि) पदिक, (स) पदात, पदाति: m.
पोंछना (क्रि) मृज् 2p; 10u (मार्ष्टि, मार्जयति,-ते) also परि-मृज्
पौधा (स) अङ्कुर, अङ्कुरं, वृक्ष:
प्यास (स) पिपासा, तृषा, तृष् f
प्यासा (वि) पिपासु, तृषित, तृषार्त
प्रकट करना (क्रि) प्रकटयति Den, आविष्कृ 8u, शंस् 1p, व्यक्तीकृ 8u.
प्रकट होना (क्रि) आविर्भू, प्रकटीभू
प्रकार (स) see ढंग
प्रचार करना (क्रि) प्रचर् c, प्रवृत् c, प्रसृ c
प्रण (स) see प्रतिज्ञा
प्रणाम करना (क्रि) प्रण

वन्द्, अभिवन्द् 1a, अभिवद् 10a अभिवादयते, नमस्कृ 8u
प्रतिज्ञा (स) प्रतिज्ञा, समयः, संविद् f, प्रतिश्रव आश्रवः, आगूः f
प्रतिज्ञा करना (क्रि) प्रति √ज्ञा, आश्रु 5p, प्रतिश्रु 5p, वचन दा 3u
प्रतीक्षा करना (क्रि) प्रतीक्ष् 1a प्रतिपा c (प्रतिपालयति)
प्रतीत होना (क्रि) भा, प्रतिभा 2p दृश् pass
प्रबन्ध करना (क्रि) निर्वह् c, संपद् c (संपादयति)
प्रयोग करना (क्रि) प्रयुज् 7a
प्रशंसा करना (क्रि) see सराहना
प्रस्ताव (स) उपक्षेपः, उपन्यासः
प्रस्ताव करना उपक्षिप् 6p, उपन्यस् 4p
प्राण (स) प्राण (used in pl), जीवन, जीवित
प्राणी (स) प्राणिन् m, प्राणभृत् m,, शरीरिन् m, जन्तु m, चेतनः
प्राप्त करना (क्रि) आप्, प्राप् 5p (प्राप्नोति), विद् 6u (विन्दति -ते), आसद् c, समासद् c (समासादयति), भज् 1u (usually A only)(भजते) प्रतिपद् 4a, अधिगम् 1p
प्रार्थना (स) प्रार्थना, अभ्यर्थना, याचना, याच्ञा, विज्ञप्तिः f
प्रार्थना करना (क्रि) प्रार्थ् 10a, अभ्यर्थ् 10a याच् 1a
प्रेम (स) प्रेमन् m, n (प्रेमा, प्रेम respectively), स्नेह, प्रीति f, अनुरागः, प्रणयः
प्रेम करना (क्रि) स्निह् 4p (स्निह्यति, (with loc), अनुरज् 4p. See इच्छा करना
फटना (क्रि) स्फुट् 6p, दल् 1p, भिद् pass, विदॄ pass (विदीर्यते)
फरकना (क्रि) स्फुर् 6p
फांसी देना (क्रि) उद्बंध् 9p (उद्बध्नाति), उद्बध्य हन् c
फांसी लेना (क्र) आत्मानं उद्बध् 9p
फुरतीला (वि) क्षिप्र, द्रुत, आशु
फूटना (क्रि) See टूटना, फटना
फूल (स) पुष्प, कुसुम, सुम, प्रसून, सुमनस् (f. pl. only, सुमनसः etc.)

फेंकना (क्रि) अस् 4p, क्षिप् 6p, प्रक्षिप्, मुच् 6p, पत् c
फैलना (क्रि) प्रसृ 1p, वितन् Pass, विस्तृ Pass, मुर्च्छ् 1p (मूर्च्छति)
फोड़ा (स) व्रण, व्रणं, गंडः, विस्फोट.
बकना (क्रि) प्रलप् 1 p, जल्प् 1p
बकरा (स) अजः, छाग
बखेरना (क्रि) कॄ 6p, also अवकॄ, विकॄ (किरति etc.)
बचत (स) अवशेषः, सचयः
बचपन (स) बाल्य, शैशव, बाल-भाव
बचाना (क्रि) See रक्षा करना
बच्चा (स) शिशुः, वत्स, अर्भकः, बाल, बालकः, डिंभः, डिंभक
बटवारा (स) भाग, विभाग, वट
बटोरना (क्रि) See इकट्ठा करना
बड़बड़ाना (क्रि) See बकना
बड़ा (वि) महत्, गुरु, पृथु, बृहत्, विशाल
बड़ाई (स) महिमन् m (महिमा etc), माहात्म्य, गुरुत्व etc
बढ़ना (क्रि) वृध् 1a (वर्धते) also विवृध, परिवृध्, उपचि Pass (उपचीयते), एध् 1a, बृह 1, 6p, (बृहति)
बताना (क्रि) शस् with (Dat or Gen) See कहना
बदलना (क्रि) परिवृत् 1a, विपर्यस् 4p
बधाई देना (क्रि) वृध् c (वर्धापयति with Instrumental.
बनाना (क्रि) रच् 10u, सपद् c, विधा 3u, क्लृप् c (कल्पयति -ते), घट् c. See निर्माण करना।
बनावटी See नकली
बरसात (स) वर्षाकालः, वर्षा (f,pl) प्रावृष् f
बरात (स) वरयात्रा
बरतन (=बर्तन) (स) पात्र, भाड
बर्ताव (स) वर्तन, व्यवहार, आचार
बर्ताव करना (क्रि) वृत् 1a, व्यवहृ 1p, आचर् 1p (All are usualy used with Loc. or by themselves)
बहकना (क्रि) मार्गात् भ्रंश् 1 a,

भ्रम् 1 p, 4 p, स्खल् 1 p, मुह् 4 p मुह्यति
बहना (क्रि) वह् 1p, सृ 1p, स्रु 1p, (स्रवति etc)
बहलाना (क्रि) रंज् c, विनुद् c
बहलाव (स) विनोद , रजन
बहाना (स)व्याज , व्यपदेश., छलं
बाज़ (स) श्येनः
बांट (स) See बटवारा
बांटना (क्रि) विभज् 1 u
बाढ़ (स) आप्लाव , ओघ
बात (स)कथनं, वचन, उक्ति f,वार्ता
बातचीत (स) आलाप , संलाप , सकथा, सवाद , सभाषण
बातचीत करना (क्रि) आलप् 1p, संलप् 1 p, सभाष् 1 a, संवद् 1 p
बातूनी (वि) जल्पक. जल्पाक , वाचाल , वाचाट
बादल (स) मेघ ,घन ,अभ्रं, पयोद जलदः, वारिदः etc. जलधर धाराधरः, जलमुच् m, पयोमुच् m etc.वारिवाहक , बलाहक जीमूत , स्तनयित्नुः m, देव
बाधा(स)विघ्न , प्रत्यूह , अन्तराय
बाधा डालना (क्रि) रुध् 7 u (रुणद्धि, रुंद्धे) so also, विरुध् प्रतिरुध्, प्रतिहन् 2 p
बाध (स) सेतु m
बांधना (क्रि) बंध् 9p (बध्नाति), नह् 4u (नह्यति,-ते) ग्रथ 9p (ग्रथ्नाति), ग्रन्थ् 10u, आसंज् (आसजति)
बाहर (क्रि. वि.) बहि
बाहरी (वि) बाह्य
बिक्री (स) विक्रय
बिगड़ना (१) विकृpass(विक्रियते) दुष् 4p (दुष्यति), (२) See नाराज होना
बिछुड़ना (क्रि) विश्लिष् 4 p, वियुज् pass, विप्रयुज् pass with Instr, विनाकृ pass
बिजली (स) विद्युत् , तडित् , चपला, चचला, क्षणप्रभा, अचिरप्रभा, सौदामनी,-मिनी, -म्नी All are feminine.
बिताना (क्रि) (काल) नी, गम् c, या c, अतिवह् c
बिस्तर (स) आस्तरः, आस्तरण,
बीमार (वि, स) रुग्ण', आतुरः,

आर्त., रोगिन् m. (वि) व्याधित, अस्वस्थ

बीमारी (स) रोगः, रुज् f, रुजा, गदः, उपताप, व्याधिः m, अस्वास्थ्य

बुझाना (क्रि) निर्वा c (निर्वापयति)

बुढ़ापा (स) जरा, वार्द्धक, वार्द्धक्य

बुरा (वि) असाधु, दुष्ट, अशुभ

बुलाना (क्रि) आह्वे 1 p, आकृ c (आकारयति)

बुहारना (स) मृज् 2p, 10 u (मार्ष्टि, मार्जयति,-ते)

बुहारी (स) शोधनी f, संमार्जनी f

बूझना (क्रि) ऊह् 1 a (ऊहते), तर्क 10 u, उत्प्रेक्ष् 1 a, अनुमा 2 p, 3 a (अनुमाति, अनुमिमीते)

बूढा (वि, स) वृद्धः, स्थविर, जीर्णः जरत m, प्रवयस्

बूढ़ी (=बुढिया) (स) वृद्धा, स्थविरा, जरती f

बूंद (स) बिन्दुः m, कणः, पृषतः, पृषत् n, लवः

बेचना (क्रि) विक्री 9a (विक्रीणीते), विपण 1 a

बेकार (वि) See निकम्मा

बेल (स) लता, वल्ली f, वल्लरी f, वीरुध् f, व्रततिः f, व्रतती f,

बैठना (क्रि) आस् 2a, (आस्ते), उपविश् 6 p, निषद् 1 p (निषीदति)

बोझ (स) भार, भारक

बोलना (क्रि) वद् 1p, गद् 1p, भण् 1p, भाष 1a (भाषते), वच् 2p (वक्ति), ब्रू 2u (ब्रवीति, ब्रूते), उदीर c (उदीरयति), उच्चर् c, उच्चारयति, व्याहृ 1p व्याहरति

बोली (स) भाषा, वाणी, वाच्, गिर्, गिरा, भारती All are f

बौछाड़ (स) वृष्टि f, वर्ष., वर्ष

ब्याज (स) वृद्धि, वार्द्धुष

ब्यौरा (स) विस्तर, विस्तारः

भंवर (स) आवर्त, जलावर्त., भ्रमि f

भवरा (स) भ्रमर, द्विरेफ, भृंग. मधुव्रत., मधुकरः, मधुलिह् (मधुलिट् etc.) m, मधुप., अलि. m, अलिन् m, षट्पदः रोलंब.

भगवा (वि) काषाय (स) काषाय

भटकना (क्रि) See बहकना

भंडार (स) भांडागारः,-गार,भांडारं
भरना (क्रि) पूर् 10u, भृ 3u (बिभर्ति,बिभृते) पृ3p (पिपर्ति) पॄ 3p (पिपर्ति) पॄ, 9p (पृणाति)
भरोसा (स) विश्वास, प्रत्यय, अवलंबनं
भरोसा रखना (क्रि) विश्वस् 2p (विश्वसिति) with Loc, अवलंब् (with Acc)
भागना (क्रि) See दौड़ना
भाग्य (स) भाग्यं, दैवं, भागधेयं, अदृष्टं, विधिः m
भाग्यशाली (वि) भाग्यवत्, भागिन्
भाड़ा (स) भाटं, भाटकं, निर्वेशः, निष्क्रय, भृति f, भरणं, भरण्यं
भार (स) See बोझ
भारी (वि) गुरु, भारिक, भारिन्
भिखारी (स) भिक्षु m, भिक्षुक, याचकः, अर्थिन् m
भिगोना (क्रि) क्लिद् c (क्लेदयति), आर्द्रीकृ 8u, उन्द् 7p उनत्ति
भिड़ना (क्रि) See लड़ना,टकराना
भीख (सं) भिक्षा, भैक्ष्यं, भैक्षं
भीख मांगना (क्रि) भिक्षां याच् 1a
भीख मांगते फिरना (क्रि) भिक्षां अट् 1p
भीगना (क्रि) क्लिद् 4p (क्लिद्यति), आर्द्रीभू
भीड़ (स) See जमघट
भीतर (स) See अन्दर
भीतरी (वि) अभ्यन्तर, आभ्यन्तर, अन्तर, आन्तर, अन्तर्गत, अन्तर्वर्तिन्
भुगतना (१) (भोगना=) अनुभू, भुज् 7a, सह् 1a, विषह् 1a (२) (निबटारा=) संपद् 4a (सपद्यते),निर्वृत् 1a
भुगताना (क्रि) see निपटाना
भुनना (क्रि) (= भूना जाना) प्लुष् pass (प्लुष्यते)
भूख (स) क्षुधा, बुभुक्षा, क्षुध् f, अशना, अशनाया
भूख लगना (क्रि) क्षुध् 4p (क्षुध्यति) [मुझे भूख लग रही है= अहं क्षुध्यामि]
भूखा (वि) बुभुक्षित,बुभुक्षु, क्षुधित क्षुधार्त, अशनायित

भूखा मरना (क्रि) क्षुधया अवसद् 1p (अवसीदति)

भूनना (क्रि) प्लुष् 1, 4, 9p(प्लोषति, प्लुष्यति, प्लुष्णाति)

भूल (स) see गलती

भूल करना (क्रि)see गलती करना

भूलना (क्रि) विस्मृ 1p

भेजना (क्रि) प्रेष् c (प्रेषयति),प्रहि 5p (प्रहिणोति), विसृज् 6p (विसृजति), प्रस्थाc

भेंट (१) संगम , समागम , सयोग (२) उपहारः उपायन, प्राभृतं, प्राभृतक

भेंट करना (१) see मिलना (२) See उपहार देना

भेड़ (स) एडका, अविःf, अविका

भेद (स) (१)भेद· विशेष , अन्तर (२) रहस्य, गुह्य

भेद करना (क्रि) परिच्छिद् 7u विच् 3u (वेवेक्ति वेविक्त), विभिद् c, विशिष् 7p&c

भेस (स) वेपः, वेशः,रूप, छद्मन्n

भोगना (क्रि) see भुगतना (१)

भोजन see खाना (स)

भोजन करना see खाना (क्रि)

, भोला (वि) मुग्ध, सरल, ऋजु

भौंकना (क्रि) बुक्क् 1p, 10u, भष् 1p (भपति)

मकान (स) see घर

मजदूर (स) कर्मकरः, कर्मकार· कर्मकारिन् m. श्रमिक

मजदूरी (स) see भाड़ा

मंडराना (क्रि) परिभ्रम् 1, 4p., पर्यट् 1p

मदद (स) साहाय्य, साहायक

मदद करना (क्रि) साहाय्यं कृ or विधा, उपकृ 8u

मना करना(क्रि) निषिध्, प्रतिषिध् 1p (प्रतिषेधति),वृc (वारयति)

मन्त्री (स) मन्त्रिन् m, सचिव , अमात्य.

मरना (क्रि) मृ 6a (म्रियते), प्र-इ 2p (प्रैति), पंचत्व गम् etc

मरम्मत करना (क्रि) प्रतिविधा3u

महगा (वि)महार्घ, महार्घ्य, महार्ह, बहुमूल्य

मागना (क्रि) याच् 1a, भिक्ष् 1a अर्थ् 10 a, प्रार्थ् 10a (All take two Accusatives)

मांजना (क्रि) मृज् 2p, 10u, संशुध् c, परिष्कृ 8u

मात करना (क्रि) अतिशी 2 a (अतिशेते), अतिक्रम् 1u,4p (the object excelled is put in Acc), अतिरिच् pass(अतिरिच्यते), विशिष् pass (विशिष्यते) (the object excelled is put in Abl.)

मानना (क्रि) मन् 4a (मन्यते), मन 8a (मनुते), अनुमन्4a स्वीकृ 8u, प्रतिपद् 4a

मापना (क्रि) मा 2p, 3a (माति, मिमीते) Also परिमा

मारना (क्रि)(१) प्रहृ p, तड् 10u (२) मृ c (मारयति), व्यापद् c (व्यापदयति),हन् 2p (हन्ति) हिस् 1p, 7p,10u (हिंसति, हिनस्ति, हिंसयति,-ते)

मांस (स) मास, पिशित, क्रव्य, आमिषं, तरस, पल, पलल

मालिक (स) स्वामिन् m, प्रभुः m, नाथ , ईश , ईश्वरः

मालूम (वि) विदित, ज्ञात

मालूम होना (क्रि) See जानना

मिटाना (क्रि) परिमृज् 2p (परिमार्ष्टि), Alao प्रमृज्, विलुप् 6p (विलुम्पति)

मिट्टी (स) मृत्तिका, मृद् f

मिन्नत (स)अनुनय ,विनतिः f.See प्रार्थना

मिन्नत करना (क्रि) अनुनी 1p (अनुनयति), See प्रार्थना करना

मिलना (क्रि) मिल 6p समिल्6p संगम् 1a (सगच्छते), सम्-इ 2p (समेति),सया 2p,ससृज्, pass (ससृज्यते), सपृच् pass (सपृच्यते)

मिलाना (क्रि) समिश्र् 10u,सपृच् 2a,7p (सपृक्ते, सपृणक्ति) ससृज्6p (ससृजति) सयुज् 7u,10u (सयुनक्ति, सयु क्ते, सयोजयति,-ते)

मीठा (वि) मिष्ट, मधुर

मुट्ठी (स) मुष्टि , m,f, मुष्टिका

मुसकराना (क्रि) स्मि, 1a(स्मयते)

मुसाफिर (स) पथिक., पाथ., अध्वग अध्वनीन , यात्रिक

मूर्ख (वि) मूर्ख, मूढ़, अज्ञ, बालिश, मन्द, जड

मृच्छा (स) मूच्छा, मोह.

(चादनी रात) ज्यौत्स्नी f

रिझाना (क्रि) प्रवणीकृ 8u, प्रसद् c (प्रसादयति)

रिवाज (सं) आचार, रूढि f, रीति f, क्रम

रिश्वत (सं) उत्कोचः

रीझना (क्रि) अनुरंज् 4u (with Acc or Loc) प्रसद् 1p (प्रसीदति)

रुकना (क्रि) विरम् 1 p, निवृत् 1 a शम् 4 p

रुकावट (सं) see बाधा

रूखा (वि) शुष्क, नीरस

रेशमी (वि) कौशेय, रेशमी वस्त्र= दुकूलं, क्षौमं, चीनांशुकं, चीनवासस् n

रोकना (क्रि)(१) See मना करना, (२) स्तभ्, विष्टंभ्, 5,9p& c See बाधा डालना

रोटी (सं) (१) अपूप (२) See खाना (स)

रोना (क्रि) रुद् 2p (रोदिति), विलप् 1p, क्रुश् 1p (क्रोशति)

रोना (सं) रोदनं, विलाप., आक्रोश परिदेवनं

रोनक (सं) (१) See चमक (२) See चहलपल

लकड़ी (सं) काष्ठ, See ईंधन, छड़ी

लंगड़ा (वि) पगु, खज

लंगड़ाना (क्रि) खज् 1p (खंजति) लग् 1p

लज्जा (स) लज्जा, व्रीडा, ह्री f, त्रपा, शालीनता

लज्जाशील (वि) लज्जालु, ह्रीमत्, शालीन

लज्जा करना=लज्जाना (क्रि) लस्ज् 1a (लज्जते)=व्रीड् 4 p (व्रीड्यति) ह्री 3p (जिह्रेति) त्रप् 1a (त्रपते), also अपत्रप्

लटकना (क्रि) लब् 1a (लबते)

लटकाना (क्रि) उद्बंध् 9p (उद्बध्नाति)

लड़का (सं) (१) बालः, बालक कुमार, दारकः, (२) पुत्र, तनय, सुत सूनुः, आत्मज.

लड़ना (क्रि) (१) युध् 4 a (युध्यते), विग्रह् 9u (२)See झगड़ना

लड़ाई (स) रणं, युद्धं, युध् f, संगरः, संग्रामः, समर आहवः, संख्यं, आयोधनं सांपरायिकं, आजि m,f, समित् f

लपकना (क्रि) उत्पत् 1p. See उछलना

लंबा (वि) दीर्घ, लम्ब, आयामवत्

लंबाई (स) दैर्घ्य, दैर्घ, आयाम. आयति f

ललकारना (क्रि) आह्वे 1p (आह्वयति)

ललचाना (क्रि) विलुभ् c, प्रलुभ् c

लहर (स) ऊर्मि m, f, तरंग, लहरि = लहरी f, वीचि m, f वीची f उल्लोल. उत्कलिका

लाचार (वि) अवश, विवश, असहाय

लाड़ करना (क्रि) लल् 10u, उपलल् 10p (उपलालयति), लड्

लापरवाह (वि) अनवधान, प्रमत्त निश्चिन्त

लापरवाही (स) प्रमाद, अनवधान, अनवधानता

लाभ (स) (१) लाभ, आय, प्राप्ति f, (२) हित, कल्याण, उपकार.

लाभदायक (वि) फलप्रद, हितावह, उपयोगिन्, उपकारक, हित

लालच (स) लोभ. तृष्णा, स्पृहा, लौल्य, लालसा, लिप्सा

लालची (वि) लुब्ध, लोलुप स्पृहयालु, स्पृहालु

लुटेरा (न) लुंठक, लुंटाक, See चोर, डाकू

लुप्त होना (क्रि) See ओझल होना

लोहार (म) लोहकार अयस्कार

लूटना (क्रि) लुंट् 1p (लुंठति) See चुराना

लूमड़ (म) भूरिमाय

लेटना (क्रि) शी 2a (शेते), अधिशी 2a (With Acc of the place where one lies), संविश् 6p (संविशति)

लेना (क्रि) आदा 3u (आददाति, आदत्ते), ग्रह् 9u (गृह्णाति, गृह्णीते)

लेप करना (क्रि) लिप् 6u (लिंपति, -ते)

लोटना (क्रि) लुठ् 6p (लुठति) So also विलुठ्

लोथ (स) शव., शवं, मृतक मृतक, कुणप.

लोभ (स) See लालच

लोभ करना (क्रि) लुभ् 4a (लुभ्यति) with Dat or Loc गृध् 4p (गृध्यति).

लोभी (स) See लालची
लौटना (क्रि) परागम् 1p (परागच्छति), So also प्रत्यागम्, परापन् 1p, निवृत् 1a (निवर्तते) प्रतिनिवृत् 1a प्रत्यावृत् 1a, परावृत् 1a
लौटाना (क्रि) प्रतिदा 3u, परावृत् c
वसंत (सं) वसन्त, पुष्पसमय, पुष्पाकर, मधु, माधव All m.
वादा (स) See प्रतिज्ञा
विचार (स) विचार, विमर्श, परामर्शः, मतं, आलोचन, आलोचना, पर्यालोचना
विचार करना (क्रि) विचर् c (विचारयति), आलोच् 10u पर्यालोच् 10u, विमृश् 6p परामृश् 6p
विघ्न (स) See बाधा
विघ्न डालना (क्रि) See बाधा डालना
विदा (स) प्रस्थान, प्रयाण
विदा होना (क्रि) प्रस्था 1a (प्रतिष्ठते), प्रया 2p (प्रयाति)
विमुख (वि) विमुख (वमुखी f), पराङ्मुख (पराङ्मुखी f)
विरला (वि) विरल, See निराला
विरोध (स) विरोध, प्रतिरोध., प्रातिकूल्यं
विरोध करना (क्रि) विरुध् 7u, प्रतिकृ 8u
वर्णन (सं) वर्णन, निरूपणं, कीर्तनं
वर्णन करना (क्रि) वर्ण् 10 u वर्णयति,-ते, See कहना
विलंब (स) See देर
विलंब करना (क्रि) See देर करना
विलाप करना (क्रि) See रोना (क्रि)
विवाद (सं) (१) विवाद, ऊहापोह, (२) कलहः
विवाद करना (क्रि) विवद् 1a, विमृश् 6p
विवाह (सं) विवाह, उद्वाह, परिणय, परिणयनं, उपयम, उपयमनं, पाणिग्रहण, दारग्रहः
विवाह करना (क्रि) उद्वह् 1p, उपयम् 1a (उपयच्छते), परिणी 1p, (पाणि) ग्रह् 9u or पीड् 10u
विवेक (सं) विवेक, परिच्छेदः, ज्ञानं
विवेक करना (क्रि) See भेद करना
विश्राम (स) विश्राम, विराम, See also आराम (१)

शोर (स) रव ,कोलाहलः,कलकल नाद ,निनाद , उद्घोष ,उत्क्रोश See also आवाज
शोर करना (क्रि) शब्दं etcकृ 8u, स्वन् 1p (स्वनति), क्वण् 1p (क्वणति), ध्वन् 1p (ध्वनति) रट् 1p (रटति)
(नूपुर आदि का शोर करना=) रण 1p (रणति), क्वण् 1p (क्वणति)
संयम करना (क्रि) संयम् 1a (सयच्छते), See alsoनियम् 1p (नियच्छति)
संकेत (स) See इशारा
संकेत करना (क्रि) See इशारा करना
सङ्कोच (स) संकोच Seeझिझक, and लज्जा
सङ्कोच करना (क्रि)1p संकुच्See झिझकना and लज्जा करना
संचय (स) चयः,संचयःSeeसमूह
संचय करना (क्रि) See इकट्ठा करना
सजावट (स) अलकार.,अलक्रिया, मडनं, प्रसाधनं
सजाना (क्रि) अलंकृ 8u, प्रसाधc, मंड् 10u (मंडयति,-ते)परिष्कृ 8u
सड़क (स) मार्ग ,राजमार्ग ,पथिन् mराजपथ ,अध्वन् m, रथ्या
सड़ना (क्रि) ग्लै 1p, म्लै 1p
सताना (क्रि) उद्विज् c (उद्वेजयति) अर्द् c (अर्दयति) See दुःख देना
सनक (स) उन्माद
सनसनी (स) संक्षोभ ,संरंभः
सन्धि करना (क्रि) सन्धा 3u
सन्ध्या करना (क्रि) सध्याम् उपास् 2a (उपास्ते)
सफाई (स) स्वच्छता, शुद्धि, शुद्धता, शौचं
समझना (क्रि) मन् 4a (मन्यते) See जानना, and सोचना
समझदार (वि) प्राज्ञ, विचक्षण, विदग्ध, मनीषिन् m, मेधाविन् विवेकिन्
समर्पण करना (क्रि) See अर्पण करना
समीप आना (क्रि) प्रत्यासद् 1p (प्रत्यासीदति) उप-इ 2p (उपैति)

समीप जाना (क्रि) उप–इ 2p, अभ्युपगम्, प्रत्युद्गम्, See पहुंचना

समूह (स) समूहः, समुदायः, गण निकर, निवह, संघ, आकर पुंज, वृंदं

समेटना (क्रि) सह् 1 (Some time A also) See इकट्ठा करना

सम्मान (सं) सम्मानः, बहुमान, आदर, गौरवं, पूजा, संभावना, सत्क्रिया, सत्कार, सपर्या, सभाजन

सम्मान करना (क्रि) समन् c आदृ 6a (आद्रियते), पूज् 10u सभाज् 10u (सभाजयति-ते)

संबोधन करना (क्रि) सम्बुध् c, संभाष् 1a, आभाष् 1a

सराहना (क्रि) श्लाघ 1a, प्रशंस् 1p स्तु 2u (स्तौति, स्तवीति, स्तुते, स्तुवीते, नु 2p (नौति) ईड् 1a (ईड्ढे)

सलाह करना (क्रि) मन्त्र् 10a (मन्त्रयते) also समन्त्र्, विचर् c

सस्ता (वि) अल्पमूल्य

सहानुभूति (स) सहानुभूतिः f, अनुकंपा (with gen. or loc) अनुक्रोशः (with loc)

सहायता (सं) See मदद

सहारा (सं) आश्रय., आलम्ब, शरण

सहेली (स) सखी, वयस्या, आलि आली All f.

सांस लेना (क्रि) श्वस् 1p (श्वसिति), प्राण् 2p (प्राणिति)

साथ (अव्यय) सह, साकं, सार्द्धं, समं All with Instr. (स) साहचर्यं, संग, सगति f

साथी (स) सखि m (सखा etc.) सहचरः, सहाय

साझ (सं) सन्ध्या, सायंकालः, प्रदोष., दिनान्त.

साझा (वि) साधारण, सामान्य

साफ (वि) शुद्ध, शुचि, निर्मल, विमल, स्वच्छ

सांप (स) सर्पः, नाग, उरग, भुजग, भुजग, भुजगम, व्याल, अहि, पन्नग, दंदशूक., मण्डलिन्, कुण्डलिन्, फणिन्, भोगिन् (भोगी etc.) आशीविष., कुम्भीनसः

सार (स) सार., तत्त्व, निष्कर्षः

सारा (वि) See पूरा

सिखाना (क्रि) विनी 1u, उपदिश् 6p, शास् (with two acc)
सिर (स) शिरस् n, शीर्ष, मूर्धन् m, उत्तमांगं
सिरहाना (स) उपधान, उपबर्ह, उपबर्हणं
सीखना (क्रि) शिक्ष् 1a शिक्षते), See पढ़ना
सींचना (क्रि) सिच् 6p (सिचति) also निषिच,उक्ष्1p(उक्षति)
सीढ़ी (स) सोपानं, सोपानमार्ग, आरोहण
सीधा (वि) ऋजु, अवक्र, अनराल
सुनार (स) सुवर्णकार ,नाडिंधम
सुस्त (वि) दीर्घसूत्र, दीर्घसूत्रिन् मथर, See आलसी
सुन्दर (वि) सुन्दर,सुभग,दर्शनीय, चारु, मनोज्ञ,कान्त, कमनीय, मनोरम, रम्य, रमणीय,
सुन्दरता (वि) सुन्दरता सौन्दर्य, रूप, लावण्य, शोभा, श्रीःf, लक्ष्मी , चारुता See also चमक (परम सुन्दरता= सुषमा) All f.
सुहावना (वि) शोभन See सुन्दर
सूखना (क्रि) शुष् 4p (शुष्यति)
सूखा (वि) शुष्क, रूक्ष.
सुगंध (स) सुगंधः, सुवासः, परिमलः, सौरभं, आमोदः
सुगन्धित (वि) सुगंधि, सुगंधित, सुरभि, सुरभित, सुवास सुवासित, आमोदिन्, आमोदित
सुगन्धित करना (क्रि) वास् 10u, (वासयति,-ते) सुरभीकृ 8u
सुनना (क्रि) श्रु 5p (शृणोति), आकर्ण् 10u, निशम् 4p (निशाम्यति) also 10u
सुनसान (वि) विजन, निर्जन, विविक्त, एकान्त, शून्य
सूचित करना (क्रि)(१) सूच् 10u निर्दिश् 6p, दृश् c See. इशारा करना (२) संदिश् 6p, See कहना
सूना (वि) शून्य, रिक्त, See सुनसान
सृष्टि (स)सृष्टिः f, सर्गः, जगत् n
सृष्टि करना (क्रि)सृज्6p(सृजति), उत्पद् c. See निर्माण करना
सेज (स)शय्या, शयनं, शयनीय
सेठ (म) श्रेष्ठिन् धनिन्, धनिक